HIN 0683

सत्यवचन

नीतिवचन परिचय - 1: 4 अ

परिचय

प्रिय मित्रों,

आज से हमारा अध्ययन पुराने नियम की पुस्तक नीतिवचन के संग्रह से आरंभ होगा। नीतिवचनों का संग्रह धर्मशास्त्र में कविताओं के संग्रह का एक भाग है - अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत, आदि सब कविताओं के संग्रह के वर्ग में ही आते हैं। ये सब इब्रानी भाषा की कविताएं हैं।

सुलैमान इन कविता संग्रह में से तीन पुस्तकों का रचियता हैः नीतिवचन, सभोपदेशक, और श्रेष्ठगीत। नीतिवचनों का संग्रह बुद्धि के वचनों की पुस्तक है। सभोपदेशक मूर्खता की पुस्तक है और श्रेष्ठगीत प्रेम संबंधों की पुस्तक है। प्रेम, बुद्धि और मुर्खता के मध्य का आनन्द है। सुलैमान इन तीनों विषयों का विशेषज्ञ था। 1 राजाओं 4:32 में लिखा है,

उसने तीन हज़ार नीतिवचन कहे और उसके एक हज़ार पाँच गीत भी हैं।

हमारे पास तो उसके 1005 गीतों में से एक ही गीत है और नीतिवचन भी बहुत कम हैं। 1 राजाओं 4:33-34 में उसके नीतिवचनों के विषयों का भी उल्लेख किया गया है,

फिर उसने लबानोन के देवदारूओं से लकर भीत में से उगते हुए जूफा तक के सब पेड़ों की चर्चा की और पशुओं, पक्षियों और रेंगनेवाले जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की। और देश दश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्हांेने सुलैमान की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने आया करते थे।

नीतिवचनों में हम सुलैमान की बुद्धि की बातें पढ़ते हैं। नीतिवचनों एक कहावत है जो किसी सत्य विशेष को सीधा और संक्षिप्त एवं सारगर्मित प्रगट करती है। नीतिवचन को समझने के लिए हम आसान वाक्य में कह सकते हैं यह सत्य का प्रकाशन है। यह एक दर्शनशास्त्र है जो अनुभव और आचरण के नियमों पर आधारित हैं। नितिवचन को सदाचार व्यक्त करनेवाला वाक्य, कहावत, पुरानी लोकोक्ति, उपमान्य आदि भी कहा गया है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

इसका मुख्य पद अध्याय 1 में है,

नीतिवचन 1:7- यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।

प्राचीन पूर्वी देश नीतिवचनों का स्रोत रहें हैं। यह भी हो सकता है कि सुलैमान ने अनेक नीतिवचन अन्य स्रोतों से एकत्र किए हो। सुलैमान उन सब का संपादक और कुछ का लेखक था। इसका अर्थ है कि हमारे पास नीतिवचनों का जो प्रेरित संग्रह है वह या तो सुलैमान का है या अन्य स्रोतों से प्राप्त है परन्तु परमेश्वर ने उन पर अपनी मुहर लगाई है जैसा हम आगे चलकर देखेंगे।

डॉ. थटेल और अन्य विचारको ने ध्यान दिया कि नीतिवचनों में द्धितीय पुरूष सर्वमान तृतीय पुरूष हुआ है। अतः उनका कहना है कि वे नीतिवचन जो द्धितीय पुरूष में हैं, सुलैमान के गुरूओं ने उसे सिखाए थे और जो नीतिवचन तृतीय पुरूष में है वे सुलैमान के द्धारा लिखे नीतिवचन हैं।

नीतिवचनों संग्रह के नीतिवचनों और अन्य लेखों के नीतिवचनों में अन्तर है। यूनानी विद्धान नीतिवचन रचने में अद्धैत थे - विशेष करके ज्ञानवादी कवि। मैंने युनानी भाषा कॉलेज में पढ़ी थी और फिर सेमिनरी में उसे दोहराया। मेरे अध्ययन में ज्ञानवादी कवियों की कविताएं थी। यूनानी भाषा में वे अति स्पष्ट रूप से कहते थे क्योंकि वे अधिकतर शब्दों से खेलना जानते हैं।

मेरे विचार में हमें नीतिवचनों की पुस्तकों की पुस्तक के गुण और लक्षणों पर ध्यान देना अति महत्वपूर्ण है।

1. नीतिवचन विज्ञान से रहित कथन और अनुचित विचार प्रगट नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए नीतिवचन 4:23 देखें,

सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

यह एक असामान्य उक्ति है क्योंकि 2700 वर्ष बाद हार्वे ने यह पता लगाया कि रक्त शरीर में प्रवाहित होता है और हृदय उसे चलाता है। इसके विपरीत एक अप्रमाणित पुस्तक जिसका नाम बरनबास की पत्री है, उसमें फीनिवर्स चिड़िया का उल्लेख है जिसने आग में आत्मदाह किया और पुनजीर्वित हुई। इस प्रकार की कहानी न तो नीतिवचन में और न ही बाइबल में कही पाई जाती है। यह विचित्र बात है कि यह प्राचीन पुस्तक सैकड़ों विज्ञान संबन्धित नीतिवचन प्रस्तुत करती है और उनमें से एक भी आज विज्ञान विरोधी नहीं है। इससे ही प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य को सचेत हो जाना चाहिए कि नीतिवचन परमेश्वर प्रेरित पुस्तक है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

2. नीतिवचन ऊँचे स्तर की नैतिक शिक्षा की पुस्तक है। आप इसमें एक भी अनैतिक शिक्षा नहीं पाएँगे। जस्तिन मारटियर ने कहा था कि सुकरात प्रभु यीशु से पहले ही विश्वासी हो गया था जो निःसन्देह असंभव है। उसके अनुयायी कहते हैं कि वह नैतिकता के ऊँचे विचारों को प्रगट करता था। सुकरात वैश्याओं को प्रगट करता था। सुकरात ने वैश्याओं को भी आचरण के निर्देश दिए हैं। उसके विषय कहा जा सकता है कि वह न तो सदाचार और न ही दुराचार में विश्वास करता था।

3. नीतिवचन एक दुसरे का खण्डन नहीं करते हैं। जब कि मनुष्य के नीतिवचन एक दूसरे का विरोध करते हैं। उदाहरण के लिए, "कूदने से पूर्व सावधान!" और "जो डर गया वह मर गया।" "मनुष्य बिन मूल्य चुकाए कुछ नहीं पाता" और जीवन की सर्वाेत्तम वस्तुए निर्माेल होती हैं। "लुढ़कते पत्थर पर काई नहीं जमती" और "अंडो पर बैठी मुर्गी मोटी नहीं होती है।" मनुष्य की कहावतों में विषमता का कारण है विचारों में विविधता। परन्तु नीतिवचन की पुस्तक में विषमता नहीं है क्योंकि वह परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए हैं।

नीतिवचन क्रमवार व्यवस्था से रहित संग्रह हैं परन्तु कुछ विचारकों का मानना है कि वे एक ही कहानी सुनाते हैं जिसे हम अपने अध्ययन में देखेंगे। यह एक ऐसे युवक की कहानी है जो जीवन में कदम रख रहा है। उसका पहला पाठ है नीतिवचन 1ः7 और यही इस पुस्तक का मुख्य विचार है।

नीतिवचन 1:7 यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।

नीतिवचनों के इस संग्रह में जो परामर्श दिया गया है वह सब युगों के लिए है, चाहे पुराने नियम के मनुष्य हो या नये नियम के, पुराने यरूशलेम के या नये यरूशलेम के। इसके तथ्य आज भी सत्यता से पूर्ण हैं। यह हर एक मनुष्य के लिए एक अति उत्तम पुस्तक है।

अब कोई यह आपत्ति उठाएगा कि, "इसमें सुसमाचार से संबन्धित कुछ भी नहीं है। "एक मिनट रूकिए, इसमें सुमाचार से संबन्धित बातें भी हैं। इस पुस्तक में जिसकी बुद्धि प्रगट की गई है, वह प्रभु यीशु मसीह की अपेक्षा अन्य कोई नहीं है।

यह पुस्तक खिचड़ी या असंबन्धित बातों का संग्रह नहीं है। यह पुस्तक सुबोध है जबकि इसमें क्रम और व्यवस्था नहीं है। सुलैमान ने अपनी ही शिक्षा के विषय में कहा है,

सभोपदेशक 12:9, उपदेशक जो बुद्धिमान था, वह प्रजा को ज्ञान भी सिखाता रहा, और ध्यान लगाकर और पूछपाछ करके बहुत से नीतिवचन क्रम से रखता था।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

आपकी रूचि का यहाँ एक विचार है, नीतिवचन में बाइबल के प्रत्येक नायक का विवरण है। मैं कुछ का नाम बताता हूँ। शेष को पहचानने का आनन्द आप प्राप्त करें। आप यह भी देखेंगे कि कोई न कोई नीतिवचन आपके मित्रों या जानकारों पर उचित बैठता होगा परन्तु आप उनसे यह न कहें। हम में से हर एक के लिए उपयुक्त नीतिवचन इसमें है। इसके अध्ययन में आप को आनन्द आएगा।

डॉ. गॅबलीन ने नीतिवचनों की साहित्यिक रचना का विश्लेषण किया है।

इन नीतिवचनों का साहित्यिक रूप दो-दो पंक्तियों का है जिसकी दोनों पंक्तियों परस्पर संबन्धित हैं जिसे इब्रानी कविता में सादृश्यता कहते हैं। इब्रानी कविताओं में हमारी कविताओं के समान लय नहीं होता है। यह सादृश्यता तीन प्रकार की है।

1. **पर्याप्त सादृश्यता:** अर्थात पहली पंक्तियों में जो कहा गया है वही विचार दूसरी पंक्ति में भी कहता जाता है।

उदाहरण: नीतिवचन 19:29

ठट्ठा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया जाता है, और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

2. **विषम सादृश्यताः** पहली पंक्तियों में प्रगट विचार दूसरी पंक्ति में विपरीत सत्य द्वारा पुष्ट किया जाता है।

उदाहरण: नीतिवचन 13:9

धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है, परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है।

यहाँ आप देख सकते है कि दूसरी पंक्ति में सत्य वही हैं परन्तु उसका प्रस्तुतिकरण नकारात्मक रूप से किया गया है।

3. **सामाजिक सादृश्यता:** इसमें दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति का विचार विकसित करती है।

उदाहरण: नीतिवचन 20:2

राजा का भय दिखाना, सिंह का गरजना है; जो उस पर रोष करता, वह अपने प्राण का अपराधी होता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 1

शायद आप को यह अध्ययन रोमांचकारी नहीं लगेगा परन्तु यह वास्तव में रोमांचकारी ही है। मैं आशा करता हूँ कि कदम से कदम मिलाकर चलेंगे क्योंकि इसमें हम में से प्रत्येक के लिए सन्देश है। यह विशेष करके युवकों के लिए है परन्तु युवतियों के लिए भी उपयोगी है। जो उस समय प्रश्नों के उत्तर खोजते थे।

मैं चाहता हूँ कि अध्ययन के आरंभ ही में आप एक बात पर ध्यान दे कि यह क्रमरहित लेखा नहीं हैं। इनमें एक विशेष सन्देश है। मैं अनेकों को जानता हूँ जो सोचते हैं कि हम कही से भी नीतिवचन चुनकर काम में ले सकते हैं। मेरे विचार में ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है परन्तु जब हम किसी नीतिवचन को अलग करके देखते हैं तो हमें उसे उसके संदर्भ से वंचित नहीं करना चाहिए। हीरा अपने स्थान पर ही अच्छा लगता है और नीतिवचन अपनी पुस्तक में ही पूर्ण अर्थ रखते हैं।

कुछ लोगों में नीतिवचनों को पढ़ना एक मानसिकता बन गई है। किसी ने कहा, "मुझे शब्दकोष पढ़ना अच्छा लगता है परन्तु उसमें कहानियाँ बहुत छोटी होती हैं। संभवतः आप भी नीतिवचन के विषय में ऐसा ही सोचते हों। परन्तु मैं आशा करता हूँ कि आप हमारे इस अध्ययन में इसे भिन्न रूप से देख पाएंगे।

नीतिवचन 1:1 दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के नीतिवचन:

इस पद से सलैमान लेखक सिद्ध होता है। परन्तु स्पष्ट है कि सुलैमान ने अन्य स्रोतों से भी नीतिवचन का संग्रह किया था। वह सब नीतिवचनों का संपादक था परन्तु कुछ नीतिवचन उसने स्वयं लिखे थे। यह भी कहा गया है कि उसने इस पुस्तक में दिए गए नीतिवचनों से कही अधिक नीतिवचन लिखे हैं।

इस पुस्तक का प्रथम भाग बुद्धि और मूर्खता की तुलना है - अध्याय 1 से 9

युवक घर में है और जीवन में कदम रख रहा है युवक जीवन में कदम रखता है तो परमेश्वर उसे निर्देश देता है।

आईए हम पढ़ें नीतिवचन 1:2-4

2 इनके द्वारा पढ़नेवाला बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे, और समझ की बातें समझे,

3 और काम करने में प्रवीणता, और धर्म, न्याय और सीधाई की शिक्षा पाए;

4 कि भोलों को चतुराई, और जवान को ज्ञान और विवेक मिले;।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

इस अंश में दस शब्द काम में लिए गए हैं जो एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द प्रतीत होते है। वे निःसन्देह परस्पर संबन्धित हैं परन्तु वे एक ही अर्थ नहीं रखते हैं। मैं प्रत्येक शब्द पर ध्यान देना चाहता हूँ। वे ना तो पर्यायवाची शब्द है और न ही प्रभावी आरंभ के लिए काम में लिए गए हैं। हमें बताया गया है कि परमेश्वर के वचन का प्रत्येक शब्द खरा है। अतः आइए हम उन्हें देखें।

"बुद्धि" बुद्धि का अर्थ क्या है? धर्मशास्त्र में बुद्धि का अर्थ है, ज्ञान के सदुपयोग की क्षमता। केवल इस पुस्तक में "बुद्धि" शब्द सैतीस बार आया है। बाइबल में यह शब्द एक अत्यधिक महत्वपूर्ण शब्द है। इसका अर्थ है, ज्ञान का सदुपयोग। ऐसे अनेक हैं जिन में ज्ञान की कमी नहीं है पर उन में बुद्धि की कमी है। वे अपने ज्ञान का सदुपयोग नहीं कर पाते हैं।

मैं यहाँ एक बात और कहना चाहता हूँ। पुराने नियम में बुद्धि से अभिप्राय वही है जो नये नियम में विश्वासी के लिए यीशु मसीह से है।

1 कुरिन्थियों 1:30 में पौलुस लिखता है,

परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।

यहाँ ध्यान दीजिए कि ज्ञान प्रथम है। आज विश्वाससियों के लिए प्रभु यीशु को ग्रहण करना। फिलिप्पियों 3:10 में पौलुस अपनी लालसा प्रगट करता है -

और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी हाने के मर्म को जानू, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ।

कि मैं उसे जानूँ। ओह, प्रभु यीशु को जानने की यह लालसा हमें अभिभूत कर ले! हमें इसकी अत्यधिक आवश्यकता है।

अतः ज्ञान (बुद्धि) प्रभु यीशु है। बुद्धि हमारे ज्ञान के सदुपयोग को मूर्ख बनाना नहीं है। यह बुद्धिमान व्यक्ति बनना है। मैंने एक कार के पीछे लिखा देखा, "बुद्धिमान मनुष्य परमेश्वर की खोज करते हैं।"

मेरे मित्रों, भले ही आप कुशाग्र बुद्धि के न हो परन्तु मसीह को ग्रहण करके, उसे जानकर आपको बुद्धि प्राप्त होती है। "शिक्षा" नीतिवचनों में शिक्षा शब्द छब्बीस बार काम में आया है। कहीं कहीं इसी इब्रानी शब्द का अनुवाद "ताड़ना" किया गया है। यह एक रोचक बात है।

नीतिवचन 13:24 सुनें, जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।"

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यहाँ शिक्षा देने का अर्थ है, अनुशासन सिखाना। आज यह सत्य भुलाया जा चुका है। आज का हमारा समाज परमेश्वर के वचन से सुसंगत नहीं है। कहा जाता है कि अपराधियों को जेल में अनुशासन सिखाया जाता है और उनका जीवन सुधारा जाता है। परमेश्वर के वचन के अनुसार यह अपराधियों के साथ किया जानेवाला व्यवहार नहीं है। बाइबल में उनका न्याय और दण्ड की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त, अन्य कोई प्रावधान नहीं है। दूसरी ओर जब आप अपने पुत्र को अनुशासन सिखाते हैं तो वह उसके निर्देशन का एक भाग है। आपका उद्देश्य उसे दण्ड देना नहीं है। आप उसकी ताड़ना तो करते हैं परन्तु अनुशासन के अधीन उसे शिक्षा देते हैं। हम प्रायः सुनते हैं, "उस बच्चे को दण्ड की आवश्यकता है।" परन्तु उसकी ताड़ना करना दण्ड देना नहीं है। आप भी अपने बच्चे की ताड़ना करते हैं। आप ऐसा क्यों करते हैं? उसे दण्ड देने के लिए? नहीं; उसे अनुशासन द्वारा शिक्षा देने के लिए। हमारे उद्देश्य निरूद्देश्य हो गए हैं। हम अपराधियों को अनुशासित करते हैं और अपने बच्चों को दण्ड देते हैं। हमें परमेश्वर के उद्देश्य को अपनाना है। आज हमारे स्कूल शिक्षा की नई विधि का पालन करते हैं। अनुशासन द्वारा शिक्षा देने की पुरानी विधि के बारे में आपका क्या विचार है? वह तो अब है ही नहीं। मेरे विचार में ताड़ना घर में और स्कूल में अत्यधिक आवश्यक है।

किसी ने एक पिता से पूछा, "क्या आप अपने बच्चों की पिटाई करते हैं?" पिता ने उत्तर दिया, "केवल आत्म रक्षा के लिए।" आज ऐसा ही है। बच्चे माता-पिता का लालन-पालन कर रहे है! वे माता-पिता को अनुशासन सिखा रहे हैं और उन्हें बता रहे है कि उन्हें क्या करना है। मैंने हाल ही में एक युवक के बारे में सुना कि वह अपने माता-पिता को सिखाता था कि उन्हें कैसा होना चाहिए और क्या करना चाहिए। यह युवक जमानत पर छोड़ा गया अपराधी था। मेरे विचार में उसे माता पिता को निर्देशों की आवश्यकता थी परन्तु उसके द्वारा नहीं। उन्हें अपने पुत्र को अनुशासन सिखाने के निर्देशों की आवश्यकता थी वरन् वर्षों पूर्व उन्हें यह सीखाना था।

शिक्षा का अर्थ है अनुशासनाधीन शिक्षा ग्रहण करना। परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता इस विधि में सर्वोत्तम है। मेरे विचार में, मैंने उससे बहुत शिक्षा पाई है जब वह मुझे ताड़ना के लिए ले गया। उसकी ये शिक्षाएँ अति प्रभावी थी।

"समझ की बातें समझे" समझ का अर्थ है बुद्धिमानी। इसका एक और शब्द है, "विवेक" हमें समझना है कि परमेश्वर हमसे बुद्धि अर्थात पवित्र बुद्धि को बहुतायत से उपयोग करने की आशा करता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0684

सत्यवचन

नीतिवचन 1: 4 ब - 1:14

प्रिय मित्रों,

हम नीतिवचन 1:3 पद में देखते हैं कि यहाँ पर शब्द "धर्म" है, परन्तु यह आजकल जो धर्म है उसकी बात नहीं कर रहा है।

यहाँ "धर्म" का अर्थ है धार्मिकता जिसका वास्तविक अर्थ है, "उचित व्यवहार।" हमारे समाज शास्त्र का शिक्षक कहा करता था कि "उचित" तुलनात्मक होता है। वह पूछा करता था, "उचित क्या है?" उस समय तो मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं जानता था परन्तु अब जानता हूँ कि परमेश्वर ने जिसे उचित कहा वही उचित है। मैं न तो सूर्योदय कर सकता हूँ और न ही सूर्यास्त करवा सकता हूँ। परमेश्वर ही अपने जगत का संचालन करता है। उसी ने ज्योति को बनाया है और उसी ने अन्धकार को बनाया है। परमेश्वर ही कह सकता है कि सही क्या है और गलत क्या है। अतः यदि आप पूछें कि किसी काम को करना सही है क्या, और यदि वह कहता है कि वह काम गलत है तो वह गलत ही है। सही और गलत तुलनात्मक शब्द नहीं हैं। वे केवल एक सामन्य मनुष्य की बौद्धिक उपज हैं। प्रचलित विचार यह है कि जो बुहमत कहता है, वह मापदण्ड बन जाता है। वह प्रतिमान बन जाता है। यही तो आज की बेईमानी और अनैतिकता का मुख्य कारण है। सही या उचित और गलत या अनुचित इस प्रकार तुलनात्मक हो जाते हैं परन्तु परमेश्वर कहता है कि वे ऐसे नहीं हैं। ज्योति और अन्धकार के समान वे परिशुद्ध हैं।

"न्याय" का अर्थ है निर्णय लेना। जब एक विश्वासी अपने जीवन के चौराहे पर आता है। उसे अपना मार्ग चुनना होता है - एक निर्णय लेना होता है।

एक बार मुझे दो कलीसियाओं से निमंत्रण मिला। मैं नहीं जानता था कि किस ओर जाऊँ। अतः मुझे प्रभु के समक्ष आने की आवश्यकता पड़ी और साथ ही कुछ बातों को परखने की भी और इस प्रकार मुझे ज्ञात हुआ कि कहाँ जाऊँ। हमें निर्णय लेना होता है और हमें परमेश्वर की सन्तान के सदृश्य निर्णय लेना चाहिए।

"निष्पक्षता" यह आचरण की अपेक्षा एक सिद्धान्त है। परमेश्वर की सन्तान नियमों के अधीन नहीं अति उत्तम सिद्धान्तों के अधीन है। उदाहरणर्थ, रोमियों में एक महान सिद्धान्त है, रोमियों 14:22 **तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन में रखः धन्य है वह, जो उस बात में, जिस वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता।**

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

एक विश्वासी जो भी कभी काम करे उसे उत्साह से करना चाहिए। मसीही आचरण प्रायः अंडों के छिलकों पर चलने जैसा है। मनुष्य कहते हैं, "मैं नहीं जानता कि करूँ या ना करूँ।" मित्रों, सिद्धान्त की बात तो यह है कि यदि आप उत्साहपूर्वक काम नहीं कर सकते तो उस काम को न करे। हम जो भी काम करते हैं उसे हमें बड़ी आशा, उत्साह और आनन्द के साथ करना चाहिए। हमें अपने मन में पूर्ण आश्वासन के साथ अपने काम को सही समझना है। हमें काम करने के बाद अपने विवके में दोषी नहीं ठहरना है। "धन्य है वह जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोशी नहीं ठहराता है। यदि आप बाद में कहें, "काश, मैंने तो किया होता!" तो यह आपके लिए गलत है। उन विषयों में जब धर्मशास्त्र कुछ नहीं कहता तब यह आपके मार्ग दर्शन के लिए एक महान सिद्धान्त है। यदि आप अपने कल को देखकर कहे, "हाल्लेलूय्याह, कल का दिन मेरे लिए बुहत अच्छा था।" तब आप जान ले कि आपने जो किया वह उचित काम था।

एक और सिद्धान्त है, हमें एक दूसरे की दुर्बलताओं को सहन करना है न कि स्वयं को ही प्रसन्न करना है। हमें स्वयं से एक प्रश्न पूछना है, "क्या इस काम के द्वारा मैं अपने पडोसी या मसीह में अपने भाई को दुःख पहुँचा रहा हूँ?" ये आचरण के महान सिद्धान्त है जिनके पथ प्रदर्शन में विश्वासी को रहना है।

"भोलों को चतुराई" अर्थात दूरदर्शिता अपने कार्यों में बुद्धिमानी रखना। परमेश्वर की सन्तान को मूर्ख नहीं होना चाहिए।

मुझे एक युवा दम्पत्ति को परामर्श देना स्मरण है। वे प्रचार क्षेत्र में जा रहे थे। वे आँख बन्द करके प्रचार क्षेत्र में निकल पड़े। मैंने उन्हें अपनी राय सुना दी थी कि वे इस काम में अयोग्य हैं, अतः वे वहाँ न जाएँ। उन्होंने वहाँ अपने जीवन को ध्वंस कर लिया था। वे बुद्धिमान नहीं थे। उन्होंने उस परिस्थिति में चतुराई का प्रदर्शन नहीं किया था।

आपको स्मरण होगा कि मत्ती 10 में प्रभु यीशु ने कहा, मत्ती 10:16

देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाई भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ सो सांपों की नाई बुद्धिमान और कबूतरों की नाई भोले बनो।

"जवान को ज्ञान" अर्थात उपयोगी जानकारी। मुझे अपने कॉलेज के विज्ञान विभाग के सूचना पत्र पर लिखा एक नारा आज भी याद है। "ज्ञान का अगला कदम है यह जानना कि उसे कहाँ खोजें।" यह एक कारण है कि बाइबल सदा साथ रखें और उसे पढना सीखंे। यदि आप नहीं जानते तो आप यह तो निश्चय ही जानते हैं कि कहाँ खोजें।

"विवेक" अर्थात दूसरों का ध्यान रखना। यह उन युवाओं के लिए है जो आमतौर पर दूसरों का ध्यान नहीं रखते। किसी ऐसे विश्वासी से भेंट करना जो दूसरों का ध्यान रखता है

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

वास्तव में बडें आनन्द का कारण होता है। एक बार मैं यात्रा पर जा रहा था कि मेरा एक मित्र मेरे लिए स्वेटर लेकर आया क्योंकि वहाँ ठंड थी। वह मेरा ध्यान रखता था। यह मसीही विश्वासियों का गुण है।

नीतिवचन की पुस्तक हमारी सहायता करेगी कि हम समझें कि ये अनुपम गुण हमारे जीवन में अपनाए जाने हैं।

नीतिवचन 1:6

"कि बुद्धिमान सुन कर अपनी विद्या बढ़ाए, और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए,"

अब सुलैमान हमें महापुरूषों का एक गुण बताता है। बुद्धिमान मनुष्य वह है जो मन में कभी नहीं सोचता कि उसने सब कुछ सीख लिया है।

मैं टी. वी. पर एक प्रख्यात गायक को सुन रहा था। उसकी विशेषता थी उसका अहंकार। वह सोचता था कि उसे सब कुछ आता है। मेरे विचार में उससे कोई कुछ नहीं कह सकता था। नीतिवचन की शिक्षा है, "बुद्धिमान सुनकर अपनी बुद्धि बढ़ाए और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए।"

"समझदार बुद्धि का उपदेश पाए।" इस संदर्भ में पुस्तक की यही चुनौति है। सुलैमान कहता है कि यदि आप बुद्धिमान हैं तो आप इस पुस्तक की शिक्षा स्वीकार करेंगे। परमेश्वर के आत्मा के पास नीतिवचनों में अनेक चयनीत शिक्षाएँ हैं। ये महान सत्य छोटे वाक्यों में व्यक्त हैं।

नीतिवचन 1:7 जिस से वे नीतिवचन और दृष्टान्त को, और बुद्धिमानों के वचन और उनके रहस्यों को समझें।

यही विचार नीतिवचन 25:2 में व्यक्त है,

परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।

मुझे यह शिक्षा बहुत अच्छी लगती है। परमेश्वर ने हमें सुसमाचार दिया कि छत से प्रसारित किया जाए परन्तु परमेश्वर के वचन में हीरे जैसे महान सत्य निहित हैं। परमेश्वर ने धरती पर हीरे नहीं बिखरा रखें हैं। हीरे और अनमोल बातें परमेश्वर ने गुप्त रखी हैं कि मनुष्य खोज करे। सोना, हीरे और अन्य बहुमूल्य वस्तु खोद कर खोजी जाती हैं। तेल को भी खोद कर निकाला जाता है। यह परमेश्वर की रीति है। किसी बात को गुप्त रखना परमेश्वर की महिमा है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

परमेश्वर के वचन के लिए आपका संपूर्ण अध्ययन आवश्यक है। प्रभु यीशु ने कहा था कि धर्मशास्त्र में तुम अनन्त जीवन खोजते हो। उसने यह नहीं कहा कि धर्मशास्त्र की खोज करने की आवश्यकता नहीं है। तुम सोचते हो कि तुम्हें अनन्त जीवन मिल गया परन्तु तुमने वास्तव में धर्मशास्त्र की खोज नहीं की है। आप बाइबल को पढ़ते आ रहे हैं परन्तु आपको उसमें निहित सन्देश नहीं मिलता है। वहाँ जो वास्तविक धन है वह प्रभु यीशु है। यूहन्ना 5:39

तुम पवित्र शास्त्र में ढूँढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।

मेरे मित्रों, यदि आपने बाइबल में प्रभु यीशु को नहीं पाया तो आप हीरों की खोज नहीं कर रहें हैं। आपने गहरी खुदाई नहीं की हैं। "जिस से वे नीतिवचन और दृष्टान्त को, और बुद्धिमानों के वचन और उनके रहस्य को समझें।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने इन महान सत्यों को अपनी इस पुस्तक में छिपा रखा है। आज की त्रासदी यह है कि न तो प्रचारमंच पर और न ही बेंचों में परमेश्वर के वचन का ज्ञान है। परमेश्वर के वचन की गंभीर और एकाग्रचित्त समझ अति आवश्यक है। आज हम लोगों का सोचना है कि एक बार बाइबल से कुछ पढ़ा तो आपकी समझ में सब आ गया। मुझे तो पूरा विश्वास है कि आप अध्ययन बिना परमेश्वर के वचन से मोती नहीं निकाल सकते।

अमेरिका के फ्लोरिडा नगर में थॉमस एल्वा एडिसन के घर और प्रयोगशाला में जाना बड़ा ही आनन्ददायक लगता है। वहाँ पर एक संग्रहालय है। मेरे आश्चर्य का विषय यह है कि कृत्रिम रबर की खोज जो उसने की थी। एडिसन लगभग एक उपलब्ध वस्तु पर प्रयोग करके कृत्रिम रबर की खोज में था और आप जानते हैं कि उसने पीले फूल में से कृत्रिम रबर बनाया। यदि मैं होता तो शायद फूल में रबर खोजना मेरा अन्तिम प्रयास होता।

मैं सोच रहा था कि उन्होंने कृत्रिम रबर की खोज में कितना समय लगाया होगा जबकि परमेश्वर का वचन जिसमें वास्तविक खोज और अध्ययन की अनेक मूल्यवान बातें है, उस पर कितना कम समय दिया जाता है। हमारे लिए नीतिवचन की पुस्तक की चुनौति है, "गहराई में जाओ।" उसमें गंभीर अध्ययन की चुनौति है।

तीमुथियुस में पौलुस कहता है, 2 तीमुथियुस 2:15 **"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।**

पुस्तक का मुख्य पद नीतिवचन 1:7 है

नीतिवचन 1:7 "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।"

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यह बड़ी रोचक तुलना है, "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल हैं, और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।" वे कभी नहीं सीखते हैं।

मैं आपको एक व्यंग द्वारा इसका उदाहरण देता हूँ। एक मुनष्य कार से जा रहा था कि उसकी कार का टायर पंचर हो गया। उसने टायर के नट खोले और पहिये के ढक्कन में रख दिये। अब दूसरा पहिया लेने उठा तो ठोकर लगने के कारण उसके नट नाले में गिर गए। अब वह सिर खुजलाता सोच रहा था कि क्या करे। सड़क की दूसरी ओर पागलखाना था। वहाँ एक पागल खड़ा उसे देख रहा था। उसने कहा, "तीनों पहियों में से एक एक नट निकाल के लगा दे और जब आगे जाकर दुकान मिले तो नट खरीद कर लगा लेना। वह सोचने लगा, "मैं ऐसा क्यों नहीं सोच पाया?" उसने उस पागल मनुष्य से कहा, "आप अन्दर है और मैं बाहर हूँ परन्तु मेरी बुद्धि में यह बात नहीं आई।" उसने कहा, "मैं पागल हूँ, मूर्ख नहीं।" नीतिवचन की यह पुस्तक आपको और मुझे जीवन में मुर्खता से उबारना चाहती है। मेरे विचार में हम इसमें सहायता का महान स्रोत पाएँगे। इस पुस्तक में मुर्खता के बारे में बहुत कुछ कहा गया है।

नीतिवचन 1:8-9

हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज; क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट, और तेरे गले के लिये कन्ठ माला होगी।

यह एक अति महत्वपूर्ण पारिवारिक संबन्ध है। हम में से अनेक विश्वासी माता पिता की सन्तान रहे हैं। आपने जो अपने माता-पिता से सीखा है उसे संभवतः कभी भुला न पाएँगे और न ही उससे कभी भटकेंगे। दुसरी ओर परमेश्वर उन माता-पिता पर दया करे जो अपने बच्चों को परमेश्वर की बातों की शिक्षा नहीं दे रहे हैं।

घर से बाहर परीक्षा

नीतिवचन 1:10 हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाए, तो उनकी बात न मानना।

अब घर से बाहर की बात आती है। जब बच्चा बाहर जाता हे तब वह सबसे पहले किससे भेंट करता है? एक पापी से उसकी भेंट होना सामान्य है क्योंकि संपूर्ण मानव जाति पाप में गिरी हुई है। वह प्रभु यीशु के निकट नहीं आई है। हम सब पापी हैं, परन्तु वह बालक उद्धार से वंचित मनुष्यों के संपर्क में आता है। अब उसे क्या करना चाहिए? "उनकी बात न मानना।"

आपको स्मरण होगा कि मैंने कहा था कि आप इस पुस्तक में ऐसा नीतिवचन भी देखेंगे जो बाइबल के नायकों से मेल खाते हैं। यह भी संभव है कि आप अपने मित्रों से मेल खाता हुआ नीतिवचन भी देखेंगे परन्तु उन्हें बताना न चाहोगे। यह एक नीतिवचन है जो बाइबल के किसी नायक से मेल खाता है। आपके विचार में क्या यह नीतिवचन यूसुफ के लिए उपयुक्त नहीं जब वह मिस्र देश में दासत्व ले जाया गया था और वहाँ पोतिपर की पत्नी उसे ललचा रही थी परन्तु

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

उसने उसकी बात न मानी। यह नीतिवचन उसके अनुभव का उदाहरण है।

नीतिवचन 1:11-13 यदि वे कहें, हमारे संग चल कि, हम हत्या करने के लिये घात लगाएँ हम निर्दोषों की ताक में रहें; हम अधोलोक की नाई उनको जीवता, कबर में पड़े हुओं के समान समूचा निगल जाएँ; हम को सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे, हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे;

पापी की योजना एवं कार्यक्रम ऐसे होते है कि बिना कुछ दिए सब कुछ प्राप्त किया जाए। वह किसी न किसी पर निर्भर करके जीवन निर्वाह करता है और अपनी समृद्धि के लिए किसी और को कष्ट देता है।

नीतिवचन 1:14 - तू हमारा साझी हो जा, हम सभों का एक ही बटुवा हो,

यह आज की धारणा है, "हम सभों का एक ही बटुआ हो।" वे जो इस सिद्धान्त पर चलते हैं स्वयं कुछ नहीं करते। वे एक ही लालसा करते हैं कि कोई कमा कर लाए और उन्हें दे। वे अपना योगदान नहीं करते हैं। यह है तो अनर्थकारी सिद्धान्त परन्तु युवाओं में यह एक आम अभ्यास है। यह आज के युवाओं की मनोवृति है। येन केन प्रकरेण, कुछ किए बिना कुछ पाओ।

मुझे याद है कि मुझे एक दुकान में कुछ समय के लिए काम करने का मौका मिला। मैं अन्य युवकों के साथ वहाँ काम करने लगा। उन्होंने एक ऐसी विधि खोजी जिसके द्वारा वे टॉफियों के डब्बे में से टॉफी निकाल लेते थे। वह थोक विक्रेता की दुकान थी और प्रत्येक डब्बे में से एक एक टॉफी निकाल कर वे अपने लिए अनेक डब्बे तैयार कर लेते थे। पहले दिन तो मैंने उनका साथ दिया परन्तु उस रात मेरे विवेक ने मुझे कोसा और मैंने निर्णय लिया कि वह काम अनुचित था।

अगले दिन मैंने ईमानदारी से काम किया परन्तु टॉफियाँ लौटा नहीं पाया क्योंकि मैंने उनमें से कुछ टॉफियाँ खा ली थी। फिर ऐसा हुआ कि वहाँ के प्रबंधकर्ता ने मुझे छः टॉफियों का डब्बा थोक के भाव पर ही देना आरंभ कर दिया और मैं उन्हें कार्यालय के कर्मियों को बेचा करता था। इस प्रकार मुझे एक डब्बा मुफ्त बच जाता था। मैं इस प्रकार अपनी टॉफिया परिश्रम करके कमाता था। मेरे विचार में यही सही था।

गलत करनेवालों की बातों में आ जाना युवाओं के लिए बड़ा आसान काम होता है। काम करते समय भी समय गंवाने वालों की संगति में पड़ जाना बड़ा आसान होता है। ऐसे कामों में साथ देना आसान है। यही कारण है कि जब युवक घर से बाहर निकलता है तो ऐसे कामों में साथ देना उसे बुरा नहीं लगता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0685

सत्यवचन

नीतिवचन 1: 15 - 2:9

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 1:15

तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग में न चलना, वरन् उनकी डगर में पाँव भी न धरना;

बाइबल ऐसे अलगाव पर अति स्पष्ट है। 2 कुरिन्थियों 6:17 में लिखा है,

इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु काहे मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा।

यद्यपि यह मूर्ति उपासना के विषय कह रहा है परन्तु यह विचार यहाँ भी लागू होता है, "उस दुष्ट संगति से अलग रहो जिसमें तुम अब तक थे।"

नीतिवचन 1:16-18

क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते हैं, और हत्या करने को फुर्ती करते हैं। क्योंकि पक्षी के देखते हुए जाल फैलाना व्यर्थ होता है; और ये लोग तो अपनी ही हत्या करने के लिये घात लगाते हैं, और अपने ही प्राणों की घात की ताक में रहते हैं।"

ऐसे काम आपको विनाश की ओर ले जाएँगे। आप अपने ही जाल में फँस जाएँगे।

नीतिवचन 1:19

सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है; उनका प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है।

यह लालच के मूल का तिरस्कार है। आज का हमारा युग भौतिकवाद का है। एक कॉलेज प्रोफेसर ने लिखा कि हमें कॉलेजों को व्यर्थ के भौतिकवाद से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए, उनके विचार में, धर्म की शिक्षा आवश्यक है। कोई तो है जो जाग रहा है! आज का एक महापाप, लालसा है वस्तुओं के लिए अभिलाशा। नीतिवचन इसी का तिरस्कार का रहा है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

बुद्धि का निमन्त्रण

नीतिवचन 1:20

बुद्धि सड़क में ऊँचे स्वर से बोलती है; और चौकों में प्रचार करती है;

बुद्धि युवकों को कुछ सीखते का निमन्त्रण दे रही है। उन्हें उसकी शिष्यता में आना है।

नीतिवचन 1:21-22

वह बाजारों की भीड़ में पुकारती है; वह फाटकों के बीच में और नगर के भीतर भी ये बातें बोलती हैः हे भोले लोगो, तुम कब तक भोलेपन से प्रीति रखोगे? और हे ठट्ठा करनेवालो, तुम कब तक ठट्ठा करने से प्रसन्न रहोगे? और हे मूर्खों, तुम कब तक ज्ञान से बैर रखोगें?

"भोले" अर्थात मूर्ख। बुद्धि पूछती है, "तुम कब तक मूर्ख बने रहोगे।" एक 20 वर्षीय युवक ने मुझे बताया कि वह तीन वर्ष नशीले पदार्थों के सेवन का आदि था। वह बार-बार कहता था, "मैं कैसा मूर्ख था!" यही तो मुख्य प्रश्न है, "तुम कब तक मूर्खता से प्रीति रखोगे?" तुम बुद्धि की पाठशाला में पढ़ोगे?"

नीतिवचन 1:23

तुम मेरी डाँट सुनकर मन फिराओ; सुनो, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे लिये उंडेल दूँगी; मैं तुम को अपने वचन बताऊँगी।"

अब अध्याय के अन्त में आ जाइए नीतिवचन 1:32

क्योंकि भोले लोगों का भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा, और निश्चिन्त रहने के कारण मूढ़ लोग नाश होंगे;

प्रभु यीशु से अलग हो जाना आत्मिक आत्महत्या है।

नीतिवचन 1:33

परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और बेखटके सुख से रहेगा।

यह कैसी उत्तम बात है। आज हम बैंको के खातों से मनुष्य का मान आंकते हैं, उसका घर, उसकी कार आदि। क्या हम मूर्खों की समृद्धि का आनन्द ले रहे हैं? क्या हम मूर्खों के स्वर्ग में वास करते हैं?

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 2

मैं फिर कहता हूँ कि नीतिवचनों का यह संग्रह लापरवाही से किया गया संग्रह नहीं है। यहाँ एक कहानी का वर्णन है जो परस्पर क्रमबद्ध है। यह युवाओं के लिए बुद्धिमान होने की चुनौति है। उससे प्रबोधन किया जा रहा है कि ज्ञान बढ़ाने के लिए सुने। उसे माता-पिता से सुनकर आरंभ करना है। स्कूल जाने से पूर्व उसे घर में शिक्षा ग्रहण करना है। चाहे वह पी. एच. डी. कर ले घर की शिक्षाएँ सदा उसके लिए उपयोगी ठहरेगी। "परमेश्वर का भय मानना बुद्धि का मूल है।"

परमेश्वर के बारे में जानकारी पाने के लिए उसके वचन को पढ़ना चाहिए। मुनष्य प्रायः कहता है कि आपको बहुत बुद्धिमान होना है और आपको अपना बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा रखना है। अन्यथा परमेश्वर का वचन समझना कठिन है। यह सत्य नहीं है। परमेश्वर नहीं कहता कि यह आवश्यक है। इस अध्याय में जब युवक जीवन आरंभ करता है तो स्पष्ट किया गया है कि उसे परमेश्वर का वचन और उसकी इच्छा जानना है तो उसे वचन का अध्ययन करना होगा। वह जीवन के मार्ग में टालम-टोल नहीं कर सकता और न ही फूल चुन सकता है। उसे अपना मन बुद्धि की बातों में लगाना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि उसे परमेश्वर का वचन पढ़ना होगा।

बुद्धि का स्रोत

नीतिवचन 2:1

हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े।

"हे मेरे पुत्र," स्पष्ट है कि निर्देशन पाने वाला एक युवक है। उसका आरंभ एक बालक के रूप में परिवार में होता है और वह बाहर के जीवन का सामना करने के लिए तैयार हो रहा है और उसे कोई बुद्धिमान मनुष्य परामर्श दे रहा है। संभवतः उसका पहला पाठ है जिसकी शिक्षा उसे आज के स्कूलों में नहीं मिलेगी।

"यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे।" परमेश्वर की बातों को मानना आवश्यक है। उसकी आज्ञाओं से मन को भर लेना है। उन्हें अपने कीमती सामान के साथ जमा कर लो। मैं एक ऐसे मनुष्य को जानता हूँ जो अपने सेफ को देखने प्रति सप्ताह जाता है क्योंकि उसने कोई कीमती सामान वहाँ रखा है कि उसे जाँचे। वह अपने धन के स्थान पर जाना चाहता है। एक महिला ने बहुमूल्य गहने एकत्र कर रखे हैं और वह उन्हें बार-बार देखना पसन्द करती है। परमेश्वर का

WORD RESOUNDS TODAY
www.Radio882.com

वचन भी इसी प्रकार एकत्र करके छिपा रखना चाहिए। "मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़।"

नीतिवचन 2:2

और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे;

"ध्यान से सुन" अर्थात कान खुले रख। किसी बात को सिर में घुसने के लिए कान से प्रवेश करना आवश्यक है पर उसका अन्तिम स्थान उसका हृदय होता है। परमेश्वर का वचन हृदय में पहुँचते ही समझ उत्पन्न करता है।

उसके आदेश, आग्रह और चुनौति का अन्त नहीं होता है।

नीतिवचन 2:3

और प्रवीणता और समझ के लिये अति यत्न से पुकारे।

प्रेरित पतरस कहता है, 1 पतरस 2:2

नये जन्में हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।

क्या आपने कभी किसी शिशु को देखा है, जब उसकी माता उसके लिए दूध की बोतल तैयार करती है। वह कैसे दूध के लिए हाथ पाँव फेकते हुए मचलता है। वह दूध की लालसा करता है। परमेश्वर की सन्तान को भी वचन रूपी दूध के लिए वैसे ही मचलना चाहिए। मैंने आज के आत्मिक अभियानों में कुछ ऐसा ही देखा है। वहाँ आप परमेश्वर के वचन में एक नया जोश देखते हैं। मैं अनेक युवाओं को टिप्पणियाँ लिखते हुए देखता हूँ। मैं अनेक स्थानों में प्रचार करने जाता हूँ और कह सकता हूँ कि वहाँ परमेश्वर का आत्मा काम करता है जिसका प्रमाण वचन के प्रति मनुष्य की लालसा है।" समझ के लिए अति यत्न से पुकारे।" स्मरण रखें कि परमेश्वर का भय मानना बुद्धि का मूल है।

"पुकारे" यदि विद्यार्थी आवाज़ उठाए तो मैं ऐसी पुकार सुनना चाहता हूँ। "हमें समझ की आवश्यकता है!" यह युवकों के लिए परामर्श है, समझ के लिए अति यत्न से पुकारे।"

नीतिवचन 2:4 - और उसको चान्दी की नाई ढूँढ़े, और गुप्त धन के समान उसी खोज में लगा रहे;

अमेरिका में एक स्थान मृत्यु की घाटी कहलाता है। क्योंकि वह रेगिस्तान क्षेत्र था और वहाँ चाँदी की खदानें थी जो प्राणघातक थी। वहाँ चाँदी पाने के लिए आनेवाले अनेक मुनष्यों ने जान गँवाई थी। चाँदी के समान खोजे। ऐसे जैसे वह अति मूल्यवान वस्तु है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 2:5 - 'तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।

वह ऐसे विशय में बातें कर रहा है जो सिर्फ आध्यात्मिक बाइबल पठन से कही बढ़कर है। मैं बाइबल पढ़ने मात्र में विश्वास नहीं करता क्योंकि मैं अनेकों को जानता हूँ जो वर्षों से बाइबल पढ़ रहे हैं परन्तु उनका ज्ञान घास चर रही बकरी से अधिक नहीं है। आप अपने मन-मस्तिक को धार्मिकता का आवरण पहना कर कुछ बाइबल पढ़ ले तो आवश्यक नहीं कि आपने वचन की शिक्षा ग्रहण कर ली है। वचन को अन्तग्रहण करने के लिए कान खुले रखना, अपने मन को उस में लगाना और उसके लिए मचलना होगा। आपको पुकारना होगा, चाँदी की तरह उसे खोजना होगा। आपको एक छिपे हुए खज़ाने के समान उसे खोजना होगा। ऐसा यत्न करके ही आप कुछ सीख पाएँगे। इस प्रकार आप समझ पाएँगे कि परमेश्वर का भय क्या है। और परमेश्वर का ज्ञान आपको प्राप्त होगा।

मैं एक बाइबल स्कूल में पढ़ा रहा था और वहाँ अति धर्मी विद्यार्थी आकर परिक्षा की सुबह कहते थे, "सर जी, कल रात हम प्रार्थना सभा में गए थे।" मैं उनसे पूछता था, "आपने किस बात के लिए वहाँ प्रार्थना की?" वे मुझे बताते कि उन्होंने अपने देश के लिए प्रार्थना की, और कुछ अन्य कहते देशों के लिए भी प्रार्थना की। मैं उनसे पूछता, "आप जानते है कि आपके लिए कल रात प्रार्थना करने का मुख्य विषय क्या था? आपको कल रात प्रार्थना करने की आवश्यकता ही नहीं थी।" वे आश्चर्यचकित हो कहते थे, "हमें प्रार्थना नहीं करनी चाहिए।" मैं उन्हें नीतिवचन 2 दिखाता और कहता, "कल रात तुम्हारा समय खुदाई करने का था। खोज करने का समय था। यहाँ प्रार्थना करने की कोई बात नहीं कही गई है।" वे स्कूल में परमेश्वर का वचन सीखने आए हैं। मैं उन्हें परिक्षा से छुट्टी कभी नहीं देता था चाहे वे प्रार्थना सभा का ही कारण क्यों न दे।

कुछ को बाइबल पढ़ने की शिक्षा दी गई है। वे बाइबल का एक अंश पढ़ कर बाइबल को तकिये के नीचे रख देते हैं। मैं ऐसों से सदैव यही कहता हूँ।" बाइबल तकिये के नीचे रखने से उसमें निहित ज्ञान आपके मस्तिक में नहीं घुसेगा। परमेश्वर का वचन सीखने की रिति यह नहीं है।"

मुझे स्मरण है कि हमारे सेमीनरी अध्ययन में हमें एक बड़ी ही अरूचिकर पुस्तक पढ़ने को दी गई थी। वह भी हमारी परिक्षा के पाठ्यक्रम में थी। अतः किसी ने प्रोफेसर साहब से कहा, "सर जी यह पुस्तक बड़ी ही अरूचिकर है।" प्रोफेसर ने उŸार दिया, "उसे अपने पसीने से तर कर लो।"

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

परमेश्वर का वचन सीखने के लिए ऊट-पटांग तरिका काम में नहीं लिया जा सकता है। परिश्रम से गहराई नापने की अपेक्षा अन्य कोई और तरिका नहीं है परन्तु इसमें उच्च बौद्धिक स्तर की आवश्यकता नहीं है। अगला पद देखें:

नीतिवचन 2:6

क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं।

यदि आपको बुद्धि की आवश्यकता है तो परमेश्वर से मांगो।

1 कुरिन्थियों 2:9-10 में पौलुस कहता है, जैसा लिखा है,

जो बातें आँख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।

ये बातें परमेश्वर का आत्मा हम पर प्रगट करता है। वह आज हमारा शिक्षक होने के लिए भेजा गया है। मैंने अपनी युवावस्था में यह सत्य सीखा था कि परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर की बातें मेरे लिए खोलेगा। यह एक अद्भुत सत्य है। यही कारण है कि जिनके पास बड़ी-बड़ी उपाधियाँ नहीं हैं, वे परमेश्वर के वचन के ज्ञान में दक्ष हैं।

सेवकाई में मेरी युवावस्था के दिनों सुबह 6 बजे पासबानों के लिए रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया जाता था। पासबान अधिकतर उसे नहीं सुनते थे परन्तु युवा और अविवाहित होने के कारण मैं उसे सुनता था। मैं परमेश्वर का वचन सिखाने का प्रयास तो करता था परन्तु किसी को रूचि नहीं थी। वहाँ से प्रतिदिन एक महिला निकलती थी और वही मेरी अध्ययन शिक्षा सुनती थी। एक दिन मैं सुचनापटल पर कुछ लगा रहा था। वह आई और कहने लगती, "सर जी, मैंने आपका सुबह का कार्यक्रम सुना।" और फिर वह कार्यक्रम के विषयों पर चर्चा करती रही। उसमें सच्ची आत्मिक बुद्धि थी। उसने केवल स्कूल तक की ही शिक्षा प्राप्त की थी परन्तु मैं कहता हूँ कि उसमें कलीसिया के किसी भी सदस्य से अधिक आत्मिक ज्ञान था। उसके पास एक बाइबल थी और परमेश्वर ने उसे बुद्धि दी थी। मैंने उसकी बाइबल से अधिक पुरानी बाइबल किसी की नहीं देखी है। वह उसे पढती थी और उसे समझती थी क्यांेकि उसने पवित्र आत्मा को अपना शिक्षक बनाया था। "बुद्धि यहोवा ही देता है।"

डॉ. हेरिए. आयरनसाइड ने कहा था, "यह भययोग्य बात है कि वे जो अनमोल सत्यों को समझते और उनका मान रखते हैं, उनमें यत्नशील बाइबल अध्ययन घटता जा रहा है।" मुझे भय है कि यह आज भी सत्य है जबकि मैं यह लिख रहा हूँ और बाइबल अध्ययान में रूचि की वृद्धि हो रही है। "बुद्धि यहोवा ही देता हैं; ज्ञान और समय की बातें उसके मुँह से निकलती

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

हैं।" हम उसकी बातें कैसे सुन सकते हैं? मैं सदा कहता हूँ कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर इस पुस्तक के द्वारा हमसे बातें करता है।

नीतिवचन 2:7-8

वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है। वह न्याय के पथों की देख भाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।

आज अनेक विश्वासी अन्धकार में हैं। वे नहीं जानते कहाँ जाएँ। उनकी समस्या का कारण स्पष्ट है कि वे परमेश्वर के वचन से बुहत दूर हैं। इस पुस्तक में हमें परमेश्वर जो कहता है, वह दिया गया है। परमेश्वर का वचन खराई से चलने वालों के लिए ढाल ठहरता है। वह अव्यवस्थित काम नहीं करता है। आपको परमेश्वर के वचन की खोज करना होगा।

नीतिवचन 2:9

तब तू धर्म और न्याय, और निषपक्षता को, अर्थात सब भली-भली चाल को समझ सकेगा;

देश के अगुवे स्वयं परमेश्वर के वचन की अगुवाई करना चाहते है। वे जिसमें परमेश्वर के वचन में प्रगट सत्य के सामर्थ्य को पाने की लालसा है उसके लिए परमेश्वर एक ढाल है। वह उनकी रक्षा करेगा और न्याय के मार्ग में उन्हें थामें रहेगा।

मुझे लोग पत्र में लिखते हैं, "मै। देख सकता हूँ कि आप सत्य को थामनेवाले हैं।" मुझे सुनकर अच्छा लगता है परन्तु मात्र यही पर्याप्त नहीं। महत्वपूर्ण तो यह है कि सत्य मुझे जकड़ ले। इन दोनों बातों में महान अन्तर है। हमें चिताया गया है। मैं उनकी श्रेणी में गिना जाना नहीं करना चाहता हूँ। मैं बड़े-बड़े शब्दों का उपयोग नहीं करना चाहता हूँ। मै। भविष्यद्वाणियों या युगों के ज्ञान या कलीसियाई तथ्यों या दर्शनशास्त्र या मनोविज्ञान पर चर्चा करना नहीं चाहता हूँ। इसकी तो चारों ओर कोई नहीं है। हमें आवश्यकता है उन मनुष्यों की जो धर्म और न्याय और निष्पक्षता को अर्थात सब भली-भली चाल को समझें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0686

सत्यवचन

नीतिवचन 2: 10 - 3:10

प्रिय मित्रों,

युवक के बैरी

नीतिवचन 2:10-12

क्योंकि बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तुझे मनभाऊ लगेगा; विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी; ताकि तुझे बुराई के मार्ग से, और उलट फेर की बातों के कहने वालों से बचाए।

"बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी।" और ज्ञान तुझे सुख देनेवाला लगेगा।" आप आसानी से छले नहीं जाएँगे। परमेश्वर के वचन में बने रहने के कारण आप भ्रम में नहीं पडंेगे।

नीतिवचन 2:13-15

जो सीधाई के मार्ग को छोड़ देते हैं, ताकि अन्धेरे मार्ग में चलें; जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं, और दुष्ट जन की उलट फेर की बातों में मगन रहते हैं; जिनकी चालचलन टेढ़ी-मेढ़ी और जिनके मार्ग बिगड़े हुए हैं।

मैं जब से सेवा में आया हूँ तब ही से मेरी प्रार्थना यही रही है, "हे प्रभु, दुष्टों को मुझ पर हावी न होने देना।" मेरे मित्रों, वे हमारे चारों ओर हैं। नीतिवचनों में हम देखेंगे कि परमेश्वर की रचना के दो बैरी हैं, "दुष्ट जन" और "अपरिचित स्त्री।"

युवक अपने जीवन में कदम रख रहा है तो उसे सचेत किया जा रहा है कि वह दुष्टों से संभल कर रहे। उनकी संगति करना युवकों के लिए घातक सिद्ध होगा। मेरे मित्र के पिता की मृत्यु के समय वह केवल 16 वर्ष का था और उसे नौकरी करने की आवश्यकता पड़ी। वह एक कार कंपनी में नौकरी करने लगा। वह वहाँ गलत लोगों की संगति में पड़ गया। वह ऐसी जगह जाने लगे जहाँ उसे एक नये संसार को देखने का अवसर मिला परन्तु उसका विवके उसे दोषी ठहरा रहा था। अतः वह घर लौट आया। वहाँ उसेे एक पास्टर ने बताया कि वह कैसे परमेश्वर के साथ शान्ति संबंध बना सकता है और विश्वास द्वारा धार्मिकता में आ सकता है, परन्तु वह उन दुष्ट जनों को कभी नहीं भूल सकता। इसलिए युवकों को उनसे सावधान रहना है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

युवक को एक और मनुष्य से सावधान रहना है वह है - **अपरिचित स्त्री।**

नीतिवचन 2:16-22

तब तू पराई स्त्री से भी बचेगा, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है, और अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती, और जो अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है। उसका घर मृत्यु की ढलान पर है, और उसकी डगरें मरे हुओं के बीच पहुँचाती हैं; जो उसके पास जाते हैं, उन में से कोई भी लौटकर नहीं आता; और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं। तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल, और धर्मियों की बाट को पकड़े रह। क्योंकि धर्मी लोग दश में बसे रहेंगे, और खरे लोग ही उस में बने रहेंगे। दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे, और विश्वासघाती उस में से उखाड़े जाएँगे।

यह अपरिचित स्त्री कौन है? इस्राएल के लिए परमेश्वर का नियम था कि कोई भी स्त्री वेश्यावृति में न पडे। मुझे पूरा विश्वास है ऐसा कार्य करने पर उस स्त्री को इस्राएल से बाहर निकाल दिया जाता था और उसे पापिन गिनी जाता था। और अनजान मनुष्य एक अन्यजाति है जिस के साथ ऐसी स्त्री देह का व्यापार करने आती थी। अतः अन्यजाति स्त्री एक गैर इस्राएली है जो इस्राएल में देह व्यापार के लिए आती थी। युवक को उसके बारे में चेतावनी दी गई है। उसे स्पष्ट बताया गया है कि उसका अन्त क्या होगा। "जो उसके पास जाते हैं, उनमें से कोई भी लौटकर नहीं आता; और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं।" परमेश्वर उसके विरूद्ध चेतावनी देता है।

आज के युग में यौन संबन्धों की स्वतंत्रता के कारण एड्स महामारी का रूप धारण कर चुका है। मैं युवास्था में एक संस्था का सदस्य था। उस संस्था का अगुवा डाक्टर था। उसने हम युवाओं की सभा बुलाई क्योंकि हम युवा बहुत अधिक बाहर जाते थे। उसकी बातें सुनकर मैं आतंकित हो गया। आज कहा जाता है कि हमें अपने युवावर्ग को डराना नहीं चाहिए परन्तु मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उस डाक्टर ने हमें डराया ही नहीं हमें चिताया भी। यहाँ नीतिवचन का लेखक ठीक यही कर रहा है। वह युवकों को दुष्ट जनों और पराई स्त्री के प्रति सचेत कर रहा है।

WORD RESOUNDS TODAY

अध्याय 3

अब आता है युवक के दायित्व वहन का विषय। उसका प्रत्येक कदम उŸारदायित्व से पूर्ण होना चाहिए। वह घर से निकलकर जीवन में प्रवेश कर चुका है जहाँ वह वास्तविकता के संपर्क में आता है। उसे चिताया जा रहा है कि उसका चाल-चलन परमेश्वर के वचन के अनुकूल होना चाहिए। यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण बात है। मेरा एक जानकार व्यापारी है उसने हज़ारों युवकों को नीतिवचन की प्रतियाँ बाँटी हैं क्योंकि उसके विचार में युवकों का आचरण ऐसा ही होना चाहिए।

"बुद्धि" को यहाँ स्त्री रूप या स्त्रीलिंग में प्रगट किया गया है परन्तु हमारे लिए

www.Radio882.com

बुद्धि प्रभु यीशु के मनुष्य रूप में है। **1 कुरिन्थियों 1:30 में पौलुस कहता है:**

परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।

आज युवाओं को प्रभु की ही आवश्यकता है।

युवक को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना है

नीतिवचन 3:1

हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;

यह भी "मेरे पुत्र" को निर्देश है। हमारे अध्ययन की पृष्ठभूमि यहूदी संस्कृति है परन्तु आज के युग में भी इसका महान महत्व है।

"अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखें रहना।" क्या यह एक रोचक बात नहीं? यह कर्तव्यपालन से बढ़कर है। मैं प्रायः सुनता हूँ, "मसीही विश्वासी होने के नाते हमारा यह कर्तव्य है।" मेरे मित्रों, आपको मेरी बात अच्छी तो नहीं लगेगी परन्तु यह हमारा कर्तव्य नहीं परमेश्वर की इच्छा के निमिŸा हमारी प्रेम से पूर्ण भक्ति भी है। आपको स्मरण होगा कि भजन 119:11 में भजनकार कहता है:

मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूँ।

युवा एज्रा के बारे में वचन कहता है कि उसने यहोवा की व्वस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिए अपना मन लगाया था।(एज्रा 7:10) मन को ऐसी तैयार होना आवश्यक है। यीशु ने अटारी में अपने शिष्यों से मन खोलकर कहा, अब तक अप्रगट बातों की आत्मीयता से चर्चा की थी -यूहन्ना 14:23

यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।

मेरे मित्रों, क्या आप उससे प्रेम रखते हैं? यदि आप उससे प्रेम रखते हो तो वह आपसे बात करना चाहेगा। हम इसे कर्तव्य परायणता के आधार पर न रखें। एक दिन मुझे किसी ने कहा, "मेरे विचार में, आप टी,वी पर उपदेश करते हैं तो आपका यह उत्तरदायित्व है कि आप कहें,..." मेरे भाई, आप उत्तरदायित्व की बात भूल जाएँ। मैं प्रभु यीशु से प्रेम करता हूँ और मेरी समझ में जो उसकी इच्छा है, उसे पूरी करता हूँ। वह मुझसे कहता है कि उसके वचन को सुनाउँ तो मैं उसके वचन को आप तक पहुंचा रहा हूँ। वह आज बीज बो रहा है और मैं उसकी अगुवाई में बीज बो रहा हूँ। मैं यह इसलिए करता हूँ कि मैं उससे प्रेम करता हूँ। "यदि कोई मुझसे से प्रेम रखेगा तो मेरे वचन को मानेगा।"

पतरस इस बात को निश्चय ही समझ गया था। उसने प्रभु यीशु का इन्कार किया था। यह एक अत्यधिक भयानक बात थी। पुनरूत्थान के बाद प्रभु यीशु ने गलील सागर के तट पर भोजन तैयार किया था और जब पतरस वहाँ आया तब क्या यीशु ने उससे पूछा था, "तूने

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

मेरा इन्कार किया था?" नहीं, उसने पूछा: यूहन्ना 21:17,

उस ने तीसरी बार उस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? पतरस उदास हुआ, कि उस ने उसे तीसरी बार ऐसा कहा; कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? और उस से कहा, हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता हैः तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँः यीशु ने उस से कहा, मेरी भेड़ों को चरा।

मेरे मित्रों, यदि आप उससे प्रेम रखते है तो जीवन और समृद्ध और अधिक अनुपम बन जाता है।

नीतिवचन 3:3

कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ; वरन उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।

"कृपा" अर्थात प्रेमपूर्ण दया। व्यवस्था तो मूसा के द्वारा आई परन्तु अनुग्रह और सच्चाई प्रभु यीशु लाया। यह प्रेमपूर्ण दया क्या है? यह अनुग्रह है जो दया से अधिक है। एक बार एक शिक्षक ने एक छोटी लड़की से पूछा, "दया और प्रेमपूर्ण दया में क्या अन्तर है?" उसने उत्तर दिया, "यदि आप अपनी माता से डबलरोटी और मक्खन माँगे और वह आपको दे दे तो यह उसकी दया है और यदि वह उस पर जेम भी लगा दे तो यह उसकी प्रेमपूर्ण दया है।" मेरे मित्रों, परमेश्वर ऐसा ही करता है। ये तुझ से अलग न होने पाएँ। "उनको अपने गले का हार बनाना। और अपनी हृदयरूपी पट्टी पर लिखना।"

नीतिवचन 3:4

और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

यह अति अद्भुत बात!

अब अगले दो पद चिरपरिचित पद हैं।

नीतिवचन 3:5-6

तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वे तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

जब किसी से उनके मनभावन पद पूछे जाते हैं तब वे इन पदों को सुना देते हैं। मैंने हज़ारों सभाओं में इन पदों को सुना है। कभी कभी मैं सोचता हूँ कि क्या उन्हें यह पता है कि ये पद गहरी सच्चाई से उभरे हैं। हमें स्मरण रखना है कि ये पद उस मुनष्य के लिए दिए गए हैं जो यत्न से परमेश्वर के वचन की खोज करता है। जो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करता है। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा 2 तीमुथियुस 2:15

"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

हमें परमेश्वर के वचन को पढ़कर और प्रेमपूर्ण दया के बारे में जानकार, परमेश्वर

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

के अनुग्रह और सत्य के बारे में जानकर उनमे स्थिर रहना है। "संपूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"

यह एक अति पावन प्रबोधन है और शान्ति के मार्ग में अगुवाई का अद्भुत विश्वास उत्पन्न कराता है। इसकी तुलना नीतिवचन 28 से करें, नीतिवचन 28:26:

जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है; और जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है।

मुझे किसी ने बताया कि नशा करने वालों के बीच सेवा करते समय उसने किसी से कहा, "मेरे दोस्त परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।" उस युवक ने कहा, मुझे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं कि वह मुझसे प्रेम करे। मैं अपने आप से प्रेम करता हूँ। मुझे परमेश्वर पर विश्वास करने की आवयकता नहीं, मुझ में आत्मविश्वास है। "काश वह उपदेशक उसे यह पद सुनाता, "जो अपने ऊपर भरोसा रखता है वह मूर्ख है।"

दूसरी ओर, परमेश्वर पर भरोसा रखना एक अति उत्तम बात है, वह भी संपूर्ण हृदय से। अर्थात पूर्ण रूप से उसके अधीन होकर। आज निश्चय ही पूर्ण रूप से उसके अधीन होने की आवश्यकता है।

मुझे बार-बार इस पद का स्मरण आता है, "संपूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।" मैं कभी हवाई अड्डे पर बैठा होता हूँ और घोषणा की जाती है कि मौसम के खराब होने के कारण हमारी उड़ान स्थगित की जा रही है। मुझे पंख तो दिए नहीं गए हैं और मुझे वैसे भी उड़ने में रूचि नहीं है। मुझे तो अनन्त जीवन में भी पंख पाने में रूचि नहीं है। मैं हवाई अड्डे के एक कोने में जाकर प्रार्थना करता हूँ, "हे प्रभु, मैं संपूर्ण मन से तुझ पर भरोसा रखना चाहता हूँ। अब मेरी सहायता कर कि यहाँ बैठकर तुम में विश्राम करूँ।" (तुझ पर भरोसा रखूँ) यही वह समय होता है जब मुझे उसकी आवश्यकता होती है। "संपूर्ण मन से परमेश्वर पर भरोसा रख।" "अपनी समझ का सहारा न लेना।" मैं खिड़की से बाहर आकाश को देखता हूँ और शुभ संकेत खोजता हूँ परन्तु परमेश्वर कहता है, तू अपनी समझ का सहारा न लेना... उसी को स्मरण करके सब काम करना। वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।" और उसने मेरे जीवन में अगुवाई की हैं।

मैं आपके आगे अंगीकार करता हूँ कि कैंसर होने तक मैंने उस पर भरोसा नहीं रखा था। मैं प्रतिदिन को जैसा वह है, वैसा ही स्वीकार करता था। मैं शैक्सपीयर के कथनुसार चलता था, "मनुष्य के जीवन में एक लहर उठती है जो बाढ़ आने पर किस्मत की ओर ले जाती है।" मेरा जीवन ऐसा ही था परन्तु अब नहीं। अब मैं प्रतिदिन आकाश को देखकर परमेश्वर का धन्यवाद करके कहता हूँ, "हे प्रभु, मुझे नया दिन दिखाने के लिए धन्यवाद कहता हूँ।" "उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।" मुझे जीवन में इसका अर्थ समझने में बहुत समय लगा।

आपको स्मरण होगा कि प्रभु यीशु ने पर्वतीय उपदेश में कहा था - मत्ती 6:22

शरीर का दिया आँख हैः इसलिये यदि तेरी आँख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।

यह एक अद्भुत बात है। यदि आपने परमेश्वर को समर्पण किया हुआ है और किसी मार्ग पर चल रहे हैं और कुछ कर रहे हैं तो आपको देखकर आश्चर्य होगा कि सब कुछ कैसे यथास्थान

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

व्यवस्थित हो जाता है। तब आपका पूरा शरीर ज्योतिर्मय हो जाता है, आपका संपूर्ण शरीर ज्योति से भर जाएगा।

नीतिवचन 3:7-8

अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना। 8 ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियाँ पुष्ट रहेंगी।

इसका अनुवाद ऐसा भी हो सकता है, "तेरे शरीर में जान आ जाएगी और तेरी हड्डियाँ कोमल हो जाएँगी।" मेरे विचार में परमेश्वर में विश्वास करने से आपका स्वास्थय भी अच्छा होगा। अतः अपनी अपेक्षा परमेश्वर पर निर्भर करना अधिक उत्तम है।

"यहोवा का भय मानना और बुराई से अलग रहना" प्रेरित पौलुस ने युवा तीमुथियुस को परामर्श दिया था - 2 तीमुथियुस 2:19

तौभी परमेश्वर की पक्की नींव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।

प्रभु का नाम आपको पाप से ही नहीं आपके आत्मिक एवं शारीरिक जीवन को हानि पहुँचाने वाली बातों से भी बचायेगा।

भौतिक आशिषों का आत्मिक महत्व होता है:

नीतिवचन 3:9-10

अपनी संपत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना; इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुंडों से नया दाखमधु उमंड़ता रहेगा।

इसमें संपूर्ण समर्पण प्रगट होता है। आपको स्मरण होगा कि परमेश्वर ने इस्राइल को प्रतिज्ञा को देश देते समय कहा था, "वह मेरा देश है जिसे मैं तुम्हें देता हूँ।" इस्राइल को अपना दशमांश देना होता था। मेरा अनुमान है कि वे तीन बार अपनी फसल के आरंभ में पहला फल लाते थे। इसका अर्थ था कि परमेश्वर सब बातों का दाता है। यह संपूर्ण समर्पण का प्रमाण है।

जब तक आपकी बैंक की किताब परमेश्वर को समर्पित न हो तब तक आप मुझसे संपूर्ण समर्पण की बात न करें। परमेश्वर ने ही आपको सब कुछ दिया है। कुछ लोग कहेंगे, "मैंने कठोर परिश्रम से यह सब कमाया है।" आपको कठोर परिश्रम करने के लिए स्वास्थ्य किसने दिया है? आपको काम किसने दिया है? आपके लिए पैसा कमाना किसने संभव बनाया है? मेरे मित्रों, परमेश्वर ने ही तो आपके लिए यह सब किया है। उसे स्मरण करके सब काम करें। यही तो संपूर्ण समर्पण का प्रभाव है।

अब कोई कहेगा कि यह तो किराए के टट्टू होने जैसा लगता है। नहीं यह आत्मिक है। क्या मैं आपसे कह सकता हूँ कि सच्ची आत्मिक अपनी प्रार्थना की लम्बाई में नहीं है। यह आपके द्वारा दिए गए दान पर आधारित है। आत्मिकता इसी प्रकार आँकी जाती है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

मैंने अपने सेवाकाल में देखा है कि जो सबसे अधिक बात करता है वह सबसे कम देता है। सह सच है कि जो कलीसिया का प्रबन्ध चलाना चाहते हैं वे आर्थिक योगदान में सबसे पीछे रहते हैं। परन्तु परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाएँ उन लोगों लिए रखी हैं जो अपनी भौतिक वस्तुओं द्वारा उसका सम्मान करते हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0687

सत्यवचन

नीतिवचन 3: 11 - 4:6

प्रिय मित्रों,!

प्रभु की ताड़ना

नीतिवचन 3:11-12

हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना, और जब वह तुझे डाँटे, तब तू बुरा न मानना, क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है उसको डाँटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।

यदि आप परमेश्वर की सनतान हैं तो जीवन के मार्गों में वह आपकी ताड़ना करेगा ही। सदा स्मरण रखें कि वह शैतान की सन्तान की ताड़ना नहीं करता है। वह अपनी सन्तान की तो निश्चय ही ताड़ना करता है। यह एक प्रमाण है कि आप उसके हैं।

अय्युब 5:17-18 में कहा गया है,

धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता हैं, इसलिए तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान। क्योंकि वही घायल करता और वही पट्टी भी बान्धता है। वही मारता है और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है।

स्मरण रखें कि ताड़ना करना दण्ड देना नहीं है। हम दण्ड देने को ताड़ना समझते हैं। अपराधी दण्ड पाता है परन्तु सन्तान की ताड़ना की जाती है। मैंने एक न्यायाधीश को अपने पुत्र के गाल पर थप्पड़ मारते देखा और यह भी देखा कि उसने एक अपराधी को मुक्त कर दिया। उसे अपराधी को दण्ड देना था और अपने पुत्र का सुधार करना था। ताड़ना का अर्थ है उन्हें अनुशासित करना, उनमें सुधार लाना। परमेश्वर अपनी सन्तानों के साथ ऐसा ही करता है।

बुद्धि पाने से मनुष्य धन्य होता है

नीतिवचन 3:13 - "क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे।

धन्य है वह मनुष्य जिसने प्रभु को पा लिया है। आज वही हमारी बुद्धि है।

नीतिवचन 3:14

क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की प्राप्ति से बड़ी, और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यहाँ बुद्धि को पाठशाला के स्वरूप में दिखाया जा रहा है। यहाँ बुद्धि को स्त्री रूप में इसलिए दिखाया गया है क्योंकि वह पराई स्त्री के विपरित है।

नीतिवचन 3:15-16

वह मूंगे से अधिक अनमोल है, और जितनी वस्तुओं की तू लालसा करता है, उन में से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी। उसके दहिने हाथ में दीर्घायु, और उसके बाएँ हाथ में धन और महिमा है।

पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने सेवकों को दीर्धायु की प्रतिज्ञा दी थी।

नीतिवचन 3:17-18

उसके मार्ग मनभाऊ हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं। जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं, उनके लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है; और जो उसको पकड़े रहते हैं, वह धन्य हैं।

परमेश्वर के वचन को समझाने में अध्ययन और परिश्रम की आवश्यकता है। परमेश्वर का आत्मा आलसी मनुष्य के लिए वचन का अनावरण नहीं करता है। वह वचन का भेद उन्हीं पर प्रगट करता है जो सावधान रहते हैं और परमेश्वर की इच्छा को जानना और सीखना चाहते हैं, वचन को अन्तर्ग्रहण करना चाहते हैं। आज हमारी समस्या यह है कि हम परमेश्वर के वचन को सीखने के लिए त्याग करना नहीं चाहते हैं। आज धार्मिक शब्दों और उक्तियों के कारण आलस्य की बहुतायत है। मनुष्य ने ऐसी शब्दावली विकसित कर ली है जो सुनने में बहुत अच्छी लगती है और परमेश्वर के वचन के ज्ञान पर परदा डालती है। परन्तु परमेश्वर के वचन के अज्ञान का कोई बहाना नहीं चल सकता। इसमें परिश्रम की आवश्यकता है। यह सच है। बुद्धि का मार्ग मनभावन है और उसके मार्ग शान्तिपूर्ण हैं।

नीतिवचन 3:19-20

यहोवा ने पृथ्वी की नींव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया। उसी के ज्ञान के द्वारा गहरे सागर फूट निकले, और आकाश मंडल से ओस टपकती है।

आप और मैं जिस जगत में वास करते हैं वह अति व्यवस्थित है। अन्तरिक्ष योजनाओं के अधीन कार्य करनेवाले अनेक जन विश्वासी हैं। वे हमारे कार्यक्रमों को सुनकर आर्थिक सहयोग भी देते हैं। हम इसमें आनन्द मनाते हैं। मेरे लिए यह एक अति विचित्र बात है कि प्रकृति के नियमों का अध्ययन करनेवाले और सौरमण्डल के भेद खोजनेवालों को यह बात समझ में नहीं आती कि जिस सौरमण्डल में हम रहते है वह अपने आप ऊत्पन्न नहीं हुआ है। यदि मान लो कि ऐसा हुआ भी तो कब हुआ? अंडा देने के लिए मुर्गी कहाँ से आई? यह सौरमण्डल इतना अधिक व्यवस्थित है कि मनुष्य एक रॉकेट में मनुष्य को बैठाकर उसे चाँद पर भेज सकता है और वह मनुष्य लौटकर भी आ जाता है। मनुष्य सोचता है कि वह बहुत बुद्धिमान है। परन्तु

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

सच तो यह है कि उसने केवल परमेश्वर के नियमों की खोज की है। ये नियम संपूर्ण सौरमण्डल को व्यवस्थित रखते हैं। मेरे मित्रों, यदि यह सौरमण्डल अपने आप उत्पन्न हो जाता तो सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पाता। वैज्ञानिकों द्वारा कम्प्यूटर पर काम करके निश्चित समय पर, यथास्थन रोकेट भेजने में सक्षम होने का कारण है कि परमेश्वर के नियम अचूक हैं। परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से ये नियम स्थापित किए हैं। मैं परमेश्वर को एक पुतला नहीं कहता हूँ कि उसका अपमान हो। हमें परमेश्वर की बुद्धि को समझना है। यदि हम उसके बारे में अधिक बुद्धि और ज्ञान का प्रदर्शन करेंगे तो वह हमें सराहेगा। हम परमेश्वर के वचन से ही ऐसा कर सकते हैं। यही एकमात्र स्थान है।

नीतिवचन 3:21

हे मेरे पुत्र, ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाएँ; खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर, "ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाएँ।" ये बातें अर्थात परमेश्वर का ज्ञान।

नीतिवचन 3:22 -"तब इन से तुझे जीवन मिलेगा, और ये तेरे गले का हार बनेंगे।"

आप देख सकते है कि जीवन और अनुग्रह परमेश्वर के वचन के अध्ययन से प्राप्त बुद्धि से प्राप्त होते हैं।

नीतिवचनों का रचनेवाला युवकों को सलाह दे रहा है कि बुद्धि को ग्रहण करना परमेश्वर का ज्ञान पाना जीवन का वृक्ष है और उसे पकड़े रहनेवाले धन्य हैं। वह उनके जीवन का हार है।

नीतिवचन 3:23-24

और तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा, और तेरे पाँव में ठेस न लगेगी। जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा, जब तू लेटेगा, तब सुख की नींद आएगी।

मनुष्य के जीवन में किसी न किसी प्रकार का भय बना ही रहता है। इसका समाधान क्या है? परमेश्वर का वचन सब बातों का समाधान है। हम अपना अधिकांश समय चलने या लेटने में लगाते हैं इसलिए हमें यह आश्वासन दिया गया है कि हम अपने मार्ग पर निडर चलेंगे और जब लेटेंगे तब सुख की नींद आएगी। यह जानना कैसी अद्भुत बात है कि परमेश्वर का सत्य हमें थाम लेगा। हम सत्य को थाम लें यही पर्याप्त नहीं है।

नीतिवचन 3:25-26

अचानक आनेवाले भय से न डरना, और जब दुष्टों पर विपत्ति आ पडे, तब न घबराना; क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा, और तेरे पाँव को फन्दे में फँसने न देगा।

ये पद मेरे लिए अत्यधिक अर्थपूर्ण हैं क्योंकि मुझे उड़ने से डर लगता है। मैं हवाई

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

जहाज़ में बैठता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि वह गिर जाएगा। अतः ये पद मेरे लिए प्रोत्साहन और बड़ी सहायता के पद हैं। हवाई यात्रा में मैं इन पदों को अपने साथ रखता हूँ। मैं बहुत अधिक हवाई यात्रा करता हूँ।

"अचानक आनेवाले भय से न डरना।" अगले क्षण क्या होगा यह सोचकर डरना नहीं। परमेश्वर इस पल मुझे संभाले हुए है। वह अगले पल भी मुझे संभालेगा।

"क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा, और तेरे पाँव को फंदे में फँसने न देगा।" मैं परमेश्वर से कहता हूँ। "आज सुबह जब मैं बिस्तर में था - उठने से पहले तब मुझे तेरी इतनी आवश्यकता नहीं थी जितनी अब है। इस समय मैं हवा में 85000 फुट की ऊँचाई पर उड़ रहा हूँ और मुझे डर लग रहा है। यह परीक्षा की घड़ी है। मुझ में विश्वास जगा कि तू मेरे पाँव को गिरने से बचाएगा।"

अब हम एक अति उत्तम नीतिवचन देखेंगे। ऐसे अनेक नीतिवचन और भी हैं।

नीतिवचन 3:27

जिनका भला करना चाहिये, यदि तुझ में शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रूकना।

मेरे पिता अपनी युवावस्था के कड़वे अनुभवों के कारण स्थपित कलीसियाओं से रूष्ठ थे परन्तु मुझे सदा ही ऐसा लगता था कि उनमें परमेश्वर के आज्ञापालन की लालसा थी। मैं इसका एक उदाहरण देता हूँ। जब मैं छोटा था तब हम अपनी बग्गी में सड़क पर जर रहें थे तब एक गाय मार्ग में हमारे सामने आ गई। उन्होंने नीचे उतर कर उस गाय को उसके फाटक के अन्दर कर दिया और चुपचाप फिर बग्गी पर बैठ गए। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। गाए के मालिक से भी नहीं

नीतिवचन 3:28

यदि तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे दूँगा।

आज अनेक लोग मुझसे हमारे रेडियों कार्यक्रम को सहयोग देने की प्रतिज्ञा करते है परन्तु कहते हैं कि उन्हें पैसा आने की प्रतीक्षा है। उनके पास बैंक में बहुत पैसा होता है और यदि वे चाहे तो चेक दे सकते हैं। मैं यह उदाहरण इसलिए दे रहा हूँ कि प्रायः मुझे ऐसी प्रतिज्ञाएँ दी जाती हैं। जीवन के प्रत्येक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य ऐसे बहाने बनाता है। वे कहते हैं, "मैं आज आपकी सहायता नहीं कर सकता। कल आना।" जबकि उनकी जेब में पैसा होता है: रोमियों 13ः8 में लिखा है,

आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदान न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।

ऐसा प्रेम प्रगट करता है कि मनुष्य परमेश्वर की सन्तान है या नहीं।

क्या आप जानते है कि जब हम किसी से पैसा उधार लेते हैं तब वह पैसा हमारा

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नहीं होता है? वह किसी और का है। उसे अपने काम में लेना बेईमानी है। वह यहाँ पर यही बात कह रहा है।

नीतिवचन 3:29

जब तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है, तब उसके विरूद्ध बुरी युक्ति न बान्धना।

अपने पड़ोसी के सम्बन्ध में ऐसा काम न करें जो आपके लाभ का हो और उसे हानि पहुँचाए।

आपका पड़ोसी यदि आपसे कहे, "मैं कुछ दिन बाहर रहूँगा। क्या आप मेरे घर का ध्यान रखेंगे?" यह कैसी अच्छी बात है। इससे आपको परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्धों को प्रगट करने का व्यावहारिक मार्ग मिल जाता है।

नीतिवचन 3:30

जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो, उस से अकारण मुकद्दमा खड़ा न करना।

मूसा की व्यवस्था के आधार पर आप किसी से अकारण लड़ाई या उस पर मुकद्दमा नहीं कर सकते थे यह पाप की श्रेणी में आता है। परन्तु अनुग्रह के अधीन हमसे कहा गया है:

रोमियों 12:19

हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।

कलह का विषय हाथ में ले लेने पर हम विश्वास के मार्ग से और परमेश्वर पर विश्वास से भटक जाते हैं। यदि हमारे साथ बुरा व्यवहार किया गया है तो हमें परमेश्वर के हाथ में उसे छोड़ देना चाहिए कि परमेश्वर ही उस परिस्थिति को और उस मनुष्य से बदला ले।

मैंने अपनी सेवा के अनेक वर्षों मे यही सीखा है कि यदि कोई आपके साथ बुरा करे तो आप परमेश्वर से कहे कि आपको उसके व्यवहार से दुःख हुआ है और उसे परमेश्वर के हाथ में छोड़ दें। परमेश्वर से कहें, "तूने कहा है कि बदला लेना तेरा काम है, अब तू ही संभाल।" मैंने देखा है कि परमेश्वर बदला लेता है। ये नीतिवचन अद्भुत और सच हैं। ये वचन युवकों के लिए नहीं, वृद्धों, महिलाओं और युवतियों के लिए भी हैं। ये संपूर्ण मानवजाति के लिए हैं।

नीतिवचन 3:31 -"उपद्रवी पुरूष के विषय में डाह न करना, न उसकी सी चाल चलना; "

"उपद्रवी पुरूष" अर्थात उग्र स्वभाव रखनेवाला।

नीतिवचन 3:32

क्योंकि यहोवा कुटिल से घृणा करता है, परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

कुछ लोगों से परमेश्वर वास्तव में घृणा करता है। इस पुस्तक के अन्त में हम कुछ ऐसी बातें देखेंगे जिनसे परमेश्वर घृणा करता है।

नीतिवचन 3:33 - "दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप और धर्मियों के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है"।

"दुष्ट" अर्थात जो परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं करते। इससे मुझे राजा आहाब का स्मरण होता है। परमेश्वर ने उसके परिवार को दण्ड दिया था।

नीतिवचन 3:34 - ठट्ठा करनेवालों से वह निश्चय ठट्ठा करता है और दीनों पर अनुग्रह करता है।

परमेश्वर ठट्ठा करनेवालों से, उपद्रवियों से और कुटिल मनुष्यों से घृणा करता है।

नीतिवचन 3:35 -बुद्धिमान महिमा को पाएँगे, और मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होगी।

यह नीतिवचन अनेकों पर सिद्ध होता है और आप भी ऐसे मनुष्यों को जानते होंगे।

धनवान से घृणा करना युगों से चला आ रहा है और भजनकार के समान अनेकों ने देखा है कि परमेश्वर धनवानों का न्याय करता है।

अध्याय 4

अब वह बालक बड़ा हो गया है और अन्धकार पूर्ण संसार में हैं परन्तु उससे अब भी अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान देने का आग्रह किया जा रहा है।

नीतिवचन 4:1

हे मेरे पुत्रो, पिता की शिक्षा सुनो, और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ।

"हे मेरे पुत्रों" का अर्थ है युवाओं, वयस्कों, नर-नारियों सब से।

नीतिवचन 4:2-3

क्योंकि मैं ने तुम को उत्तम शिक्षा दी है; मेरी शिक्षा को न छोड़ो। देखो, मैं भी अपने पिता का पुत्र था, और माता का अकेला दुलारा था,।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यह सुलैमान का नीतिवचन है और वह अपने पिता के विषय में कह रहा है। देखिए वह कहता है, "मैं भी अपने पिता का पुत्र था। और माता का अकेला दुलारा था।" कुछ लोगों का मानना है कि दाऊद का मन सुलैमान में लगा हुआ था परन्तु मैं यह नहीं मानता हूँ। इतिहास पढ़ने से प्रगट होता है कि सुलैमान अपने पिता की पहली पसन्द नहीं था। यह युवक ज़नाना खाने अर्थात महिलाओं के मध्य बड़ा हुआ था और दब्बू था और उसमें दाऊद के कोई गुण नहीं थे। सुलैमान कहता है कि वह भी अपने पिता का पुत्र था परन्तु शिक्षा उसने अपनी माता से पाई थी, परन्तु

नीतिवचन 4:4 हम पढ़ते हैं- और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था, कि तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे; तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर, तब जीवित रहेगा।

संभव है कि दाऊद ने उसे पर्याप्त शिक्षा दी थी। राजा बन जाने पर दाऊद ने उससे कहा था, "पुरूषार्थ दिखा।" मेरे विचार में, दाऊद के मूल्यांकन में सुलैमान में पुरूषों वाली बात नहीं थी। उसने कहा, "तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे... तब जीवित रहेगा।" दाऊद ने अनुभव से सीखा था कि परमेश्वर पर भरोसा उचित ही है। मेरे विचार में दाऊद अपने पुत्र को शिक्षा देने में आवश्यकतानुसार सौहाद्र नहीं था। मुझे कभी विश्वास नहीं होता है कि दाऊद एक सफल पिता था। दुर्भाग्य से यह अनेक महापुरूषों के जीवन का सत्य है। सुलैमान दाऊद का अनुकरण कर सकता था। आप कहेंगे कि दाऊद के पाप पर तो ध्यान दो परन्तु उसका पाप सुलैमान के जन्म से पूर्व का था। दाऊद ने तो उस जीवन से मन फिरा लिया था।

अब सुलैमान युवकों को परामर्श दे रहा है। वह सीधी और स्पष्ट बात कह रहा है।

नीतिवचन 4:5-6

बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर; उनको भूल न जाना, न मेरी बातों को छोड़ना। बुद्धि को न छोड़, वह तेरी रक्षा करेगी; उस से प्रीति रख, वह तेरा पहरा देगी।

यहाँ बुद्धि की तुलना एक ऐसी स्त्री से की गई है जो स्कूल चला रही है और अपनी पाठ्य पुस्तकों की सूची भेजती है। एक और स्त्री भी है जिसे पराई स्त्री कहा गया है। वह भी युवक का ध्यान आकर्षित करती है। बुद्धि उसे अपने स्कूल में बुला रही है कि वह बुद्धिमान बने।

ध्यान दें, यहाँ लिखा है, "वह तेरी रक्षा करेगी।" वह "तेरा पहरा देगी।"

यह बात आज के शिक्षकों में अन्तर प्रगट करती है। क्या वे बुद्धि अर्थात परमेश्वर के वचन से प्रेम करते हैं? पास्कल ने कहा था कि "मानवीय बुद्धि से प्रेम करने के लिए उसे समझना होगा। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान को समझने के लिए उससे प्रेम करना होगा।" अतः यदि आप परमेश्वर के वचन को समझना चाहते हैं तो आपको उससे प्रेम करना होगा और ऐसा मन रखना होगा जो सीखने की लालसा रखता हो। और तब परमेश्वर का आत्मा आप पर महान सत्यों का प्रकाशन करेगा। यह समझना कैसा महत्वपूर्ण है! "जब तू उससे प्रीति रखेगा, वह तेरा पहरा देगी।"

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0688

सत्यवचन

नीतिवचन 4: 7 - 5:2

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 4:7

बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिये उसकी प्राप्ति के लिये यत्न कर; जो कुछ तू प्राप्त करे उसे प्राप्त तो कर परन्तु समझ की प्राप्ति का यत्न घटने न पाए।

देखिए बुद्धि क्या है। यह सांसारिक ज्ञान नहीं है। कम्प्यूटर बुद्धि नहीं है। यह ज्ञान का उचित उपयोग करने की बुद्धि और समझ है और उसके प्रति प्रेम है। आज इसकी मनुष्य को अत्यधिक आवश्यकता है।

आज की शिक्षा सन्तोषजनक इसलिए नहीं है क्योंकि उसका तरीका गलत है। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें बुद्धि देना है। यह कैसी महत्वपूर्ण बात है।

नीतिवचन 4:8-9

उसकी बड़ाई कर, वह तुझ को बढ़ाएगी; जब तू उस से लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी। वह तेरे सिर पर शोभायमान भूषण बान्धेगी; और तुझे सुन्दर मुकुट देगी।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि बुद्धि से वैसा ही प्रेम किया जाए जैसा मनुष्य एक स्त्री से करता है। नये नियम में इस विचार में परिवर्तन आता है क्योंकि प्रभु यीशु बुद्धि है और हमें प्रेम करता है।

हमारे आज के युग में कठिनाइ बाइबल से उत्पन्न समस्याओं के कारण नहीं है परन्तु इसलिए है कि मनुष्य में परमेश्वर और परमेश्वर की बातों के प्रति लगाव और लालसा नहीं है। जब मन में प्रेम होगा तब यह पुस्तक समझ में आने लगेगी क्योंकि परमेश्वर का आत्मा इसका शिक्षक है।

नीतिवचन 4:10

हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर, तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा।

मुझे ऐसा लगता है कि बतशैबा सुलैमान को शिक्षा दे रही है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 4:11-12

मैंने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है; और सीधाई के पथ पर चलाया है। चलने में तुझे रोक टोक न होगी, और चाहे तू दौड़े, तौभी ठोकर न खाएगा। शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे; उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है।

युवकों के लिए बुद्धि की खोज करने की यह एक अद्भुत पुकार है, "शिक्षा को पकड़े रह उसे छोड़ न दे।" यह सर्वोच्च प्राथमिकता है। "जितना हो सके ज्ञान ग्रहण करो।

नीतिवचन 4:14-15

दुष्टों की बाट में पाँव न धरना, और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना। उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल, उसके निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा।

हम पहले देख चुके हैं कि इस पुस्तक में दुष्ट के विरूद्ध चेतावनी दी गई है, और पराई स्त्री से संभलने का आग्रह किया गया है। हम देखेंगे कि इसका अभिप्राय आत्मिकता से भी है।

आपको स्मरण होगा कि नीतिवचन दुष्ट जन और पराई स्त्री अर्थात वैश्या से दूर रहने की चेतावनी देते हैं और मेरे विचार में इसका आत्मिक परिप्रेक्ष्य भी है।

नीतिवचन 4:16-17

क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नींद नहीं आती; और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएँ, तब तक उन्हें नींद नहीं मिलती। वे तो दुष्टता से कमाई हुई रोटी खाते, और उपद्रव के द्वारा पाया हुआ दाखमधु पीते हैं।

यह दुष्ट जन और पराई स्त्री के जीवन का प्रदर्शन है। वे बुरा किए बिना आराम से सो भी नहीं पाते हैं। आप अपराधों का समाचार पढ़कर कहते हैं, "कोई ऐसा कैसे कर सकता है? कोई स्त्री ऐसा जीवन कैसे जी सकती है? वे अपने मन को कैसे समझा सकते हैं कि ऐसा करें?" मेरे मित्रों, यदि वे बुराई न करें तो उन्हें शान्ति नहीं मिलती है। हम नहीं जानते कि मनुष्य का मन पाप में कितना गहरा उतर सकता है। दुष्टता की कल्पना में मनुष्य का मन कुछ नहीं छोड़ता है। हमें यह नहीं भूलना है कि हम इस संसार में ऐसे मनुष्यों से कंधा मिलाकर चल रहे हैं जो सब के सब अच्छे नहीं हैं। निःसन्देह कुछ लोग बहुत अच्छे होते हैं परन्तु हमें मनुष्यों से भेंट करते समय सावधान रहना है।

मैं सदैव यही प्रार्थना करता था, हे प्रभु, आज मैं नये नये लोगों से भेंट करूँगा और उनमें से कुछ की मैं सहायता भी कर पाऊँगा। उनमें से कुछ मुझे दुःख भी पहुँचाना चाहेंगे। अन्तर पहचाने में मेरी सहायता करना। जिसकी मुझे सहायता करना है उसके गले में बाहें डालने और जिससे बचना है अर्थात जो मुझे हानि पहुँचाना चाहे, उन्हें पहचानने में मेरी सहायता करना। मेरे

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

विचार में हमें अपने इस संसार को पहचानना महत्वपूर्ण है।

मैंने सीखा है कि कुछ लोग सच्चे मित्र बनते हैं और मैं उनके लिए परमश्ेवर का धन्यवाद करता हूँ। ऐसे ही मित्रों ने मेरी टी,वी सेवा को संभव बनाया है। कुछ ऐसे मनुष्य भी है जिन्होंने मेरी सेवा को नष्ट करना चाहा है। परन्तु वे विश्वासी होने का दावा करते हैं। उनकी मानसिकता को समझना कठिन है। मनुष्य का मन भरोसे के योग्य नहीं है। हमें अत्यधिक सावधान रहना है। हमें अपने दैनिक जीवन में मनुष्यों से भेंट करते समय समझ की आवश्यता है।

नीतिवचन 4:18

परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।

आप ऐसे अद्भुत पवित्र जनों से भेंट करेंगे परन्तु अब दूसरा पक्ष देखिए:

नीतिवचन 4:19

दुष्टों का मार्ग घोर अन्धकारमय है; वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं।

दो मार्ग हैं जो एक दूसरे के विपरित हैं। एक धर्मियों का मार्ग जिसे चमकती हुई ज्योति कहा गया है जो सिद्ध दिन तक बढ़ता जाता है। दूसरा दुष्टों का मार्ग है जो अनधकार का है। यह उस चौड़े मार्ग का स्मरण करता है जिसके लिए प्रभु यीशु ने कहा था और मेरे विचार में उसका अर्थ गलत निकाला जाता है।

मुझे स्मरण है कि हमें बाल्यकाल में चौड़े मार्ग और सकेत मार्ग के बारे में सिखाया जाता था। यदि मुझ से पूछा जाता कि मैं किस मार्ग पर चलना चाहूँगा तो मैं कहता, "चौड़े मार्ग पर अधिक आनन्द प्राप्त होता है।" दुर्भाग्य से हमें चौड़े मार्ग का यही चित्रण दिखाया जाता है। ऐसा नहीं है।

आज चौड़ा रास्ता निश्चय ही चौड़ा है। वहाँ भीड़ उपस्थित है और मेला लगा हुआ है। उसमें दैहिक लालसाओं की पूर्ति की जाती है। उसे स्वतंत्रता का मार्ग कहा जाता है। हमें सुनने को मिलता है कि हम एक नये युग में वास कर रहें हैं जिसमें हम जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं। यह निश्चय ही चौड़ा मार्ग है। यह मार्ग आरंभ में ही चौड़ा है परन्तु ध्यान दें, यह शनैः शनैः सकेत और सकरा होता जाता है। दुष्ट का मार्ग घोर अन्धकार है। प्रवेश के स्थान पर तो बहुत उजियाला है। परन्तु दूर चलने पर अन्धकार हो जाता है। वहाँ चलने वाले जानते भी नहीं कि कहाँ ठोकर खाते हैं। यीशु ने इसी चौड़े मार्ग का उल्लेख किया था। यह ऐसा है जैसे आप किसी चौड़ी सुरंग में प्रवेश करें और वह आगे चलकर संकरी होती जाए।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

इसके विपरित सकेत मार्ग का प्रवेश संकरा है। **प्रभु यीशु ने कहा: यूहन्ना 14:6**

" ...मार्ग मैं हूँ।"

यह इतना सकेत है कि एक बार में एक ही व्यक्ति प्रवेश कर पाता है। और एक ही व्यक्ति प्रभु यीशु इसका द्वार है। यीशु के बिना पिता के पास कोई नहीं आ सकता। इससे अधिक सकेत मार्ग अन्य कोई नहीं।

प्रेरितों के काम 4:12 में पतरस कहता है,

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।

यूहन्ना 10:9 में यीशु ने कहा,

द्वार मैं हूँः यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।

प्रवेश द्वार सकेत है परन्तु प्रवेश करने के बाद मार्ग चौड़ा हो जाता है और बहुतायत के जीवन की ओर ले जाता है और अन्त में स्वर्ग के प्रकाश तक पहुँचाता है। मेरे मित्रों, हमें सुरंग के सकेत भाग से प्रवेश करना है जहाँ लिखा है - प्रभु यीशु मसीह।

नीतिवचन के इन पदों से हमें यही चित्र दिखाई देता है। दो मार्ग हैं: धर्मी जन का मार्ग और दुष्ट का मार्ग। हम इस विषय में इस पुस्तक में और अधिक अध्ययन करेंगे। अध्याय 16 में चौड़े मार्ग का वर्णन किया गया है:

नीतिवचन 16:25

ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

नीतिवचन 4:20-22

हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। इनको अपनी आँखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर। क्योंकि जिनकों वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।

परमेश्वर के वचन के विषय में भजनकार कहता है। भजन संहिता 119:11

मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूँ।

परमेश्वर के वचन, जीवन के वचन हैं। किसी महापुरूष के बारे में कहा जाता था कि उसके वचन को काटे तो उसमें से खून बहेगा। परमेश्वर के वचन के लिए यह सच है। वे जीवित वचन हैं। यदि आप उसे काटेंगे तो लहू बहेगा। "जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का और उनके सारे शरीर के चंगे होने का कारण होता हैं।" वे आपको जीवन और ज्योति

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

प्रदान करती हैं। यह सब परमेश्वर के वचन से होता है।

अब यह नीतिवचन के सर्वोत्तम पदों में से एक है।

नीतिवचन 4:23

सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

यत्न से अपने मन की रक्षा कर। यह बुहत ही महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।" देह का जीवन लहू में है और हृदय लहू को चलाता है। विलियम हार्वे ने तो सत्रहवीं शताब्दी में खोज की थी कि शरीर में रक्त प्रवाह होता है और आयुर्विज्ञान में क्रान्ति आई परन्तु नीतिवचन में तो 2700 वर्ष पूर्व ही कहा गया है कि जीवन का मूल स्रोत हृदय है। हृदय मनुष्य के अन्तरम् भाग का प्रतीक है।

मत्ती 15:19 में यीशु ने कहा,

क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है।

मनुष्य के मन से बहुत ही घृणात्मक बातें उत्पन्न होती हैं। हृदय या मन मनुष्य के व्यक्तिव का मूल है। अतः हमें अपने मन की यत्न से चौकसी करना है। हम जो सुनते हैं वह महत्वपूर्ण है। हम जो सीखते हैं वह महत्वपूर्ण है। हम जो देखते हैं वह महत्वपूर्ण है। हमें यह समझना है कि इसी मन से जीवन की सब महान समस्याएं उत्पन होती है। हम इस सत्य से न चूकें कि हार्वे द्वारा शरीर में रक्त प्रवाह की खोज करने से कई वर्शों पहले नीतिवचन की पुस्तक हृदय का उल्लेख करती है जिसे शताब्दियों बाद विज्ञान ने सत्य सिद्ध किया। नीतिवचन वरन् संपूर्ण बाइबल में आप विज्ञान विरोधी या गलत अवलोकन नहीं पाएँगे।

नीतिवचन 4:24

टेढ़ी बात अपने मुँह से मत बोल, और चालबाजी की बातें कहना तुझ से दूर रहे।

जीवन के विषय मन से उत्पन्न होते हैं। और मुँह उनको व्यक्त करता है। एक कहावत है, "मन के कुएँ में जो है वह मुँह की बाल्टी से बाहर आता है।" यह कैसा सत्य है कि मुँह आगे या पीछे मन का भेद खोल ही देता है।

हमारा मुँह हमारा भेद खोल देता है। एक बार मैं अपनी पत्नी के साथ एक होटल में भोजन कर रहा था। वहाँ की परिचारिका हमारी बातें से सुन रही थी। अन्ततः उसने कहा, "आप उपदेशक हैं?" मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा, परन्तु मैं टी,वी पर आपके प्रवचन सुनती हूँ।" यह कैसी सत्य बात है! परन्तु मन की चौकसी करना आवश्यकता है। मन के उदगार मुँह से बाहर आते हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 4:25-27

तेरी आँखें सामने ही की ओर लगी रहें, और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें। अपने पाँव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें। न तो दहिनी ओर मुढ़ना, और न बाई ओर; अपने पाँव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले।

ओह, एक युवक को कैसा सावधान रहना चहिए। मुझे एक व्यक्ति ने बताया कि जेल जाने के कारण उसका जीवन नष्ट हो गया है। उसका यह रेकार्ड हर जगह हर समय उसके विरूद्ध खड़ा हो जाता है। इस समय जब नशा युवाओं में एक आम अभ्यास है तो युवकों को ऐसा देखना त्रासदीपूर्ण है क्योंकि वे अपने पाँव रखने के मार्ग पर विचार नहीं करते हैं।

अध्याय 5

इस अध्याय को ध्यान से पढ़े और देखें कि युवकों को अपने परिवार के लिए पवित्र जीवन जीने का परामर्श दिया जा रहा है। यह परमश्ेवर के द्वारा दी गई यौन शिक्षा है। मुझे परमश्ेवर की यह शिक्षा अन्य शिक्षाओं से अधिक उचित जान पड़ती है चाहे वह मसीही क्षेत्र में ही क्यों न हो। परमश्ेवर कहता है कि परिवार के भविष्य के लिए पवित्र जीवन निर्वाह की आवश्यकता है। परिवारों में अधिकांश समस्याएँ वर्तमान की अपेक्षा, विवाहपूर्व के यौन सम्बन्धों का परिणाम होती हैं।

परमेश्वर की यौन शिक्षा

नीतिवचन 5:1-2

हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे, मेरी समझ की ओर कान लगा; जिस से तेरा विवेक सुरक्षित बना रहे, और तू ज्ञान के वचनों को थामें रहे।

यह फिर से युवाओं के लिए है। बुद्धि युवाओं को पुकारती है कि उसकी पाठशाला में प्रवेश करें। पिछले अध्याय में दुष्ट के विरूद्ध चेतावनी दी गई थी। इस अध्याय में पराई स्त्री के विरूद्ध चेतावनी दी गई है। वह बाहर से आनेवाली अन्यजाति स्त्री होती थी और वैश्यावृती करती थी। व्यवस्था के अनुसार वैश्या को पथरवाह किया जाना था। इस्राएल परमेश्वर से दूर होकर अधिकाधिक अनैतिकता मैं गिर गया था। और इस्राएली स्त्रियाँ भी वैश्यावृत्ती में आ गई थी जैसा कि नीतिवचन 2:17 में कहा गया है: **और अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती, और जो अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है।**

ऐसी स्त्री इस्राएली होकर भी पराई स्त्री मानी जाती है क्योंकि उसका सम्बन्ध परमश्ेवर से टूट चुका होता है।

WORD RESOUNDS TODAY
www.Radio882.com

HIN 0689

सत्यवचन

नीतिवचन 5: 3 - 6:15

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 5:3-6

क्योंकि पराई स्त्री के होठों से मधु टपकता है, और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं; परन्तु इसका परिणाम नागदौना सा कड़ुवा और दोधारी तलवार सा पैना होता है। उसके पाँव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं; और उसके पग अधोलोक तक पहुँचते हैं। इसलिये उसे जीवन का समथर पथ नहीं मिल पाता; उसके चालचलन में चंचलता है, परन्तु उसे वह आप नहीं जानती।

मुझे एक कारखाने के एक कर्मचारी ने बताया कि वहाँ एक कुख्यात अपराधी है जिसे योनरोग है जिसके कारण वह पागल हो गया था और अन्त में मर गया। उसने अनेक लड़कियों का जीवन नष्ट किया था। परन्तु बच नहीं पाया लड़की ने मार्ग में उससे हिसाब पूरा कर लिया।" परमेश्वर का वचन इसी के विरूद्ध चेतावी दे रहा है।

नीतिवचन 5:7-11

इसलिये अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों से मुँह न मोड़ो। ऐसी स्त्री से दूर ही रह, और उसकी डेवढ़ी के पास भी न जाना; कहीं ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ, और अपना जीवन क्रूर जन के वश में कर दें; या पराए तेरी कमाई से अपना पेट भरें, और परेदशी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखें; और तू अपने अन्तिम समय में जब कि तेरा शरीर क्षीण हो जाए तब यह कहकर हाय मारने लगे,

इस युवक को कैसी चेतावनी दी गई है! इससे यौन रोग का परिणाम प्रगट होता है। जब शरीर का नाश हो जाता है तब विलाप का समय होता है।

नीतिवचन 5:12-14 "मैंने शिक्षा से कैसा बैर किया, और डांटनेवाले का कैसा तिरस्कार किया! मैंने अपने गुरूओं की बातें न मानी और अपने सिखानेवालों की ओर ध्यान न लगाया। मैं सभा और मंडली के बीच में प्रायः सब बुराइयों में जा पड़ा"।

सदा स्मरण रखें, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता है। आप जो बोते हैं वही काटेंगे। परमेश्वर यहाँ ऐसे जीवन का अन्तिम परिणाम दर्शाता है। आज की अनैतिकता परमेश्वर

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

के वचन की शिक्षा की कमी का परिणाम है।

परिवार के भविष्य के निमिŸा युवक के पवित्र जीवन की आवश्यकता प्रगट करने के बाद अब परमेश्वर पति और पत्नी के संबन्धों के विषय निर्देश देता है। यहाँ हम विवाह को एक ऊँचे स्तर पर देखते हैं।

विवाह की पवित्रता

नीतिवचन 5:15-17

तू अपने ही कुंड से पानी, और अपने ही कूंए से सोते का जल पिया करना। क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में, और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए? यह केवल तेरे ही लिये रहे, और तेरे संग औरों के लिये न हो।

दूसरे शब्दों में आपकी सन्तान आपकी पत्नी से हो न कि पराई स्त्री से।

नीतिवचन 5:18-19

तेरा सोता धन्य रहे; और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह, प्रिय हरणी या सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सर्वदा तुझे संतुष्ट रखे, और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे।

यह पद विवाह में प्रेम का वर्णन करता है। परमेश्वर का वचन अति स्पष्ट कहता है कि विवाह में शारीरिक प्रेम और यौन संबंधों को पवित्र होना चाहिए और बहुत ऊँचे स्तर का होना चाहिए। एक समय था कि समाज में इन बातों की चर्चा करना निशेध था। उन्हें अनैतिक और अपवित्र मान कर उन्की चर्च नहीं की जाती थी यहाँ तक की विवाहितों के मध्य भी। क्या आपने ध्यान दिया कि परमेश्वर विवाह में शारीरिक प्रेम का वर्णन कैसे करता है? परमेश्वर इसे सर्वोच्च स्तर पर रखता है। स्मरण रखें कि विवाह की स्थापना परमेश्वर ने ही की थी और उसने मनुष्य जाति की भलाई और कल्याण के लिए ही मनुष्यों को इसे प्रदान किया। हमारे आज के युग की अनैतिकता का एक काम यह भी है कि मनुष्य विवाह से मुक्ति पाना चाहता है।

परमेश्वर की सन्तान के लिए मसीही परिवार प्रभु यीशु और कलीसिया के संबन्धों का चित्रण है। इससे बढ़कर ऊँचा और पवित्र संबन्ध अन्य कोई नहीं हो सकता। यही कारण है कि कलीसिया में मसीही विवाहों का टूटना एक संकट सूचक बात है। यह यदा-कदा की घटना नहीं, लगभग आम अभ्यास हो गया है। इस संबन्ध में आवश्यक है कि कलीसिया घुटने टेक कर प्रार्थना द्वारा पता लगाए कि समस्या क्या है। यह संकेत है कि परमेश्वर का वचन मनुष्यों में नहीं पहुँच रहा है और कलीसिया के सदस्यों पर न तो प्रभाव डाल रहा है और न ही उन्हें जागृत रहा है।

इब्रानियों 13:4 में लिखा है,

विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

परमेश्वर विवाह को एक अद्भुत संबन्ध कहता है। विवाह एक सम्मानित और पवित्र बन्धन है और इसे अशुद्ध नहीं करना चाहिए। इसका दूसरा पक्ष देखिए, "परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।"

मेरी कलीसिया में एक व्यक्ति ने, जो कलीसिया का सदस्य था, आकर मुझसे कहा कि वह अपनी पत्नी और अपने पुत्र को छोड़ कर किसी और स्त्री को लेकर भागने जा रहा है। वह कलीसिया का सदस्य है और विश्वासी है या नहीं केवल परमेश्वर ही जानता है। उस समय मैं एक युवा सेवक था और मैंने उसे समझाने का प्रयास किया पर उसने कहा कि क्या आप मेरा उद्धार छीन्ना चाह रहे हो। तब मैनें कहा, "मेरे भाई, यदि आपको उद्धार प्राप्त है तो मैं आपसे आपका उद्धार नहीं छीन रहा परन्तु यह अवश्य कहना चाहता हूँ और यह भी चाहता हूँ कि आप सदा स्मरण रखें, यदि आप परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं तो आप निश्चय ही शैतान की सन्तान के समान काम कर रहे हैं। यदि आप परमेश्वर की सन्तान हैं तो एक दिन परमेश्वर आपकी ताड़ना अवश्य करेगा और शायद आपकी जान भी ले ले।" उस ने मेरा ठट्ठा किया और अन्त में उस स्त्री से विवाह कर लिया। आज वर्षों बाद वे दोनों अकेले हैं, अत्यधिक दुःखी हैं, हताशा से घिरे हूए है और प्रेम से पूर्णरूपेण वंचित हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि दोनों ही सोचते होंगे, काश हम लौट पाते और नए तरीके से आरंभ कर पाते।

1 पतरस 3:7 में पतरस पतिगण को आदेश देता है कि वे बुद्धि से पूर्ण अपनी अपनी पत्नी के साथ व्यवहार करें,

वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएँ रूक न जाएँ।

यह एक अग्नि परीक्षा है। जब पति-पत्नी एक दूसरे के साथ ऐसा जीवन निर्वाह करते है कि जिसमें आनन्द और विश्वास व्याप्त है तथा दोनों एक साथ घुटने टेक कर प्रार्थना कर सकते हैं, एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं तो वह परिवार मसीह यीशु और कलीसिया के संबन्धों का प्रतीक बन जाता है। मैं आपको बता देना चाहता हूँ मित्रों कि परमेश्वर ऐसे परिवार को निश्चय ही आशिष देगा। ओह यह कैसी महत्पूर्ण बात है।

नीतिवचन 5:20-21

हे मेरे पुत्र, तू अपरिचित स्त्री पर क्यों मोहित हो, और पराई को क्यों छाती से लगाए? क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है।

"मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब मार्गों का ध्यान करता है।"

हमें समझ लेना है कि परमेश्वर निरंतर हमें देखता रहता है।

हमारे साथ एक व्यक्ति हॉकी खेल रहा था और उसने गाली बक दी। जब उसे पता

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

चला कि हम लोग सेवक हैं तो वह क्षमा याचना करने लगा। मैंने उससे कहा, "भाई, हमारी चिन्ता मत करो। हम तो आप ही के समान मनुष्य हैं परन्तु यह नहीं भूलना कि आप परमेश्वर के सामने तो सदा ही गाली देते रहते हैं। आप चाहे गोल्फ के मैदान में हों, मधुशाला में हों या कहीं भी हो आप जो कुछ कहते हैं वह सब परमेश्वर के सामने होता है।" परमेश्वर हमें सदा देखता रहता है और सोचता है कि हम ऐसा क्यों करते हैं या क्यों कहते हैं। वह उलझन में पड़ जाता है।

नीतिवचन 5:22-23

दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फँसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा। वह शिक्षा प्राप्त किए बिना मर जाएगा, और अपनी ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा।

परमेश्वर कहता है लेखा देने का दिन आ रहा है - दण्ड देने का दिन। प्रतिफल पाने का दिन आ रहा है। मनुष्य सोचता है कि वह पाप करके बच जाएगा। परमेश्वर कहता है बचेगा कोई नहीं। मनुष्य के अपराध उसे आ घेरेंगे और उसके पाप उसे जकड़ लेंगे।

WORD RESOUNDS TODAY

अध्याय 6

इस अध्याय में अलग-अलग विषयों पर प्रबोधन है। इसके आरंभ में व्यापार जगत के लिए परामर्श है - विश्वासी और अविश्वासी दोनों के लिए। ये व्यापारियों के लिए अच्छे सिद्धान्त हैं। परमेश्वर ने सबके लिए अच्छी बातें कही हैं - विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के लिए।

व्यापार के उत्तम सिद्धांत

नीतिवचन 6:1-2

हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पड़ोसी का उत्तरदायी हुआ हो, अथवा परदेशी के लिये हाथ पर हाथ मार कर उत्तरदायी हुआ हो, तो तू अपने ही मूँह के वचनों से फँसा, और अपने ही मुँह की बातों से पकड़ा गया।

यहाँ दो बातों की चर्चा की गई है जो किसी भी समय के लिए अच्छा परामर्श है। किसी मित्र के साथ समझौता करने में सावधान रहें। किसी अनजान मनुष्य के साथ साझेदारी नहीं करना। एक अविश्वासी भी यदि इस सुझाव को माने तो लाभ में ही रहेगा।

www.Radio882.com

दूसरा पद कहता है कि वह घमण्ड करता है। यदि कोई किसी के साथ समझौता करता है तो वह यह दिखाना चाहता है कि वह बड़ा आदमी है और वह पैसों के विषय बड़प्पन दिखाना चाहता है। हमें इससे सावधान रहना है।

नीतिवचन 6:3

इसलिये हे मेरे पुत्र, एक काम कर, अर्थात् तू जो अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है, तो जा, उसको साष्टांग प्रणाम करके मना ले।

उसके पास जाकर हिसाब साफ करने से मत डर। अपने मित्र को थामने में और बैरी से संभलने में सावधानी रख। वह ठीक यही कह रहा है। आगे आनेवाले नीतिवचनों में भी वह यही कहेगा।

नीतिवचन 6:4-5

तू न तो अपनी आँखों में नींद, और न अपनी पलकों में झपकी आने दे; और अपने आप को हरणी के समान शिकारी के हाथ से, और चिड़िया के समान चिड़िमार के हाथ से छुड़ा।

लेखा जोखा स्पष्ट करने में देरी न कर, सोना भी नहीं कि किसी की गारन्टी लेकर आप चिड़ियाँ के समान जाल में फँस गए है। यह एक चेतावनी है।

अब वह इसका विपरित पक्ष प्रस्तुत करेगा। व्यापार में कहने और करने में सावधान तो रहना ही है परन्तु चीटियों से भी कुछ सीखना आवश्यक है।

नीतिवचन 6:6-8

हे आलसी, चींटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दें, और बुद्धिमान हो। उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला, तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

चींटी छोटी तो है परन्तु बड़ी अच्छी शिक्षक है। वह हमें महान सत्यों का प्रकाशन प्रदान करती है। एक सत्य तो यह है कि वह किसी भी काम में अत्यधिक परिश्रमी है। परमेश्वर की सन्तान को चींटी से सीखना है। चींटी अपने जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण काम करने में व्यस्त रहती है। वह भविष्य के लिए भोजन एकत्र करती है। वह लगातार परिश्रम करती रहती है।

मेरे विचार में विश्वासियों का एक पाप आलस्य भी है। मसीह की सेवा में अनेक आलसी पाए जाते हैं। हमें स्वयं से पूछना है कि हम अनेक बचे हुए समय में क्या करते हैं। क्या हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं? क्या हम वचन का अध्ययन करते हैं। मेरे विचार में आज सेवाकों का श्राप आलस्य है। एक पास्टर मेरे पास आया और कहने लगा, "मुझे लगता है कि मेरी सेवा

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

का समय पूरा हो गया है। मैं इस कलीसिया में तीन वर्ष से सेवा कर रहा हूँ और मेरे पास प्रचार के लिए कुछ नहीं बचा है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं सूखा कुआँ हूँ और वह अपनी धार्मिकता प्रगट करने लगा और कहने लगा "मैंने प्रार्थना और मनन में बुहत अधिक समय लगाया है।" मैंने पूछा, "आप परमेश्वर के वचन में कितना समय लगाते हैं? आप उसके अध्ययन में कितना समय लगाते हैं? मुझे उससे सन्तोषजनक उŸार नहीं मिला। उसके अनुसार वह सप्ताह में एक घंटा भी बाइबल अध्ययन नहीं करता था। वह कर्मठ था। सदा ही काम में लगा रहता था परन्तु सबसे महत्वपूर्ण काम पर वह ध्यान नहीं दे रहा था। मैंने उससे कहा, "यदि आप अपनी दिनचर्या न बदलें तो आपको सेवा निर्वित हो जाना चाहिए। रविवार की आराधना में तैयारी के बिना जाना लज्जा की बात है। आपके पास परमेश्वर के वचन का सन्देश होना आवश्यक है। उस युवक के लिए चींटी के पास शिक्षा है। "हे आलसी चींटियों के पास जा; और उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो।"

नीतिवचन 6:9-11

हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी? कुछ और सो लेना, थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना, तब तेरा कंगालपन बटमार की नाई और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पड़ेगी।

दुष्ट जन

अब हम दुष्ट जन - शैतान की सन्तान का वर्णन सुने:

नीतिवचन 6:12-13

ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढ़ी-टेढ़ी बातें बकता फिरता है, वह नैन से सैन और पाँव से इशारा, और अपनी अगुंलियों से संकेत करता है,

क्या आपने किसी मनुष्य में ऐसा देखा है? उसका प्रत्येक काम और प्रत्येक संकेत कुछ प्रगट करता है। उसकी प्रत्येक बात में अनर्थ प्रगट होता है। ऐसे कुछ विश्वासी भी हैं।

मैं ऐसे एक प्रचारक को जानता हूँ। मैं कुछ विश्वासियों को भी जानता हूँ जो ऐसा व्यवहार करते हैं उनकी हर एक बात में दो अर्थ होते हैं। कुछ विश्वासी समूह अपनी सभाओं में दो अर्थों के चुटकुले सुनाते हैं। परमेश्वर इसी के विरूद्ध कह रहा है।

नीतिवचन 6:14-15

उसके मन में उलट फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और झगड़ा रगड़ा उत्पन्न करता है। इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा।

"उलट फेर की बातें" अर्थात कुटिलता। ध्यान दें, "वह झगड़ा रगड़ा उत्पन्न करता

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है। यहाँ एक ऐसा मनुष्य है जो परमेश्वर की सन्तान कहलाता है परन्तु उसका प्रत्येक काम और बात अनर्थ से परीपूर्ण है।

मेरे घर में एक पुरूष का चित्र है। वह महान सेवक तो नहीं था पर परमेश्वर का एक महान भक्त अवश्य था। मैंने उसके साथ बहुत समय बिताया था। वह मुझे वचनों की शुद्धता का स्मरण करवाता है। मैंने उसके मुँह से कभी दो अर्थ की या अनर्थ की बात नहीं सुनी। उसका जीवन दोपहर के सूर्य के समान शुद्ध था। हमें ऐसे मनुष्यों की आवश्यकता है। हमें तड़क-भड़क वाले युवकों की आवश्यकता नहीं है। वे तो विवाहित होते हुए भी लड़कियों पर ललचाते हैं। उनकी पत्नियों को भी उन पर भरोसा नहीं होता है। हम कहते हैं, "ओह, उनका व्यक्तित्व कैसा आकर्षक है।"

क्या मैं कह सकता हूँ कि मसीही सेवा में आवश्यकता से अधिक सेवक हैं परन्तु हम आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। आप जानते हैं, क्यों नहीं? क्योंकि परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता है। गलातियों में पौलुस कहता है: गलातियों 6:7-8

धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

परमेश्वर को मूर्ख बनाना असंभव है। हमारा परमेश्वर पवित्र जीवन चाहता है। आप जानते हैं, क्यों? क्योंकि वह पवित्र है। वह ऐसा ही परमेश्वर है। परमेश्वर ऐसे ही मनुष्य में रूचि रखता है और उसे आशिष देना चाहता है। ओह, हमें यह समझना है कि हम एक महापवित्र परमेश्वर से व्यवहार कर रहे हैं। मेरा एक बहुत अच्छा मित्र पवित्रता अभियान में है। वे जीवन की पवित्रता पर ध्यान देते हैं। मैंने एक दिन उससे कहा, "मेरे विचार में आप लोगों ने अपनी पवित्रता को खो दिया है जबकि आप लोगों को हमारे लिए, जो परमेश्वर से दूर हो गए हैं, इसका निर्वाह करना है।" ओह, आज परमेश्वर के लोगों में पवित्र जीवन पर ध्यान देना कैसा आवश्यक वरन् अनिवार्य है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0690

सत्यवचन

नीतिवचन 6: 16 - 6:25

प्रियों मित्रों,

परमेश्वर सात बातों से घृणा करता है:

परमेश्वर घृणा भी करता है। कुछ लोगों को विश्वास नहीं होगा क्योंकि वे परमेश्वर को केवल प्रेम करनेवाला ही मानते हैं। उनका कहना है कि परमेश्वर प्रेम है और प्रेम घृणा नहीं करता। ठीक है! यह सच है कि परमेश्वर प्रेम है परन्तु प्रेम का विपरित क्या है? घृणा! वे कहते हैं कि प्रेमी परमेश्वर घृणा नहीं कर सकता। यह सच नहीं है। परमेश्वर निःसन्देह प्रेमी है परन्तु वह बुराई से घृणा करता है।

हमारे साथ भी ऐसा ही है। हम एक बालक से प्रेम करते हैं परन्तु उसे कष्ट देने वाले बुखार से घृणा करते हैं। आप अपने बच्चे से प्रेम करते हैं, परन्तु एक पागल कुत्तों से प्रेम नहीं करते क्योंकि वह आपके बच्चे को काट सकता है। जहाँ तक पाप के इस विषमता व्याप्त संसार का प्रश्न है, हम अच्छाई से प्रेम करते हैं और बुराई से घृणा। दूसरी ओर यदि आप पाप से प्रेम रखेंगे तो आप धार्मिकता से घृणा करेंगे।

परमेश्वर का वचन हमें कहता है कि हम अच्छाई से प्रेम रखें और बुराई से घृणा करें।

सभोपदेशक 3:8 -प्रेम करने का समय और बैर करने का भी समय है।

परमेश्वर सात बातों से घृणा करता है जिसकी सूची यहाँ दी गई है।

नीतिवचन 6:16-19 16 छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा हैः 17 अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ, 18 अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पाँव, 19 झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

परमेश्वर स्पष्ट कहता है कि वह इन बातों से घृणा करता है और हमें भी उनसे घृणा करना है। यहाँ परमेश्वर पहली बार नहीं कह रहा है कि वह घृणा करता है। व्यवस्थाविवरण 16:22 में लिखा है वह प्रतिमाओं से घृणा करता है अर्थात हमारे मन में उससे बढ़कर हर एक बात से। भजन संहिता 45:7 में वह दुष्टता से घृणा करता है। प्रकाशितवाक्य 2:6 में प्रभु आरंभिक कलीसिया से कहता है, **"... तू नीकुलीयों के नाम से घृणा करता है।"** आपने देखा मेरे मित्रों, परमेश्वर प्रेमी तो है परन्तु वह घृणा भी करता है।

जिस परिणाम में परमेश्वर प्रेम है उसी परिणाम में परमेश्वर घृणा भी करता है। धर्मशास्त्र

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

इसे अतिस्पष्ट करता है।

बाइबल में सात का अंक सिद्धता की अपेक्षा परिपूर्णता को प्रगट करता है। परमेश्वर इन बातों से पूरी रीति से घृणा करता है। ये सब देह के काम हैं। ये दुर्गुण मानवजाति की पूर्ण भ्रष्ट अवस्था और पतन के सूचक हैं। परमेश्वर स्पष्ट कहता है कि वह इन बातों से घृणा करता है। परमेश्वर मुक्त विचारों से सहमत नहीं कि वह एक बूढ़ा मनुष्य है जो रोता है और करता कुछ भी नहीं, कि वह मनुष्य के पापों को देख कर आँखें बन्द कर लेता है और दुष्टता को सह लेता है। वह क्षमा इसलिए कर देता है कि उसमें दण्ड देने का साहस नहीं। परमेश्वर कहता है, "मैं प्रेम करता हूँ।" परन्तु वह यह भी कहता है, "मैं घृणा करता हूँ।"

हम अपराधी को दया दिखाने चाहते हैं। क्यों? क्योंकि हम में दण्ड देने का साहस नहीं है। यह हमारे समाज के भ्रष्ट होने और नाश होने का कारण है। परमेश्वर दोषी को दण्ड देता है। वह जनता की राय की चिन्ता नहीं करता है। वह अपराधी से डरकर नहीं भागता है। वह कायर नहीं है। वह कहता है कि वह दोषी को कभी नहीं छोड़ेगा। उनके नियम न तो बदलते है और न ही तोड़े जा सकते हैं।

अब हम परमेश्वर द्वारा घृणा किए जाने वाले दुर्गुणों को देखें:

1. **"घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें"** अर्थात अपने आप को बड़ा समझना और दूसरे को छोटा समझना। यह सोचना कि हम किसी से बड़े हैं या अच्छे है और उससे मुँह मोड़ लेना। परमेश्वर कहता है, "मैं इससे घृणा करता हूँ।" यह पहला है। परमेश्वर इसे हत्या और नशा करने से अधिक बुरा मानता है।

यह बड़ी विचित्र बात है कि आज कलीसिया में घमण्डी को कुछ नहीं कहा जाता है। क्या आप जानते हैं कि स्वर्ग में पहला पाप - आदि में किया गया पाप - घमण्ड का था। जब ज्योति के पुत्र इबलीस ने (शैतान) ने मन में कहा: यशायाह 14:13-14,

मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा; मैं मेघों से भी ऊँचे-ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।

उसी ने अदन की वाटिका में कहा था: उत्पत्ति 3:5

वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखे खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।

यह एक अति रोचक बात है कि सब मानसिक समस्याओं और मस्तिष्क सम्बन्धित शारीरिक रोगों के पीछे उस वृक्ष का तना है जिसमें से नियम विरूद्ध बातें उत्पन्न होती हैं। क्या आप जानते हैं ये सब क्यों है? यह परिपूर्णता व्यक्तिव की कमी के कारण है। यह बड़ा आदमी बनने की लालसा है, पदप्रतिष्ठा की मनोकामना है, परमेश्वर से अलग स्वयं ही ईश्वर बनने की लालसा। स्वयं को अर्थात एक अकिंचन प्राणी के परमेश्वर के स्थान में रखना! यही कारण है कि

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

कर्मों द्वारा उद्धार पाना मनुष्य को अधिक अच्छा लगता है। अकिंचन मानव कहता है, "अपना उद्धार मैं स्वयं कमाऊँगा। मैं स्वयं कर लूँगा। परमेश्वर, मुझे तेरी आवश्यकता नहीं है। मुझे आवश्यकता नहीं कि तेरा पुत्र मेरे लिए मरे। तेरी उपस्थिति में जब मैं आऊँ तो तू मुझे जगह देना कि मैं तेरे बराबर बैठूँ क्योंकि मैं तेरे बराबर अच्छा हूँ।" मेरे मित्रों, कर्मों द्वारा उद्धार मानसिक रोगियों का विचार है। परमेश्वर घमण्डी का विरोध करता है और दीन का मान रखता है। वह कहता है कि वह घमडिण्यों को नीचा करेगा। अय्यूब 40:12 में परमेश्वर कहता है:

हर एक घमंडी को देखकर झुका दे, और दुष्ट लोगों को जहाँ खड़े हों वहाँ से गिरा दे।

मत्ति 5 में पर्वतीय उपदेश में यीशु ने कहा: मत्ति 5:3

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

भजनकार भी यही कहता है: भजन संहिता 131:1

हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है; और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक कठिन हैं, उन से मैं काम नहीं रखता।

अतः आवश्यक है कि हम दीनता का स्थान लें और कहें, "हे प्रभु, मैं दुर्बल हूँ, मैं असमर्थ हूँ। मुझे तेरी आवश्यकता है।

एक दिन मैंने युवाओं की सभा में एक लम्बे चौड़े लड़के को देखा। वह चाहता था कि उसके साथी उसे आदर दें। अतः उसने आते ही चारों ओर देखा और अपने साथियों को गालियाँ देना आरंभ कर दी। मैंने सोचा, "बेचारा, अकिंचन प्राणी, कैसा अभागा बच्चा है। अपने साथियों में अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रहा है। वह परमेश्वर से सच क्यों नहीं कह देता?" एक मानसिक रोगी ऐसी अनर्थ की बातें करता है। यदि वह भजनकार के समान कहता तो कितना अच्छा होता, "हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है। मुझ में धार्मिकता नहीं है। मैं वह दावा करना नहीं चाहता जो सच्चा न हो।" परमेश्वर के पास उद्धार के लिए आकर आप संपूर्ण व्यक्तित्व पाते हैं। सुनिये परमेश्वर यशायाह 66ः2 में क्या कहता है:

यहोवा की यह वाणी है, ये सब वस्तुएँ मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, सो ये सब मेरी ही हैं। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दी और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो।

यदि आप इस दशा में परमेश्वर के पास आना चाहते हैं तो वह आपको स्वीकार करेगा। वह घमण्डी से घृणा करता है।

2. **"झूठ बोलनेवाली जीभ"** क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि बाइबल में पियक्कड़पन की अपेक्षा झूठ बोलने के बारे में बहुत अधिक कहा गया है? झूठ बोलना हर एक भाषा में और हर जाति में है। आज जीभ का एक महान अभियान चल रहा है - झूठ बोलना। यह कैसी त्रासदी!

दाऊद कहता है: भजन संहिता 116:11

मैंने उतावली से कहा, कि सब मनुष्य झूठें हैं।

हमारे अध्यापक कहा करते थे, "दाऊद ने सब को झूठा कहा था। मैंने इस पर बहुत विचार किया और मैं उससे सहमत हूँ।" मैं भी दाऊद की बात मानता हूँ। दाऊद ने अपनी प्रार्थना में अंगीकार किया:भजन संहिता 51:6

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

परमेश्वर सत्य है: भजन संहिता 31:5

मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूँ; हे यहोवा, हे सत्यवादी ईश्वर, तू ने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है।

यह कैसी अद्भुत बात है, झूठी जीभ से कितना भिन्न है!

3. **"निर्दोष का लहू बहाने वाले हाथ"** हत्थारा तो परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही में घृणित है। परमेश्वर कहता है कि हमें दण्ड मिलना चाहिए क्योंकि उसने परमेश्वर द्वारा पवित्र ठहराई वस्तु को नाश किया है मनुष्य के जीवन का आज का प्रचलित विचार इसका विपरित है। हत्या करने के बाद हत्थारे के जीवन को मूल्यवान समझकर छोड़ दिया जाता है। परमेश्वर कहता है कि मनुष्य का जीवन अनमोल है और जो हत्या करे उसे अपना जीवन देकर उसकी क्षतिपूर्ति करना होगी। यह परमेश्वर के वचन की शिक्षा है।

4. **"अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन"** बुराई के विचार! मेरे विचार में सब मनुष्यों में बुरे विचार हैं। प्रभु यीशु ने कहा: मत्ति 15:19

बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन नही से निकलती है।

क्या आपने कभी परमेश्वर से अपने मन के विचार कहे हैं? हम सब को ऐसा करना चाहीए। हम सब को शोधन की आवश्यकता है।

परमेश्वर बुराई का विश्लेषण कर रहा है। इसमें आँख, जीभ, हाथ, हृदय, पाँव सब काम करते हैं।

5. **"बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पाँव"** मन मार्ग तैयार करता है और पाँव उस पर दौड़ते हैं। यही बात यशायाह में भी कही गई है:(यशायाह 59:7)

वे बुराई करने को दौड़ते हैं, और निर्दोष की हत्या करने को तत्पर रहते हैं; उनकी युक्तियाँ व्यर्थ हैं, उजाड़ और विनाश ही उनके मार्गों में हैं।

ये बातें परमेश्वर की घृणित वस्तुओं की सूची में हैं।

6. **"झूठ बोलने वाला साक्षी"** आज यह एक आम अभ्यास है। झूठी गवाही का तो आज फैशन है।

7. **"भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य"** हमारे प्रभु के पर्वतीय उपदेश में इसका सकारात्मक पक्ष दिया गया है :(मत्ति 5:9)

धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।

आज कलह का बीज बोनेवालों की कमी नहीं है। अति संभव है कि वे आपकी कलीसिया में भी हों। वह आपके घर पर भी हो सकता है, आपके स्थान पर बैठा हुआ भी हो सकता है। मेरे मित्रों, परिवार के सदस्यों में, मसीह में भाइयों के बीच, सहकर्मियों के बीच कलह करवाना परमेश्वर के लिए घृणित है।

सात पापों कि सूची एक प्रकार दर्पण है। हम इसे देखकर अशान्त हो जाते हैं क्योंकि वह हमारा प्रतिरूप है। क्या मैं आपसे कह सकता हूँ कि आप परमेश्वर के वचन रूपी दर्पण में अपने

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

आप को भली-भाँति देखें। अपने आप को ज्यों का त्यों देखकर हम परमेश्वर के समक्ष पश्चाताप करें। हम उसके साथ सत्यनिष्ठ हों और शोधन की याचना करें।

नीतिवचन 6:20-22

हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा को न तज। इन को अपने हृदय में सदा गाँठ बान्धे रख; और अपने गले का हार बना ले। वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझ से बातें करेगी।

यह बालक स्कूल जाने लगता है परन्तु उसे कहा गया है कि वह अपने माता-पिता की शिक्षा को न छोड़े क्योंकि उसे घर में जो सिखाया गया है वह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उसे लगातार उन पर मनन करना है।

यौनाचार के पाप के विरूद्ध चेतावनी

नीतिवचन 6:23 - आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति, और सिखानेवाले की डाँट जीवन का मार्ग है।

अब वह हमारे आज के पाप का उल्लेख करता है:

व्यभिचार का पाप।

यहाँ फिर एक पराई स्त्री - वैश्या से सावधान रहने की शिक्षा दी गई है। यह युवाओं के लिए सबसे अधिक घातक है। यह आज का सबसे बड़ा पाप है। इसके कारण नष्ट हुए जीवनों को गिनना असंभव है। इसके कारण कितने विवाह टूटे चुके हैं! सिनेमा, पुस्तकें, गाने आदि सब इसी विषय पर हैं। विवाहित जीवन में तीसरे के आ जाने से विवाह का नाश हो जाता है। नीतिवचन में इस विषय पर बहुत अधिक चर्चा की गई है।

नीतिवचन 6:24-25

ताकि तुझ को बुरी स्त्री से बचाए और पराई स्त्री की चिकनी-चुपड़ी बातों से बचाए। उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फँसाने न पाए;

ध्यान दें, "उसकी सुन्दरता अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर।" हमने अभी-अभी देखा है: **नीतिवचन 4:23**

सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यहाँ ध्यान दें कि उसकी चिकनी-चुपड़ी बातें, उसकी सुन्दरता, उसके कटाक्ष के विरूद्ध चेतावनी दी गई है। मत्ति 5:27-28 में यीशु ने कहा:

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका है।

पाप का आरंभ मन से ही होता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0691

सत्यवचन

नीतिवचन 6: 26 - 8:8

प्रिय मित्रों

नीतिवचन 6:26

क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य टुकड़ों का भिखारी हो जाता है, परन्तु व्यभिचारिणी अनमोल जीवन का अहेर कर लेती है।

इस कारण कितने जीवन नष्ट हुए है! आज किसी भी कार्यालय में अवैध संबंध रखने वाले पतियों को गिना जाए तो आप आश्चर्यचकित हो जाएँगे। अवैध यौनाचार के कारण कितने लोगों को धमकी दी जाती है! हाल ही में एक डाक्टर के जीवन का भेद खुला है उसके दो परिवार हैं। सब तो यही सोचते थे कि वह एक सदाचारी मनुष्य है। सेवकों के जीवन में भी ऐसा पाया जाता है। इसका आरंभ कैसे होता है? प्रभु यीशु ने कहा कि इसका आरंभ मन से होता है। उसने हमें बनाया है इसलिए वह हमें जानता है। "उसकी सन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर।"

अब वह कुछ स्पष्ट प्रश्न पूछता है:

नीतिवचन 6:27

क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले; और उसके कपड़े न जलें?

इसका उत्तर स्पष्ट है।

नीतिवचन 6:28

क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले, और उसके पाँव न झुलसें?

कुछ उन्मादी ऐसा करके अपने पाँव जला लेते हैं।

नीतिवचन 6:29

जो पराई स्त्री के पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है; वरन जो कोई उसको छूएगा वह दंड से न बचेगा।

व्यभिचारी के पास अपने आप को निर्दोष सिद्ध करने के लिए कोई प्रतिवाद नहीं है। अब एक उदाहरण देखें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 6:30

जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे, उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते;

भूखा मनुष्य चोरी करे तो हम उससे सहानुभूति प्रगट करते हैं। आप उसको दण्ड नहीं देंगे। आप उसकी सहायता करना चाहेंगे। "जो चोर भूख के मारे पेट भरने के चोरी करे, उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते।"

नीतिवचन 6:31

तौभी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सातगुणा भर देना पड़ेगा; वरन अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा।

वह स्वयं को बन्धक रखकर क्षतिपूर्ति करेगा।

नीतिवचन 6:32

परन्तु जो परस्त्रीगमन करता है वह निरा निर्बुद्धी है; जो अपने प्राणों को नाश करना चाहता है, वह ऐसा करता है।

हमारे पड़ोस में एक मनुष्य किसी के घर में गया और गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। क्यों? क्योंकि मृतक ने अपनी वासना के कारण उसका परिवार नष्ट कर दिया था। अपराधी को मुक्त कर दिया गया। "जो परस्त्रीगमन करता है वह निरा निर्बुद्धि है। जो अपने प्राणों को नष्ट करना चाहता है, वही ऐसा करता है।"

नीतिवचन 6:33

उसको घायल और अपमानित होना पड़ेगा, और उसकी नामधराई कभी न मिटेगी।

व्यभिचार मनुष्य की आत्मा को आजीवन के लिए क्षतिग्रस्त कर देता देता है। मैं एक ऐसे पुरूष को जानता हूँ जिसका पराई स्त्री से सम्बन्ध था परन्तु वह पश्चाताप करके लौट आया और उसकी पत्नी ने उसे क्षमा भी कर दिया। मैं उसके परिवार को जानता हूँ और कह सकता हूँ कि आज वह परिवार एक सुखी परिवार नहीं है। व्यभिचार का दाग मिटाया नहीं जा सकता है। ऐसा करनेवाला निर्बुद्धि है। आपका जीवन तो नाश होगा ही पर आपका परिवार भी नष्ट हो जाएगा।

नीतिवचन 6:34-35

क्योंकि जलन से पुरूष बहुत ही क्रोधित हो जाता है, और पलटा लेने के दिन वह कुछ कोमलता नहीं दिखाता। वह घूस पर दृष्टि न करेगा, और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे, तौभी वह न मानेगा।

ओह, मेरे मित्रों, व्यभिचार का परिणाम कैसा विनाशकारी होता है!

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 7

हम पराई स्त्री से दूर रहने के बारे में नीतिवचन सुन रहे थे और अध्याय 7 में भी वही कहा जा रहा है।

नीतिवचन 7:1-4

हे मेरे पुत्र, मेरी बातों को माना कर, और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़। मेरी आज्ञाओं को मान, इस से तू जीवित रहेगा, और मेरी शिक्षा को अपनी आँख की पुतली जान; उनको अपनी उंगलियों में बान्ध, और अपने हृदय की पटिया पर लिख ले। बुद्धि से कह कि, तू मेरी बहन है, और समझ को अपनी साथिन बना;

यह कह कर वह परिणाम सुनाता है।

नीतिवचन 7:5

तब तू पराई स्त्री से बचेगा, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है।
वह जीवन से उदाहरण देता है।

नीतिवचन 7:6-9

मैंने एक दिन अपने घर की खिड़की से, अर्थात् अपने झरोखे से झाँका, तब मैं ने भोले लोगों में से एक निर्बुद्धि जवान को देखा; वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क पर चला जाता था, और उस ने उसके घर का मार्ग लिया। उस समय दिन ढल गया, और संध्याकाल आ गया था, वरन रात का घोर अन्धकार छा गया था।

यह युवक गलत सड़क पर चल रहा था।

नीतिवचन 7:10-14

और उस से एक स्त्री मिली, जिस का भेष वेश्या का सा था, और वह बड़ी धूर्त थी। वह शान्तिरहित और चंचल थी, और अपने घर में न ठहरती थी; कभी वह सड़क में, कभी चौक में पाई जाती थी, और एक एक कोने पर वह बाट जोहती थी। तब उस ने उस जवान को पकड़कर चूमा, और निर्लज्जता की चेष्टा करके उस से कहा, मुझे मेलबलि चढ़ाने थे, और मैंने अपनी मन्नते आज ही पूरी की हैं।

वह धार्मिक स्त्री है और उसे विश्वास दिलाती है कि वह परमेश्वर की दृष्टि में सही है, "मुझे मेलबली चढ़ाने थे और मैंने अपनी मन्नतें आज ही पूरी की हैं।"

नीतिवचन 7:15

इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को निकली, मैं तेरे दर्शन की खोजी थी, सो अभी पाया है।

अर्थात मैं जैसे पुरूष के लिए तरसती रही वह आज मुझे मिला है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 7:16-20

मैंने अपने पलंग के बिछौने पर मिस्र के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाए हैं; मैंने अपने बिछौने पर गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की है। इसलिये अब चल हम प्रेम से भोर तक जी बहलाते रहें; हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें। क्योंकि मेरा पति घर में नहीं है; वह दूर देश को चला गया है; वह चान्दी की थैली ले गया है; और पूर्णमासी को लौट आएगा।

वह उसे विश्वास दिलाती है कि उसका पति घर से बाहर विदेश गया है और बहुत दिनों बाद आएगा।

नीतिवचन 7:21-23

ऐसी ही बातें कह कहकर, उस ने उसको अपनी प्रबल माया में फँसा लिया; और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से उसको अपने वश में कर लिया। वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया, और जैसे बैल कसाई-खाने को, या जैसे बेड़ी पहने हुए कोई मूढ़ ताड़ना पाने को जाता है। अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा; वह उस चिड़िया के समान है जो फन्दे की ओर वेग से उडै और न जानती हो कि उस में मेरे प्राण जाएँगे।

यह कैसा दृश्य!

अब चेतावनी दी गई है!

नीतिवचन 7:24-27

अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों पर मन लगाओ। तेरा मन ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर न फिरे, और उसकी डगरों में भूल कर न जाना; क्योंकि बहुत लोग उस से मारे पड़े हैं; उसके घात किए हुओं की एक बड़ी संख्या होगी। उसका घर अधोलोक का मार्ग है, वह मृत्यु के घर में पहुँचाता है।

इस चेतावनी को हमें ज्यों का त्यों मानना है। आज इसका हमारे लिए आत्मिक अर्थ भी है। धर्मशास्त्र में आत्मिक व्यभिचार के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। परमेश्वर की प्रजा जब मूर्ति की उपासना करने लगी तब परमेश्वर ने उसे व्यभिचारिणी कहा था। वे मूर्ति की उपासना करने के कारण दासत्व में भेजे गए थे। उन्होंने जीवते परमेश्वर का त्याग कर दिया था। वे परमेश्वर के प्रति निष्ठावान नहीं थे। यह आत्मिक व्यभिचार था।

आज चारों ओर अनेक धार्मिक पंथ है। अनेक मान्यताएँ हैं। एक पंथ है जिसका कहना है कि मसीह का अनुसरण ऐसे नहीं करना है जैसे हम करते हैं और एकमात्र यीशु को उद्धारकर्ता मानने की आवश्यकता नहीं है। जो आवश्यक है वह कर्म हैं जैसे वे करते हैं।

एक बार मैं टी.वी. पर गलातियों का अध्ययन करवा रहा था कि उद्धार केवल विश्वास से है। इसके अन्य कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। मैं बल दे रहा था कि हमें केवल

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यीशु को ही उद्धारकर्ता मानना है। मुझे अनेकों ने जाने क्या क्या लिखा! एक ने लिखा, "आपके अनुसार हमें मूसा की व्यवस्था का त्याग कर देना चाहिए।" मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा था। मैं कह रहा था कि व्यवस्था के द्वारा उद्धार नहीं है। व्यवस्था तो अच्छी है परन्तु हमारे साथ समस्या है इस कारण हमारा उद्धार केवल मसीह यीशु ही कर सकता है। हम स्वयं प्रयास करने की अपेक्षा उसके पास आ जाए तो हमारा उद्धार हो जाएगा।

किसी ने मुझे लिखा कि मैं गलत हूँ। "आपको कहना था कि बपतिस्मा लेने के लिए एक विशेष विधि अपनाओ।" किसी ने कहा, "आपको मुझे बताना था कि किस दल की सदस्यता लूँ।" किसी ने कहा कि मुझे मूसा की व्यवस्थापालन की शिक्षा देना चाहिए। क्योंकि मसीह में विश्वास करके भी व्यवस्थापालन आवश्यक है।

क्या में प्रति उत्तर में कह सकता हूँ कि हम विश्वासी, मसीह से जुड़े हुए हैं और हमें प्रभु यीशु की आज्ञाओं का पालन करना है, यदि हम उससे प्रेम करते हैं तो उसकी आज्ञाएँ बोझ नहीं हैं। हमें एक दूसरे से प्रेम करना है। हमें परमेश्वर के आत्मा से भर जाना है। हमें संसार में गवाह बनना है। आज ये उसकी आज्ञाएँ है। हम जीवित मसीह यीशु से जुड़े होने के कारण ऊँचे स्तर पर जीवन जी रहे हैं। हमारे मन में और जीवन में आत्मा का फल प्रगट होना चाहिए।

ये सब धार्मिक पंथ उस पराई स्त्री के समान हैं जो सड़क पर उस युवक से चिकनी-चुपड़ी बातें करती है। वह स्त्री पुरूषों को पुकारती है। वह अपने काम में व्यस्त है। वह हर जगह आपसे भेंट कर सकती है। वह एक वैश्या है। वह आपको प्रभु यीशु से अलग करना चाहती है। मेरे मित्रों, सड़क की यह पराई स्त्री कई बार रेडियों और टी. वी. भी द्वारा आपके घर में भी आ सकती है और आपको ललचाती है। कहा गया है कि उसके साथ चलना ऐसा है जैसे बैल कसाई खाने को। काश, हम मसीह यीशु की अपेक्षा किसी और में आस्था न रखें।

मेरे विचार में यह धार्मिक पंथों का सबसे अच्छा चित्रण है। वैश्या के समान श्रृंगार से पूर्ण हैं। आकर्षक हैं। ललचाते हैं और नरक ले जाने वाली बातें सुनाते हैं। यीशु, हमारे प्राण से प्रेम रखनेवाले से हमें दूर ले जाना चाहता हैं।

अध्याय 8

अब यह युवा अनेक महाविद्यालयों के प्रोसपेक्टस देख रहा है जिनमें बुद्धि का स्कूल भी है और मूर्खता का स्कूल भी है। इस अध्याय में बुद्धि उसे पुकार रही है। उसकी पुकार आपातकालीन है। उस युवक पर अब दबाव है। स्कूल का घंटा बजेगा और उसे किसी न किसी स्कूल में जाना ही होगा।

WORD RESOUNDS TODAY
www.Radio882.com

युवक को बुद्धि की पुकार

नीतिवचन 8:1

क्या बुद्धि नहीं पुकारती है, क्या समझ ऊँचे शब्द से नहीं बोलती है?

हमने देखा है कि युवक को ललचाया गया था कि वह बुद्धि की पाठशाला छोड़ दे। मेरा विश्वास करें कि धार्मिक पंथ सड़कों पर घूम रहें हैं और आपका द्वार खटखटा रहे हैं।

परमेश्वर के लोगों को भी आज सड़क पर ऐसा ही करना चाहिए। मैं कुछ संस्थाओं के लिए वास्तव में मन से आभारी हूँ कि वे युवाओं में सेवा कर रही हैं। वे घर-घर जाते हैं। वे अपने जीवन से गवाही देते हैं। यह एक अति उत्तम कार्य है। बुद्धि और समझ की बात सुनाई देती है।

नीतिवचन 8:2-4

वह तो ऊँचे स्थानों पर मार्ग की एक ओर और तिर्मुहानियों में खड़ी होती है; फाटकों के पास नगर के पैठाव में, और द्वारों ही में वह ऊँचे स्वर से कहती है, हे मनुष्यों, मैं तुम को पुकारती हूँ, और मेरी बात सब आदमियों के लिये है।

हम टी.वी. एवं रेडियो के माध्यम से यही करने का प्रयास कर रहे हैं। हम बुद्धि के स्कूल में आने का निमन्त्रण भेज रहे हैं। हम आपको मसीह के रूप में बुद्धि के पास बुला रहे हैं। प्रभु यीशु हमारे लिए ज्ञान है।

नीतिवचन 8:5

हे भोलो, चतुराई सीखो; और हे मूर्खों, अपने मन में समझ लों।

क्या आप कहेंगे कि आप अधूरे हैं, आप पापी है, और आपके साथ बौद्धिक समस्याएँ नहीं हैं? कभी-कभी मनुष्यों को बौद्धिक समस्याओं का उल्लेख करते सुनना हास्यस्पद लगता है। मुझे एक युवक ने कहा, "उसे बाइबल में बौद्धिक समस्या होती है।" आप जानते हैं कि उसकी वास्तविक समस्या क्या थी? वह अपने पाप से मन फिराना नहीं चाहता था। मैंने तो यही देखा है कि यदि किसी मनुष्य में पाप की समस्या है और वह मसीह के पास उस समस्या को लेकर आ जाए तो अति विस्मयकारी रूप से वह बौद्धिक समस्या दूर हो जाती है।

नीतिवचन 8:6

सुनो, क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूँगी, और जब मुँह खोलूँगी, तब उस से सीधी बातें निकलेंगी;

कैसा अद्भुत चित्रण!

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 8:7-8

क्योंकि मुझ से सच्चाई की बातों का वर्णन होगा; दुष्टता की बातों से मुझ को घृणा आती है। मेरे मुँह की सब बातें धर्म की होती हैं, उन में से कोई टेढ़ी वा उलट फेर की बात नहीं निकलती है।

बाइबल में गलतियाँ और समस्याएँ खोजनेवाले बहुत है। अनेक पुस्तकें भी लिखी गई हैं। मैं समझ सकता हूँ कि बौद्धिक मनुष्य के लिए बाइबल में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही था जब मैंने अध्ययन आरंभ किया था। मुझे आज भी समस्याएँ हैं परन्तु समस्या परमेश्वर के वचन में नहीं है। समस्या मनुष्य के मन-मस्तिष्क में है। परमेश्वर कहता है कि बुद्धि के वचनों में न तो कुछ जटिलता है और न ही भ्रष्ट बातें हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0692

सत्यवचन

नीतिवचन 8: 9 - 9: 5

प्रिय मित्रों

नीतिवचन 8:9
समझवाले के लिये वे सब सहज, और ज्ञान के प्राप्त करनेवालों के लिये अति सीधी हैं।

देखिए, बुद्धि सीधी और सहज होती है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने सुसमाचार केवल बुद्धिमानों को ही नहीं दिया। यदि वह ऐसा करता तो अधिकांश मानवजाति सुसमाचार से वंचित हो जाती। यह सीधे लोगों के लिए सन्देश है और सुबोध सन्देश है।

यह एक रोचक बात है कि मनुष्य जिस सुसमाचार को गहरी और गूढ़ बात कहता है वह वास्तव में वैसा है ही नहीं। जब मैं बाइबल स्कूल में गया तब सोचता था कि मैं अन्य विद्यार्थियों से कहीं अधिक जानता हूँ। हमारी सेमिनरी में एक बुद्धिमान शिक्षक पढ़ाने आते थे और मैं आपसे सच कहता हूँ कि उसकी बातें मेरे सिर के ऊपर से निकल जाती थी। मैंने एक बुद्धिमान शिक्षक से कहा कि मुझे तो उसकी कक्षा में कुछ भी समझ नहीं आता है। मैं सोचता था कि मैं सब कुछ समझने की बुद्धि रखता हूँ परन्तु इस शिक्षक की बातें मेरे सिर के ऊपर से निकल जाती थी। मैं उनका उत्तर कभी नहीं भूलता हूँ जो उन्होंने मुझ से कहा "मेरे भाई जब पानी निर्मल हो तो आपको सात फुट नीचे तालाब का तल दिखाई देता है और जब पानी गंदा हो तो सड़क पर आपको जूतों का निशान भी नहीं दिखता है। कुछ लोग गहरे नहीं गंदे होते हैं।" मुझे अपना उत्तर मिल गया था। मेरे मित्रों, यदि बाइबल में आपके लिए बौद्धिक समस्या है तो समस्या बाइबल में नहीं आप में है।

मैं आपको नये नियम का एक संदर्भ देता हूँ जो गूढ़ प्रतीत होता है परन्तु है अति सुबोध -

2 कुरिन्थियों 3:13-14
और मूसा की नाई नहीं, जिस ने अपने मुँह पर परदा डाला था ताकि इस्राएली उस घटनेवाली वस्तु के अन्त को न देखें। परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय उन के हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है; पर वह मसीह में उठ जाता है।

अब आप सोचेंगे कि हृदयों पर परदा पड़ा रहने के कारण वे समझ नहीं पाते थे इसलिए उनसे लेखा नहीं लिया जाएगा। आज भी अनेक जन कहते हैं कि उनकी बुद्धि पर परदा पड़ा हैं इसलिए वे बाइबल समझने में असमर्थ हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अब आगे का पद सुनें,

2 कुरिन्थियों 3:15-16

आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है। परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा।

जब उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा तब वह परदा उठ जाएगा। देखा आपने समस्या मस्तिष्क की नहीं हे, मन की है।

हम अपने आज के जीवन को देखें। कभी न कहें कि आपकी बौद्धिक समस्याएँ आपको प्रभु यीशु से दूर रखती हैं। समस्या आपके जीवन में उपस्थित पाप की हैं। आप अपने जीवन में परिवर्तन लाना नहीं चाहते हैं। आप अपना सिर झुकाकर और मन को दीन बना कर प्रभु यीशु के पास आना नहीं चाहते हैं। समस्या यही है। ध्यान दें कि जब आपका मन प्रभु के पास आ जाता है तब एक अद्भुत बात होती है - परदा हट जाता है। समस्याओं का समाधान होता है।

मध्यकालीन युग के एक महापूरूष ने कहा, "मसीह के पास आने तक मूझे बहुत समस्या थी। हम कहेंगे कि उसकी समस्या बौद्धिक थी। नहीं वे मन की समस्याएँ थीं। परमेश्वर का वचन स्पष्ट है। सुसमाचार ऐसा सुबोध है कि वह गलत समझा ही नहीं जा सकता। यह अवश्य हो सकता है कि जानबूझकर और अपनी इच्छा से सुसमाचार का विरोध किया जाए। यह मन की समस्या है।

हमें परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया से पता चलता है कि विश्वासी का मन कहाँ है। कुछ लोग परमेश्वर के वचन से प्रेम रखते हैं और कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनकी अभिव्यक्ति धार्मिक हैं और शब्दावली रूढ़ीवादी है परन्तु वे मृतक के समान हैं। वे परमेश्वर के वचन का विरोध करते हैं।

मुझे लोग कहते हैं कि मुझे वचन का विरोध करनेवालों को सुधारना चाहिए। मैं कहता हूँ कि मेरा काम वचन सुनाना है उनसे व्यवहार करना परमेश्वर का काम है। मैं अपने सेवाकाल में देख चुका हूँ कि परमेश्वर उनके साथ कैसा न्याय करता है। वह उनके परिवारों में घुसकर उनका न्याय करता है। मैं एक हठी युवक को जानता हूँ जो परमेश्वर के वचन का विरोधी था। वह अपनी पत्नी को छोड़कर किसी और स्त्री के साथ भाग गया। उसके जीवन का यह पाप उसकी समस्या था मैं इस बात पर बल देता हूँ क्योंकि परमेश्वर का वचन स्पष्ट एवं निर्मल है। उसमें कुछ भी उलटफेर या कुटिलता नहीं है।

नीतिवचन 8:10-11

चान्दी नहीं, मेरी शिक्षा ही को लो, और उत्तम कुन्दन से बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो। क्योंकि बुद्धि, मूंगे से भी अच्छी है, और सारी मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है।

जब आप और मैं अय्यूब के समान उस स्थान पर आ जाते हैं कि अपना जीवन सीधा करें - अपनी प्राथमिकताओं को यथास्थान पर रखें, आप इस संसार में तुलना करके देखें कि

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

बुद्धि अनमोल रत्नों से अधिक कीमती है तब आप परमेश्वर को अपने जीवन में प्राथमिकता देंगे, प्रभु यीशु ने कहा, मत्ती 6:33

इसलिये पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी।

हम देख रहें है कि बुद्धि युवाओं को पुकारती है। बुद्धि मूल्यवान वस्तुओं से अधिक कीमती है। अब हम बुद्धि के गुण देखेंगे।

बुद्धि के गुण

नीतिवचन 8:12 - मैं जो बुद्धि हूँ, सो चतुराई में वास करती हूँ, और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूँ।

परमेश्वर का वचन स्पष्ट करता है कि बुद्धि एक व्यक्ति है। उस में प्रभु यीशु का व्यक्तित्व है।

नीतिवचन 8:13

यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमंड, अंहकार, और बुरी चाल से, और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूँ।

आज के युग में यह सच है। यह हमारे जीवन स्तर पर है। बुद्धि प्रगट की जाती है। यह परमेश्वर का गुण है और प्रभु यीशु में प्रगट है। परमेश्वर घमण्ड, अहंकार, बुरीचाल और उलट-फेर की बातों से घृणा करता है। यदि हम उसके हैं तो हम भी इन बातों से घृणा करेंगे।

नीतिवचन 8:14-16

उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है, मैं तो समझ हूँ, और पराक्रम भी मेरा है। मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं, और अधिकारी धर्म से विचार करते हैं; मेरे ही द्वारा राजा हाकिम और रईस, और पृथ्वी के सब न्यायी शासन करते हैं।

भजनों में और दानिय्येल की भविष्यद्वाणी में बार-बार कहा गया है, कि सर्वशक्तिमान मनुष्यों के राज्यों पर प्रभुता करता है और जिसे चाहे उसे देता है। यह जानना कैसी महान बात है कि परमेश्वर सांसरिक मामलों पर प्रभुता रखता है और उसकी इच्छा पूरी होती है। वह मनुष्यों के राज्यों पर प्रभुता करता है।

नीतिवचन 8:17

जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन से मैं भी प्रेम रखती हूँ, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।

सुलैमान ने अपने जीवन में शीघ्र ही यह बात सीख जी थी। उसने देखा कि परमेश्वर से

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

मांगने पर उसे बुद्धि मिली थी। राजा बनते ही उसने परमेश्वर की खोज की। वह जानता था कि परमेश्वर ही ने उसे बेजोड़ बुद्धि दी थी। परमेश्वर हमें भी बुद्धि देगा यदि हम उसकी शर्तें पूरी करेंगे - हमें मसीही जीवन के आरंभ से ही परमेश्वर के वचन का यत्न से अध्ययन करना और उससे प्रेम करना चाहिए।

नीतिवचन 8:18-19

धन और प्रतिष्ठा मेरे पास है, वरन ठहरनेवाला धन और धर्म भी हैं। मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है।

वे धन सम्पदा नहीं है। ये उसके अद्भुत आत्मिक वरदान हैं।

नीतिवचन 8:20-21

मैं धर्म की बाट में, और न्याय की डगरों के बीच में चलती हूँ, जिस से मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूँ, और उनके भंडारों को भर दूँ।

मसीह यीशु बुद्धि है:

मेरे विचार में अब से आगे आप यह मानकर चलेंगे कि मसीह यीशु ही कह रहा है।

नीतिवचन 8:22

यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ में, वरन अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहिले उत्पन्न किया।

यह प्रभु यीशु है जो साक्षात बुद्धि है।

नीतिवचन 8:23

मैं सदा से वरन आदि ही से पृथ्वी की सृष्टि के पहिले ही से ठहराई गई हूँ।

"सदा से ठहराई गई" अर्थात अभिषेक किया गया।

यह यूहन्ना का कथन है, यूहन्ना 1:1-2

आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

वह परमेश्वर के साथ एक ही तत्व था एक ही प्रकृति था। अनादिकाल में वह स्वयं परमेश्वर था। परमेश्वर और प्रभु यीशु दोनों एक ही में थे। उसका आरंभ नहीं है। आदि में वचन था। देखिए वह आदि में ही भूतकाल का था।

केवल वही हमें स्पष्ट समझा सकता है। मत्ती11:27 में वह कहता है:

मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

"कोई पुत्र को नहीं जानता केवल पिता।"

हम प्रभु यीशु को नहीं जान सकते थे यदि पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर ने पवित्र आत्मा नहीं भेजा होता कि हमारे मन को खोले। उद्धार पा लेनेवाला प्रभु यीशु में विश्राम पाता है और स्तुति करता है। हम आज अविश्वास के युग में वास करते हैं। शंकालुओं को शंका में जीवन जीने दो। मेरे मित्रों, हमारा प्रभु यीशु से व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ संबन्ध है और वह वचन है। "... वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।" अति महान कथन!

बुद्धि प्रभु यीशु ही है।

नीतिवचन 8:24-27

जब न तो गहरा सागर था, और न जल के सोते थे तब ही से मैं उत्पन्न हुई। जब पहाड़ या पहाड़ियाँ स्थिर न की गई थीं, जब यहोवा ने न तो पृथ्वी और न मैदान, न जगत की धूलि के परमाणु बनाए थे, इन से पहिले मैं उत्पन्न हुई। जब उस ने अकाश को स्थिर किया, तब मैं वहाँ थी, जब उस ने गहरे सागर के ऊपर आकाशमंडल ठहराया,

यूहन्ना 1:3- सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

"जब उसने गहरे सागर के ऊपर आकाशमण्डल ठहराया" वैज्ञानिक पहले कहते थे कि सौरमण्डल चौकोर है परन्तु परमेश्वर ने यही कहा कि वह गोल है। हमारा संसार गोल है और हम सौरमण्डल में चक्कर काट रहे हैं। हमारी आकाश गंगा भी गोल है। ये सब गोल वस्तुएँ गोल घूम रही हैं।

नीतिवचन 8:28-29

जब उस ने आकाशमंडल को ऊपर से स्थिर किया, और गहरे सागर के सोते फूटने लगे, जब उस ने समुद्र का सिवाना ठहराया, कि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन न कर सके, और जब वह पृथ्वी की नेव की डोरी लगाता था,

क्या आपने कभी सोचा है कि समुद्र का पानी उसके पार क्यों नहीं जाता है? वह वही क्यों रहता है? यहा लिखा है, "उसने समुद्र ही सीमा ठहराई कि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन न कर सके।" परमेश्वर ने यह बनाया कि समुद्र वहीं रहे।

नीतिवचन 8:30-31

तब मैं कारीगर सी उसके पास थी; और प्रति दिन मैं उसकी प्रसन्नता थी, और हर समय उसके सामने आनन्दित रहती थी। मैं उसकी बसाई हुई पृथ्वी से प्रसन्न थी और मेरा सुख मनुष्यों की संगति से होता था।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

प्रभु यीशु के बिना कोई भी सृजित वस्तु नहीं बनी थी। सब कुछ उसी ने बना था। वह संपूर्ण सृष्टि से पूर्व का है। वह सबसे वरिष्ठ है। क्यों? क्योंकि पिता परमेश्वर ने उसी के द्वारा संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति की है। वह असृजित परमेश्वर है। वह प्रतिदिन उसकी प्रसन्नता था। ये सब आनन्द और प्रसन्नता के कारण परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह से हमें मिलते हैं। यह सब कैसा अद्भुत है!

नीतिवचन 8:32-33

इसलिये अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो; क्या ही धन्य हैं वे जो मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं। शिक्षा को सुनो, और बुद्धिमान हो जाओ, उसके विषय में अनसुनी न करो।

बुद्धि प्रभु यीशु है जिसके लिए प्रेम आवश्यक है।

नीतिवचन 8:34-35

क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन मेरी डेवढ़ी पर प्रति दिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों के खंभों के पास दृष्टि लगाए रहता है। क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है, और यहोवा उस से प्रसन्न होता है।

"जो मुझे पाता है वह जीवन को पाता है।" यीशु को पाना जीवन पाना है।

नीतिवचन 8:36

परन्तु जो मेरा अपराध करता है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है; जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं।

मेरे मित्रों, यदि आप प्रभु यीशु से घृणा करते हैं तो आप मृत्यु से प्रेम करते हैं। कैसा अद्भुत चित्रण! बुद्धि प्रभु यीशु है।

WORD RESOUNDS TODAY

अध्याय 9

अब देखें कि बुद्धि ने अपना स्कूल खोल दिया है। युवक बुद्धि के स्कूल से दसवीं पास करता है। हम इसके लिए आभारी हैं। सब कुछ तैयार है और हम इस स्कूल में देख सकते हैं। उस स्कूल का घंटा बजने वाला है।

बुद्धि का स्कूलः

www.Radio882.com

नीतिवचन 9:1-5

बुद्धि ने अपना घर बनाया और उसके सातों खंभे गढ़े हुए हैं। उस ने अपने पशु वध करके, अपने दाखमधु में मसाला मिलाया है, और अपनी मेज़ लगाई है। उस ने अपनी सहेलियाँ, सब को बुलाने के लिये भेजी है; वह नगर के ऊँचे स्थानों की चोटी पर पुकारती है, जो कोई भोला हे वह मुड़कर यहीं आए! और जो निर्बुद्धि है, उस से वह कहती है, आओ, मेरी रोटी खाओ, और मेरे मसाला मिलाए हुए दाखमधु को पीओ।

बुद्धि ने अपना घर बनाया है। यह बुद्धि की पाठाला है। ध्यान दें, उसमें सात खंभे हैं। ये सात खंभे पूर्णता के प्रतीक हैं। यह पाठशाला पी. एच. डी. तक की शिक्षा देती है।

मैं आधुनिक शिक्षा का महत्व कम नहीं कर रहा हूँ। कुछ लोगों का कहना है कि यीशु ने अशिक्षितों को अपना शिष्य बनाया था। मुझे एक व्यक्ति ने पत्र में बड़ी फटकार लगाई कि मैं अपने नाम के आगे डॉक्टर क्यों लगाता हूँ। प्रभु यीशु के शिष्यों में किसी के पास भी पी. एच. डी. नहीं थी। पी. एच. डी. आपके परिश्रम का वर्णन करती है इसलिए परिश्रम करने वाले को पी. एच. डी. लगाने का अधिकार है। मुझे आज की शिक्षा पद्धति पर आश्चर्य होता है। एक युवक एम. ए. - इतिहास कर रहा था। उससे कहा गया है कि वह तीथियों को और नामों को भूल जाए तो उसे उस युग का वास्तविक आनन्द प्राप्त होगा। यह ऐसी शिक्षा है जिसमें मनुष्य के पैर जमते नहीं हैं। मेरे विचार में तो तथ्य आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं। आज कुछ स्कूल इस सिद्वान्त पर चल रहे हैं।

जहाँ तक 12 शिष्यों की शिक्षा की बात है, यीशु के साथ 3 वर्ष रहने वाला मनुष्य अशिक्षित हो नहीं सकता। उन्होंने संसार के सबसे बड़े गुरू से शिक्षा पाई थी। प्रेरित पौलुस अपने युग की पाठशाला में उच्च शिक्षा प्राप्त था। उसे कोई अज्ञानी कह ही नहीं सकता था। स्मरण रखे बुद्धि प्रभु यीशु है। वह आपको पूर्ण शिक्षा दे सकता है।

"उसने अपने पशु वध करके, अपने दाखमधु में मसाला मिलाया है, और मेज लगाई है।" अब स्कूल जाने और पढ़ने का समय आ गया है।

"उसने अपनी सहेलियाँ सबको बुलाने के लिए भेजी हैं, वह नगर के ऊँचे स्थानों की चोटी पर पुकारती है।" क्या मैं आपसे कह सकता हूँ कि इस युग में भी हमें उसका निमन्त्रण दिया गया है। विवाह भोज तैयार किया गया है और सब अतिथियों को निमन्त्रण भेजे गए परन्तु अनेकों ने अपने से मना कर दिया तो सेवक मार्गों से लोगों को लेकर आते हैं। मत्ती (22:1-14) **इस पर यीशु फिर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा। स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने पुत्र का ब्याह किया। और उस ने अपने दासों को भेजा, कि नेवताहारियों को ब्याह के भोज में बुलाएँ; परन्तु उन्होंने आना न चाहा। फिर उस ने और दासों को यह कहकर भेजा, कि नेवताहारियों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूँ, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैंः और सब कुछ तैयार है; ब्याह के भोज में आओ। परन्तु वे बेपरवाई करके चल दिएः कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को। औरों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उन का**

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अनादर किया और मार डाला। राजा ने क्रोध किया, और अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूँक दिया। तब उस ने अपने दासों से कहा, ब्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु नेवताहारी योग्य न ठहरे। इसलिये चौराहों में जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ। सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे किया; और ब्याह का घर जेवनहारों से भर गया। जब राजा जेवनहारों के देखने को भीतर आया; तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने था। उस ने उससे पूछा हे मित्र; तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहाँ क्यों आ गया? उसका मुँह बन्द हो गया। तब राजा ने सेवकों से कहा, इस के हाथ पांव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहाँ रोना, और दाँत पीसना होगा। क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।

-यह बड़ी रोचक बात है कि बुद्धि को सड़को पर से लोगों को लाना पड़ता है। हमारा आज का सन्देश है,

2 कुरिन्थियों 5:20 - सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता हैः हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो।

आज संपूर्ण इतिहास में सबसे अधिक परमेश्वर का वचन लोगों तक पहुँचाया जा रहा है। बुद्धि की पाठशाला में आने के लिए संपूर्ण विश्व में निमन्त्रण भेजे जा रहे हैं कि वे प्रभु यीशु मसीह के पास आएँ।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0693

सत्यवचन

नीतिवचन 9 : 6 - 10 : 10

प्रिय मित्रों

नीतिवचन 9:6

भोलों का संग छोड़ो, और जीवित रहो, समझ के मार्ग में सीधे चलो।

कुछ लोग सुनेंगे नहीं। वे ठट्ठा करनेवाले हैं उनके साथ समय गंवाना ठीक नहीं है। लगभग प्रत्येक कलीसिया में एक ऐसा गुट होता ही है जो परमेश्वर के वचन का विरोध करता है। क्या हमें उन्हें वचन सुनाते रहना है? नहीं, प्रभु यीशु ने कहा कि सूअरों के आगे मोती नहीं डालना हैं। अब अगले तीन पद देखें। कुछ टीकाकारो के विचारों में इन पदों को यहाँ नहीं होना चाहीए। वे कहते हैं कि इन्हें अलग से यहाँ जोड़ा गया हैं। मेरे मित्रों, उनका स्थान यही है।

नीतिवचन 9:7-9

जो ठट्ठा करनेवाले को शिक्षा देता है, वह अपमानित होता है, और जो दुष्ट जन को डाँटता है वह कलंकित होता है।। ठट्ठा करनेवाले को न डाँट ऐसा न हो कि वह तुझ से बैर रखे, बुद्धिमान को डाँट, वह तो तुझ से प्रेम रखेगा। बुद्धिमान को शिक्षा दे, वह अधिक बुद्धिमान होगा; धर्मी को चिता दे, वह अपनी विद्या बढ़ाएगा।

आप परमेश्वर का वचन मनुष्यों को सुनाएँगे तो वे आपसे घृणा करेंगे। युगों से ऐसा होता आ रहा है। कुछ लोग इतने अधिक सतही, खाली और अज्ञानी होते हैं कि वे परमेश्वर के वचन को ग्रहण ही नहीं करेते हैं।

आज आप किसी मुक्तविचारवादी मनुष्य के बारे में सुनते हैं कि वह कैसा उदार विचारों का मनुष्य है। परन्तु क्या आप जानते हैं कि ऐसों ही ने हमारे स्कूलों से नैतिक शिक्षा को बाहर कर दिया है? वे रूढ़ीवादियों को धर्म के अंधे कहते हैं। मैं सच कहूँ तो मुझे स्कूलों में विकासवाद की शिक्षा पर कोई आपत्ति नहीं है यदि मुझे भी बाईबल सिखाने की अनुमति दी जाए। परन्तु उदार विचार रखने वाले इसकी अनुमति नहीं देंगे। उनके पास कितनी भी उपाधियाँ क्यों न हों वे अज्ञानी ही हैं। यदि वे परमेश्वर के वचन की शिक्षा न दें तो, मैं उन्हें पिछड़ा हुआ ही कहूँगा। सीधी सी बात तो यह है कि थोथा चना बाजे घना, मतलब यही है कि जितनी की बुद्धि नही उतने की दिखावा करते हैं। सच तो यह है कि मेरी भेंट आज तक किसी उदार विचार वाले से नहीं हुई, जो यह सोचता हो कि वह बुद्धिमान नहीं है। वह सोचता है कि उसे सब कुछ आता है, परन्तु वह वास्तव में न तो कुछ जानता है और न ही उसे ज्ञान है। मनुष्य जितना अधिक जानता

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है उतना ही अधिक वह अपने अज्ञान और अपनी सीमाओं को पहचानता है। एक महान उपदेशक जिनके पास, मेरे विचार में, मनुष्यों में प्रवीण बुद्धि थी, प्रायः कहा करते थे, "मैं जितना अधिक बाईबल अध्ययन करता हूँ उतना ही अधिक मुझे बोध होता है कि मैं बाईबल के बारे में कैसा अज्ञानी हूँ।" मेरे मित्रों, आप बाईबल का अध्ययन करें और आपको यह बोध न हो कि आप बाईबल के बारे में कैसे अज्ञानी हैं तो कुछ समस्या है। मेरे मित्र, आप अपने अज्ञान के बोध के बिना बाईबल नहीं पढ़ सकते हैं।

परन्तु ठट्ठा करनेवाले को वचन के अध्ययन में रूचि नहीं होती है। उसे वचन सुनाकर आप अपना समय न गंवाएंगे।

नीतिवचन 9:10

यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, और परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है।

ऐसा लगता है कि हमने यह पद पहले भी पढ़ा है। जी हाँ! जब बालक घर में था तब। उसका पहला पाठ था,

नीतिवचन 1:7

यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।

अब वह जीवन और बुद्धि के कॉलेज में है। वह बुद्धि के विश्वविद्यालय में नया है और उसका पहला पाठ है, "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल हैं; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।" हम सबका आरंभ यहीं से होता है। यदि आपने यहाँ से आरंभ नहीं किया है तो आपने अभी आरंभ ही नहीं किया है। यह पुस्तक कहती है कि इस संसार में मनुष्य परमेश्वर के बिना निर्वाह करे तो वह मूर्ख है।

हम आज सुरक्षा की इतनी अधिक चिन्ता करते हैं - सड़को पर सुरक्षा, घर में सुरक्षा, बुढ़ापे में सुरक्षा आदि। हम बीमा करवाते है और उसकी किश्तें चुकाते हैं। यह एक बुद्धिमानी की बात है। मेरे भाइयों यह तो ठिक है परन्तु अनन्त जीवन के बारे में आपने क्या सोचा है? क्या आपके पास अनन्त जीवन बीमा है? ओह, परमेश्वर से रहित जीवन जीना कैसी मूर्खता है! "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है।"

नीतिवचन 9:11-12

मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी, और तेरे जीवन के वर्ष अधिक होंगे। यदि तू बुद्धिमान हो, तो बुद्धि का फल तू ही भोगेगा; और यदि तू ठट्ठा करे, तो दंड केवल तू ही भोगेगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यदि आप बुद्धिमान हैं तो अनन्त जीवन के लिए तैयारी कर लें। यदि आप ठट्ठा करें और इन बातों की निन्दा करें तो आप दण्ड के लिए तैयार हो रहे हैं। यह कठोर लगेगा परन्तु किसी को तो कहना ही होगा कि आप नरक के मार्ग पर अग्रसर हैं। "यदि तू ठट्ठा करे तो दण्ड केवल तू ही भोगेगा।" यदि आप अपनी इच्छा से चलना चाहते हैं तो आप ही हानि उठाएँगे।

मुझे एक नास्तिक ने कहा, "उपदेशकजी मैं इस अनन्त जीवन और प्रभु यीशु के बारे में चिन्ता नहीं करता। करनेवाले करते रहें।" मैंने उससे कहा, "मान लिजीए कि आप सही हैं और अनन्त जीवन नहीं है, तो आप और मैं एक ही स्थान पर हैं। परन्तु यदि मैं सही हूँ और आप गलत हैं तो मेरे मित्र, आप संकट की स्थिति में हैं।" एक और नास्तिक था। उसने मुझसे कहा, "मैं अति सन्तुष्ट होता, यदि यह तथ्य न होता कि बाइबल सही है।" जी हाँ, हो सकता है। यह हर एक उस मनुष्य के लिए भयानक सत्य है जो परमेश्वर से मुँह मोड़ लेता है।

मूर्ख स्त्री की पाठशाला

नीतिवचन 9:13 - मूर्खतारूपी स्त्री बकबक करनेवाली है; वह तो भोली है, और कुछ नहीं जानती।

देखिए मूर्खता का भी अपना स्कूल है ऐसे अनेक स्कूल हैं।

नीतिवचन 9:14
वह अपने घर के द्वार में, और नगर के ऊँचे स्थानों में अपने आसन पर बैठी हुई।

उन्हें प्रचार करने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य स्वयं ही वहाँ आ जाता है। हज़ारों मनुष्य इन स्कूलों में जाते हैं।

नीतिवचन 9:16-18 जो कोई भोला है, वह मुड़कर यहीं आए; "जो निर्बुद्धि है, उससे वह कहती है, 17"चोरी का पानी मीठा होता है, और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती है।"18 वह यह नहीं जानता है, कि वहाँ मरे हुए पड़े हैं, और उस स्त्री के नेवतहारी अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे हैं।

ओह, कितने विद्वान कहलाने वाले वहाँ गए हैं और उनका दुःखद अन्त हुआ है। लॉर्ड बाइरन ने अपने व्यभिचारी जीवन के अन्त में लिखा:

मेरा जीवन पीला पत्ता है;
प्रेम के फूल और फल झड़ गए;
केवल कीड़े, घुन और दुःख बचा है!

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

बाइरन के पास इस संसार का सब कुछ था - रूप, बुद्धि, नाम, धन-सम्पदा सब कुछ परन्तु उसके अन्तिम वचन थे।" केवल कीड़े, घुन और दुःख बचा है।" मूर्ख स्त्री के स्कूल ने उसकी यह दशा की थी।

एक प्रसिद्ध सिनेमा सितारा था। उसने विश्व सुन्दरियों से विवाह किया था परन्तु एक दिन उसने वृद्धावस्था में आत्महत्या की। उनकी अन्तिम टिप्पणी थी, "मैं इस जीवन से ऊब गया हूँ।" कैसी त्रासदी है!

मूर्खता की पाठशाला अब भी चल रही है। वहाँ प्रवेश पानेवालों की लम्बी प्रतिक्षा सूची है, परन्तु "वह नहीं जानता कि वहाँ मरे हुए पड़े हैं। और उस स्त्री के नेवताहारी अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे हैं।"

अध्याय 10

सुलैमान के नीतिवचन, उसी ने लिखे और क्रमबद्ध किए

यहाँ से नीतिवचनों के संग्रह का दुसरा मुख्य भाग आरंभ होता है। इसमें देखेंगे कि युवा विद्यार्थी को जीवन के मार्ग में चलने के निर्देश दिए गए हैं। ये शिक्षाएँ हमें प्रभु यीशु की पाठशाला में ग्रहण करना है।

नीतिवचन 10:1

सुलैमान के नीतिवचन। बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख पुत्र के कारण माता उदास रहती है।

"बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता हे।" जब एक बालक अपनी कक्षा में प्रथम आता है या खेलकूद में पुरस्कार पाता है या कहीं किसी काम में नाम कमाकर आता है तब उसका पिता सबसे उसकी चर्चा करके बहुत खुश होता है - "मेरा पुत्र क्रिकेट टीम का कप्तान है।" या "मेरा पुत्र पी. एच. डी. करके कॉलेज में पढ़ा रहा है। अब यदि एक बालक कक्षा में फेल हो जाता है और बड़ा होकर नौकरी नहीं करता तो उसका पिता किसी से उसकी चर्चा ही नहीं करना चाहता है। वह अपना मुँह बंद रखता हैं। "परन्तु मूर्ख पुत्र के कारण माता-पिता उदास रहते है।" ऐसी स्थिति में माँ को दुःख होता है। पिता तो चुप रहकर अलग हो जाता है। यह ऐसे जीवन का कैसा चित्रण है! पुत्र या तो बुद्धिमान हो सकता है या मूर्ख।

नीतिवचन 10:2

दुष्टों के रखे हुए धन से लाभ नही होता, परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है।

"दुष्टों के रखें हुए धन से लाभ नहीं होता है।" अति धनवान मनुष्यों ने मरते समय अपना धन यही छोड़ दिया है। वे न तो उसे अपने साथ ले जा सकते और न ही इस पृथ्वी पर

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

उसका आनन्द ले पाए।

"धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है।" मसीह हमारे लिए ज्ञान ही नहीं धार्मिकता भी हुआ है।

यूहन्ना 3:16 ... जो कोई उसमें विश्वास करें वह नाश न हो परन्तु अन्नत जीवन पाए।

नीतिवचन 10:3
धर्मी को यहोवा भूखों मरने नहीं देता, परन्तु दुष्टों की अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता।

आपको स्मरण होगा कि हर एक मनुष्य के लिए नीतिवचन है और बाईबल के नायकों के चरित्र से मेल खाते नीतिवचन भी हैं। "धर्मी को यहोवा भूखों नहीं मरने देता।" यह वचन हमें यूसुफ का स्मरण करवाते हैं। उसे मिस्र में दास हाने को बेच दिया था और ऐसा प्रतीत होता था कि परमेश्वर उसे भूल गया है परन्तु उसने परमेश्वर पर से भरोसा नहीं हटाया। हमने देखा है कि परमेश्वर ने उसे त्यागा नहीं था। परमेश्वर ने ऐसा किया कि वह बन्दीगृह में डाला गया और वहाँ से निकालकर मिस्र का प्रधानमंत्री बनाया गया।

नीतिवचन 10:4 जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु काम-काजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं।

लोगों में कैसा अन्तर है। कुछ विश्वासी अति उदार होते हैं तो कुछ अत्यधिक कंजूस! यह बड़ा ही दिलचस्व है कि तंग व्यक्ती का हाथ सदैव कमी में ही रहता है। इसके विपरित एक उदार मनुष्य का जीवन भरपूरी का होता है।

आपके विचार में क्या यह पद आपको अब्राहम का स्मरण नहीं करवाता है? वह एक उदार मनुष्य था। उसने अपने भतीजे लूत से कहा कि उसे जो अच्छा लगे, ले लें। जो बचेगा उसे वह ले लेगा। अब्राहम को चुनाव करने का पहला अधिकार था। अच्छी भूमि यरदन की घाटी थी। लूत ने सोचा होगा कि अब्राहम कैसा मूर्ख है। लूत ने स्वार्थ से भरकर सबसे उŸाम भू-भाग चुना परन्तु अन्त में वह नाश हुआ।

"काम काजी लोग... धनी होते हैं।"

बाईबल में दो शब्द साथ-साथ नहीं चलते - जैसे विश्वास और आलस्य। आलसी विश्वसी में सच्चा विश्वास नहीं होता है। जो परिश्रमी है वह काम काजी होता है। इससे मुझे प्रेरित पौलुस का स्मरण आता है जब उसे परमेश्वर ने बुलाया तब उसने आलस के कारण विलम्ब नहीं किया।

बुद्धिमान पुत्र से पिता प्रसन्न होता है, परन्तु पुत्र यदि मूर्खता करे तो पिता से अधिक माता का मन दुःखी होता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 10:5

जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धि से काम करनेवाला है, परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।

यह भी विषम विचारों का नीतिवचन है। वह पुत्र जो ग्रीष्मकाल में परिश्रम करता है वह बुद्धिमान कहलाता है परन्तु जो पुत्र कटनी के समय सोता है वह आलसी है। वह काम करना नहीं चाहता।

मेरे युवा मित्रों, आपको यह समझ लेना है कि परमेश्वर आपको प्रशिक्षण देना चाहता है और आपको शिक्षा देना चाहता है। अपनी युवावस्था में मैं एक छोटी कलीसिया में सेवा कर रहा था परन्तु वहाँ मुझे अपने कार्य में सन्ुतष्टि नहीं थी। मैं प्रभु के लिए और अधिक कुछ करना चाहता था। मेरी पत्नी बहुत अच्छी है। उसने मुझे प्रोत्साहित किया कि मैं और अधिक बाईबल अध्ययन करूँ । और अपनी पी. एच. डी. कर लूँ। मैं अपना समय बचा रहा था और मैंने समय का लाभ उठाया। मैं इसके लिय परमेश्वर का अत्यधिक आभारी हूँ। अब जब मैं अपनी टी0वी0 रेडियों और सभाओं की सेवा में व्यस्त था तब किसी ने मुझ से पूछा, आप इतना अधिक व्यस्त रहते हैं। आपको तैयारी करने का समय कब मिलता होगा? मैं जब छोटी रीति में सेवा कर रहा था तब परमेश्वर ने मुझे तैयारी के पाँच वर्ष दिए और वह समय भी दिया कि मैं उस तैयारी को व्यावहारिक रूप दूँ। अतः आज मैं प्रत्येक युवक से कहने योग्य हूँ कि यदि वह परमेश्वर की सेवा करना चाहता है तो तैयारी करना अभी से आरंभ कर दें। सदा स्मरण रखें, "जो बेटा धूपकाल में बटोरता है तो वह बुद्धि से काम करनेवाला है।"

नीतिवचन एक महान वचन है, अनन्त सत्य हैं। ये वचन आपको आकाश की उड़ान के लिए नहीं, परन्तु दैनिक जीवन के लिए तैयार कराते हैं। यदि आप उन्हें अन्तर्गृहण नहीं कर पा रहे हैं तो उनके साथ समस्या नहीं है, समस्या आपके साथ है।

नीतिवचन 10:6

धर्मी पर बहुत से आर्शीवाद होते हैं, परन्तु उपद्रव दुष्टों का मुँह छा लेता है।

यहाँ पुराने नियम के दो नायकों का कैसा अद्भुत चित्र है, "धर्मी पर बहुत से आर्शीवाद होते हैं।" यह मुझे शमूएल का स्मरण करवाता है। "परन्तु उपद्रव दुष्टों का मुँह छा लेता है।" यह राजा शाऊल का चित्रण है।

नीतिवचन 10:7

धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है।

मुझे इस संदर्भ में कुछ विश्वासी मनुष्यों का स्मरण आता है जो कभी प्रसिद्धी के शिखर पर थे परन्तु आज उनका नाम लगभग नहीं के बराबर ही है। मेरे विचार में इस पीढ़ी के

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

लोग 50 वर्ष पश्चात गुमनामी में होंगे परन्तु ड्वाइट एल. मूडी जिन्होंने परमेश्वर के लिए कुछ किया, वे चिरस्मरणीय बने रहेंगे।

नीतिवचन 10:8

जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओं को स्वीकार करता है, परन्तु जो बकवादी और मूढ़ है, वह पछाड़ खाता है।

बकवादी मनुष्य सदा बकबक करता रहता है। वह अपनी विचित्र कल्पनाओं में ही स्वयं को बुद्धिमान समझता है। उसके विपरित बुद्धिमान मनुष्य आज्ञाओं को स्वीकार करता है। आपको स्मरण होगा कि नबूकदनेस्सर नाम का राजा था जो दानिय्येल के सुझाव स्वीकार करता था और परिणामस्वरूप समृद्ध हो रहा था। एक और राजा था, बेलशस्सर। वह मूर्ख था और दानिय्येल अध्ययाय 5 में जिखा है कि- एक रात वह बहुत बड़ा भोज कर रहा था और वहीं उसका अन्त हो गया - उस दिन उसके संपूर्ण राज्य का अन्त हो गया।

नीतिवचन 10:9

जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है।

इसे आज की लोकोक्ति में कहा जाता है, सदा सच बोलें।

नीतिवचन 10:10

जो नैन से सैन करता है उस से औरों को दुख मिलता है, और जो बकवादी और मूढ़ है, वह पछाड़ खाता है।

यहाँ एक अद्भूत बात कही गई है। आँख और मुँह सदा एक दूसरे से सहमत होते हैं। यदि कोई मनुष्य कुछ कह कर आँख मारता है तो इसका अर्थ है कि वह झूठ कह रहा है। उसका मुँह और उसका मन एकमत नहीं हैं। इसका परिणाम होगा कि वह दुःख उठाएगा।

यह पद किस व्यक्ति पर बैठता है? यहूदा इस्करियोती पर । यहूदा का यीशु को चुम्बन धोखे का चुम्बन था। चुम्बन का अर्थ है अनुराग परन्तु यहूदा के संदर्भ में ऐसा नहीं था।

मेरे मित्रो, आज हमारे बीच में भी बहुत से लोग इसी प्रकार का जीवन जी रहें हैं। लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या आज आप दूसरों को कष्ट पहुँचाने वालों में से हैं या आशीष बॉटने वालों में से हैं? कृपया आज अवश्य ही इस पर विचार करें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0694

सत्यवचन

नीतिवचन 10 : 13 - 11 : 14

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 10:13

समझवालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है, परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोड़ा है।

"सुलैमान की बुद्धि की बातें सुनने संपूर्ण विश्व से लोग आते थे परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिए कोड़ा होता है।" यह उसके पुत्र रहोबियाम के विषय में सच है। वह अनुभवी जनों की राय नहीं मानता था। उसने अपने समकालीन युवाओं की राय मानी - 1 राजाओं 12, - जिसके परिणामस्वरूप उसके राज्य में गृहयुद्ध हुआ और अन्त में उस राज्य का विभाजन हो गया।

नीतिवचन 10:14

बुद्धिमान लोग ज्ञान को रख छोड़ते हैं, परन्तु मूढ़ के बोलने से विनाश निकट आता है।

बुद्धिमान मनुष्य सदैव ज्ञानोपार्जन में लगा रहता है परन्तु मूर्ख का एक पांव कब्र में और दूसरा केले के छिलके पर होता है।

नीतिवचन 10:16

धर्मी का परिश्रम जीवन के लिये होता है, परन्तु दुष्ट के लाभ से पाप होता है।

यह वचन मुझे कैन और हाबिल का स्मरण कराता है। "धर्मी का परिश्रम जीवन के लिए होता है।" हाबिल भेड़ों का रखवाला था और और बलि चढ़ाने के लिए एक मेम्ना लाया था। "दुष्ट के लाभ से पाप होता है।" यह कैन था। उसने अपनी फसल लाकर परमेश्वर के प्रति विद्रोह प्रकट किया। इसी बात को पौलुस रोमियों 8 में इस प्रकार व्यक्त करता है:

रोमियों 8:6 -"शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है... "

यह मसीही विश्वासियों के लिए है। मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर की सहभागिता से सदा के लिए दूर हो जाना। परमेश्वर शरीर पर मन लगानेवाले के साथ कभी संगति नहीं करता है। जब नीतिवचन कहता है "धर्मी का परिश्रम जीवन के लिए होता है।" अर्थात परमेश्वर की सहभागिता के लिए। हाबिल उद्धार प्राप्त मनुष्य था। "दुष्ट के लाभ से पाप होता है।" यह कैन को प्रगट करता है।

नीतिवचन 10:17

जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है, परन्तु जो डाँट से मुँह मोड़ता, वह भटकता है।

दाऊद का पुत्र अबशालोम डाँट से मुहँ मोड़ता था। उसने अपने पिता से राज्य छीनने

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

की बहुत बड़ी भूल की थी।

नीतिवचन 10:18 - जो बैर को छिपा रखता है, वह झूठ बोलता है, और जो झूठी निन्दा फैलाता है, वह मूर्ख है।

कैसी भयानक बात है कि कोई आपको अपना मित्र दिखाए और अन्त में आपका बैरी निकले। वह व्यक्ति वास्तव में मूर्ख है। आप कुछ समय बाद ही उसे समझ पाते हैं। जो निन्दा करे वह भी मूर्ख है।

लैव्यव्यवस्था 19 में परमेश्वर ने इस्राएल को इस विषय में विशेष आज्ञा दी थी,

लैव्यव्यवस्था 19:16 - "लुतरा बन के अपने लोगों में न फिरा करना... "

आगे वह कहता है, **लैव्यव्यवस्था 19:17 -**

अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न रखना; अपने पड़ोसी को अवश्य डाँटना, नहीं तो उसके पाप का भार तुझ को उठाना पड़ेगा।

जिसे आप पसन्द न करें उसकी चाटुकारी न करें उसकी निन्दा भी न करें।

बाइबल में ऐसा एक मनुष्य था - योआब। उसने अबनेर को मित्रता का स्वांग रचकर नगर से बाहर निकाला और हत्या कर दी।

नीतिवचन 10:21: - धर्मी के वचनों से बहुतों का पालनपोषण होता है, परन्तु मूढ़ लोग निर्बुद्धि होने के कारण मर जाते हैं।

मुझे एक बार फिर न्यायियों में शमूएल और उसके विपरित शाऊल का स्मरण आता है। राजा शाऊल ने मूर्खता ही की।

नीतिवचन 10:22 - धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।

भोगविलास में जीनेवाले सोचते हैं कि वे सच्चा जीवन जी रहें हैं परन्तु आगे चलकर वे जीवन को असहनीय पाते हैं। एक बार किसी राजनीतिक दल का बड़ा भोज हो रहा था वहाँ उस दल के सहयोगी आए हुए थे। मैंने देखा कि उनमें एक भी चेहरा प्रफुलित नहीं था। मैं सोच रहा था कि तरह-तरह के मनोरंजन के उपरान्त भी वे प्रफुलित नहीं थे।

"धन यहोवा की आशिष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।" आज के विश्वासी नैतिकता और अनुचित के प्रति उदासीनता और जीवन में अनाचार के कारण उनके लिए परमेश्वर के अनेक उपकारों को पाने से चूक जाते हैं।

नीतिवचन 10:23 -मूर्ख को तो महापाप करना हंसी की बात जान पड़ती है, परन्तु समझवाले पुरूष में बुद्धि रहती है।

यह युवाओं के लिए अच्छा परामर्श है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 10:26 - जैसे दाँत को सिरका, और आँख को धुआँ, वैसे आलसी उनको लगता है जो उसको कहीं भेजते हैं।

क्या आपने कभी किसी आलसी लड़के को किसी काम से कहीं भेजा है? आप उसकी प्रतीक्षा करते करते थक जाते हैं। यह दाँतों को सिरका और आँखों को धूआँ है।

नीतिवचन 10:27 - यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है, परन्तु दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है।

यह पुराने नियम में सच था। परमेश्वर ने अपने आज्ञाकारियों को दीर्घायु की प्रतिज्ञा दी थी। आप सोचते होंगे, "क्या आज वह ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करेगा?" नहीं, वह हमें तो अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा देता है। यह अधिक गुणवान और दीर्धायु है।

नीतिवचन 10:30 - धर्मी सदा अटल रहेगा, परन्तु दुष्ट पृथ्वी पर बसने न पाएँगे।

इस विचार के आधार पर इतिहास को देखें। संसार के महाप्रतापी जन - राजा और सेनापति - सब समाप्त हो गए। फिरौन, कैसर, सिकन्दर महान, नेपोलियन आदि सब समाप्त हो गए। "दुष्ट पृथ्वी पर बस न पाएँगे।" समाजवाद भी नहीं रहेगा और प्रजातन्त्र भी नहीं रहेगा क्योंकि प्रभु का राज्य एक राजवंश होगा। प्रभु यीशु के राज्य के तुल्य इस पृथ्वी पर कोई राज्य नहीं होगा न ही पहले कभी था।" धर्मी सदा अटल रहेगा।"

WORD RESOUNDS TODAY

अध्याय 11

हमने देखा है कि युवक कॉलेज में है और ज्ञान प्रभु यीशु है। वही तो शिक्षक भी है। बुद्धि को सड़को पर जाकर अपने विद्यार्थी एकत्र करना पड़ रहे थे। अब उसकी कक्षा आरंभ हो गई है और वह नीतिवचनों की शिक्षा दे रही है।

इन नीतिवचनों की साहित्यिक शैली द्विपदी है जो तुलना के द्वारा परस्पर संबधित हैं। यह इब्रानी कविता है। इब्रानी कविता में या तो विचार दोहराया जाता है या एक विचार के विपरित दूसरा विचार रखा जाता है। ये तुलना तीन प्रकार की है, पर्यायवाची विचार जिसमें पहली पंक्ति का विचार दोहराया जाता है। दूसरा, विरोधात्मक तुलना जिसमें विषय की सत्यता प्रगट की जाती हैं। तीसरा, सामाजिक तुलना जिसमें दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के विचार को बढ़ाती है।

इस अध्याय में युवक को कुछ अच्छी राय दी गई है।

नीतिवचन 11:1 - छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है।

परमेश्वर को आप अपने व्यापार में साझेदार बना सकते हैं। परन्तु चतुराई न करें।

www.Radio882.com

यदि आप ईमानदार हैं तो वह आपका साझेदार बनना चाहेगा।

एक विश्वासी व्यापारी को ईमानदारी और सत्यनिष्ठ होना आवश्यक है। मैं ऐसे अद्भुत मसीही व्यापारियों के लिए अति आभारी हूँ। ऐसा ही एक व्यक्ति मेरे साथ गोल्फ खेलता था। वह बाईबल सभा में उपस्थित होने आया था। मैंने उससे परिचय तो प्राप्त किया परन्तु उसके व्यापार के बारे में अधिक जानकारी मुझे नहीं थी। मुझे किसी से यह सुनकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि वह दूर और पास अपनी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के लिए जाना जाता था। वह एक अत्यधिक सफल व्यापारी था। यह जानना अद्भुत है कि आज भी ऐसे मनुष्य है जो ऐसा व्यवहार रखते हैं।

नीतिवचन 11:2 - जब अभिमान होता, तब अपमान भी होता है, परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है।

दूसरा पाप घमण्ड है। यहाँ शिक्षा के आरंभ ही में युवाओं को घमण्ड के विरूद्ध चेतावनी है। इस वचन में घमण्ड और दीनता की तुलना है। घमण्ड के साथ सदैव "अपमान" आता है। धर्मशास्त्र में और नीतिवचन में धमण्ड के बारे में बहुत कुछ कहा गया है।

नीतिवचन 11:3 - सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं, परन्तु विष्वासघाती अपने कपट से नष्ट होते हैं।

इसमें सीधा सा अर्थ है कि यदि कोई सत्य में आचरण करना चाहे और यह उसके मन की इच्छा हो तो परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर किया जा सकता है कि वह आपकी अगुवाई करे और आपका मार्गदर्शन करे। यहाँ तुलना का विचार है, विश्वासघाती अपने कपट से नष्ट होते हैं।"

एक दिन मेरी भेंट एक ऐसे मनुष्य से हुई जिसकी समस्या वही थी जो युवावस्था में मेरी थी। आर्थिक संबंन्धों की। उसने पूछा, "आप परमेश्वर की इच्छा कैसे जानेंगे? आपको कैसे ज्ञात होगा कि किस मार्ग पर चलना है?" मेरा उŸार था, "मेरी भी यही समस्या थी। मेरे लिए अन्त में एक ही मार्ग बचता था और सब कुछ सुगम हो जाता था। जो मार्ग खुलता था उसी पर मैं चलता था। यदि द्वार बन्द हो जाता तो मैं रूक जाता था। यदि मेरे पास स्कूल जाने को पैसा नही होते थे तो मैं स्कूल नहीं जाता था परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि परमेश्वर मेरे लिए एक ही द्वार खोलता था। ऐसा सदा ही होता था और मैं उसे परमेश्वर का मार्गदर्शन मानता था कि वह द्वार परमेश्वर ने खोला है। यह मेरा अनुभव है।

हमने देखा कि एक युवक को बुद्धि अर्थात प्रभु यीशु की शिक्षा ग्रहण करना है। बुद्धि तो सड़को पर से अपने शिष्यों को लेकर आती है। बुद्धि नम्रता, दीनता, खराई और इनके विपरित घमण्ड के विरूद्ध बहुत कुछ कहती है।

नीतिवचन 11:4 - कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

क्या यह पद पढ़कर आपको लाज़र और धनवान व्यक्ति की कहानी स्मरण नहीं आती है? दोनों ही की मृत्यु हो गई और धनवान मनुष्य के धन से प्रकोप के दिन उसे कोई लाभ नहीं हुआ था परन्तु उस कंगाल मनुष्य को उसकी धर्मिकता ने अब्राहम की गोद में पहुँचाया।

धन पर आश्रित रहनेवालों की प्राथमिकताएँ यथा उचित नहीं होती हैं। धन में गलत कुछ नहीं है परन्तु हमें यह स्मरण रखना है कि उसकी सीमा होती है। इस संसार में तो धन से सब कुछ खरीदा जा सकता है परन्तु आनेवाले संसार में धन से कुछ भी पाना संभव नहीं है।

नीतिवचन 11:5-6 - खरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधा होता है, परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण गिर जाता है। सीधे लोगों का बचाव उनके धर्म के कारण होता है, परन्तु विष्वासघाती लोग अपनी ही दुष्टता में फँसते हैं।

यदि हम दुष्ट के स्थान पर नियम विरोधी कहें तो इसका अर्थ और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

नीतिवचन 11:7-8 - जब दुष्ट मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है, और अधर्मी की आशा व्यर्थ होती है। धर्मी विपत्ति से छूट जाता है, परन्तु दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है।

"जब दुष्ट मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है। और अधर्मी की आशा व्यर्थ होती है।" क्या इससे आपको हामान का स्मरण नहीं होता है? उसके विपरित एस्तेर का मामा मोर्दकै एक धर्मी जन था जो संकट से उबारा गया था।

नीतिवचन 11:9 - भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है, परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।

"भक्तिहीन" के लिए मूल यूनानी शब्द का अर्थ है पलट कर उŸार देना। उस युग के नाटकों में नायक को संकेत दिया जाता था और वे अपनी भूमिका की कथोपकथा (डायलोग) का उच्चारण करते थे। अतः जब धर्म के क्षेत्र में किसी के लिए यह शब्द काम में लिखा जाए तो उसका अर्थ है कि वह ढोंगी है। वह कहता है, हाल्लेलूय्याह, "याह की स्तुति करो।" यह उसका शाब्दिक उच्चारण मात्र ही है। वह केवल एक भूमिका निभा रहा है। वह परमेश्वर की स्तुति मन की गहराई से नहीं कर रहा है।

"भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है।" वह आपकी मित्रता का स्वांग रचता है परन्तु अपना पाप छिपाने के लिए आपकी पीठ में छूरी घोंक देगा। इस संदर्भ में आपको बाइबल में किसका स्मरण आता है? पोतिपर की पत्नी जिसने अपना अपराध छिपाने के लिए यूसुफ पर दोष डाल दिया। अब एक सरकारी अफसर के सामने एक दास पर कौन विश्वास करेगा? यूसुफ के लिए कुछ भी कहना व्यर्थ था क्योंकि उसे तो प्रतिवाद का अवसर ही नहीं दिया गया था।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

दुर्भाग्य से, हम कलीसिया में भी ढोंगियों को पाते है जो अपने प्रतिवाद में अनर्थ बातें करते हैं। मैं सदैव ऐसे मनुष्यों से डरता था जो पास्टर के मुँह पर तो भोले बनते हैं परन्तु उसकी पीठ के पीछे बुराई करते हैं। मेरे मन में सदैव उनसे बचने का भय बना रहता है। वह वास्तव में अपने जीवन की किसी न किसी बुराई को ढाँकने का प्रयास करता है। समय के साथ-साथ मुझ पर यह प्रगट हो गया कि ऐसा करना परिस्थिति का उचित मूल्यांकन है। यह वचन ऐसे ही स्वांग के बारे में कहा गया है।

नीतिवचन 11:10-11 - जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं, परन्तु जब दुष्ट नश्ट होते, तब जय-जयकार होता है। सीधे लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है, परन्तु दुष्टों के मुँह की बात से वह ढाया जाता है।

मैं इस वचन के द्वारा दाऊद और शाऊल में तुलना करना चाहता हूँ। दाऊद के राज्य में इस्राएल का यरूशलेम नगर एक महान नगर हो गया था। राजा शाऊल के निधन पर अधिक विलाप नहीं किया गया था।

नीतिवचन 11:12 - जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह निर्बुद्धि है, परन्तु समझदार पुरूष चुपचाप रहता है।

मेरे विचार में दाऊद इसका एक अच्छा उदाहरण है। क्या आपने कभी सोचा है कि सुलैमान के जीवन पर दाऊद के जीवन का कैसा गहरा प्रभाव पड़ा था? सुलैमान की माता बतशैबा के साथ दाऊद के पाप के दाग की अपेक्षा दाऊद के जीवन का एक आदर्श प्रभाव था। आपको स्मरण होगा कि दाऊद अबशालोम के विद्रोह के कारण यरूशलेम चला गया था तब मार्ग में शाऊल का एक कुटुम्बी शीमी उसे कोस रहा था। दाऊद का सेनापति योआब उसे मार डालना चाहता था तो दाऊद ने कहा, “नहीं, उसे अपने मन की बात कहने दो। अति संभव है कि यदि मेरे लिए परमेश्वर का दण्ड हो।” “समझदार मनुष्य चुपचाप रहता है।”

आप के साथ भी ऐसा समय आता होगा जब मनुष्य आपके बारे में अशुभ बातें करते हों, आपके चरित्र पर कीचड़ उछालते हों। केवल शान्त रहें। परमेश्वर सब कुछ संभाल लेगा। जैसे उसने दाऊद की परिस्थिति को संभाला था।

इस पुस्तक में ये अति उŸाम सिद्धान्त हैं। युवाओं के लिए ये मनन हेतु अति उŸाम हैं। आज युवाओं में सच्ची आत्मिक जागृति दिखाई देती है। मैं चाहता हूँ कि वे नीतिवचनों पर भी ध्यान लगाएँ। इनके द्वारा वे प्रभु यीशु के निकट आएँगे क्योंकि बुद्धि की पाठशाला का संचालक वही है और बुद्धि ही के द्वारा उसका अस्तित्व है। नीतिवचनों से युवाओं को बुद्धि प्राप्त होगी। मुझे ऐसा लगता है कि आज हममें बुद्धि की कमी है। हम में बौद्धिक स्तर तो बहुत ऊँचा है परन्तु बुद्धि बहुत कम है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 11:13 - जो लुतराई करता फिरता वह भेद प्रगट करता है, परन्तु विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है।

लतुराई करनेवाला मनुष्य वह है जो किसी को हानि पहुँचाने की बात करता है। कभी-कभी उसकी बात सच भी होती है परन्तु आवश्यक नहीं कि वह किसी से कुछ कहें। यदि उसने किसी भाई को पाप में देखा है तो वह उसके पास जाकर अकेले में उससे बात करे। वह सबसे उसकी चर्चा न करें।

नीतिवचन 11:14 - जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।

आप चाहे कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों आपको सम्मति की आवश्यकता होती है। आपको स्मरण होगा कि परमेश्वर ने दानिय्येल को राजा नबूकदनेस्सर का परामर्शदाता बनाया था। उसने नबूकदनेस्सर की बहुत सहायता की। वह राजा कुसू का भी परामर्शदाता था और कुसूर को उससे अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ था।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0695

सत्यवचन

नीतिवचन 11 : 15 - 12 : 12

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 11:15 - जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दुःख उठाता है, परन्तु जो जमानत लेने से घृणा करता, वह निडर रहता है।

जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दुःख उठाता है। "वह देखेगा कि उसने बड़ी भारी भूल की है।"

परन्तु परदेशी के लिए एक उत्तरदायी व्यक्ति है। आप जानते हैं, वह कौन है?

2 कुरिन्थियों 8:9 - तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।

उसने आपके और मेरे पापों का ऋण चुकाया। उसे वह भयानक दण्ड चुकाना पड़ा जो हमें भेगना था। उसका यह अनुभव भविष्यद्वाणी के भजन 69 के पद 4 में व्यक्त है,

भजन संहिता 69:4 - जो अकारण मेरे बैरी है, वे गिनति में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं; मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे शत्रु हैं, वे सामर्थी है; इसलिए जो मैंने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा।

और यशायाह में भी उसका वर्णन है: यशायाह 53:7 -

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुँह न खोला।

दण्ड चुकाना अनिवार्य था और प्रभु यीशु ने उसका उŸारदायित्व उठाया। रोमियों की पत्री 6:23 में लिखा है:

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

यहाँ मजदूरी अर्थात दण्ड जो प्रभु यीशु ने मेरे लिए आप के लिए उठाया। यह कैसा अद्भुत उपकार है। डॉ. आयरनसाइड ले लिखा, "उसने काठ पर मेरा दण्ड उठाया और अब जमानतदार और पापी दोनों मुक्त हैं।" उसने मेरा स्थान ले लिया।

नीतिवचन 11:16 - अनुग्रह करनेवाली स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती है, और उग्र लोग धन को नहीं खोते।

इससे मुझे रूत का ध्यान आता है। वह एक ग़रीब विधवा थी परन्तु उसने अपना सम्मान बनाए रखा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

रूत 3 में बोआज़ ने उससे कहा: रूत 3:11

इसलिये अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं तुझ से करूँगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्त्री है।

संपूर्ण बेतलहम जानता था कि वह पुरूषों के संबन्ध में ही नहीं, हर एक बात में अपना सम्मान बनाए रखती थी। इस पद का दूसरा भाग बोआज़ के संबन्ध में है, "उग्र लोग धन को नहीं खोते।"

नीतिवचन 11:18-21 - दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है, परन्तु जो धर्म का बीज बोता, उसको निश्चय फल मिलता है। जो धर्म में दृढ़ रहता, वह जीवन पाता है, परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मृत्यु का कौर हो जाता है। जो मन के टेढ़े है, उन से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह खरी चालवालों से प्रसन्न रहता है। मैं दृढ़ता के साथ कहता हूँ, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा, परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा।

यहाँ पाप और धार्मिकता में विषमता दर्शाई गई है। परन्तु दुष्ट और मन के टेढ़े मनुष्यों को दण्ड दिया जाएगा। उनका बचाना संभव नहीं है। विश्वासी की धार्मिकता प्रभु यीशु की धार्मिकता है। क्योंकि हमारे पास प्रभु यीशु की धार्मिकता है इसलिए हम मृत्यु से जीवन में प्रवेश करेंगे। (मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगें। - यूहन्ना 5:24

यहाँ एक अति उत्तम नीतिवचन है

नीतिवचन 11:22- जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती, वह थूथुन में सोने की नथ पहिने हुए सूअर के समान है।

यह सच है। ऐसी स्त्रियाँ बहुत हैं वे सुन्दर स्त्रियाँ है परन्तु वे विवेक नहीं रखती हैं।

नीतिवचन 11:23 - धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है; परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है।

शान्ति और आनन्द पाने के लिए मसीह के साथ उचित संबन्ध होना आवश्यक है।

नीतिवचन 11:24-25 - ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस से उनकी घटती ही होती है। उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है, और जो दूसरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।

यह असंगत परन्तु युक्तियुक्त कथन है। प्रभु ने स्वयं कहा है कि थोड़ा बोनेवाला थोड़ा ही काटता है। यह एक सामान्य सिद्धान्त है। यह प्रभु को देने में भी प्रासंगिक है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 11:26 - जो अपना अनाज रख छोड़ता है, उसको लोग शाप देते हैं, परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको आशीर्वाद दिया जाता है।

इस वचन को पढ़कर मुझे मिस्र में यूसुफ का ध्यान आता है उसने सात वर्ष तक अनाज एकत्र किया और फिर अकाल के समय संपूर्ण संसार को सिखाया। अपने पिता, भाइयों और उनके परिवारों को भी।

दाऊद के युग में नाबाल एक कंजूस मनुष्य था। उसने दाऊद के लिए भोजन की व्यवस्था से इन्कार कर दिया था। वह मूर्ख था। उसके नाम का यही अर्थ है। उसकी पत्नी अति सुन्दर थी और संभवतः पैसों के कारण उसने नाबाल से विवाह किया था। दाऊद ने सदैव उसके चरवाहों की सहायता की थी। परन्तु दाऊद के भोजन मांगने पर नाबाल ने दाऊद को इन्कार ही नहीं किया वरन् उसके सन्देशवाहक का अपमान भी किया। दाऊद का क्रोध भड़क उठा परन्तु उसकी पत्नी ने भेंट लाकर दाऊद को शान्त किया। यह वचन नाबाल के लिए अति उपयुक्त है।

इसका आत्मिक अर्थ भी है। अन्न परमेश्वर का वचन है। अनेक उपदेशक थोड़ा वचन बोते हैं वे अनेक विषयों पर प्रचार करते हैं पर परमेश्वर के वचन पर नहीं। परमेश्वर ऐसे उपदेशकों पर दया करे!

हम सबको ही बीज बोना है, केवल उपदेशकों को ही नहीं। क्या आप बीज लेकर चुप बैठे हैं? अपने पड़ोसियों में वचन नहीं सुना रहें हैं? अपने आस पड़ोस में वचन के प्रसारण में आप एक महान सहयोगी बन सकते हैं। ओह, मेरे मित्रों, "जो अपना अनाज रख छोड़ता है, उसको लोग शाप देते हैं।" परन्तु परमेश्वर का वचन सुनकर आपको कोई धन्यवाद कहे तो वह कैसे आनन्द की बात होती है! "जो उसको बेच देता है, उसको आर्शीवाद दिया जाता है। या वह निर्मा ेल दे दे।

नीतिवचन 11:27- जो यत्न से भलाई करता है वह दूसरों की प्रसन्नता खोजता है, परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती है।

यह गलातियों 6:7 का और प्रमाण है,

मनुष्य जो बोता है वही काटेगा।

नीतिवचन 11:28 - जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते की समान लहलहाते हैं।

प्रभु यीशु ने एक दृष्टान्त सुनाया था कि एक किसान को अत्याधिक फसल प्राप्त हुई और उसने नये खाते बनाकर उनमें अनाज भरवाँ दिया। इसमें कोई बुराई नहीं है परन्तु प्रभु यीशु ने उसे मूर्ख कहा क्योंकि उसने इस जीवन की तो चिन्ता की परन्तु अनन्त जीवन का ध्यान नहीं रखा। यह धन का ख़तरा है। स्वर्ग में प्रवेश खरीदा नहीं जा सकता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 11:30 - धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।

एक बार प्रचारकों के पुत्रों पर सर्वेक्षण किया गया क्योंकि वे प्रायः आलोचना के पात्र होते हैं परन्तु सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि अमेरिका के अनेक राश्ट्रपति प्रचारकों की संतान थे जिसमें राष्ट्रपति, वुडरो विलसन भी शामिल हैं। कुछ प्रख्यात वैज्ञानिक भी प्रचारकों की संतान हैं।

आज परिवार में मेल-मिलाप पर परामर्श सभाओं का आयोजन किया जाता है। यदि हम परमेश्वर के वचन को पढ़े और ईश्वर परायण जीवन जीएँ तो इन सभाओं की आवश्यकता नहीं है। परिवार में धार्मिकता आ जाने से अनके समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। "धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है।"

"बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।" आज व्यक्तिगत गवाही को बहुत महत्व दिया जाता है। यह अच्छा है। मेरे विचार में आज के युग में यह एक अति उŸाम अभ्यास है। परमेश्वर का वचन कहता है, "बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।"

नीतिवचन 11:31 - देख, धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।

न्याय का दिन आ रहा है। इसमें दो राय नहीं।

अध्याय 12

बुद्धि ने अपना स्कूल खोला और सड़को पर जाकर युवाओं को निमन्त्रण दिया। वे उसकी पाठशाला में आए। वहाँ कुछ युवा अभी नये-नये हैं। परन्तु निर्देश अति महत्वपूर्ण हैं।

नीतिवचनों 12:1- जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डाँट से बैर रखता, वह पशु सरीखा है।

वह मनुष्य जो शिक्षा से लगाव रखता है उसमें सर्वोच्च प्राथमिता की समझ होती है और वह उच्च आचरण को भी भलि-भाँति समझता है। इसका अर्थ है कि निर्देशों को स्वीकार करता है। मैं यह अवश्य कहूँगा कि मनुष्यों को परमेश्वर का वचन सुनाने के बाद एक बहुत बड़ी समस्या यह होती है कि उन्हें उसके पालन के लिए कैसे प्रेरित करें। आज्ञापालन अति आवश्यक है।

नीतिवचन 12:2 - भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है, परन्तु बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है।

भजन 1:5 में लिखा है,

दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धार्मियों की मण्डली में ठहरेंगे।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

चाहे दुष्ट, मनुष्य की दृष्टि में कितना भी प्रसिद्ध हो, धनवान हो, या प्रतिष्ठित हो उसका अन्त दुःखता और पछताने का ही होगा। परमेश्वर निश्चय ही ऐसों का न्याय करेगा। "बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है।"

नीतिवचन 12:3 -कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता, परन्तु धर्मियों की जड़ उखड़ने की नहीं।

इसके संबन्ध में प्रभु ने एक दुष्टान्त सुनाया था। पर्वतीय उपदेशों में उसने चट्टान पर घर बनानेवाले के बारे में बताया था - (इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्विमान मनुष्य की नाई ठहरेगा जिस ने अपना घर चटान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नींव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया। - मत्ती 7:24-27) परन्तु एक और मनुष्य भी था जिसने रेत पर घर बनाया था। चट्टान प्रभु यीशु का प्रतीक है - परमेश्वर के वचन की दृढ़ नींव।

यहाँ युवकों को पत्नी चुनने में मार्गदर्शन प्रदान किया गया है।

नीतिवचन 12:4- भली स्त्री अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है।

पुराने नियम में अति उत्तम पत्नियों के विषय में सोचें। हव्वा ने शैतान की बात तो सुनी परन्तु वह एक अति उत्तमपत्नी रही होगी। 1 पतरस 3:6 में लिखा है कि साराह एक आदर्श पत्नी थी। मूसा की माता याकोबेद भी निःसन्देह एक असामान्य स्त्री थी।

परन्तु कुछ स्त्रियों को पुरूषों की हड्डियों के सड़ने का कारण कहा जाता है। अय्यूब की पत्नी उसके लिए प्रोत्साहन का कारण नहीं थी। यह एक रोचक बात है कि शैतान ने अय्यूब की पत्नी को छोड़ उससे सब कुछ छीन लिया था। इसका अर्थ यही हुआ कि शैतान जानता था कि अय्यूब की पत्नी अधिक सहायक नहीं होगी। अतल्याह और उसकी माता ईज़ाबेल भी दो दुष्ट स्त्रियाँ थीं। धर्मशास्त्र में इस नीतिवचन के अनेक उदाहरण है।

ऑगदेन नैश ने विवाहित जीवन पर परामर्श हेतू एक कविता लिखी थी:

विवाह को आनन्दित रखने के लिए
प्रेम को प्रेम के कटोरे में रख कर,
अपनी गलती स्वीकार करो,
और सही हो तो अपना मुँह बन्द रखो।
यह एक अच्छा परामर्श है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 12:5 -7 - धर्मियों की कल्पनाएँ न्याय ही की होती हैं, परन्तु दुष्टों की युक्तियाँ छल की हैं। दुष्टों की बातचीत हत्या करने के लिये घात लगाने के विषय में होती है, परन्तु सीधे लोग अपने मुँह की बात के द्वारा छुड़ानेवाले होते हैं। जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं, परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है।

मैं फिर दुष्ट को नियम विरोधी कहना चाहता हूँ। यह अधिक उचित है। आप भी जानते हैं कि परमेश्वर कानून और व्यवस्था में विवास रखता है। अव्यवस्था के बारे में उसके पास कहने को बहुत कुछ है।

नीतिवचन 12:8 - मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है।

"तुच्छ जाना जाता है। इसका वास्तविक अर्थ है, घृणा का पात्र होता है।" मैं गिदोन और उसके पुत्र के बारे में सोचता हूँ। गिदोन को उसकी बुद्धि के लिए सराहने की आवश्यकता है परन्तु उसका पुत्र अबीमेलेक घृणा का पात्र ठहरा था।

नीतिवचन 12:9 - जो रोटी की आस लगाए रहता है, और बड़ाई मारता है, उस से दास रखनेवाला छोटा मनुष्य भी उत्तम है।

यह नीतिवचन उलझन पैदा करता है परन्तु इससे एक बात तो समझ में आती है कि यहाँ विपरित विचारों द्वारा तुलना की गई है। किसी अन्य अनुवाद में ऐसा लिखा है, उससे अच्छा तो वह कंगाल है जो अपने लिए प्रबन्ध करता है। "ऐसा प्रतीत होता है कि नीतिवचन के लेखक के कहने का अर्थ है कि एक दीन-हीन मनुष्य जिसे तुच्छ समझ जाता है यदि अपनी आवश्यकताएँ पूरी करता है तो वह अधिक आनन्दित है और अधिक ईष्या का कारण है, अपेक्षा उसके जो समृद्ध दिखता है जबकि उसे दरिद्रता का आभास होता है।

नीतिवचन 12:10 - धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।

जैसा मैं पहले भी कह चुका हूँ कि मेरे पिता दुर्घटना में मारे गए थे। उस समय मैं चोदह वर्ष का था और इस अवस्था में हर बालक यही सोचता है कि उसका पिता अति महान है। वह उसका आदर्श होता है। सच तो यह है कि मैं आज भी अपने पिता को एक आदर्श मानता हूँ। मुझे आज भी स्मरण है कि हम एक बार अपनी बग्गी में जा रहे थे। हमसे आगे एक बग्गी थी जिस पर एक शराबी सवार था जो अपने घोड़े को बेरहमी से पीट रहा था। मेरे पिता ने हमारी बग्गी से उतरकर उसे चिताया कि वह अपने घोड़े को इतना अधिक न मारे। वह नशे में था और

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

उसने मेरे पिता पर हाथ उठाया परन्तु चूक गया। मेरे पिता ने पलट कर वार किया और वह गिर पड़ा। मेरे पिता ने उसके हाथ से चाबुक छीन लिया और उससे कहा कि बग्गी में बैठ जाए तथा अपने घोड़े को मारना बन्द करे। फिर उसकी बग्गी के पीछे-पीछे चलने लगे। मुझ पर इस घटना का बहुत प्रभाव पड़ा और जब मुझे धर्मशास्त्र में यह नीतिवचन मिला तब मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। "धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है।"

मुझे एक कुत्ते पालनेवाले मनुष्य ने बताया कि वह किसी के प्रति अपने कुत्तों की प्रतिक्रिया देखकर उसका आँकलन करता है। कुत्ते मनुष्य को पहचान लेते हैं। वे अच्छी तरह पहचान लेते हैं कि मनुष्य उनके साथ कैसा व्यवहार करेगा। यह बड़ी रोचक बात है कि पशु हमसे अधिक अच्छी तरह मनुष्य को पहचानते हैं।

नीतिवचन 12:11 - जो अपनी भूमि को जोतता, वह पेट भर खाता है, परन्तु जो निकम्मों की संगति करता, वह निर्बुद्धि ठहरता है।

यह वचन अपना काम करने का निर्देश देता है। यहाँ वहाँ भागना व्यर्थ है। इस संपूर्ण अध्याय में ऐसे ही विषम विचार प्रगट होंगे।

नीतिवचन 12:12 - दुष्ट जन बुरे लोगों के जाल की अभिलाषा करते हैं, परन्तु धर्मियों की जड़ हरी-भरी रहती हैं।

यहाँ विचार पर बल देने के लिए उन्हें दोहराया गया है। दोहराना शिक्षण की सर्वोŸाम विधि है। यदि आप एक ही बात को बार-बार कहेंगे तो आपके विद्यार्थी उसे सदा स्मरण रखेंगे।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0696

सत्यवचन

नीतिवचन 12 : 13 - 13 : 12

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 12:15 - मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।

आप समझ गए होंगे कि यह वचन किसके संदर्भ में है। निश्चय ही सलैमान के पुत्र, रहोबियाम के बारे में है। उसने अनुभवी वृद्धों के सुझाव को तुच्छ जाना जिसके परिणामस्वरूप उसके देश में गृहयुद्ध छिड़ गया और उसका पतन हुआ।

नीतिवचन 12:17-18 - जो सच बोलता है, वह धर्म प्रगट करता है, परन्तु जो झूठी साक्षी देता, वह छल प्रगट करता है। ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच विचार का बोलना तलवार के समान चुभता है, परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।

मेरे मित्रों, यदि आपका पास्टर सत्य कहता है तो एक न एक दिन उसकी बातें आपके हृदय को छेद देगी। यदि आप स्वीकार नहीं करते हैं तो आप ढोंग, घृणा और कड़वाहट का आवरण ओढ़ हुए है। यही कारण है कि मैं पास्टर की आलोचना करनेवाले मनुष्यों से बहुत दूर रहता हूँ। ऐसा मनुष्य जो उसके मुँह पर मीठा और पीठ में छुरा घोंपता हो।

नीतिवचन 12:19-21 - सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल ही भर का होता है। बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है, परन्तु मेल की युक्ति करनेवालों को आनन्द होता है। धर्मी को हानि नहीं होती है, परन्तु दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब जाते हैं।

झूठ बोलनेवाली जीभ और सत्यवादी होंठ! ये दो विषम विचार हैं। परमेश्वर का वचन जीभ के बारे में बहुत कुछ कहता है। झूठी जीभ पर दण्ड आएगा। इतना अधिक तो वह शराब के विरूद्ध भी नहीं कहता है। इसके उपरान्त भी आज मसीही समुदाय में झूठी जीभ और अफवाहों को स्वीकार किया जाता है और शराबी को तुच्छ जाना जाता है।

नीतिवचन 12:22 - झूठों से यहोवा को घृणा आती है परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है।

परमेश्वर की सन्तान के सद्गुणों में सत्यवादिता भी है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 12:23 - चतुर मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता है, परन्तु मूढ़ अपने मन की मूढ़ता ऊँचे शब्द से प्रचार करता है।

एक विवेकपूर्ण मनुष्य किसी के दिल को दुखानेवाली बात नहीं करता है परन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं जो दिल दुखानेवाली बात करते ही हैं, विशेष करके उनके विषय में जो वहाँ नहीं हैं। एक समझदार मनुष्य ऐसा नहीं करता परन्तु मूर्ख रूकता नहीं है।

नीतिवचन 12:24 - कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं।

मेरे विचार में आज के समाज में इसे उलटा कर दिया गया है। परिश्रमी मनुष्य ही सदा पदों पर चुने नहीं जाते हैं और मुझे पूरी जानकारी नहीं है कि आलसी मनुष्य कर या टैक्स का भुगतान करता है। मैं तो कम से कम आलसियों की क्षेणी में नहीं आना चाहता हूँ। मैंने इन वचनों को पढ़ते समय परमेश्वर से प्रकाशन की विनती की है और मुझे बोध हुआ है कि कुछ नीतिवचनों को अनन्त जीवन के प्रकाश में समझना आवश्यक है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस वचन का मापदण्ड अनन्त जीवन से है न कि पार्थिव जीवन से। क्या हमें नहीं कहा गया कि एक दिन हम प्रभु यीशु के साथ राज करेंगे। परन्तु धर्मशास्त्र यह नहीं कहता कि सब विश्वासी बराबर के प्रशासन पद पर होंगे। पदाधिकार अलग-अलग होंगे। मैं यदि प्रेरितों के पद पर रखा जाऊँगा तो बड़ी उलझन में पड़ जाऊँगा क्योंकि पौलुस प्रेरित के निकट बैठना आसान नहीं है। मैं उस स्थान के योग्य नहीं हूँ। तथापि मेरे विचार में परिश्रमी जन प्रभु के साथ राज करेंगे।

नीतिवचन 12:25 -उदास मन दब जाता है, परन्तु भली बात से वह आनन्दित होता है।

अय्यूब ने अपने मित्रों कहा, **अय्यूब 6:25**
सच्चाई के वचनों में कितना प्रभाव होता है, परन्तु तुम्हारे विवाद से क्या लाभ होता है?

अच्छे वचन दुःखी मनुष्यों, समस्याओं से घिरे मनुष्यों, और शोकित मन वाले मनष्यों को शान्ति, हर्ष और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। हमें परेशान मनुष्य को दोष नहीं देना चाहिए, उसे हताश नहीं करना चाहिए। हमें सदा अच्छे वचन बाँटना चाहिए।

नीतिवचन 12:26 - धर्मी अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है, परन्तु दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं।

धर्मी जन अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है अर्थात उसकी सहायता करता परन्तु अधर्मी जन उसे हानि पहुँचाने का प्रयास करता है। धर्मी जन अपने पड़ोसी के अनुचित व्यवहार का

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

सामना करता है। यह एक अत्यधिक सहायक कार्य है।

नतान दाऊद का बहुत अच्छा मित्र था परन्तु उसने दाऊद पर ऊंगली उठाने का साहस किया और कहा, "तू ही वह मनुष्य है।" (2 शमूएल 12:7) यदि हमारे जीवन में किसी बात का सुधार करना है तो ऐसा करनेवाला मित्र पाना सौभाग्य है।

मेरे अच्छे मित्रों में एक ऐसा मनुष्य भी था जिसने स्कूल में मेरी सहायता की। जब मैंने सेवा में कदम रखा था परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में मुझे अपनी ही कलीसिया में सेवा करने का मौका दिया। वहाँ के सदस्य मुझसे प्रेम रखते थे और मेरे प्रति सहानुभुति निभाते थे, जबकि उस समय तो मैं इतनी बड़ी कलीसिया की सेवा देखने के लिए अनुभव नहीं रखता था। वे मेरे साथ अति उत्तम व्यवहार करते थे।

इसी बीच मैं एक सभा में उपस्थित हुआ और लौटने के बाद उस उपदेशक की नकल करने का प्रयास किया क्योंकि मैं उसे सहारता था। मैंने उसके उच्चारणों तक की नकल करने का प्रयास किया। मेरी कलीसिया के लोगों को इसकी जानकारी हो गयी। वे केवल मुस्कुराते थे परन्तु मेरी आलोचना नहीं करते थे, परन्तु यह व्यक्ति जिसने स्कूल में मेरी सहायता कि एक दिन मुझे भोजन के लिए घर ले गया। उसने मुझे एक ही बात कही जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगा। उसने कहा, "हमें सच्चा वरदान चाहिए किसी की नकल नहीं चाहिए।" बस, इसके अधिक कुछ कहने की आवश्यकता उसे नहीं थी। उसी दिन से मैं एक वास्तविक व्यक्ति बन गया। वह इतना अच्छा तो नहीं था परन्तु किसी की नकल करने से तो अच्छा था। कोई भी उचित वचन सकारात्मक प्रभाव रखते हैं। धर्मी जन अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है और उसकी सहायता का खोजी रहता है। इस मनुष्य ने मेरे साथ ठीक ऐसा ही किया था। परन्तु अधर्मी उससे नाजायज़ लाभ उठाना चाहता है। वह उसे सराहेगा उसकी पीठ थपथपाएगा तदोपरान्त उसकी पीठ के पीछे उसे धोखा देगा। यह वचन आपको आपके पड़ोस; आपकी कलीसिया, आपके कार्यस्थल तक ले जाते हैं।

नीतिवचन 12:27 - आलसी अहेर का पीछा नहीं करता, परन्तु काम-काजी को अनमोल वस्तु मिलती है।

मुझे यह वचन अति विनोदी प्रतीत होता है। इस मनुश्य ने शिकार मारा परन्तु उसे साफ करके खाने के लिए पकाया नहीं। इसी प्रकार मछुवे ने मछली तो पकड़ी, परन्तु साफ करके उसे पकाया नहीं।

"परन्तु कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है।" दुसरे शब्दों में वह अपनी वस्तुओं को संभालता है।

रूत अनाज की बालें उठाने बोआज़ के खेत में गई और बोआज़ की दयादृष्टि के अधीन उसने बहुत अन्न उठाया परन्तु उसने घर लाकर उसे नाओमी पर नहीं डाल दिया वरन् स्वयं उसे साफ किया। उसने यह नहीं कहा कि वह दिन भर काम करके थक गई है। अब कम से कम इतना इतना काम तो नओमी कर सकती है। इससे उसकी प्रवृति प्रगट होती है।

घर के काम में सहायता करने से कुछ नहीं घटता। मैं अपनी माता से कहता था कि मैं बड़ा होकर कभी बरतन नहीं धोऊँगा परन्तु मुझे अब भी बरतन धोने पड़ते हैं। शायद यह मेरा दूसरा बाल्यकाल है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 12:28 -धर्म के मार्ग में जीवन मिलता है, और उसके पथ में मृत्यु का पता भी नहीं।

परमेश्वर की सन्तान के लिए यह एक अद्भुत मार्ग, एक अनुपम भावी आशा है! यदि प्रभु न आए तो शारीरिक मृत्यु अवश्य है परन्तु उसके बाद अनन्त जीवन है।

अध्याय 13

हम अभी जीवन के महान सिद्धान्तों के प्रशिक्षिण के भाग में ही हैं।

नीतिवचन 13:1-बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा सुनता है, परन्तु ठट्ठा करनेवाला घुड़की को भी नहीं सुनता।

यद्यपि सुलैमान दाऊद का चहेता पुत्र तो नहीं था परन्तु उसकी आज्ञा मानता था। वह एक बुद्धिमान पुत्र का आदर्श है जो पिता की आज्ञा मानता है। रहोबियाम, सुलैमान का पुत्र, उस निन्दक का उदाहरण है जो किसी की बात नहीं सुनता। वह नीतिवचनों के अन्धकार का पक्ष था हमारे लिए नकारात्मक पक्ष का एक उदाहरण है परन्तु धर्मशास्त्र में और भी उदाहरण हैं:

नीतिवचन 13:2-3 -सज्जन अपनी बातों के कारण उत्तम वस्तु खाने पाता है, परन्तु विश्वासघाती लोगों का पेट उपद्रव से भरता है। जो अपने मुँह की चौकसी करता है, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो गाल बजाता है उसका विनाश हो जाता है।

आज कुछ कानाफूसी की चर्चाऐं होती हैं। उन्हें व्यर्थ की बातें कहा जा सकता है। उनमें दो अर्थ होते हैं। ऐसे दो अर्थों के चुटकुले मसीही वातावरण में भी प्रवेश कर चुके हैं जो यौन संबन्धित विषयों पर आधारित होते हैं।

मैंने देखा है कि अनके जन यौन शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं परन्तु उनके परिवार टूट जाते हैं। पति किसी और स्त्री के साथ भाग जाता है। मेरे विचार में अधिकांश समस्या ऐसे संदिग्ध जीवन और संदिग्ध बातों का परिणाम है। हमें यहाँ इसी बात की चेतावनी ई गई है। युवाओं को चिताया जा रहा है कि इससे सावधान रहें।

नीतिवचन 13:4 - आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु काम-काजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।

आपको स्मरण होगा कि प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीके की कलीसिया को अति उचित लिखा था क्योंकि वहाँ कुछ धर्मी जन थे जो कहते थे कि वे प्रभु के आगमन की प्रतिक्षा में थे अतः वे काम करना छोड़ कर निष्क्रिय बैठ गए थे। 2 थिस्सलुनीकियों में पौलुस ने कहा:

2 थिस्सलुनीकियों 3:10 - यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।

हम काम न करनेवालों के लिए भोजन का प्रबन्ध न करें। हमें परिश्रम करना

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

आवश्यक है। यदि आप वास्तव में प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं तो आप और भी अच्छे काम करने वाले बनेंगे।

नीतिवचन 13:5-6 - धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है। धर्म खरी चाल चलनेवाले की रक्षा करता है, परन्तु पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है।

यह आन्तरिक सत्य के संदर्भ में है। व्यावहारिक धार्मिकता की यह पृष्ठ भूमि है। परमेश्वर झूठ से घृणा करता है। वह उसे सहन नहीं कर सकता है। परमेश्वर की सन्तान को अपने जीवन में कैसे भी पाप को पहचान कर उसका उन्मूलन करना आवश्यक है। हमारा पुराना मनुष्यत्व झूठ बोलने की मानसिकता रखता है। झूठ बोलना हम में अपने आप उत्पन्न होता है। परमेश्वर कहता है कि उसे इससे घृणा आती है और वह उसका न्याय करेगा।

नीतिवचन 13:7- कोई तो धन बटोरता, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता, और कोई धन उड़ा देता, तौभी उसके पास बहुत रहता है।

यह हमारे पुराने मनुष्यत्व का एक और उदाहरण है। यदि हम ग़रिब हैं तो हम अपनी वास्तविकता से अधिक दिखावा करेंगे। कुछ लोग कार में घूमते हैं कि दूसरों पर प्रभाव डालें, जबकि वे उसका खर्च उठाने में सक्षम नहीं होते हैं। कुछ लोग ऐसे घरों में रहते हैं जो उनकी आर्थिक क्षमता से परे हैं।

दूसरी ओर, कुछ लोग अत्यधिक धनवान होने के बाद भी अपनी ग़रीबी के लिए रोते रहते हैं। मेरी कलीसिया का एक सदस्य बहुत धनवान था परन्तु कलीसिया में दान देने में बड़ा कंजूस था। वह सदैव मंहगाई के बारे में ही रोता रहता था।

ये दोनों व्यवहार ही परमेश्वर की दृष्टि में घृणित हैं क्योंकि वे दिखावा करते हैं। यह वास्तविकता से हटकर दिखावा मात्र हैं। हमें बड़प्पन और ग़रीबी दोनों पड़ोसियों का सा व्यवहार करना चाहिए और हम जो हैं वही दिखना चाहिए।

नीतिवचन 13:9 - धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है, परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है।

इस्राएल के राजाओं के इतिहास में हमने देखा था कि वहाँ एक सिद्धान्त क्रियाशील था। उत्तरी राज्य में एक के बाद एक राजा बने परन्तु उनकी हत्या होती रही। परमेश्वर यही शब्दों द्वारा कहता है, "दुष्टों का दिया बुझ जाता है।" संसार में ऐसा होता रहता है। हिटलर का अन्त अच्छा नहीं हुआ और रूस के स्तालिन का अन्त भी अच्छा नहीं था।

नीतिवचन 13:10 - झगड़े रगड़े केवल अंहकार ही से होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।

कहीं भी कलह हो, - पड़ोस में, कलीसिया में तो इसका मूल कारण है घमण्ड। किसी ने कहा है, "झगड़ा उत्पन्न करने के लिए दो लोगों की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि ताली हमेशा दोनों हाथ से बजती है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 13:11- निर्धन के पास माल नहीं रहता, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है।

इस वचन को भी जीवन के प्रकाश में देखना आवश्यक है इसका मापदण्ड यही है। अनेक धनवान मनुष्य जानते हैं कि उनकी सन्तान मूर्ख है। अतः उन्होंने ट्रस्ट बनाकर अपना पैसा उसमें डाल दिया है और अपनी सम्पदा के चारों ओर वैधानिक बाढ़ा बांध दिया है, ताकि उनकी सन्तान वहाँ तक न पहुँच पाए। उनकी सन्तान का जीवन निर्वाह उसके द्वारा हो सकता है, परन्तु वे सम्पदा पर हाथ नहीं डाल सकतें, यही कारण है कि अनेक जन आज परिश्रम करके धनोपार्जन नहीं करते। वे नहीं जानते कि जीवन यापन क्या होता है जबकि वे अथाह संपŸिा के उत्तराधिकारी हैं परन्तु उनकी भूल को सुरक्षित रखा जाता है अन्यथा वे मूर्खतापूर्वक उसे गवाँ देंगे।

यदि इस नीतिवचन को अनन्त जीवन के प्रकाश में देखें कि सच्चा धन क्या है? धन वास्तव में है क्या? क्या वे आपके निवेश और जमा धन राशियाँ हैं? वे तो एक न एक दिन समाप्त हो जाएँगी। मृत्यु उन्हें अपने स्वामी से अलग कर देगी। चाहे चोर चोरी न करे मृत्यु अवश्य उन्हें उससे वंचित कर देगी! वे सब कुछ छोड़ कर चले जाएँगे। धनवानों के साथ भी ऐसा ही होगा जिसे आज वे अपना कहते हैं।

नीतिवचन 13:12 - जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है।

आप केवल आशा ही कर सकते है कि दिल दुखानेवाली बात न हो। अतः हमें अपने जीवन को परमेश्वर की इच्छा के सामंजस्य में रखना चाहिए क्योंकि हम आशा तो अनेक बातों की करते हैं परन्तु सब कुछ प्राप्त नहीं होता है। हमारे लिए यह अति आवश्यक है कि परमेश्वर ने हमें जिस परिस्थिति में रखा है, उसे पहचानें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0697

सत्यवचन

नीतिवचन 13 : 13 - 14 : 18

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 13:13-15 - जो वचन को तुच्छ जानता, वह नष्ट हो जाता है, परन्तु आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल मिलता है। बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच सकते हैं। सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।

नीतिवचनों में धार्मिकता और दुष्टता में विषमता दिखाई गई है। परमेश्वर घमण्ड से, दुष्टता से और दिखावे से घृणा करता है। हमारे मानवीय स्वभाव से उत्पन्न होनेवाली कोई भी बात उसके काम की नहीं है। परमेश्वर हमारे पुराने मनुष्यत्व द्वारा की गई किसी बात को स्वीकार नहीं करता है। हमारे नये मनुष्यत्व से वह जो भी काम करवाएगा उसे वह स्वीकार करेगा। वह मेरे पुराने मनुष्यत्व को स्वर्ग में नहीं ले जाएगा। मैं तो उससे मुक्ति पाकर बुहत आनन्दित हो जाऊँगा। स्वर्ग में हमें उस पुराने मनुष्यत्व से मुक्ति मिल जाएगी जो हमें हमारे अनुवांशिक पापों को उबारता है। वास्तव में परमेश्वर हमसे क्या चाहता है।

यशायाह 66:2 में स्पष्ट हैं,

यहोवा की यह वाणी है, ये सब वस्तुएँ मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, इसलिये ये सब मेरी ही हैं। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो।

यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमें ग्रहण करे तो हमें ऐसा ही बनना है। हम घमण्ड न करें और न ही उसके वचन और उसकी आज्ञाओं को तुच्छ जानें।

नीतिवचन 13:17- दुष्ट दूत बुराई में फँसता है, परन्तु विश्वासयोग्य दूत से कुशलक्षेम होता है।

बैरी महत्वपूर्ण व्यक्तियों की दुर्बताओं का लाभ उठाता है, "दुष्ट दूत बुराई में फँसता है।" हमें सत्यनिष्ठ एवं निष्ठावान मनुष्यों की आवश्यकता है। ये साधारण नीतिवचन हमारे व्यकितत्व जीवन और हमारे राष्ट्र के लिए अति आवश्यक वचन हैं।

नीतिवचन 13:24-25 -जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है। धर्मी पेट भर खाने पाता है, परन्तु दुष्ट भूखे ही रहते हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यह बच्चों का मनोविज्ञान है। परमेश्वर की सन्तान से भी यही कहा गया है,

इफिसियों 6:1- हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनों, क्योंकि यह उचित है।

"बालकों अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो।"

इफिसियों 6:4 - हे बच्चेवालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो।

... अपने बालकों को रिस न दिलाओ।

अर्थात उन्हें क्रोध में आकर दण्ड न दो या उन पर चिल्लाओ नहीं। चिंता शान्त होने पर उन्हें समझाओं कि उन्हें अनुशासन की आवश्यकता क्यों है। यही कारण है कि मेरे पिता का अनुशासन अच्छा क्यों था। वह एक दिन बाद ही मुझे अनुशासन प्रदान करते थे। मैं सोचता था कि मैं बच गया परन्तु नहीं। वह बड़े ही शांतचित होकर मुझे अनुशासन प्रदान करते थे। मैं भलि-भाँति समझता था कि वह क्रोध में ऐसा नहीं करते हैं। अनुशासन अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

अध्याय 14

नीतिवचन धर्मशास्त्र का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसमें परमेश्वर की बुद्धि की बातें छोटे-छोटे वाक्यों में पाई जाती हैं। यहाँ हम देखते है कि ये बातें बाइबल के नायकों के संदर्भ में उचित बैठती हैं। ये आपके और मेरी जानकारी के संबन्ध में भी प्रासंगिक है और आपके और मेरे संदर्भ में भी।

नीतिवचन 14:1 - हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढा देती है।

"हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है।" धर्मशास्त्र में ऐसी अनेक स्त्रियाँ हैं। परन्तु बुरी स्त्रियों ने विनाश होता है।

2 इतिहास 22:2-3- जब अहज्याह राजा हुआ, तब वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में एक ही वर्ष राज्य किया, और उसकी माता का नाम अतल्याह था, जो ओम्री की पोती थी। वह अहाब के घराने की सी चाल चला, क्योंकि उसकी माता उसे दुष्टता करने की सम्मति देती थी।

उसकी माता की सम्मति के कारण अहाब का वंश नाश हुआ था। यह नीतिवचन वास्तव में सत्य है। आप इसे जीवन में प्रयोग करके देखें तो इसे आज भी सच पाएँगे। मैं अनेक स्त्रियों को जानता हूँ जिनके पापों के कारण उनके परिवार नाश हुए हैं।

नीतिवचन 14:2-जो सीधाई से चलता वह यहोवा का भय माननेवाला है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता वह उसको तुच्छ जाननेवाला ठहरता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि हमारा जीवन परमेश्वर के साथ संबन्धों को प्रगट करेगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

1 यूहन्ना 2:6 में प्रेरित यूहन्ना कहता है,

जो कोई यह कहता है, कि मैं उस में बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसी ही चले जैसा वह चलता था।

हमारा जीवन यीशु की नाईं परमेश्वर की पूर्ण आज्ञाओं के पालन का जीवन होना चाहिए। आपको स्मरण होगा कि शमूएल ने राजा शाऊल से स्पष्ट कहा था -

1 शमूएल 15:22- शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

परमेश्वर की आज्ञा मानना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके बिना आपका धर्म दिखावा और झूठा है।

नीतिवचन 14:3- मूढ़ के मुँह में गर्व का अंकुर है, परन्तु बुद्धिमान लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं।

इससे मुझे दाऊद और गोलियत का स्मरण होता है: 1 शमूएल 17:41-49

और पलिश्ती चलते चलते दाऊद के निकट पहुँचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढ़ाल लिए था वह उसके आगे-आगे चला। जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था। तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है? तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, मेरे पास आ, मैं तेरा माँस आकाश के पक्षियों और वनपशुओं को दे दूँगा। दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूँगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा; और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जीव जन्तुओं को दे दूँगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है। और यह समस्त मंडली जान लेगी की यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा। जब पलिश्ती उठकर दाऊद का सामना करने के लिये निकट आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का सामना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा। फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उस में से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा।

"जो गाल बजाता है उसका विनाश हो जाता है।" यह गोलियत का विवरण है। उसने पलिश्तियों का योद्धा होने का गर्व किया था। दाऊद को युद्ध करने आता देख उसने कहा,

"बुद्धिमान लोग अपने वचनो के द्वारा रक्षा पाते है।" अब दाऊद पर ध्यान दें,

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

1 शमूएल 17:45 दाऊद ने पलिश्ती से कहा,

दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांॅग लिये हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है।

नीतिवचन 14:4-जहाँ बैल नहीं, वहाँ गौशाला स्वच्छ तो रहती है, परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है।

यह एक अतिरोचक नीतिवचन है। धर्मशास्त्र में अनेक स्थानों पर बैल का उदाहरण दिया गया है। बैल बलि का पशु भी था जो मसीह के बलिदान का प्रतीक था।

बैल उस युग में ट्रेक्टर का काम करता था। वे बैल द्वारा गाड़ी खिंचवाते थे और हल चलवाते थे। मेरे विचार में उसकी गंदगी का कारण था कि गौशाला को साफ करना पड़ता था जो एक कठिन काम था। गौशाला तब भी साफ रह सकती थी जब बैल वहाँ न हो। परन्तु ऐसा करने से वे बैल की शक्ति के उपयोग से वंचित हो जाते।

इसमें हमारे लिए महान आत्मिक शिक्षा है। हम कभी-कभी कलीसिया की समस्याओं और विभाजनों के समाधान में बैल को बाहर निकाल देते हैं। कलीसिया में सदा ही दीमक के समान व्यस्त लोगों का एक गुट होता है जो बाइबल की शिक्षा का पक्ष लेनेवालों को बाहर करना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि वे गौशाला को साफ करना चाहते हैं और कुछ समय बाद उन्हें समझ में आता है कि बैल ही है जो हल चला रहा था। वे ही तो आर्थिक सहयोग दे रहे थे, वे ही थे जो प्रचारकों को भेजते थे। वे ही थे जो खर्चा उठा रहे थे। अतः यदि कोई सफाई का काम करना चाहे तो पहले देख ले कि प्रभु के काम में बैल कौन-कौन हैं। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मेरा एक विश्वासी मित्र एवं सह-खिलाड़ी है। वह हमारे बाइबल शिक्षण कार्यक्रम में योगदान देता है क्योंकि वह बाइबल की शिक्षा में विश्वास करता है। हम अनेक विषयों पर परस्पर मत-भेद भी रखते हैं। गोल्फ खेलते समय मैं खेल पर ध्यान देता हूँ और वह सदैव मेरे काम के बारे में पूछता है, "आप ऐसा क्यों नहीं करते। 'या' वैसा क्यों नहीं करते।" मैं उससे खिन्न होकर छुटकारा पा सकता हूँ क्योंकि यह गौशाला साफ करने का विषय है परन्तु मैं ऐसा करके बैल को बाहर कर दूँगा। मैं एक मित्र को भी खो दूँगा जो अनेक बातों में सर्वथा सही कहता है। वह परमेश्वर के वचन के प्रसारण में मेरे साथ जूआ भी खींचता है। बैल को बाहर करके गौशाला को स्वच्छ रखना कैसी मूर्खता है।

नीतिवचन 14:5- सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता, परन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें उड़ाता है।

प्रभु यीशु को विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह कहा गया है। हमें भी ऐसे ही गवाह होना है।

आज प्रभु के गवाह होने के बारे में हम बहुत कुछ सुनते हैं। मसीह यीशु के गवाह बनने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। यह बहुत अच्छी बात है कि ऐसा कुछ सीखें जिससे आप घर-घर जाकर उद्धारकर्ता प्रभु यीशु के बारे में चर्चा करने के योग्य हो जाए परतु स्मरण रखें कि गवाही दो प्रकार

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

की हैं - विश्वासयोग्य और झूठी। आप कहें कि प्रभु यीशु उद्धार दिलाता है, रक्षा करता है और सन्तोष प्रदान करता है। क्या आपने अपने जीवन से इसे सिद्ध किया है? या क्या आप झूठ कह रहे हैं?

नीतिवचन 14:9- मूढ़ लोग पाप का अंगीकार करने को ठट्ठा जानते हैं, परन्तु सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है।

परमेश्वर के वचन में ईज़बेल का उदाहरण है। वह "पाप के अंगीकार को ठट्ठा जानती थी।" हमें कहा गया है कि ऐसे लोगों से दूर भाग जाएँ और उनके साथ संबन्ध न रखें।

नीतिवचन 14:10- मन अपना ही दुःख जानता है, और परदेशी उसके आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता।

हर एक के मन में कोई न कोई आनन्द और दुःख छिपा रहता है जिसे उनके साथ कोई नहीं बाँट सकता। हम बाँटना भी चाहे तो वे समझ नहीं पाते हैं। मुझे स्मरण है कि कुछ लोगों ने मेरी बिमारी के बारे में जानना चाहा। मैंने उन्हें बताया कि कैसे मैने स्वयं को सच्चा सिद्ध किया। उन्हें मेरी यह बात अच्छी नहीं लगी। मुझे बोध हुआ कि वे मुझे झिड़क कर चले गए। मैंने सोचा, "शायद यह भेद मैं किसी के साथ बाँट नहीं सकता हूँ।"

क्या आपके पास कोई अद्भुत, आनन्द का अनुभव है जिसे आप आपने प्रिय जनों को सुनाना चाहते हैं? पिता की मृत्यु के बाद मैंने एक कविता लिखी। उस समय मैं अपनी चाची के साथ रहता था। वहाँ अनके अन्य लोग भी थे। मैं उनके पास गया और कहा, "देखो, मैंने एक कविता लिखी है। और मैं आपको सुनाना चाहता हूँ। उस कविता को पढ़कर मुझे तो बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ परन्तु उसे सुनकर वे प्रसन्न नहीं हुए और सच तो यह है कि मैंने उस दिन से कोई कविता नहीं लिखी। यदि मैं एक उभरता हुआ कवि था तो मैं उस दिन संसार के लिए समाप्त हो गया क्योंकि उन्होंने मेरी कविता पर उसी समय विराम लगा दिया था। कुछ बातें तो हम सबके साथ बाँट सकते हैं परन्तु कुछ बातें हम किसी के साथ नहीं बाँट सकतें ।

नीतिवचन 14:12 -ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

यह पद पंथों के लिए प्रासंगिक है। वे बड़े तर्कपूर्ण, लुभावने और आकर्षक प्रतीत होते हैं। अभी हाल ही में मेरे एक मित्र ने मुझ से कहा, "ऐसा क्यों है कि यह पंथ बड़ा फल-फूल रहा है?" मैंने उसे उत्तर दिया, क्योंकि यह पुराने मनुष्यत्व को आकर्षित करता है। यह देह को आकर्षित करता है। इसमें कहा जाता है कि आप एक मनभावन मनुष्य बने और कुछ नियमों का पालन करें तो आप सफल होंगे।" मेरे मित्रों, "ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है। परन्तु आगे क्या होता है? उसके

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" अर्थात परमेश्वर से अनन्त अलगाव। सही मार्ग पर रहना कैसा महत्वपूर्ण है! प्रभु यीशु ने कहा - **यूहन्ना 14:6 - यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।**

मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ। मेरे बिना कोई पिता के पास अर्थात स्वर्ग में नहीं आ सकता।

नीतिवचन 14:15-18 भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है। 16 बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है, परन्तु मूर्ख ढीठ होकर निडर रहता है। 17 जो झट क्रोध करे, वह मूढ़ता का काम भी करेगा, और जो बुरी युक्तियाँ निकालता है, उससे लोग बैर रखते हैं। 18 भोलों का भाग मूढ़ता ही होता है, परन्तु चतुरों को ज्ञानरूपी मुकुट बाँधा जाता है।

संसार सोचता है कि मसीही विश्वासियों में बुद्धि की कमी है और उन्हें जो भी उन्हें समझा दिया जाए उसे मान लेते हैं। परमेश्वर की सच्ची सन्तान इस परिप्रेक्ष में निर्बुद्धि नहीं है। वह सब कुछ ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं करती है।

क्या आपने कभी ध्यान दिया कि शिष्य प्रभु यीशु से सदैव ही प्रश्न पूछते रहते थे? थोमा सदैव ही प्रश्न करता था। शमौन पतरस भी अनेक प्रश्न पूछता था, "प्रभु तू कहाँ जाता है?" मैं तेरे साथ क्यों नहीं आ सकता?" शान्त स्वभाव फिलिप्पुस ने भी पूछा था, "हमें पिता को दिखा दे?" यहूदा, इस्कारियोति ने पूछा, "यह कैसे हो कि तू हमें यह बातें बताए परन्तु संसार को नहीं?" वे सदैव प्रश्न पूछते रहते थे।

आप परमेश्वर की सन्तान हैं तो इसका अर्थ यह नहीं कि आप किसी के द्वारा छले जाएँगे। आप किसी की भी बात नहीं मान लेंगे। परमेश्वर की सन्तान वचन के आधार पर हर एक बात को पहले परखता है। विश्वास का अर्थ अन्धकार में छलांग लगाना नहीं है। विश्वास का अर्थ जान की बाज़ी लगाना नहीं है और न ही उस छोटी बालिका के समान किसी भी बात को मान लेना है। मेरे भाईयों और बहनो, विश्वास ठोस नींव पर आधारित है। परमेश्वर कहता है जिस बात का ठोस आधार न हो उस पर विश्वास मत करो। "भोला तो हर बात को सच मानता है।" परन्तु चतुर मनुष्य हर एक बात को परखता है।

परमेश्वर का भय, बुद्धिमान मुनष्य को हर एक सुनी बात को, परखने की प्रेरणा देता है। वह उपदेश की किसी बात को इसलिए नहीं मान लेता है कि उपदेशक ने कहा है। वह परखकर देखेगा कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है। मैं भी आपसे कहता हूँ कि मेरी बात को ज्यों का त्यों स्वीकार न करें। मेरी बातें सिंहासन का आदेश नहीं हैं। मैं सर्वज्ञानी नहीं हूँ। आप मेरी बातों को भी परमेश्वर के वचन से परखें। आज कलीसियाओं और रेडियों, टी. वी. पर अनेक मधुर वचन सुनाए जा रहे हैं।

मेरे मित्रों, मैं फिर कहता हूँ परमेश्वर के वचन से, परखे बिना किसी भी सुनी हुई बात पर विश्वास न करें। क्योंकि आज बहुत से झूठे उपदेशक वचन की सही शिक्षा नही दे रहे हैं। इसलिए आज आपको इसकी आवश्यकता है, लेकिन क्या आप ऐसा करेंगे ! हम सब इस पर अवश्य ही गंभीरता से विचार करें। प्रभु आप सबको अच्छी समझ दे और सहायता करे।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0698

सत्यवचन

नीतिवचन 14 : 20 - 15 : 33

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 14:20 - निर्धन का पड़ोसी भी उस से घृणा करता है, परन्तु धनी के बहुतेरे प्रेमी होते हैं।

यह वचन तो अधिकाधिक सत्य सिद्ध होता जा रहा है। ग़रीब का कोई स्थान नहीं है। धनवान के अनेक मित्र होते हैं।

नीतिवचन 14:21- जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता, वह पाप करता है, परन्तु जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता, वह धन्य होता है।

जो आपकी सहायता न कर पाएँ उनके बारे में आपका क्या विचार है? क्या आप उनकी सहायता करते है?

नीतिवचन 14:23- परिश्रम से सदा लाभ होता है, परन्तु बकवाद करने से केवल घटी होती है। मनुष्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। कार्य करने वाले और बातें करने वाले।

नीतिवचन 14:24- बुद्धिमानों का धन उनका मुकुट ठहरता है, परन्तु मूर्खों की मूढ़ता निरी मूढ़ता है।

यहाँ "धन" का अर्थ पैसों से नहीं है। बहुत से लोग अत्मिक रूप से धनवान होते हैं। यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 14:25 -सच्चा साक्षी बहुतों के प्राण बचाता है, परन्तु जो झूठी बातें उड़ाया करता है उस से धोखा ही होता है।

मत्ती 15:14 में प्रभु यीशु ने इसी बात को इस प्रकार कहा,-

उन को जाने दो; वे अंधे मार्गदर्शक हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों ही गड्ढे में गिर पड़ेंगे।"

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 14:27- यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच जाते हैं।

परमेश्वर का भय मानने की शिक्षा देना संपूर्ण नीतिवचन में पवित्र आत्मा का उद्देश्य है।

नीतिवचन 14:30- शान्त मन, तन का जीवन है, परन्तु मन के जलने से हड्डियाँ भी जल जाती हैं।

ईर्ष्या आपको आपके आनन्द और परमेश्वर की सहभागिता से वंचित नहीं करेगी परन्तु आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव डालेगी।

नीतिवचन 14:34- जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।

काश यह पद संयुक्त राष्ट्र संघ का नारा होता न कि तलवार को हल बनाना जो प्रभु के आगमन तक कदापी नहीं होगा। प्रभु के राज्य में ही वे जानेंगे कि धार्मिकता राष्ट्र में सर्वोपरि है। आज राष्ट्र नहीं समझते कि धार्मिकता सर्वोपरि है परन्तु इतिहास इसका गवाह है। इतिहास का मार्ग उन राष्ट्रों के मलबे से भरा है जिन्होंने इस सिद्धान्त को नहीं माना।" पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।"

WORD RESOUNDS TODAY

अध्याय 15

इस अध्ययाय में आप अच्छाई और बुराई में परस्पर तुलना देखेंगे तथा जीभ की भूमिका, फिर मन के कार्यों को भी देखेंगे। सबसे पहले आईए हम "जीभ" के विषय में देखें।

जीभ

नीतिवचन 15:1- कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पद को पढ़ते ही आपका ध्यान नाबाल और अबिगैल पर गया होगा। हमने उनके प्रसंग में अनेक नीतिवचन देखे हैं। अबिगैल एक सुन्दर स्त्री थी और अच्छी पत्नी थी। उसका पति नाबाल धनवान मनुष्य था परन्तु मूर्ख था। एक पुस्तक है, "ब्यूटी एण्ड द बीस्ट" अर्थात सुन्दरता और पशु" यह नाबाल और अबीगैल पर लिखी गई है। अबिगैल सुन्दरता थी और नाबाल एक पशु तुल्य मनुश्य था। अबिगैल ने जब सुना कि उसके पति नाबल ने दाऊद को अपमानजनक उत्तर दिया है, जिसने उनके पशु और चरवाहों की सदैव रक्षा की थी, तो उसने तुरन्त ही अपने सेवकों कहा कि वे दाऊद के लिए बहुतायत से भोजन बांधे और वह दाऊद से भंेट करने निकल पड़ी। उसने दाऊद को दण्डवत किया। वह मानती थी कि दाऊद भावी राजा है और उसने अंगीकार किया कि उसका जीवन परमेश्वर के साथ गठबन्धन में है। उसके कोमल उत्तर के कारण दाऊद का क्रोध शान्त

www.Radio882.com

हो गया था। दूसरी ओर "कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।" ये वचन नाबाल के थे।

परमेश्वर के वचन के अध्ययन में आप ऐसे अनेक उदाहरण देखेंगे। हम देखेंगे कि मत्ती अध्याय 23 में प्रभु यीशु ने फरिसियों को कठोर शब्द सुनाए थे परन्तु इसका एक समय होता है। यीशु के लिए ऐसा करना सही भी था। दूसरी और आप देखेंगे कि वह अनुग्रह के भूखे लोगों पर कैसा दयावान था। यूहन्ना 8 में उसने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री से कहा,

यूहन्ना 8:11- यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।

यह कैसे अनुग्रह के शब्द थे। मेरे कहने का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर के वचन में ऐसे अनेक उदाहरण देखेते हैं। कोमल शब्दों का समय होत है और कठोर शब्दों का भी समय होता है।

नीतिवचन 15:2- बुद्धिमान ज्ञान का ठीक बखान करते हैं, परन्तु मूर्खों के मुँह से मूढ़ता उबल आती है।

यह भी जीभ की ही भूमिका है। मैं फिर कहता हूँ कि जीभ के दुरूपयोग के बारे में धर्मशास्त्र शराब के दुरूपयोग से अधिक चर्चा करता है। इसका अर्थ यह न समझें कि हम शराब को अच्छा कह रहे हैं। हम नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों पर उंगली उठाते हैं परन्तु शराबियों को रोगी और सहायताग्रस्त कहकर स्वीकार करते हैं। परमेश्वर का वचन शराब को दोष देता है परन्तु उससे कहीं अधिक जीभ को दोष देता है। आपकी उस छोटी सी जीभ को दोष देता है। आपकी यह छोटी सी जीभ प्रगट करती है कि आप क्या हैं। यह एक खतरनाक अंग है।

नीतिवचन 15:3 - यहोवा की आँखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं।

आप आसपास देखकर सोचते हैं कि आपको कोई नहीं देख रहा है परन्तु परमेश्वर आपको सदैव देखता है।

आपको स्मरण होगा कि मूसा ने जब देखा कि एक मिस्री इब्री को मार है तब उसने अपने चारों और देखा कि उसे कोई देखता नहीं है और उसने उस मिस्री को घात किया। वह ऊपर देखना भूल गया था। परमेश्वर के सामने आपका और मेरा जीवन खुली किताब है। यहाँ आपका गुप्त पाप स्वर्ग में चर्चा का विषय है। "यहोवा की आँखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं।"

नीतिवचन 15:4 - शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है, परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दुःखित होती है।

यहाँ फिर जीभ की भूमिका का उल्लेख है। जीभ हमें बड़ी परेशानी में डाल देती है। परन्तु हमें परेशानियों से निकाल भी लेती है। जीभ आशिष का कारण होती है और शाप का भी।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 15:5 - मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है, परन्तु जो डाँट को मानता, वह चतुर हो जाता है।

नीतिवचन में उपदेश और शिक्षा को सुनने के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। वहाँ लिखा है कि मूर्ख को शिक्षा नहीं दी जा सकती। यह सच है। आप उससे कह सकते हैं, परन्तु उसे समझ नहीं सकते क्योंकि वह आपकी शिक्षा पर ध्यान नहीं देता है।

नीतिवचन 15:6 - धर्मी के घर में बहुत धन रहता है, परन्तु दुष्ट के उपार्जन में दुःख रहता है।

धर्मी का धन सांसरिक सम्पदा नहीं है। उसका धन है, आनन्द, शन्ति, प्रेम, सहानुभूति, सुविधा इत्यादि है। ये जीवन का महान खज़ाना हैं। इसकी तुलना दुष्ट के धन से की गई है जो दुःखी है।

नीतिवचन 15:7 - बुद्धिमान लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं, परन्तु मूर्खों का मन ठीक नहीं रहता।

यहाँ होठों की बात है परन्तु अभिप्राय वही है। बुद्धिमान लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं।

नीतिवचन 15:8 - दुष्ट लोगों के बलिदान से यहोवा घृणा करता है, परन्तु वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है।

यह मुख्य सिद्धान्त है। दुष्ट न तो भलाई कर सकता है और न ही अच्छी बात सोचता है। उसके लिए यह असंभव है। पल भर के लिए पद 26 देखें जहाँ यही विचार व्यक्त किया गया है, "बुरी कल्पनाएँ यहोवा को घिनौनी लगती हैं, परन्तु शुद्ध जन के वचन मनभावने हैं।" दुष्ट के विचारों से परमेश्वर घृणा करता है वरन् उसके बलिदानों से भी घृणा करता है।

इसका कारण है कि वे भीतर और बाहर दोनों ओर से गलत है। उसका हर एक काम गलत है। दुष्ट ने दीन होकर अपनी भ्रष्ट दशा को स्वीकार करके प्रभु यीशु के पास आना उचित नहीं समझा कि उद्धार पाए। किसी ने कहा है, "जो अपने कर्मों को उद्धार का मार्ग समझे वह खोई हुई आत्मा है।" यह सच ही है, "दुष्ट लोगों के बलिदान से यहोवा घृणा करता है।" धर्म, आराधना, औपचारिकता पूर्ति की परमेश्वर की दृष्टि में कोई कीमत नहीं है। मैं समझ नहीं पाता हूँ कि मनुष्य क्यों सोचता है कि वह कुछ करके परमेश्वर के साथ सही संबन्ध बना लेगा। आवश्यकता तो इस बात की है कि मन में बदलाव आए। परमेश्वर पहले आन्तरिक शोधन करता है पदोपरान्त बाहरी कार्य करता है। वह आपके बाहरी रूप में रूचि नहीं रखता है।

नीतिवचन 15:9 - दुष्ट के चालचलन से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो धर्म का पीछा करता उस से वह प्रेम रखता है।

हमने देखा है कि परमेश्वर दुष्ट के बलिदान और उसके विचारों के साथ कैसा व्यवहार करता है। अब हम देखेंगे कि वह दुष्ट के चालचलन से भी घृणा करता है। परन्तु धार्मिकता के खोजियों से वह प्रेम करता है। आपको स्मरण है कि प्रभु यीशु हमारी धार्मिकता है –

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

1 कुरिन्थियों 1:30 - परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।

नीतिवचन 15:10- जो मार्ग को छोड़ देता, उसको बड़ी ताड़ना मिलती है, और जो डाँट से बैर रखता, वह अवश्य मर जाता है।

मनुष्य पसन्द नहीं करता कि कोई उससे कहे कि वह गलत है। कुछ लोग सम्मति और सुधार को कभी स्वीकार नहीं करते हैं।

मन (हृदय)

नीतिवचन 15:11-जब कि अधोलोक और विनाशलोक यहोवा के साम्हने खुले रहते हैं, तो निश्चय मनुष्यों के मन भी।

इब्रानियों 4:13 में लिखा है, सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है वरन जिस से हमें काम है, उस की आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।

परमेश्वर मन के विचारों और कल्पनाओं को समझता है।

"अधोलोक और विनाशलोक" जिसे हमने नहीं देखा और मनुष्य उसमें विश्वास भी नहीं करता है, परमेश्वर के समक्ष खुले हुए हैं।

केवल परमेश्वर ही इस अप्रत्यक्ष संसार को अपनी सन्तान के लिए प्रगट करता है कि उसे जीवन का सच्चा दृष्टिकोण समझ में आ जाए। जो मनुष्य इस जीवन को ही सब कुछ मानता है उसके सदाचार और प्राथमिकताएँ परमेश्वर की सन्तान से भिन्न होते हैं। ऐसे लोगों से बात करने से पहले आवश्यकता है कि हम जीवन के विषय में उनके दृष्टिकोण को समझें कि उनका सोचना क्या है। केवल परमेश्वर ही हमें और उनको अप्रत्यक्ष संसार का ज्ञान प्रदान कर सकता है।

लगभग 2000 वर्ष पूर्व यीशु इस पृथ्वी पर मानवदेह में था। उसने मृत्यु के द्वार में प्रवेश किया और तीसरे दिन वह फिर जी उठा और 40 दिन तक अपने शिष्यों को दिखाई देता रहा तदोपरान्त वह महिमा में लौट गया परन्तु उसने हमें अपना पवित्र आत्मा दे दिया और यूहन्ना 16 में उसने प्रतिज्ञा की कि, यूहन्ना 16:15

जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

हमें इसका ज्ञान रखना अति आवश्यक है।

नीतिवचन 15:13 - मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है, परन्तु मन के दुःख से आत्मा निराश होती है।

यह तो सब ही जानते हैं कि हँसना, प्रसन्न रहना और आनन्दित रहना मनुष्य के लिए स्वास्थ्यवर्धक और जीवन दायक होता है। इनसे जीवन को ऐसा विकास प्राप्त होता है जो दुःखों और नकारात्मक विचारों से प्राप्त नहीं होता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 15:14 - समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज में रहता है, परन्तु मूर्ख लोग मूढ़ता से पेट भरते हैं।

वह मानव बुद्धि की नहीं मन की बात पर बल देता है। वह वचनों की अपेक्षा आत्मिक विवेक की चर्चा कर रहा है जैसे किसी ने कहा, "शुद्ध बुद्धि।" इसकी आज बहुत कमी है, जैसे अकाल पड़ा हुआ है।

नीतिवचन 15:16-17- घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से, यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है, प्रेम वाले घर में सागपात का भोजन, बैर वाले घर में पले हुए पशु का माँस खाने से उत्तम है।

दानिय्येल का जीवन इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है। वह युवावस्था में दास बनाकर बाबुल ले जाया गया था। उसने असामान्य बुद्धि का प्रदर्शन किया था। इस कारण उसे बुद्धिमान मनुष्यों के साथ लोकसेवा के प्रशिक्षण हेतु चुना गया। उन्हें जो भोजन दिया जाता था वह यहूदियों की परमेश्वर प्रदत व्यवस्था में वर्जित भोजन था। अतः उसने केवल शाकाहारी भोजन की याचना की। उसने परमेश्वर के भय के कारण ऐसा चुनाव किया था। वह परमेश्वर की सेवा करना चाहता था। ओह, परमेश्वर ने इस कारण उसे कैसा सम्मान प्रदान किया। उसने उसे नबूकदनेस्सर का प्रधान मंत्री बनाया। नबूकदनेस्सर संसार का पहला सबसे बड़ा राजा था। मादी फारसियों द्वारा बेबीलोन जीतने के बाद भी परमेश्वर ने दानिय्येल को उस महान साम्राज्य का प्रधानमंत्री बनाए रखा जिसक राजा कुस्रू था। परमेश्वर ने अपने सेवक को प्रतिष्ठित किया।

नीतिवचन 15:18 - क्रोधी पुरूष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है।

यह पद एक से संबन्धित है। जिसका व्यवहार अभद्र हो वह झगड़ा मचाता है। यह भी सच है कि परमेश्वर के वचन का प्रचार विरोध उत्पन्न करेगा। स्मरण रखें कि प्रभु यीशु पृथ्वी पर सबसे अधिक विवादस्पद मनुष्य था। जहाँ भी सत्य की चर्चा की जाए वहाँ विवाद उत्पन्न होता ही है क्योंकि कुछ लोग सत्य को सुनना पसन्द नहीं करते हैं। परमेश्वर का वचन एक ऐसा मानक हो जो कलीसिया में सच्चे विश्वासी की पहचान करता है।

एक युवा उपदेशक को अपनी कलीसिया में समस्याओं कासामना करना पड़ रहा था। वह मेरे पास आया तो मैंने उसे अपने बाल्यकाल का अनुभव सुनाया। मैं अपने गाय और भैंस को चारा खिलाने जाता था तब अपने साथ लालटेन जलाकर ले जाता था। वहाँ द्वार खोलते ही दो बातें होती थीं - चूहे छिपने के लिए भागते थे और चिड़ियाएँ चहचहाने लगती थीं। यह प्रकाश का प्रभाव था। इसी प्रकार परमेश्वर के वचन का प्रचार करते समय आप चूहों को भागते देखेंगे और चिड़ियों को चहचहाते सुनेंगे।

हमें स्मरण रखना है कि हम क्रूस की ठोकर को अधिक बढ़ाचढ़ा कर व्यक्त न करें - केवल प्रचार करें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 15:20- बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख अपनी माता को तुच्छ जानता है।

पिता अपने पुत्र की अच्छाई पर गर्व करता है परन्तु पुत्र यदि परिक्षा में फेल हो जाए तो उसके पिता के मुँह से आप कुछ नहीं सुनते हैं।

नीतिवचन 15:23 - सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है, और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है!

बात यह नहीं है कि आप क्या कहते हैं परन्तु यह कि आप किस समय कहते हैं। सही समय पर कहीं गई सही बात काम कर देती है। हम में से अनेक जन स्वीकार करेंगे कि उचित समय पर कहे गए उचित वचनों ने हमारे जीवन को बदल दिया है। मेरे साथ ऐसा ही हुआ है।

नीतिवचन 15:26 - बुरी कल्पनाएँ यहोवा को घिनौनी लगती हैं, परन्तु शुद्ध जन के वचन मनभावने हैं।

हम देख चुके है कि दुष्ट के बलिदान, दुष्ट के विचार दुष्ट के मार्ग आदि सब परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है। उसे अपने कुमार्गों से मन फिराना आवश्यक है। इसके लिए उसे परमेश्वर के निकट आना होगा।

नीतिवचन 15:29 - यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।

पतरस एक अति सुन्दर बात लिखता है।

1 पतरस 3:12 - क्योंकि प्रभु की आँखे धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी विनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।

नीतिवचन 15:30 - आँखों की चमक से मन को आनन्द होता है, और अच्छे समाचार से हड्डियाँ पुष्ट होती हैं।

मोटापा घटाने का सबसे उत्तम उपाय है, कि आप बुरा समाचार सुनें। कहने का मतलब है कि आप चिन्ता में पड़कर स्वंय ही दुबले हो जाएगें।

नीतिवचन 15:33 - यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से पहिले नम्रता आती है।

यह मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा है कि वह परमेश्वर से सीखने के लिए दीन बने। हम सबको इस शिक्षा की आवश्यकता है। मैं आपसे पुछना चाहता हूँ, क्या आप परमेश्वर से सीखना चाहते हैं? तो क्या आप दीन बनने के लिए तैयार हैं? आज अवश्य ही एक निर्णय लें। प्रभु आप सबकी सहायता करे।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0699

सत्यवचन

नीतिवचन 16 : 1 - 16 : 24

प्रिय मित्रों,

प्रिय मित्रों, आईए आज हम अपने अध्ययन को नीतिवचन अध्याय 16 से आरंम्भ करें !

अध्याय 16

यह अत्यधिक अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण अध्याय है। इस के छोटे-छोटे वाक्य लम्बे-लम्बे अनुभवों की गाथा है जिसे समय और कष्टों की कड़ी परिक्षा से गुज़रना पड़ा है। उन्हें पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से ही अर्थपूर्ण और वास्तविक बनाया जा सकता है। नीतिवचन हर समय के लिए हैं। यद्यपि नीतिवचन इस्रएलियों के व्यवस्था पालन के लिए थे, वे हम सबसे भी विशेषरूप से बातें करते हैं - धनवान, ग़रीब, स्त्री, पुरूष आदि सब के लिए। यह एक ऐसी पुस्तक है जो हम सबके मन को छू लेती है।

नीतिवचन 16:1 - मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुँह से कहना यहोवा की ओर से होता है।

डॉ. एच. आयरनसाइड इसका अर्थ इस प्रकार दर्शाते हैं, "मन के उद्देश्य मनुष्य के होते हैं परन्तु मुँह से निकलने वाली बात यहोवा की ओर होती है।" हमारी भाषा में इसे कहते है, "मनुष्य सोचता है, परमेश्वर कुछ और करता है।" यिर्मयाह 10:23 में लिखा है,

हे यहोवा, मैं जान गया हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं।

आप और में योजना बनाकर उसका प्रबन्ध करते हैं परन्तु जब कहने और करने का समय आता है तब परमेश्वर का निर्णय अन्तिम होता है। हम बड़ी-बड़ी बातें कर सकते हैं परन्तु परमेश्वर ही है जों अन्तिम निर्णय देता है।

नीतिवचन 16:2 - मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है, परन्तु यहोवा मन को तौलता है।

"मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है।" हमने नीतिवचन में इसे देखा है,

नीतिवचन 14:12-ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

यदि आपने भटके हुओं को उद्धार का सन्देश सुनाया है या आप प्रचारक या शिक्षक है तो आपको अधिकांश समय जो उत्तर मिलते हैं उन्हें आप जानते हैं, "मुझे उद्धार की आवश्यकता नहीं

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है। मैं जैसा हूँ वैसा ही ठीक हूँ। मेरे साथ समस्या क्या है? मैं परमेश्वर के समक्ष खड़ा हो सकता हूँ। में एक ईमानदार मनुष्य हूँ।" मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है। मुझे इससे चुनौति भी दी गई है।

ऐसे अनेक विश्वासी हैं जो सोचते हैं कि परमेश्वर के समक्ष उनका चालचलन सिद्ध है। यह संपूर्ण विषय 1 यूहन्ना में समाया हुआ है,

1 यूहन्ना 1:7- पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

हम परमेश्वर के वचन का दर्पण अपने जीवन के सामने रखें तो हमें समझ में आ जाएगा कि सब कुछ ठीक नहीं है और हम परमेश्वर के प्रतिमान में सिद्ध नहीं हैं। आपका समाज आपको सम्मान प्रदान कर सकता है, कलीसिया आपकी सराहना कर सकती है, आपके पड़ोसी आपका गुणगान कर सकती है परन्तु मेरे मित्रों, जब आप परमेश्वर के वचन की ज्योति में स्वयं को देखेंगे तब आपको अपनी कमियों का और आवश्यकता का बोध होगा और अपने जीवन के दाग भी दिखाई देंगे। आपको समझ में आएगा कि आप परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। आपका चाल-चलन आपकी अपनी दृष्टि में उचित होगा परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में नहीं है। 1 यूहन्ना 1:6 में स्पष्ट कहा गया है कि -

यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैंः और सत्य पर नहीं चलते।

यूहन्ना मसीही जनों से कह रहा है जो आराधना में आराम से बैठकर दूसरों पर उंगली उठाते हैं और कहते हैं, "वे बुरे हैं। मैं अच्छा हूँ।" मेरे विचार में कुछ धर्मी जनों ने तो परमेश्वर से भी जगह देने को कह दिया है कि वे उसके बराबर में बैठ जाएँ और अपने साथ के विश्वासियों का न्याय करें।

मनुष्य का चाल-चलन उसकी दृष्टि में उचित है परन्तु परमेश्वर मन को जाँचता है। क्या आपने मन को तोलनेवाले तराजू को देखा हैं? मैं आपको बताता हूँ कि- यह परमेश्वर का वचन है। वह एक दर्पण है। वह एक तराजू है जो कहता है कि आप में कमी है। आप सिद्ध नहीं हैं।

गलातियों का अध्ययन करवाते समय मुझे कुछ लोगों ने गलत समझा है। वे मुझे लिखते हैं, "आपके अनुसार मूसा की व्यवस्था आज के लिए अच्छी नहीं है। वह आज व्यावहारिक नहीं है।" मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ। मैंने जो कहा वह है, "व्यवस्था से आपको उद्धार प्राप्त नहीं होगा।" पौलुस कहता है कि व्यवस्था भली है। वह एक दर्पण है। वह आप पर प्रगट करती है कि आप परमेश्वर की महीमा से रहित हैं। मेरे मित्रों, यदि आप परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन यह कह सकते हैं कि आप उसमें सिद्ध हैं तो सच यह है कि आपको व्यवस्था का ज्ञान नहीं है। व्यवस्था में सिद्धता की अनिवार्यता है जिसे हम नहीं ला सकतें, इस कारण हमें एक उद्धारकर्ता की आवयकता है। व्यवस्था का कारण यही है। वह हमें शिक्षक के समान मसीह के पास लाती है। वह आपका हाथ पकड़कर आपको मसीह के क्रूस के पास लाती है और कहती है, "मेरे बच्चों तुझे एक उद्धारकर्ता की आवयकता है।" व्यवस्था भली है परन्तु आपका उद्धार नहीं कर सकती। यदि परमेश्वर के वचन के सामने भी मनुष्य कहे कि उसका चाल-चलन उचित है तो वह अंधा है। परमेश्वर मन को जाँचता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 16:3 - अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होगी।

आपने कार्यों को यहोवा पर डाल डल दो तो वह सब संभाल लेगा। मेरे उद्धार का मार्ग यही था। अपनी युवावस्था में मैं घर से दूर चला गया था और पाप में पड़ गया। घर आकर मैं आत्मा में बहुत परेशान था। तब मेरे पास्टर ने मुझे बताया कि परमेश्वर मुझ से क्रोधित नहीं है। प्रभु यीशु ने मेरे पाप उठा लिए हैं और मैं विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता हूँ और परमेश्वर के साथ मेरा मेल हो जाता है। उस समय मैंने अपने पाप प्रभु यीशु पर डाल दिए। आज भी मैं कई बार रात में सो नहीं पाता हूँ तो मैं बिस्तर में लेटकर कहता हूँ। "प्रभु यीशु मैं आप पर में निर्भर करता हूँ।" अपने काम परमेश्वर पर डाल दो और आराम करो।

क्या आप कल की, अगले सप्ताह की, अगले वर्ष की या अनदेखे संसार की चिन्ता करते हैं? यह कैसे होगा? आप सब कुछ उसके हाथ में क्यों नहीं दे देते? अपने कामों को यहोवा पर डाल दें। कैसा अद्भुत चित्रण है?

नीतिवचन 16:4 - यहोवा ने सब वस्तुएँ विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं, वरन दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है।

मेरे मित्रों, यह एक प्रभावी औषधि है। परमेश्वर ने सब वस्तुएँ विशेष उद्देश्य के लिए बनाई हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि समुद्र का पानी खारा क्यों होता है या उसमें ज्वार क्यों आता है? आप कहेंगे कि यह प्रकृति के नियमों के कारण होता है। तो ये नियम किसने बनाए हैं? समुद्र का पानी खारा क्यों है? परमेश्वर ऐसा ही चाहता है! वह सृजनहार है और यह उसकी इच्छा है। आप कहेंगे कि यह भूमि का नमक है जो समुद्र में आता है। परन्तु वह नमक भूमि में किसने रखा?

मैं इस बात कि चिन्ता नहीं करता कि आप विकासवाद को कहाँ तक मानते है परन्तु निश्चित है कि आरंभ में कुछ वस्तु का होना आवश्यक है कि आरंभ हो। आप जानते हैं यह किसने आरंभ किया? परमेश्वर ने। यही नहीं उसने सब कुछ एक उद्देश्य के निमित बनाया है।

मनुष्य का मुख्य अन्त क्या है? मैंने वर्षों पूर्व यह सीखा था और यह अच्छा है। मनुष्य का मुख्य उद्देश्य है परमेश्वर का महिमान्वन करना और उसका अनन्त आनन्द लेना। आप जहाँ भी हों, जो भी हों परमेश्वर ने आप को अपनी महिमान्वन के निमित सृजा है। अब कोई पूछे कि आप, "सड़क पर भटकने वाले शराबी के बारे में क्या कहें? दृष्ट मनुष्य के विषय क्या कहें? खोए हुए मनुष्य के विषय क्या कहें? क्या वह परमेश्वर के महिमान्वन के लिए है? मेरे मित्रों, यह एक कड़वी औषधी है। क्या आप इसे खाने के लिए तैयार हैं? यह सब परमेश्वर के महिमान्वन के लिए है। आप कहेंगे, "मैं इसे स्वीकार नहीं करता।" मुझे स्मरण नहीं कि परमेश्वर ने कभी किसी से पूछा हो कि वह उसकी बात को पसन्द करता है या नहीं। मुझसे तो उसने कभी नहीं पूछा है।

मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ कि बहुत सी बातें जिसे मैं नहीं समझता हूँ, और मेरे विचार में मैं परमेश्वर को कुछ अच्छे सुझाव दे सकता हूँ परन्तु परमेश्वर कहता है, "मेरे बच्चे मैंने यह जगत तेरे लिए नहीं बनाया है। यह जगत मेरे लिए है। तू भी मेरे लिए है। तू अच्छा हो या बुरा तू मेरे महिमान्वन के लिए ही है। तू उद्धार प्राप्त हो या उद्धार से वंचित, मेरे महिमान्वन के लिए है। आज परमेश्वर अपने उद्देश्य को पूरा कर रहा है। आपके विचार में, क्या समय नहीं आ गया, कि

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

हम परमेश्वर के कदमों से कदम मिलाकर चलें? वही एकमात्र संचालक है।

अधिकांश मनुष्य सुनिश्चित करते हैं कि वे भीड़ के साथ चलें, सांसारिक चलन अपनाएँ सुविधा के साथ चलें। मित्रों, मैं नहीं जानता कि इस संसार में सफलता क्या है परन्तु यह अवश्य जानता हूँ कि सब कुछ अन्त में परमेश्वर के महिमान्वन के लिए है। "दुष्टों को भी विपत्ति भोगने के लिए बनाया है।" भजन संहिता 76 में लिखा है,

भजन संहिता 76:10 - निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी।

यह वह कैसे करेगा? मैं नहीं जानता। हम प्रतीक्षा करें। वह एक दिन हमें अवश्य दिखाएगा। क्या आप उस पर भरोसा रखेंगे और अपने मार्ग उसके हाथों में छोड़कर उसके साथ साथ चलें?

सबसे बड़ी बात तो यह है कि परमेश्वर इस जगत को अपनी योजना और अपने उद्देश्य के निमित चला रहा है। एक प्रचीन कहावत है, परमेश्वर की चौपड़ तैयार है। आपको अच्छी लगे या बुरी, परमेश्वर कहता है, "मेरे साथ मत खेल। ऐसा व्यवहार मत कर कि जैसे परमेश्वर का अस्तित्व है ही नहीं, जैसे कि यह आप का जगत है और आप अपने तरीके से इसे चलाएँगे। मैं एक बात समझा देना चाहता हूँ कि मेरे साथ खेलोगे तो अवश्य हारोगे। यह मेरा जगत है और मैं अपने तरीके से खेलता हूँ तुम्हारे तरीके से नहीं। मैं जानता हूँ कि मेरा खेल कैसा चलेगा तुम नहीं जानते हो।" हमारे लिए सिर्फ एक काम है - परमेश्वर के कदमों से कदम मिलाएँ।

वचन कहता है कि मूर्ख के लिए परमेश्वर नहीं है: **भजन संहिता 14:1 मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गए, उन्होंने घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं।**

इब्रानियों 11:6 पद में लिखा है - **और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।**

यह एक औषधि है, क्या सही नहीं है? यह मनुष्य के लिए अत्यधिक कड़वी है।

नीतिवचन 16:7 - जब किसी का चालचलन यहोवा को भावता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है।

मैंने इस पद से बहुत संघर्ष किया है और विचारकों के मत भी इस विषय में खोजे हैं। इसका अर्थ क्या यह है कि आपके चाल-चलन से परमेश्वर प्रसन्न हो तो आपके बैरी नहीं होंगे? यदि यह सच है हो तो कोई भी परमेश्वर के लोगों का बैरी नहीं होगा परन्तु उसका बैरी है।

मेरा कहने का अर्थ यह है कि यदि आपके चाल-चलन से परमेश्वर प्रसन्न होता है तो बैरी आपसे घृणा करेगा। परन्तु रोचक बात तो यह है कि वे यह अवश्य स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर आपको काम में ले रहा है। यही एक महत्वपूर्ण बात है। मेरे बारे में किसी ने एक अति उत्तम बात कही, "मैं उससे घृणा करता हूँ और वह परमेश्वर का वचन सिखाता है।" मैं उससे कहता हूँ, "मेरे बैरी धन्यवाद! आप इस नीतिवचन को पूरा करते है। यदि आप सत्यनिष्ठ हैं तो आपको यह स्वीकार करना होगा।" मुझे यह नीतिवचन बहुत पसन्द है।

नीतिवचन 16:11 - सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं, थैली में जितने बटखरे हैं, सब उसी के बनवाए हुए हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यह वचन कसाई, रसोइया, और मोमबत्ती बनानेवाले के लिए भी है।

नीतिवचन 16:18- विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमंड आता है।

मैंने इसे अपनी बाइबल में रेखांकित (चिन्हित) किया हुआ है।

नीतिवचन 16:19 -घमडिंयों के संग लूट बाँट लेने से, दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है।

यहाँ फिर परमेश्वर की घृणित वस्तु का नाम दिया गया है - घमण्ड। परमेश्वर की घृणा सूची में घमण्ड सब से पहला है।

नीतिवचन 6:16-19

छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको धृणा है' अर्थात् घमंड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पांव, झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

घमण्ड ही के कारण प्रधान स्वर्गदूत शैतान बना था। वह भोर का सितारा था - इबलीस (लूसीफर)। परमेश्वर की सर्वोच्च सृष्टि में उसके जीवन में पाप आ गया। यह पाप क्या था? घमण्ड! उसने परमेश्वर से ऊँचा होने की ठानी क्योंकि उसे परमेश्वर ने अति महान बनाया था। उसे परमेश्वर ने स्वतंत्र इच्छा भी दी थी।

स्वतंत्र इच्छा परमेश्वर की सृष्टि को दिया गया एक अति खतरनाक साधन है। कुछ पशु-पक्षी सृजनवृत्ति के कारण ठंडे से गर्म स्थान में आते हैं। यह उनकी स्वतंत्र इच्छा नहीं है। मनुष्य में परमेश्वर ने स्वतंत्र इच्छा निहित की है परन्तु इस स्वतंत्र इच्छा के साथ परमेश्वर से विद्रोह और घमण्ड करने की संभावना भी है।

पवित्र शास्त्र में इसके अनेक उदाहरण हैं। एस्तेर की पुस्तक में हामान, अबशालोम का अपने पिता से विद्रोह, पलिश्ति गोलियत का घमण्ड, आहाब का घमण्ड आदि।

नीतिवचन 16:24- मनभावने वचन मधुभरे छत्ते के समान प्राणों को मीठे लगते, और हड्डियों को हरी-भरी करते हैं।

"मनभावने वचन" हमें अच्छे शब्द सुनना अच्छा लगता है। समाचार पत्रों में तो आपको प्रतिदिन बुरा समाचार ही सुनने और पढ़ने को मिलता है। परन्तु बहुत बुरी बात तो यह है कि मनुष्य प्रायः बाइबल नहीं पढ़ता है। जबकी बाईबल में तो हमें सब अच्छा समाचार ही पढ़ने को मिलता है। यही तो सुसमाचार है।

हमें मनभावन शब्द काम में लेना चाहिए इससे पहले कि देर हो जाए और हमें लाग-लपेट कर बातें करना पड़े।

क्या आप मनभावन शब्द काम में लेते हैं? क्या आप परमेश्वर के वचन पढ़ते हैं? आज समय

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है कि आप अपने जीवन के लिए एक सही निर्णय लें। प्रभु आप सबकी सहायता करे।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0700

सत्यवचन

नीतिवचन 16 : 25 - 17 : 28

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 16:25: ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

आपको ध्यान होगा कि हमारे पास नीतिवचन 14:12 में भी यही बात है। इसे फिर से कहने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि हम इससे चूकें। किसी बात को दो बार कहने से उसका महत्व प्रगट होता है।

नीतिवचन 16:27 अधर्मी मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है, और उसके वचनों से आग लग जाती है।

हम किसी न किसी को तो जानते ही है जिस पर यह नीतिवचन प्रासंगिक बैठता है। मेरा एक मित्र है जो जब भी मुझसे भेंट करता है कहता है, "आप जानते हैं..." तब वह ताज़ी और बड़ी रोचक अफवाह सुनाता है। क्या वह ईश्वरभक्त है? मैं नहीं जानता। मैं न्यायकरना नहीं चाहता। हमें अपनी जीभ और मुँह को वश में रखना है कि हम इससे बचें।

नीतिवचन 16:28 टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

हमने पहले कहा है कि कुछ लोग हर बात पर विश्वास कर लेते हैं। कुछ लोग बुराई फैलाकर मित्रों को एक दूसरे से दूर करते हैं।

नीतिवचन 16:31- पके बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं; वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए यह एक अच्छी बात है।

नीतिवचन 16:33: चिट्ठी डाली जाती तो है, परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।

एस्तेर की पुस्तक में यह पद लिखा हुआ है। हामान ने यहूदियों के विनाश के लिए चिट्टी डालकर दिन निश्चित किया था परन्तु परमेश्वर ने हस्तक्षेप करके यहूदियों को बचा लिया और उसके उपलक्ष में "पूरिम" (अर्थात चिट्टियाँ) का पर्व गनाया जाता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

मैं फिर कहता हूँ परमेश्वर की बिसात़ तैयार है। परमेश्वर के साथ न खेलें। सदा स्मरण रखें कि यह परमेश्वर का जगत है और उसके महितान्वन के उद्देश्य के निमित है। क्या आप उसको सहयोग देंगे। क्या आप परमेश्वर के साथ चलेंगे या विद्रोह करेंगे। आपकी इच्छा नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा ही सर्वोपरि है। काश, हम परमेश्वर के साथ चलें और उससे मेल करें - विश्वास द्वारा धर्मी ठहरें।

अध्याय 17

नीतिवचन 17:1-चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम है जो मेलबलि-पशुओं से भरा हो, परन्तु उस में झगड़े-रगड़े हों।

इस पद का विचार भी नीतिवचन 15:17 के समान्तर ही है। "प्रेम वाले घर में सागपात का भोजन, बैर वाले घर में पले हुए बैल का माँस खाने से उत्तम है।" इस पद का अन्तिम भाग धार्मिक कार्यों का चित्रण है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वहाँ परमेश्वर की सहभागिता है। कलीसिया में अनेक सभाओं का आयोजन हो, अनेक विभाग हों अनेक गतिविधियाँ हों परन्तु उसके कारण बहुत अव्यवस्था और निराशाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

यहाँ मुझे एलिय्याह का ध्यान आता है। आहाब और ईज़बेल के दरबार में गतिविधियों की कमी नहीं थी। वहाँ धार्मिक काम भी होते थे परन्तु ईश्वरभक्ति का नाम नहीं था। उसी बीच वहाँ एलिय्याह आता है और कहता है कि जब तक परमेश्वर न कहे वर्षा नहीं होगी और वह वहाँ से चला जाता है। वहाँ से निकलकर वह कहाँ चला गया? वह करीत के नाले के पास चला गया। वहाँ उसने बहुत समय परमेश्वर के साथ अकेले में बिताया। परमेश्वर उसे वहाँ एकान्तवास में प्रशिक्षण दे रहा था। "चैन के साथ सूखा टुकड़ा उत्तम है।"

महान धार्मिक कार्य का एक और उदाहरण मूसा है। परमेश्वर मूसा को फिरौन के राजमहल से निकालकर निर्जन स्थान में ले गया और वहाँ उसे प्रशिक्षण दिया। मूसा और एलिय्याह दोनों ने चेन के साथ अर्थात एकान्तवास में सूखा टुकड़ा खाया था।

कभी-कभी अकेला रहना अच्छा होता है। हम अनेक सभाओं में अति व्यस्त रहते हैं परन्तु कभी-कभी हमें अपनी गतिविधियों में कटौती करके अकेले में समय बिताने की आवश्यकता पड़ती है। अनेक सभाओं के बाद हम घर लौटते हैं तब हम कहीं जाते तो नहीं हैं परन्तु अपने ही घर के बाहर एकान्त में समय बिताते हैं। यह हमारे लिए अच्छा है। परमेश्वर चाहता है कि हम ऐसा समय बिताए। हमारी आत्मिक ताज़गी के लिए यह अच्छा है।

नीतिवचन 17:2 - बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा, और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा।

निष्ठावान सेवक अनिष्ठ पुत्र से अच्छा है। एक सेवक जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं उसको घर में रखना ऐसे पुत्र से अच्छा है जिस पर आप भरोसा नहीं कर सकते।

WORD RESOUNDS TODAY
www.Radio882.com

मुझे अब्राहम और उसके विश्वासी सेवक एलीएज़ेर का स्मरण आता है तो दूसरी ओर दाऊद और उसके पुत्र अबशालोम का। उत्पत्ति 15:2 में स्पष्ट है कि अब्राहम ने परमेश्वर से कहा कि उसके पास सन्तान नहीं है। यदि कोई उसका वारिस है तो केवल एलीएजेर है। वह चाहता था कि उसका अपना पुत्र हो तो अच्छा होगा। परमेश्वर ने उसकी विनती सुनी और उसे पुत्र दिया। पुत्र अबशालोम की नाईं उदण्ड और अवज्ञाकारी हो तो उससे अच्छा होगा कि एक विश्वासयोग्य सेवक घर में हो। दाऊद के पास कई विश्वासयोग्य मुनष्य थे जो सदा उसके साथ रहते थे।

नीतिवचन 17:3 - चान्दी के लिये कुठाली, और सोने के लिये भट्ठी होती है, परन्तु मनों को यहोवा जाँचता है।

सोना और चान्दी जब खदान से निकालता है तब वह परिशुद्ध नहीं होता है। उसे भट्टी में पिघलाकर साफ किया जाता है। इसी प्रकार परमेश्वर अपने सेवकों को शुद्ध करता है जिससे कि वह उनमें पुत्र-पुत्री तैयार करता है।

हम परमेश्वर के लिए सोना और चान्दी से अधिक मूल्यवान हैं। अतः जब परमेश्वर हमें परखें तो हमें निराश नहीं होना चाहिए। 1 पतरस में लिखा है:

1 पतरस 1:6-7- और इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो। और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे।

परमेश्वर इसी रीति से काम करता है।

अय्यूब को कष्टों की आग से निकालने में परमेश्वर का अपना उद्देश्य था। कलीसिया में सताव के समय विश्वासिया के शहीद होने में भी परमेश्वर का एक उद्देश्य था। सताव के कारण कलीसिया का रूप निखरा था और उस युग के जैसी पवित्रता कभी नहीं रही थी।

मेरे विचार में आज हम विश्वासियों की समस्या समृद्धि है। इस्राएल के साथ भी यही समस्या थी। मूसा व्यवस्थाविरण 32 में इसका उल्लेख करता है,

व्यवस्थाविवरण 32:15 - परन्तु यशूरून मोटा होकर लात मारने लगा; तू मोटा और हृष्ट-पुष्ट हो गया, और चर्बी से छा गया है; तब उस ने अपने सृजनहार ईश्वर को तज दिया, और अपने उद्धारमूल चट्टान को तुच्छ जाना।

आज अनेक मोटे भक्त जन हैं। उनके पास सब कुछ है परन्तु वे फिर भी वे कुड़कुड़ाते हैं, दूसरों में दोष ढूढ़ते है, आलोचना करते हैं। वे मसीह के काम में किसी प्रकार सहायक नहीं हैं। अतः परमेश्वर उन्हें अपने लिए उपयोगी बनाए।

मुझे एक महिला का पत्र मिला जो प्रार्थना करती थी कि वह यीशु को और अधिक अच्छी तरह जाने और उसके अनुग्रह और ज्ञान में बढ़े तो परमेश्वर ने क्या किया? उसे केंसर हो गया। अब कोई कहेगा, "यह तो परमेश्वर ने अच्छा नहीं किया।" मेरे मित्रों, परमेश्वर कभी-कभी ऐसा ही करता है। इस समय आप एक ऐसे उपदेशक की बात सुन रहें हैं जो इसका अनुभव रखता है। मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे केंसर क्यों दिया। मुझे और मेरी पत्नी को किसी ने लिखा, कि परमेश्वर ने मुझे

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

कैंसर इसलिए दिया कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं, हम एक अज्ञानी हैं और हम ऐसे ही थे, इसलिए हो सकता हो कि यह सच हो परन्तु परमेश्वर में उस पत्र के भेजनेवाले के समान छोटी मानसिकता नहीं है। उसने यह इसलिए नहीं किया था कि वह हमसे घृणा करता है या उसकी मानसिकता गिरी हुई है। परमेश्वर ने प्रेम के कारण ऐसा किया था और आप नहीं जानते कि इस कारण वह हमारे लिए कितना मूल्यवान हो गया है।

नीतिवचन 17:6 - बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते हैं; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं।

मेरे विचार में आप सब इस पद को सराहते हैं। यह पद वृद्धों के लिए है। "बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं।" बच्चे अपने माता-पिता की ओर निहारते हैं। मैं अपनी बेटी के लिए सदैव आभारी हूँ जिसने अपने पिता से सदा प्रेम रखा और उसका सम्मान किया। वह क्रोधी स्वभाव की है और मैं भी। हम में वाद-विवाद होते रहते हैं परन्तु हम अपने मतभेदों को लेकर सूर्यास्त तक नहीं रूकते। मैं उसके घर जाता हूँ और वह भी मेरे घर आती है। "बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते होते हैं। यह नीतिवचन अति सत्य है। मेरे पास भी नाती हैं और मैं उनकी चर्चा करके आपको रूला सकता हूँ। एक वृद्ध पुरूष दूसरे वृद्ध से कहता है, क्या मैंने कभी आपको अपने नाती-पोते के बारे में बताया है? उसके चित्र दिखाए हैं?" दूसरा वृद्ध पुरूष कहता है, "नहीं, परन्तु मैं इसके लिए आपको धन्यवाद कहूँगा!" यदि मुझे पता होता कि नाती-पोते कैसे मनभावन होते हैं तो मैं अपनी सन्तान से पूर्व उन्हें प्राप्त करना चाहता! वे आनन्द और घमण्ड का कारण होते हैं। वे परिवारों को जोड़ेते हैं। बच्चा पिता की ओर निहारता है परन्तु नाना-दादा नाती-पोतों को देखते हैं। उसके अनुराग का केन्द्र वे ही हैं।

नीतिवचन 17:10- एक घुड़की समझनेवाले के मन में जितनी गड़ जाती है, उतना सौ बार मार खाना मूर्ख के मन में नहीं गड़ता।

आपने सुना होगा, लोग कहते हैं, "बेचारा दुआ बन्दगी करनेवाला कैसा कष्ट उठा रहा है!" परमेश्वर अपने भक्तों को कभी-कभी कष्ट देकर सुधारता है। परमेश्वर उन्हें कुछ सिखा रहा है क्योंकि वे समझने वाले हैं। बुद्धिमान मनुष्य घुड़की को सुनता है।

मूर्ख घुड़की को नहीं सुनात है। परमेश्वर यदि उसे सौ कोड़े मारे तौभी वह नहीं समझेगा। उसे कोई लाभ नहीं होगा। जब आप किसी अभक्त मनुष्य को फूलता-फलता देखते हैं तो इसका कारण यह भी हो सकता हे कि ऐसा मूर्ख है कि परमेश्वर उसके साथ कुछ भी करे, वह बदलेगा नहीं। प्रभु यीशु ने एक किसान का दृष्टान्त सुनाया था। वह एक समृद्धिशाली किसान था। वह अपना व्यापार बढ़ा रहा था। उसने पुराने खत्ते तोड़कर नये खत्ते बनवाए थे। नये खत्ते बनवाने में कोई बुराई नहीं है परन्तु वह मूर्ख था। मैं उसे मूर्ख नहीं कह रहा हूँ, यीशु ने कहा था, वह मूर्ख इसलिए था कि उसने अनन्त जीवन के लिए कुछ नहीं किया था। परमेश्वर की घुड़की से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। महाक्लेश के समय संसार ऐसी घोर पीड़ा और कष्टों में होगा कि मनुष्य अपनी जीभ काटेगा, परन्तु क्या वे परमेश्वर के पास आएँगे? नही, मूर्ख को सौ कोड़े पड़े तौभी उसे समझ नहीं आता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

मैं फिर कहता हूँ अनुशासन आपकी सन्तान के लिए हैं, अपराधी के लिए नहीं। उसके लिए दण्ड है।

नीतिवचन 17:16- बुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने हाथ में दाम क्यों लिए हैं? वह उसे चाहता ही नहीं।

मैं धनवानों के अनेक बच्चों को जानता हूँ जिनमें कॉलेज जाने की इच्छा नहीं है। उन्हें कॉलेज में होना भी नहीं चाहिए, इसलिए नहीं की वे परिक्षाओं में सफल नहीं हुए, परन्तु इसलिए कि उनका मन ही नहीं है।

मैं इस विचार से सहमत नहीं कि सबको कॉलेज जाना चाहिए। कॉलेज प्रवेश का अर्थ है, मार्ग तो सबके लिए होना चाहिए परन्तु उन्हें विवश नहीं करना चाहिए। अनके युवाओं में कॉलेज जाने की इच्छा ही नहीं होती है। यहाँ धनावान और ग़रीब की बात नहीं है। यहाँ मुख्य बात है लालसा की। मेरे विचार में प्रत्येक ग़रीब बच्चे को कॉलेज शिक्षा का सौभाग्य प्राप्त होना चाहिए यदि उसमें लालसा है तो। दूसरी ओर कॉलेज में अनेक धनवान युवक हैं जिन्हें वास्तव में वहाँ होना नहीं चाहिए। मैं एक ग़रीब बालक था और मैं परमेश्वर का आभारी हूँ कि एक विश्वासी धर्मवृद्ध ने मुझ में रूचि ली। यदि वह न होता तो मै। कभी कॉलेज नहीं जा पाता। मैं इस ग़रीब बालक के लिए कॉलेज का द्वार खोलने के लिए परमेश्वर का आभारी हूँ।

नीतिवचन 17:17- मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।

यह पद हमें दाऊद के धनिष्ठ मित्र योनातान का स्मरण कराता है। "मित्र सब समयों में प्रेम रखता है। योनातान दाऊद से तब प्रेम रखता था जब वह उसके पिता के लिए राजमहल में वीणा बजाता था और वह दाऊद से उस समय भी उतना ही प्रेम रखता था जब वह उसके पिता से जान बचाकर गुफाओं में छिपा हुआ था। योनातान राजा शाऊल का पुत्र होन के कारण सिंहासन का वारिस था परन्तु वह दाऊद से बहुत प्रेम रखता था।

ऐसा मित्र मिलना वास्तव में बड़े सौभाग्य की बात है। जो आपसे हर परिस्थिति में प्रेम न रखें वह आपका मित्र नहीं है। कोई कहें कि वह आपसे प्रेम रखता है और आपका मित्र बन जाता है परन्तु बुरे समय में वह आपसे प्रेम नहीं रखता तो बड़ी निराशा होती है। वह यहूदा इस्कारियोति है या अबशालोम है।

नीतिवचन 17:21- जो मूर्ख को जन्म देता है वह उस से दुःख ही पाता है; और मूढ़ के पिता को आनन्द नहीं होता।

अनेक नीतिवचनों में यह कहा गया है। एक अच्छे पुत्र का पिता सदा आनन्दित रहता है। वह सबसे अपने पुत्र की चर्चा करता है। दूसरी और यदि कोई पुत्र अच्छा नहीं है तो उसका पिता हर समय शान्त दिखाई देता है। उसके विषय में कोई नहीं सुनता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 17:22- मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के टूटने से हड्डियाँ सूख जाती हैं।

आज अनेकों का हृदय दुःखी है। उनमें आनन्द की कमी है।

परमेश्वर चाहता है कि हमारा मन खुश रहे। वह चाहता है कि हमारा समय अच्छे से बीते। आराधनालय में हमारी उपस्थिति मनोविनोद का समय हो। हमें हँसना चाहिए, आनन्द मनाना चाहिए, और परमेश्वर की स्तुति करना चाहिए। हम आराधनाओं में अकड़े हुए और अभिमान से ग्रस्त होते हैं।

नीतिवचन 17:23 - दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिये, अपनी गाँठ से घूस निकालता है।

रिश्वत देने के अनेक तरीके हैं। आज संसार में कदम-कदम पर रिश्वत का लेन-देन है।

नीतिवचन 17:28 - मूढ़ भी जब चुप रहता है, तब बुद्धिमान गिना जाता है; और जो अपना मुँह बन्द रखता वह समझवाला गिना जाता है।।

इस नीतिवचन में हास्य है। लिखा है कि इससे मुँह बन्द हो जाता है।

एक किसान का पुत्र बहुत सीधा था। पिता एक दिन उसे अपने मंडी में ले गया। वे खेत से सेब लेकर बेचने आए थे। पिता ने पुत्र से कहा कि वह मुँह बन्द रखे अन्यथा लोग जान जाएँगे कि वह मूर्ख है। और वह मंडी में चला गया। उसी बीच एक व्यक्ति वहाँ आया और उस लड़के से पूछा, "सेब कैसे दिए हैं?" वह लड़का चुप रहा? उसने दो-तीन बार सेब का मूल्य पूछा, परन्तु वह लड़का चुप रहा। उस व्यक्ति ने कहा, "तू मूर्ख के समान क्यों बैठा है?" और वह चला गया। पिता जब लौटा तो पुत्र से पूछा, "सब ठीक तो था?" लड़के ने कहा, "मैंने तो अपना मुँह नहीं खोला परन्तु वे जान गए कि मैं मूर्ख हूँ।"

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0701

सत्यवचन

नीतिवचन 18 : 1 - 18 : 24

प्रिय मित्रों,

अध्याय 18

हमारा यह युवक जो बुद्धि की पाठशाला में गया है अब उन्नति कर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि हम सब भी उसके साथ नीतिवचनों में व्याप्त आत्मिक सत्यों की शिक्षा प्राप्त कर रहें हैं।

नीतिवचन 18:1- जो दूसरों से अलग हो जाता है, वह अपनी ही इच्छा पूरी करने के लिये ऐसा करता है, और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर करता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात है, अलग होना। परन्तु यह अलग होना उचित नहीं है।

मानवजाति का मुख्य विभाजन है, उद्धार पाए मनुष्य और खोए हुए या उद्धार रहित मनुष्य। परमेश्वर इस विभाजन पर ध्यान देता है। वह त्वचा के रंग के अनुसार विभाजन नहीं करता है - वह रंगों पर ध्यान नहीं देता है। 2 कुरिन्थियों 6 में इस विभाजन को प्रगट किया गया है:

2 कुरिन्थियों 6:17- इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा।

परमेश्वर कहता है वरन् स्पष्ट कहता है कि उसके लोगों को अशुद्धता से अलग रहना है - विशेष करके मूर्तिपूजा, अनैतिकता और उद्धार से रहित मनुष्यों की प्रत्येक बातों से। यही सच्चा अलग होना है। बुराई से अलग रहो। यह एक महत्वपूर्ण बात है। कुछ उद्धार पाए मनुष्य भी अलग रहते हैं और अपना एक गुट बना लेते हैं। यह अलग होना उचित नहीं है। वे अपने उपदेशों को स्वयं बना लेते है जो बाइबल में नहीं पाए जाते हैं। वे सोचते हैं कि उनके बनाए नियमों के आधार पर उन्हें अन्य विश्वासियों से अलग रहना चाहिए। वे सोचते हैं कि ऐसा करने से वे परमेश्वर की दृष्टि में विशेष मनुश्य होंगे। वे अपने आप को अन्धों से ऊँचा समझते है। सच तो यह है कि वे हैं ही नहीं। वे अपने जीवन में देह के प्रभाव को प्रगट करते हैं। यह अलग होना उचित नहीं है।

एक और ऐसा ही पृथक समूह है जो उद्धार से रहित मनुष्यों में पाया जाता है। इस नीतिवचन में ऐसों ही का उल्लेख किया गया है। ये वे लोग हैं जो अपने भोग-विलास के लिए अलग हो जाते हैं। वे बुद्धि की बातें सुनना नहीं चाहते हैं।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यहूदा अपनी पत्री में उन्हें अभक्त कहता है:

यहूदा 1:19 - ये वे हैं जो फूट डालते हैं; ये शारीरिक लोग हैं, जिनमें आत्मा नहीं।

वे उन सबसे अलग हो जाते हैं जो कुछ कहते हैं। वे अपना गुट अलग ही बना लेते हैं और अत्यधिक दुषित हो जाते हैं। वे अलग हैं। वे सत्य से अलग हैं। वे इस संसार में अत्यधिक कष्ट उत्पन्न करते हैं।

नीतिवचन 18:2 - मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता, वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना चाहता है।

मुझे एक प्रोफेसर ने अपना एक संग्रह भेजा जिसमें से अनेक लोकाक्तियाँ हमारे नीतिवचनों से मिलती हैं। उनमें से एक है, "यदि मैं कुछ बोलने से पहले सोचने के लिए रूक जाऊँ तो मुझे कुछ कहने के बाद पछताना नहीं पड़ेगा।" यह अति सत्य है।

नीतिवचन 18:3- जहाँ दुष्टता आती, वहाँ अपमान भी आता है; और निरादर के साथ निन्दा आती है।

एक और आधुनिक लोकोक्ति है, "कुछ लोग जहाँ भी जाते हैं वे दूसरों में आनन्द ही बाँटते हैं।" मेरे विचार में यह एक अच्छी लोकोक्ति है और यहाँ जिन मनुष्यों का उल्लेख है उनके लिए यह उचित है। कुछ लोग सबको दुःख ही देते हैं।

नीतिवचन 18:4 - मनुष्य के मुँह के वचन गहिरा जल, और उमड़ने वाली नदी बुद्धि के सोते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी में पवित्र आत्मा का अन्तरवास है। झोपड़ियों के पर्व में जब मन्दिर में पानी डाला जा रहा था तब प्रभु यीशु ने वहाँ खड़े होकर कहा:

यूहन्ना 7:37-38- पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।

यूहन्ना इसका अर्थ भी हमें समझाता है:

उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। (यूहन्ना 7:39)

परमेश्वर की सन्तान को पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में बोलना सीखना है। परमेश्वर के वचन और उसकी बातों के प्रसार में यह अति महत्वपूर्ण है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 18:5- दुष्ट का पक्ष करना, और धर्मी का हक मारना, अच्छा नहीं है।

किसी दुष्ट की बातों में आकर किसी धर्मी की हानि पहुँचाने की सम्मति न करना। यह व्यक्ति विशेष के संदर्भ में है परन्तु देश-देश के लिए भी सही है। ये नीतिवचन व्यावहारिक हैं और जीवन में काम के हैं।

नीतिवचन 18:6-8 - बात बढ़ाने से मूर्ख मुकद्दमा खड़ा करता है, और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है। मूर्ख का विनाश उसकी बातों से होता है, और उसके वचन उसके प्राण के लिये फन्दे होते हैं। कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट भोजन के समान लगते हैं; वे पेट में पच जाते हैं।

"कानाफूसी करनेवाले के वचन" स्वादिष्ट भोजन के समान लगते है जो पेट में पच जाते हैं। हम फिर से मूर्ख के विषय चर्चा सुन रहे हैं। आपको स्मरण होगा कि मत्ती 5:22 में यीशु ने हमें किसी को मूर्ख कहने के लिए मना किया है परन्तु परमेश्वर कुछ लोगों को मूर्ख कहता हैं क्योंकि वह मनुष्य को जानता है।

यहाँ हम देखते हैं कि मूर्ख परेशानी का मूल है। वह हमेशा झगडे उत्पन्न करता है, शिकायत करता है और दूसरों में गलती निकालता है।

यहाँ एक और कहावत है, "दुसरों का ध्यान रखो। अधिकांश मनुष्य शिकायत करना जानते हैं परन्तु बहुत कम शिष्य उचित बातों कि शिकायत करते हैं। मधुमक्खी को शहद बनाने के लिए कोसा नहीं जाता है परन्तु डँक मारने के लिए अवश्य कोसा जाता है।" यह कैसी महान सच्चाई है।

नीतिवचन 18:10 - यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है; धर्मी उस में भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है।

यहोवा का नाम वही है जो प्रभु यीशु का नाम है। प्रभु का नाम यीशु इसलिए है क्योंकि वह लोगों को पाप से उद्धार दिलाता है। उसे मसीह इसलिए कहते हैं कि वह अभिषिक्त है। वह हमारे जीवन और उद्धार का प्रभु है। प्रभु दृढ़ गढ़ है। आप उसकी शरण में पूर्णतः सुरक्षित रहते हैं। यह पद प्रायः बच्चों में प्रचार के समय काम में लिया जाता है। मैंने भी इस पद पर बच्चों को शिक्षा दी है और इसे अति प्रभावी पाया है। यह सुरक्षा की बात करता है और हमें स्मरण दिलाता है कि हमें उसके हाथों से कोई छीन नहीं सकता। यह कैसा सुन्दर चित्रण है।

नीतिवचन 18:11- धनी का धन उसकी दृष्टि में गढ़वाला नगर, और ऊँचे पर बनी हुई शहरपनाह है।

इस्राएल और कलीसिया में बहुत अन्तर है। हमें इसका बोध होना आवश्यक है। सांसारिक आशिषें इस्राएल के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी परन्तु हमें उसकी ऐसी कोई प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं है। परमेश्वर ने उनसे टोकरी भर कर आशिषों की प्रतिज्ञा दी थी और पूरी भी की। परन्तु उसने यह भी कहा था

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

कि आशिषों से वंचित होना उनके लिए परमेश्वर का दण्ड होगा। कलीसिया इस्राएल का उत्तरकालीन भाग नहीं है जैसा अनेक प्रचारक कहते हैं। कलीसिया इस्राएल के बाद का कदम नहीं है परन्तु आप दोनों में तुलना कर सकते हैं। दोनों में अनेक समानताएँ है। परन्तु विषमताएँ बहुत अधिक हैं। कलीसिया को सांसारिक आशिषों की प्रतिज्ञा नहीं दी गई है। परमेश्वर ने हम विश्वासियों को मसीह में स्वर्गीय स्थानों की आशिष दी है जैसा पौलुस इफिसियों 1:3 में कहता है। परमेश्वर की सन्तान को सुरक्षित रखना है। उसे दृढ़ गढ़ में प्रवेश करना है। उसे इस दृढ़ नगर में रहना है और चारों ओर ऊँची दीवारों से घिरा रहना है। ये क्या हैं? यह परमेश्वर के वचन का ज्ञान है। हमें यह बोध होना आवश्यक है कि हम कठिन समय में वास करते हैं। और हमें परखा जा रहा है। ओह, परमेश्वर के वचन का ज्ञान कैसा महत्वपूर्ण है!

मेरे मित्रों, गवाही देने के पाठ और पत्नी के साथ अच्छे संबन्ध बनाने के परामर्श को परमेश्वर का पावन वचन न समझें। उनका महत्व है, परन्तु वे केवल सतही हैं। परमेश्वर के वचन की खोज का कोई विकल्प नहीं है। परमेश्वर के वचन को पढ़ना सीखें। यदि समझ में न आए तो फिर से पढ़ें। फिर भी समझ में न आए तो एक बार और पढ़ें। यदि फिर भी न समझ में आए तब कुछ तो गड़बड़ है। आप प्रभु से कहें कि आप के समझ में नहीं आ रहा है, उससे सहायता माँगे। परमेश्वर का आत्मा हमारा शिक्षक है मैं आपको सच कह रहा हूँ क्योंकि उसने वचन को समझने में मुझे कभी निराश नहीं होने दिया है।

नीतिवचन 18:13 - जो बिना बात सुनें उत्तर देता है, वह मूढ़ ठहरता, और उसका अनादर होता है।

किसी का न्याय करना कितना आसान है जबकि न तो उसे कोई जानता है, न ही उसकी समस्या को और न ही उसकी परिस्थिति को जिसमें वह निर्वाह कर रहा है। अपना विचार प्रगट करने से पूर्व सब तथ्यों को जान लेना बहुत महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 18:14 - रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है?

आपकी टांग टूट जाए तो ठीक हो जाएगी परन्तु यदि आपकी आत्मा टूट गई तो आप पूरी तरह टूट जाते हैं। ऐसे समय में आपको केवल परमेश्वर ही संभाल सकता है। नहेम्याह जब इस्राएल लौटा और शहरपनाह का पुनः निर्माण किया तब तक इस्रालियों ने परमेश्वर का वचन नहीं सुना था उसने प्रजा के सामने परमेश्वर का वचन पढ़ा और प्रत्येक इस्राएली को यह बोध हुआ कि वह परमेश्वर से कितना दूर है। नहेम्याह ने उनसे कहा कि वह समय रोने का नहीं आनन्द मनाने का है: नहेम्याह 8:10

फिर उस ने उन से कहा, कि जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है; और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

हमारे लिए यह जानना कितना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का आनन्द हमारा दृढ़ गढ़ है। मैं पास्टरों की एक सभा में था वहाँ मैंने एक नारा लिखा देखा, "यह आनन्द वह पताका है जो स्वामी के अन्तर्वास के समय मन में फहरता है।" मुझे यह बड़ा मनभावन लगा। जब प्रभु यीशु आपके जीवन की प्रार्थिकता बन जाता है, तब आपमें टूटी हुई आत्मा नहीं रहती जिसकी आज जगह-जगह चर्चा सुनते है। परमेश्वर को प्रथम स्थान दें। उसे अपना समय, अपना परिश्रम, अपने विचार, अपनी संगति, अपना पैसा आदि सब दे दों और देखों क्या फिर होता है। क्या आपने कभी यह करके देखा है?

नीतिवचन 18:16 - भेंट मनुष्य के लिये मार्ग खोल देती है, और उसे बड़े लोगों के सामने पहुँचाती है।

मैं चाहता हूँ कि आप इस पद को लिख लें। कुछ आलोचक इस पद की तुलना नीतिवचन 25:14 के साथ करके बाइबल में परस्पर विरोध सिद्ध करना चाहते हैं परन्तु हम इसका अध्ययन करते समय इसके विषम विचारों की तुलना देखेंगे न कि परस्पर विरोध की।

यह पद वरदान के विषय चर्चा करता है और जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, मुझे विश्वास है कि मसीह में प्रत्येक विश्वासी को वरदान प्राप्त है। पवित्र आत्मा का एक वरदान एक सन्देश है जो हमारे पास आत्मा में है जो इस विशय को विकसित करता है।

नीतिवचन 18:21- जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।

"जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं।" इस पर विचार करें! आपकी जीभ सुसमाचार सुना सकती है जो जीवन-दायक है। दूसरी ओर अपकी जीभ कुछ ऐसा भी कह सकती है जिसे सुनकर मनुष्य परमेश्वर से दूर हो जाएँ। दूसरे शब्दों में वे जीवन से वंचित अर्थात मृत्यु की ओर बढ़ जाएँ। यह छोटी सी जीभ संसार का सर्वसामर्थी अस्त्र है। बाइबल में जीभ के लिए बहुत कुछ लिखा है। नीतिवचन में तो इसके बारे में वृहद् चर्चा की गई है।

नीतिवचन 18:22 - जिस ने स्त्री ब्याह ली, उस ने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है।

पद 21 और 22 को साथ देखकर मुझे बड़ी हँसी आती है। जब कोई युवक किसी लड़की से विवाह का प्रस्ताव रखता है तब जीभ ही काम में आती है। जीवन और मुत्यु जीभ के वश में हैं। कभी-कभी आप सोचते होंगे कि किसी अनर्थ बात को कहने से पहले आप अपनी जीभ को वश में रखते तो अच्छा होता। एक वृद्ध पुरूष ने कभी विवाह नहीं किया था क्योंकि उसके विचार में स्त्रियाँ बहुत बात करती हैं परन्तु एक दिन उसे एक वृद्ध महिला मिली जो बहुत कम बोलती थी। उसे उससे प्रेम

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

हो गया और उसने विवाह का प्रस्ताव रखा। विवाह का प्रस्ताव सुनते ही उसने बातें करना आरंभ कर दिया कि वे कहाँ रहेंगे और अपना घर कैसे रखेंगे आदि अनेक बातें। लगभग एक घंटा बात करने के पश्चात उस महिला ने देखा कि वही बात कर रही है और उसका होनेवाला पति शान्त है। उसने पूछा, "आप कुछ क्यों नहीं कहते?" पुरूष ने उत्तम दिया, "मैं तो पहले ही बहुत कुछ कह चुका हूँ।"

"जिसने स्त्री ब्याह ली, उसने उत्तम पदार्थ पाया।" और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है, "मैं अपनी पत्नी के लिए परमेश्वर का अत्यंत आभारी हूँ। अच्छी पत्नी एक महान उपलब्धि है। मेरे साथ निभानेवाली एक सहायक!

नीतिवचन 18:24 - मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

यदि आपको मित्र बनाना हैं तो मित्रता का प्रदर्शन करें। प्रसंगवश, आप अपने मित्रों के मित्र हैं।

"ऐसा मित्र होता है जो, भाई से भी अधिक मिला रहता है।" आप जानते हैं, वह कौन है? केवल यीशु। यूहना 15:4 में उसने कहा,

तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मेंः जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।

यदि आप प्रभु यीशु की आज्ञा नहीं मानते तो आप उसके मित्र नहीं हैं।

यीशु ऐसा मित्र है जो भाई से भी अधिक मिला रहेगा। वह हमारा उद्धारकर्ता है। उसने हमसे इतना प्रेम रखा कि हमारे लिए मर भी गया और कहता है,

मत्ती 28:20- और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।

इब्रानियों 13:5- तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष करो; क्योंकि उस ने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।

उसने हमसे एक और प्रतिज्ञा की है,

यूहन्ना 14:3 - और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।

आप इस व्यवस्था को और अधिक अच्छा बनाने के लिए कुछ नहीं कर सकतें हमारा यह अद्भुत मित्र किसी भाई से अधिक हमारे साथ मिला रहता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0702

सत्यवचन

नीतिवचन 19 : 1 - 19 : 29

प्रिय मित्रों,

अध्याय 19

नीतिवचन 19:1 - जो निर्धन खराई से चलता है, वह उस मूर्ख से उत्तम है जो टेढ़ी बातें बोलता है।

परमेश्वर ने हमें मना किया है कि किसी को मुर्ख न कहें परन्तु परमेश्वर का आत्मा कहता है। स्पष्ट है कि मानवजाति में अनेक मूर्ख हैं।

नीतिवचन 19:2-3, मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं, और जो उतावली से दौड़ता है वह चूक जाता है। मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है, और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है।

इन नीतिवचनों एक विचार दूसरे विचार को समर्थन करता है। यहाँ परमेश्वर की सन्तान और अन्य सन्तानों में परस्पर असमानता प्रगट की गई है। एक सत्य के मार्ग पर चलता है तो दूसरा उदाहरण और अज्ञान के मार्ग पर जिसे परमेश्वर मूर्ख कहता है।

एक कहावत है जहाँ अज्ञान परमानन्द है वहाँ बुद्धिमान के लिए मूर्खता है। “परन्तु यह सच नहीं है कभी-कभी कलीसिया के अगुवे भी बाइबल के प्रति अपने अज्ञान पर घमण्ड करते हैं। मैंने बोर्ड सभाओं में लोगों को कहते सुना है, यह थियोलोजी है, बाइबल की बात है। मैं इस बारे में अधिक नहीं जानता।” मैं कहते-कहते रूक जाता हूँ, “आप क्यों नहीं जानते आप एक परिपक्व मनुष्य हैं, आप कलीसिया के अगुवे हैं। आपको आत्मिक समझ में ऐसा अज्ञानी नहीं होना चाहिए!

मुझे किसी ने यह कहावत भेजी, “बाइबल का जानकार कभी अशिक्षित नहीं हो सकता और बाइबल की शिक्षा नहीं जानने वाला कभी पूर्ण शिक्षित नहीं हो सकता।” भले ही संसार इसे स्वीकार न करे परन्तु मैं इस पर विश्वास करता हूँ। निश्चय ही एक परिपक्व विश्वासी बाइबल के विषय में अज्ञानी नहीं हो सकता। परमेश्वर के वचन का ज्ञान परमेश्वर की सन्तान का गुण है।

नीतिवचन 19:4, धनी के तो बहुत से मित्र हो जाते हैं, परन्तु कंगाल के मित्र भी उस से अलग

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

हो जाते हैं।

धनवान मनुष्य के अनेक मित्र होते हैं - उसके फ्रिज में सामान भरा हो और अलमारी में शराब की बालतें तथा संगीत चलता हो।

यह एक ध्यान देने योग्य बात है कि परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सन्तान को गरीबों की खोज करने का आदेश देता है। स्मरण करें याकूब इस विषय में क्या कहता है:

या "मेरे पांवो के पास बैठ।"

याकूब 2:2-3- ताकि उन के मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहिचान लें। जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार छिपे हुए हैं।

दुर्भाग्य से यह सच है कि आज हमारी कलीसियाओं में गरीब मनुष्य के साथ समस्याएँ हैं। मुझे एक गरीब दंपत्ति ने बताया कि वे एक रूढ़ीवादी बाइबल आधारित कलीसिया में आराधना के लिए गए। उनके साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया गया क्योंकि वे ग़रीब थे और उनके वस्त्र पुराने थे।

मनुष्य का पुराना मनुष्यत्व अब भी काम करता है। मेरी माता जब भी बाहर जाती थी तो मुझसे पूछती थी कि उसके कपड़े ठीक हैं। आज मेरी पत्नी भी वही प्रश्न पूछती है। मनुष्य आज भी पुराने मनुष्यत्व के मनुष्यों में उठता-बैठता है। व ग़रीब को दूर करना चाहते हैं। परमेश्वर स्पष्ट कहता है, "कंगाल के मित्र भी उससे अलग हो जाते हैं।" आपको ग़रीब जानकर मनुष्य आपसे दूर हो जाएगा।

नीतिवचन 19:5- झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा।

देखिए पद 9 में भी यही लिखा है, **"झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता है, और जो झूठ बोला करता है, वह नष्ट होता है।"** झूठा साक्षी बचेगा नहीं। वह पकड़ा गाएगा। यहां तक की प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर कहा है कि वह नश्ट हो जाएगा।

1 राजाओं 21,22 में अहाब और इजिबेल ने नाबोत के विरूद्ध झूठे गवाह खड़े करके उसे पथराव करवा दिया था तदोपरान्त उसका खेत ले लिया क्योंकि वह जीवित रहते अपना खेत बेच नहीं रहा था। अहाब सोच रहा था कि वह इस दुष्टता से बच जाएगा परन्तु एलिय्याह ने उससे कहा कि जिस स्थान पर नाबोत का लहू बहा है उसी स्थान पर कुत्ते उसका लहू चाटेंगे।

अहाब ने सीरिया से युद्ध करने के लिए यहूदा के यहोशापात को अपनी ओर कर लिया और उसे राजसी वस्त्र पहनाकर स्वयं साधारण सैनिक के वस्त्रों में युद्ध करने निकला परन्तु किसी मनचले सैनिक ने हवा में तीर चलाया और वह तीर जाकर अहाब को लगा और वह मर गया, रथ चालक ने सामरिया के कुण्ड में जाकर रथ को रोका और 1 राजा 22:38 में व्यक्त परमेश्वर के वचन के अनुसार कुत्तों ने उसका लहू चाटा। आप कहेंगे कि यह बड़ी ही भयानक बात है परन्तु मेरे मित्रों, झूठ बोलना, झूठी गवाही देना, अफवाहें उड़ाना परमेश्वर की दृष्टि में भयानक अपराध है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

परमेश्वर इससे घृणा करता है। "झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा।

नीतिवचन 19:6 - उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं, और दानी पुरूष का मित्र सब कोई बनता है।

"उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं।" आज हम अपने नेताओं के समक्ष अपनी मांग रखते हैं।

"दानी पुरूष का मित्र सब कोई बनात है।" यह अति सत्य है। जब तक आपके पास देने को है तब तक आपके पास मित्र होंगे।

नीतिवचन 19:7 - जब निर्धन के सब भाई उस से बैर रखते हैं, तो निश्चय है कि उसके मित्र उस से दूर हो जाएँ। वह बातें करते हुए उनका पीछा करता है, परन्तु उनको नहीं पाता।

जहाँ तक घृणा की बात है ग़रीब से कोई घृणा नहीं करता है क्योंकि उससे कोई संबन्ध रखता ही नहीं है। वे उसे अनदेखा करते हैं। एक समृद्ध मनुष्य अपने मित्र को आता देख अपनी पत्नी से कहता है, घर के भीतर आ जाओ कि वह सोचे हम घर में नहीं हैं। घृणा का अर्थ यही है। ग़रीब इस संसार में स्थान नहीं पाता है।

हम नेताओं से सुनते हैं कि वे कुर्सी पर बैठने के बाद कर या टैक्स हटा देंगे परन्तु होता यह है कि वे कर बढ़ा देते हैं। मेरे विचार में तो समस्याएँ इतनी अधिक हैं कि मनुष्य के पास समाधान ही नहीं है।

क्या आप जानते है कि हमें किसकी आवश्यकता है? हमें ऐसे मनुष्य की आवश्यकता है जो कहे, "मेरे पास समस्याओं का समाधान नहीं है। समाधान के लिए हमें परमेश्वर को खोजना है। हम उससे प्रार्थना करें, उसकी सेवा करें।" हम सब कुछ करके देख चुके हैं। अब परमेश्वर से कहकर देखें तो इस में क्या बुरा है? टी. वी. देखने की अपेक्षा परमेश्वर को देखना अधिक उचित है। हमने सबकी प्रतिज्ञाएँ सुनी है परन्तु व्यर्थ रहीं, अब हमें परमेश्वर के पास आकर उसकी बात सुनना है।

नीतिवचन 19:13 - मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति ठहरता है, और पत्नी के झगड़े-रगड़े सदा टपकने के समान है।

एक नीतिवचन में हमने देखा कि पत्नी पा लेना एक अच्छी बात हैं क्योंकि वह उसकी अर्धन्गनी है और उसकी सहायक है। उसकी सेविका नहीं है। अब मैं नहीं जानता कि मनुष्य में यह धारणा कहाँ से समा गई कि पत्नी को पति की आज्ञा का पालन करना चाहिए। परमेश्वर यह नहीं कहता कि वह उसके अधीन रहे। यह निर्देश केवल विश्वासी दम्पतियों के लिए है क्योंकि वह पति उससे वैसा ही प्रेम रखेगा जैसा प्रभु यीशु कलीसिया से रखता है। ऐसे पति के अधीन तो पत्नी

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

स्वयं ही हो जाएगी।

इन नीतिवचनों को पढ़कर हँसी भी आती है। उस पुरूष के बारे में सोचें जिसका पुत्र तो मूर्ख है ही पत्नी भी झगड़ालू है। घर में उसकी क्या दशा होती होगी? यही कारण है कि सही पत्नी पाना कैसा महत्वपूर्ण है!

नीतिवचन 19:14 - घर और धन पुरखाओं के भाग से, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से मिलती है।

यदि आपकी पत्नी अच्छी है तो यह परमेश्वर का वरदान है। आपको उसके लिए परमेश्वर का आभारी होना चाहिए। क्या आपने कभी ऐसा किया है? परमेश्वर ने आपको एक अच्छी पत्नी दी है तो आपको परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।

युवाओं क्या आपको एक अच्छी पत्नी चाहिए? लड़की का पिता आपको अच्छी पत्नी नहीं देता है। बहुत से पिता तो अपनी पुत्रियों से हाथ धोने के लिए उसका विवाह कर देते हैं। परन्तु हमारे स्वगीर्य पिता के पास अनेक अच्छी लड़कियाँ है कि आपको पत्नी दे। उसके साथ संबन्ध बनाए रखें और वह आपको एक अच्छी पत्नी देना चाहता है। यह एक व्यावहारिकता नीतिवचन है। क्या आप ऐसा नहीं मानते?

नीतिवचन 19:18- जब तक आशा है तो अपने पुत्र की ताड़ना कर, जान बूझकर उसको मार न डाल।

बच्चे जब छोटे होते हैं तब ही अनुशासन सिखाना आरंभ कर दे। रूकें नहीं अन्यथा देर हो जाएगी। एक पुरूष जिसने जीवन में देर से उद्धार पाया, मुझे बताया, "मेरी पत्नी और मैंने अभी कुछ समय पहले ही उद्धार पाया है और हम परमेश्वर के आभारी हैं परन्तु हमारे बच्चे खोए हुए हैं। हम शैतान के समान थे और आज वही हम अपने बच्चों मंे देखते हैं।" वे अपने बच्चें को सही समय उचित शिक्षा नहीं दे पाएँ।

बचपन से ही आरंभ करें। बच्चे के रोने पर ध्यान न दें। दूसरी ओर, बच्चों के प्रशिक्षण में पिता सावधान भी रहे। बच्चों के साथ निर्दयता करने का अधिकार किसी को नहीं है। डॉ. आयरनसाइड के अनुवाद में ऐसा है, "जब तक आशा है तब तक अपने बच्चे की ताड़ना कर परन्तु उसे मार डालने के लिए निश्चय न कर।" अनुशासन से डरें नहीं परन्तु निर्दयता न करें। निर्दयता बच्चे की आत्मा को आहत करती है। निर्दयी माता-पिता को तो कानून ही रोके तो अच्छा होगा।

परमेश्वर ने विश्वासियों को विशेष निर्देश दिए हैं। इफिसियों 6:1 में वह सन्तान से कहता है कि वे माता-पिता की आज्ञा मानें, परन्तु वह इफिसियों 6:4 में पिता से कहता है, कि वह अपनी सन्तान को रिस न दिलाए तो उसके कहने का अर्थ है क्रोध में आकर उन्हें दण्ड न दें, क्योंकि वे समझते हैं। दूसरी ओर ऐसी स्थिति में आप उन्हें हानि भी पहुँचा सकते हैं। परमेश्वर की आज्ञा है - इफिसियों 6:4 कि आप उन्हें प्रभु की चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो। यह प्रभु का

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अनुशासन और शिक्षा है।

नीतिवचन 19:21- मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।

मनुष्य के पास अनेक व्याख्याएँ और समाधान होंगी परन्तु परमेश्वर ही आपको सुझाव देगा। मनुष्य कम्प्यूटर बना सकता है परन्तु परमेश्वर ही उसे बनाने की उसमें बुद्धि डालेगा।

नीतिवचन 19:22- मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने योग्य होता है, और निर्धन जन झूठ बोलनेवाले से उत्तम है।

यह बड़ी विचित्र बात है कि मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने योग्य होता है। आप ऐसे कितने लोगों को जानते हैं? अर्थात, दयावान, उदार और लावण्य लोग! अब एक ग़रीब मनुष्य जो अपने परिजन के पास आकर कुछ वर्ष ठहर जाए वह किसी झूठे से अच्छा है।

नीतिवचन 19:23 - यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है; और उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है; उस पर विपत्ती नहीं पड़ने की।

परमेश्वर का भय मानने का अर्थ यह नहीं कि आप लगातार भय में निर्वाह करें। नीतिवचन से स्पष्ट है कि परमेश्वर का भय मानने का अर्थ है आप संतोष के साथ निश्चित रहें। आप उसे जानें, उसकी बाट जोहें, उसे ग्रहण करें और उसका अनुसरण करें। इस प्रकार आप संतोष के साथ निश्चित रहेंगे।

नीतिवचन 19:24 - आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु अपने मुँह तक कौर नहीं उठाता।

यह एक और अतिरोचक नीतिवचन है। आलसी मनुष्य थाली में हाथ डालेगा परन्तु कौर को मुँह तक नहीं लाएगा। आत्मिक क्षेत्र में तो ऐसा प्रायः देखने को मिलता है। परमेश्वर का वचन हमारा भोजन है। मैं ऐसे विश्वासियों को भी जानता हूँ जिनके पास बाइबल तो है परन्तु उसे पढ़ने में वे अति आलसी हैं।

नीतिवचन 19:29 - ठट्ठा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया जाता है, और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

दण्ड आनेवाला है। परमेश्वर दोषी पर दया नहीं दिखाएगा। पाप का आनन्द क्षणिक होता है परन्तु उसका फल अनन्तकालीन होता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0703

सत्यवचन

नीतिवचन 20 : 1 - 20 : 29

प्रिय मित्रों,

अध्याय 20

हम अब भी सुलैमान के बुद्धि के वचनों का ही अध्ययन कर रहे है। यह विशेष करके युवा वर्ग के लिए है परन्तु प्रत्येक विश्वासी के संबन्ध में भी व्यावहारिक है। परमेश्वर के वचन को पढ़ना और अध्ययन करना जीवन पर निश्चित प्रभाव डालता है। यह या तो आपको परमेश्वर के निकट ले आएगा या परमेश्वर से दूर ले जाएगा। परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रतिक्रिया तटस्थ नहीं रहेगी।

नीतिवचन में यहाँ पहली बार शराब के विरूद्ध चेतावनी दी गई है। मेरे विचार में शराब ने अन्य सब आपदाओं से अधिक राष्ट्रों को, व्यापार को, घर-परिवार को, व्यक्तिगत जीवन को नष्ट किया है।

नीतिवचन 20:1- दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है; जो कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं।

नये नियम में दाखरस के विषय मतभेद है। मेरा अपना विचार है कि गलील के काना नगर में प्रभु यीशु ने विवाह उत्सव में जो दाखरस बनाया था उसमें नशा नहीं था - यूहन्ना 2, यदि कोई स्वयं को अनैतिक नशीला पदार्थ का विक्रेता बताने का प्रयास करे तो अन्याय कर रहा हैं। लोग वाद करते हैं कि इस्राएल के गर्म क्षेत्रों में यदि आप अंगूर के रस को मशकों में भरकर रख दें तो उस में खमीर उठ कर अपने आप ही वह मदिरा बन जाता है परन्तु काना के विवाह उत्सव में प्रभु ने दाखरस नहीं पानी काम में लिया था जो पल भर में दाखरस में परिवर्तित हो गया था। उसमें खमीर उठने को तो मौका ही नहीं था। हमें यह भी स्मरण रखना है कि विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान होता था और धार्मिक अनुष्ठानों में ख़मीर संबन्धित कोई वस्तु काम में नहीं ली जाती थी। यही कारण था कि फसह के पर्व में या प्रभु-भोज में तब खमीर उठा हुआ दाखरस उपयोग नहीं किया जा सकता था। खमीर उठाना खमीर के द्वारा से होता है और खमीर का उपयोग रोटी और अन्य वस्तुओं में कड़ाई से वर्जित था। परमेश्वर के वचन में नशा वर्जित है और यह इसका प्रमाण है, "दाखरस ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाला है। जो कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं है।"

आज अनेक जन इसके शिकार हैं। नशे में गाड़िया चलाने के परिणामस्वरूप अनेक दुर्घटनाएँ होती

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है और अनेक मनुष्य मरते हैं या विकलांग बन जाते मानसिक अस्पताल भी पहुँच जाते हैं। ऐसी ख़बरें कम सुनने को मिलती हैं। हम नशीले पदार्थों के उपयोग के बारे में सुनते हैं। शराब भी तो नशीला पदार्थ है।

मुझे एक अधिकारी ने बताया कि ड्रग्स पदार्थों के उपयोग को दबाने के संघर्ष के समय शराब में रूचि दिलवाना आरंभ किया गया था, क्योंकि उन्हें डर था कि ड्रग्स जैसे नशीले पदार्थों से शराब का व्यापार गिर रहा था। वे चाहते थे कि एक युवक ड्रग्स का नशा करने से उत्तम है कि शराबी बना दिया जाए। यह शराब व्यापारियों की दया और उदारता थी शायद। युवाओं को भी अवसर मिल गया कि शराब पीनेवालों के साथ अपनी तुलना करके अपने आप को स्वीकार्य कहें। मैं उनसे सहमत हूँ। इससे पहले कि हम युवाओं पर नशीले पदार्थों के लिए उंगली उठाएँ हम वयस्कों को पहले शराब पीना छोड़ना होगा। कलीसिया के बाहर का आडम्बर कलीसिया के भीतर के आडम्बर बहुत कम है।

शराब ने नूह का सर्वनाश किया और उस दिन से आज तक शराब एक समस्या ही रही है। दवाओं में तो शराब लाभकारी है परन्तु उसे ऐसे ही पीना खतरनाक है। शराबियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। इस दानव के विरूद्ध सिर उठाना भी खतरनाक है। मैं तो यही भविष्यद्वाणी कर सकता हूँ कि एक राष्ट्र मिसाइल की अपेक्षा शराब से नष्ट हो सकता।

नीतिवचन 20:3 - मुकद्दमें से हाथ उठाना, पुरूष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं।

मसीही विश्वासी की पहचान है कि वह झगड़े-रगड़े नहीे बढ़ने देता है। किसी ने कहा है कि हमें भलाई का बदला चुकाया है न कि बुराई का। हमें अपने शत्रु को बदला नहीं देना है। इसकी अपेक्षा परमेश्वर के हाथ में छोड़ दो क्योंकि रोमियों 12:19 में परमेश्वर कहता है कि बदला लेना उसका काम है। वही बदला देगा। यही कारण है कि परमेश्वर हमें बदला लेने से रोकता है। बदला लेना विश्वास के मार्ग से रोकता है। बदला लेना विश्वास के मार्ग से पथभ्रष्ट होना है। परमेश्वर बदला लेन का काम हमसे अच्छा कर सकता है।

परमेश्वर की सन्तान को फिलिप्पी की कलीसिया को लिखे पौलुस के वचन स्मरण रखने आवश्यक हैं:

फिलिप्पियों 4:5 - तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट होः प्रभु निकट है।

मेथ्यू आरनॉल्ड ने कोमलता को मधुरतर्क कहा है। इस नीतिवचन का अर्थ है कि तुम्हारा मधुरतर्क सब मनुष्यों पर प्रगट हो। "मुकद्दमें से हाथ उठाना, पुरूष की महिमा ठहरती है।" यह कैसा महŸवपूर्ण है!

नीतिवचन 20:4 - आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोतता; इसलिये कटनी के समय वह भीख मांगता, और कुछ नहीं पाता।

इस्राएल में बसन्त ऋतु की फसल के लिए शीत ऋतु में भूमि जोतनी पड़ती है। आलसी मनुष्य कहता है कि ठंडा बहुत है और आग तापता बैठा रहता है और कहता है ठंड निकल जाने पर देर हो

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

जाती है। वह बीज डालने, पौधे लगाने का समय होता है। इस पद में हँसी की बात भी है।

इससे मुझे एक हास्यकथा स्मरण आती है। एक आलसी के घर की छत बरसात में टपकती थी। उसने कहा कि बरसात में उसे सुधारना उचित नहीं परन्तु जब वर्षा ऋतु का अन्त हो गया तो उसने कहा कि अब आवश्यकता नहीं है।

अब हम नीतिवचनों को देखेंगे वे परस्पर संबन्धित प्रतीत नहीं होते है परन्तु भलाई और नैतिकता के विचार में वे संबन्धित हैं।

नीतिवचन 20:6 - बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा पुरूष कौन पा सकता है?

यहाँ विषय है, कृपा।

नीतिवचन 20:7 - धर्मी जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके बाल-बच्चे धन्य होते हैं।

यहाँ मुख्य शब्द है, खराई।

नीतिवचन 20:8 - राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है, वह अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को छाँट लेता है।

अपनी दृष्टि से सब बुराई को छाँट लेता है अर्थात अपने राज्य का शोधन करता है।

नीतिवचन 20:9 - कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया; अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ?

यहाँ दो शब्द मुख्य हैं - पवित्र और शुद्ध।

नीतिवचन 20:10 - घटते-बढ़ते बटखरे और घटते-बढ़ते नपुए इन दोनों से यहोवा घृणा करता है।

यह सच और झूठ की तुलना है।

नीतिवचन 20:11 - लड़का भी अपने कामों से पहिचाना जाता है, कि उसका काम पवित्र और सीधा है, या नहीं।

यहाँ बच्चों तक के सदाचार पर बल दिया गया है।

नीतिवचन 20:12 - सुनने के लिये कान और देखने के लिये जो आँखें हैं, उन दोनों को यहोवा ने बनाया है।

यहाँ विचार है कि बुद्धि काम में ली जाए। परमेश्वर ने आपको आँख और कान दिए है। देखो और सुनों। यह रेल की पटरी पार करते समय ही नहीं, प्रतिदिन जीवन का सामना करते समय भी लागू होता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचनों के इस संपूर्ण भाग में हम एक महान सिद्धान्त देखते हैं।

पहला - "कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया है; अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ।" क्या आप कह सकते हैं, मित्र? निश्चय ही न तो आप और न ही मैं यह कह सकता हूँ। ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है जो अपने प्रयास द्वारा पवित्रता का दावा करे। पालने में रखा एक शिशु भी नहीं कह सकता। शिशु भी क्रोध प्रगट करता है। मेरा पोता पहले तो पाप से मुक्त प्रतीत होता था परन्तु मैंने देखा कि वह भी क्रोध करता है। उसका चेहरा लाल हो जाता था और वह साँस भी रोक लेता था। मुझे तब बोध हुआ कि एक शिशु भी हमारी नाईं पूर्ण भ्रष्टता के अधीन होता है। अतः मनुष्य अपनी स्वभाविक अवस्था में कभी नहीं कह सकता कि वह हृदय का पवित्र और पाप से शुद्ध है। मेरे मित्रों, आपको स्वर्ग के लिए स्वर्ग का जीवन पाना है। यूहन्ना 3:3 में प्रभु यीशु ने कहा था कि मनुष्य जब तक नये सिरे से न जन्मे वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता। प्रभु यीशु ने जिससे यह कहा था वह एक अति धर्मी मनुष्य था ऐसा कोई नहीं है जो स्वयं को भला, शुद्ध, उचित और पवित्र कह पाएगा जब तक कि वह उद्धार के लिए प्रभु यीशु के पास आकर उसकी धार्मिकता को प्राप्त न करे। तब वह उस प्रिय में ग्रहणयोग्य ठहरेगा। परन्तु महिमा में प्रवेश करने तक पुराना मनुष्यत्व हमारा साथ नहीं छोड़ता।

नीतिवचन में एक बात पर ध्यान दें कि भलाई और सच्चाई परमेश्वर के लिए अर्थ रखती है। शुद्धता का भी मूल्य है। परमेश्वर की सन्तान का चालचलन ऐसा होना चाहिए कि अनुग्रह के सुसमाचार का महिमान्वयन हो।

मैं अनेक वर्षों से एक प्रश्न सुनता आ रहा हूँ, "यदि आपको मसीही होने के कारण बन्दी बनाया जाए तो क्या आप में अपराध स्वीकरण का पर्याप्त प्रमाण होगा?" मान लें कि आपको कोर्ट में खड़ा करके आरोप लगाया जाए।, कि "यह एक मसीही है।" तो क्या आपको अपराधी घोषित करने के लिए वह उचित प्रमाण होगा या आपको मुक्त कर दिया जाएगा। क्या वे आपके जीवन को जाँज करके कहेंगे कि आप एक मसीही जीवन नहीं जी रहे है? क्या वे पाएँगे कि आप खराई से नहीं जी रहे हैं? क्या उन्हें आपमें अच्छाई नहीं दिखाई देगी, पवित्रता की इच्छा नहीं दिखाई देगी?

इन नीतिवचनों में दूसरा विचार है: परमेश्वर ने आपको आँख और कान दिए हैं। उनको काम में लें। ठहरो, देखों, सुनो। जीवन में आँख बन्द करके न चलें। देखते हुए भी अंधे न बनें। अपनी आँखें काम में लें। अपने कान खुले रखें। परमेश्वर ने आपको बुद्धि दी है। परमेश्वर ने आपको सूझ-बूझ दी है। सुनिये आप पवित्र नहीं हो सकतें केवल परमेश्वर आपको पवित्रता प्रदान कर सकता है। परमेश्वर आपको उसके सामने खड़ा कर सकता है जो आपके पांवो का दोष धोकर आपको इस संसार में खराई से चलने में योग्य बना सकता है।

नीतिवचन 20:13 - नींद से प्रीति न रख, नहीं तो दरिद्र हो जाएगा; आँखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा।

वह कहता है "काम करो!" आपको स्मरण होगा कि पौलुस ने भी थिस्सुनीके की कलीसिया से यही कहा था:

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

2 थिस्सलुनीकियों 3:10 - क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।

यदि कोई काम न करे तो उसे भोजन भी न मिले। वे प्रभु यीशु के आगमन के बारे में अत्यधिक उत्साह के कारण काम छोड़कर उसकी प्रतीक्षा में बैठ गए थे। प्रतीक्षा का अर्थ यह नहीं कि काम काज छोड़कर यीशु की प्रतीक्षा में आकाश को ताकते रहें। प्रभु के आगमन की सच्ची प्रतीक्षा विश्वासी को पहले से भी अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा देती है।

नीतिवचन 20:14 - मोल लेने के समय ग्राहक अच्छी नही, अच्छी नही, कहता है; परन्तु चले जाने पर बड़ाई करता है।

यह हास्यस्पद पद है। काश आप इसमें हास्य देखें। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति कार खरीदने जाता है। वह कार बेचनेवाले से कहता है कि वह कार खरीदने योग्य नहीं है। उसके टायर घिस चुके हैं। उसके पिछले भाग में बहुत खड़खड़ाहट है। अतः मैं तो बस इतना ही पैसा दूँगा। कार का मालिक कहता है, "ठीक है। ले जाओ।" खरीदकर कहता है इसका मूल्य वास्तव में इतना भी नहीं है परन्तु मैं इसे ले जाता हूँ। अब कार में बैठकर घर जाता है और अपनी पत्नी तथा पड़ोसियों को बुलाता है और कहता है, "देखो, मैंने कैसा सौदा किया है!" यह मनुष्य का स्वभाव है।

नीतिवचन 20:15 - सोना और बहुत से मूंगे तो हैं; परन्तु ज्ञान की बातें अनमोल मणी ठहरी हैं।

आज हमारी मूल्य की परिभाषा ही बदल गई है। मनुष्य भौतिक वस्तुओं द्वारा आँका जाता है न कि ज्ञान से।

नीतिवचन 20:16 - जो अनजाने का उत्तरदायी हुआ उसका कपड़ा, और जो पराए का उत्तरदायी हुआ उस से बंधक की वस्तु ले रख।

मनुष्यांे से व्यवहार करते समय जमानत रखवाएँ नहीं तो आप हानि उठाएँगे।

नीतिवचन 20:17 - चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परन्तु बाद में उसका मुँह कंकड़ों से भर जाता है।

मनुष्य सोचता है कि वह छल करके बच गया है और उसे बड़ा अच्छा लगता है। कोई बचाकर जा नहीं सकता है। परमेश्वर इसका ध्यान रखता है।

नीतिवचन 20:19 - जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है; इसलिये बकवादी से मेल जोल न रखना।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

वह मनुष्य जो आपसे मुँह पर मीठी बात करके आपकी पीठ के पीछे बुराई करे तो ऐसे मनुष्य से सावधान रहें चाहे वह कलीसिया का सेवक ही क्यों न हो।

नीतिवचन 20:20 - जो अपने माता-पिता को कोसता, उसका दिया बुझ जाता, और घोर अन्धकार हो जाता है।

यदि आपके माता-पिता गर्व करने के योग्य हैं तो उन पर अवश्य गर्व करें। यदि उनके बारे में आपके पास अच्छी बात कहने को नहीं है तो चुप रहें जैसा कि अनेकों के साथ होता है। यह नीतिवचन ऐसा ही कहता है।

हाम ने यही गलती की थी। उसका पिता, नूह दाखरस के नशे में अचेत पड़ा था। हाम को चुपचाप वहाँ से चले जाना था परन्तु उसने जाकर सब से कह दिया। कुछ बातें ऐसी होती हैं कि आप सबसे नहीं कह सकतें।

नीतिवचन 20:24 - मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है; आदमी कैसे अपना चलना समझ सके?

"आदमी कैसे अपना चाल-चलन समझें?" केवल पवित्र आत्मा ही हमें बता सकता है। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह उसकी अगुवाई करना चाहता है। हमें भी उसकी अगुवाई की अवश्यकता है।

नीतिवचन 20:25 - जो मनुष्य बिना विचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए, और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे, वह फन्दे में फँसेगा।

यदि आपको आत्मविश्वास न हो तो शपथ न खाएँ। भलि-भाँति सोचे बिना परमेश्वर को समर्पण न करें। परमेश्वर को ऐसे भावनात्मक निर्णय कि आवश्यकता नहीं है। आज ऐसे अनेक निर्णय लिए जाते हैं।

नीतिवचन 20:27- मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातों की खोज करता है।

"मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है।" ध्यान रखें यह दीपक है ज्योति नहीं। मनुष्य की आत्मा ज्योति का पात्र है। मनुष्य केवल दीपक है जो केवल पवित्र आत्मा के अन्तवसि पर ज्योति देता है। आपको दस कुँवारियों का दृष्टान्त याद होगा। पाँच समझदार थीं और पाँच मूर्ख थीं। वे केवल दीपक थीं। तेल के बिना ज्योति नहीं उत्पन्न होती है।

नीतिवचन 20:29 - जवानों का गौरव उनका बल है, परन्तु बूढ़ों की शोभा उनके पक्के बाल हैं।

यह नीतिवचन कहता है कि अपनी आयु के अनुसार काम करो। एक युवक को खिलाड़ी होना चाहिए। वृद्ध पुरूष जवानी न दिखाए। वह अपने आप को मूर्ख बनाएगा। वह अपनी आयु के अनुसार व्यवहार करे। उसे बुद्धि दिखाने की आवश्यकता है। सफेद बालों का प्रदर्शन ऐसा ही होना चाहिए।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0704

सत्यवचन

नीतिवचन 21 : 1 - 21 : 22

प्रिय मित्रों,

अध्याय 21

यह अध्याय नीतिवचनों का एक महान अध्याय है।

नीतिवचन 21:1 - राजा का मन नालियों के जल के समान यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है।

चाहे पूर्व समय का कोई महा-पुरूष रहा हो या आनेवाले समय में किसी महा-पुरूष का उदय हो, यह बात है कि परमेश्वर से हट कर वह काम नहीं कर सकता है। अनेकों ने सोचा कि वे परमेश्वर के बिना कुछ कर दिखाएँगे। आज का मनुष्य भी सोचता है कि परमेश्वर के बिना वह सब कुछ कर सकता है। हम स्वतंत्रता में विश्वास करते है। इसलिए हम परमेश्वर के बिना ही जीना चाहते है, "राजा का मन.... यहोवा के हाथ में रहता है।" और वह उसे वैसे ही घुमा देता है जिधर वह चाहता है। न राजा न कोई शासक न ही कोई व्यक्ति परमेश्वर ने अलग रहकर कुछ कर सकता है।

काश हमारे नेता ऐसे होते जो संसार की समस्याओं के समाधान का दावा करते और परमेश्वर पर भरोसा रखते। कोई भी जो ऐसा दावा करता है वह गलत प्रतिनिधित्व करता है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर से अलग कोई नहीं रह सकता। हमें उस पर अपनी निर्भरता को समझना है। हमें परमेश्वर पर अपनी निर्भरता की घोषणा करना आवश्यक है। ऐसा तब ही हो सकता है जब हम परमेश्वर के वचन में आ जाए। यही कारण है कि परमेश्वर के वचन की घोषणा करना महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 21:2 - मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है, परन्तु यहोवा मन को जाँचता है।

यहाँ फिर से मनुष्य की अपनी धार्मिकता का प्रश्न आता है। मनुष्य तर्क के आधार पर देखता है परन्तु परमेश्वर परखकर देखता है। वह मन को देखता है। हम बाहरी रूप को संवारते है कि बाहर से अच्छे दिखें। यह हमारे गर्व की बातें है, मैं कलीसिया का नियमित सदस्य हूँ। मैं बाइबल शिक्षा देता हूँ। मैं समितियों का सदस्य हूँ। मैं कलीसिया के कामों में बहुत व्यस्त हूँ। यह सब सच है परन्तु परमेश्वर मन को देखता है। **यिर्मयाह 17:9** में लिखा है कि **मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला है, उसमें असाध्य रोग लगे है, उसका भेद कौन समझ सकता है,** "क्या आपने कभी परमेश्वर के समक्ष अपनी दुर्दशा व्यक्त की है?" वह एक बहुत बड़ा डॉक्टर है। वह हृदय रोग विशेषज्ञ है। वह आपको नया हृदय देता हैं वह सबसे कहता है जिसने मनुष्य को नया नाम दिया है। वह

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

आपको ऐसा मन देगा जो उसका आज्ञाकारी रहेगा।

नीतिवचन 21:3 - धर्म और न्याय करना, यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

यहाँ फिर हमारे सामने एक महान सत्य रखा गया है। किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करना किसी काम का नहीं है। स्मरण रखें कि पुराने नियम में बलिदान मसीह यीशु का प्रतीक था। इन अनुष्ठानों को निभाने में फरीसियों से अधिक कोई समर्पित नहीं था। फरीसी यीशु के युग में धर्मगुरू थे परन्तु यीशु ने उनकी कड़ी आलोचना की, उनका रंग उड़ा दिया। यीशु ने उन्हें सफेदी (चूना) फिरी (पोती) कब्रें कहा, जो बाहर से तो चमकती है परन्तु उनके भीतर अशुद्धता रहती है। क्यों? क्योंकि धार्मिकता के बिना परमेश्वर को बलि और भेंट ग्रहण योग्य नहीं हैं परमेश्वर का कहना था कि उसे बलिदानों की अपेक्षा दया का मन चाहिए।

धार्मिक अनुष्ठान आपके विश्वास का प्रदर्शन है जब कि सच तो यह है कि आप उसमें विश्वास नहीं रखते हैं। प्रभु यीशु को मन से ग्रहण करने का अर्थ है भले कामों के निमित संपूर्ण मन का परिवर्तन। यह हमारी हड्डियों के भीतर पहुँचता है। परमेश्वर मन को जाँचता है। मैं अपने अध्ययन में पूछे गए प्रश्न को फिर दोहराता हूँ, "यदि आप मसीही होने के कारण बन्दी बनाए जाएँ तो क्या आपको दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त प्रमाण होंगे।?

"चढ़ी हुई आँखें" ले कर आप आराधना में आते हैं और किसी को देखकर मुँह मोड़ लेते है ताकि उससे बात न करनी पड़ें। मैं एक सभा में गया जहाँ एक व्यक्ति ऐसा था जिसने मेरे बारे में अशुभ बातें कहीं थीं। उस सभा में उसने ऐसा दिखाया कि जैसे मुझे देखा ही नहीं - चढ़ी हुई आँखें। शायद किसी ने ध्यान न दिया हो। शायद सम्बन्धित व्यक्ति भी समझ न पाया हो परन्तु परमेश्वर देख चुका है। परमेश्वर इसे पाप कहता है। यह शराब पीकर घुत हो जाने के बराबर पाप है। हम सोचते है कि शराब पीना बुरा है परन्तु आँखें चढ़ाना बुरा नहीं।

"दुष्ट की खेती" यह एक अति रोचक नीतिवचन है। आप किसी को खेती करते देख दुआ देते है - परमेश्वर उसके परिश्रम का फल उसे दें, परन्तु परमेश्वर कहता है कि दुष्ट मनुष्य मन में बुराई रखकर खेती करे या कुछ भी करे वह उसे ग्रहण योग्य नहीं है। इसका अर्थ है कि एक पापी परमेश्वर को कुछ नहीं दे सकता। वह अच्छा काम नहीं कर सकता। चढ़ी हुई आँखें और घमण्डी मन ही नहीं परमेश्वर से विद्रोह भी पाप है। मेरे विचार में परमेश्वर उद्धार से रहित मनुष्य की भेंट स्वीकार नहीं करता है। शराब की फेक्ट्री ने एक बार एक स्कूल को, एक कॉलेज को और एक अस्पताल प्रत्येक को ढाई लाख रूपयों का दान दिया। ये मसीही संस्थाए थी। स्कूल और कॉलेज ने वह पैसा लौटा दिया। उन्होंने सही किया। परमेश्वर ऐसा पैसा काम में नहीं लेता हैं

रोमियों 10:1-3 में पौलुस यहूदियों के लिए कहता है,

हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उन के लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएँ। क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ कि उनको परमेश्वर के लिए धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं। क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापित करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए।

मनुष्य यदि अपनी धार्मिकता दिखाना चाहे तो परमेश्वर उसे पाप कहता है। परमेश्वर की दृष्टि

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

में मनुष्य की धार्मिकता मैले चिथड़ों के समान है।

नीतिवचन 21:5-7 - काम-काजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटी होती है। जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जानेवाला कुहरा है, उसके ढूँढ़नेवाले मृत्यु ही को ढूँढ़ते हैं। जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं, उस से उन्हीं का नाश होता है, क्योंकि वे न्याय का काम करने से इनकार करते हैं।

परमेश्वर उस धन को काम में ले सकता है जो उचित रीति से कमाया गया हो। धनवान होना पाप नहीं है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि पैसा कैसे कमाया गया है। यदि पैसा झूठ बोलकर या लूट कर लाया गया है तो परमेश्वर सुनिश्चित करेगा कि वह आनन्द का कारण न हो। क्या आपने ध्यान दिया है कि आज अनेक धनवान मनुष्य खुश नहीं हैं? उनकी आवश्यकता पैसा नहीं है।

एक अरबी मनुष्य रेगिस्तान में भटक गया था। वह भूख और प्यास से मर रहा था। उसने देखा कि एक काँरवाँ जा रहा है और उसमें से कुछ गिरा। उसने सोचा कि उसमें शायद कुछ खाने या पीने की वस्तु हो। उसने जल्दी से उसे खोला परन्तु गहन निराशा में उसे फेंकते हुए कहा, "ओह, इन मोतियों का मैं क्या करूँगा" निःसन्देह वे लाखों करोड़ों के थे परन्तु उसकी आवश्यकता मोती नहीं पानी और भोजन थी।

मेरे मित्रों, परमेश्वर कहता है कि आप धनवान बनें परन्तु उससे कोई लाभ न होगा जब तक कि आप उसे उचित रीति से न कमाएँ और परमेश्वर के महिमान्वन में उसे काम में न लें।

नीतिवचन 21:8 - पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है, परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है।

आपका जीवन प्रगट करता है कि आप कैसे मनुष्य है। यदि आप परमेश्वर के समक्ष सही हैं तो आपके जीवन से यह प्रगट होगा।

नीतिवचन 21:9 - लम्बे-चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है।

यहाँ एक मनुष्य है जिसे सच्चे आनन्द की अनुभूति नहीं थी जब तक कि उसका विवाह नहीं हुआ परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

हमारी कलीसिया का एक सदस्य बार-बार जेल जाता था क्योंकि वह बहुत शराब पीता था। मेरे साथ एक सेवानिर्वित्त पास्टर थे। हम दोनों हर बार जाकर उसे छुड़ा लाते थे। उस समय उस सेवानिर्वित्त पास्टर ने मुझसे जो कहा वह मैं कभी नहीं भूलता हूँ, "यदि मेरी पत्नी भी इसकी पत्नी के समान होती तो मैं भी शराब पीने लगता।" यह वैसा ही बुरा है जैसा एक स्त्री का गलत व्यक्ति से विवाह करना। मैं और मेरी पत्नी एक दिन किसी स्त्री के लिए दुःख मना रहे थे कि उसका विवाह एक शराबी से हुआ है।

पवित्र-शास्त्र में भी इसके अनेक उदाहरण हैं। अय्यूब की पत्नी भी उससे प्रसन्न नहीं थी। दाऊद ने शाऊल की पुत्री से विवाह किया था और मेरे विचार में उनका विवाहित जीवन अच्छा नहीं था।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

उनमें प्रेम नहीं था। परमेश्वर की वाचा का सन्दूक लाते समय दाऊद आनन्द विमोर हो उठा था जिसके कारण उसकी पत्नी ने उसका ठट्ठा किया था कि उसने वाचा के सन्दूक के समक्ष नाच कर अपना अपमान किया है। मेरा विश्वास करे कि परमेश्वर के लिए आपका अत्यधिक उत्साह देख कर अनेक लोग आपकी निन्दा करेंगे। यदि आपकी पत्नी आपकी निन्दा करे तो यह एक त्रासदी है।

नीतिवचन 21:11 - जब ठट्ठा करनेवाले को दंड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है; और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है, तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।

हमें इसका विशेष ध्यान रखना है जिससे कि हम अपने आस-पास के लोगों के अनुभव से सीखें।

नीतिवचन 21:13 - जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे, वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।

अब सच हो या गलत यह तो परमेश्वर का ही कहना है। मैं तो इसे सच मानता हूँ और आज के संसार में इसके जीते जागते उदाहरण भी हैं।

नीतिवचन 21:14 - गुप्त में दी हुई भेंट से क्रोध ठंडा होता है, और चुपके से दी हुई घूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है।

हारान में वर्षों प्रवास करने के बाद जब याकूब लौट रहा था तब उसके मन में यह भय था कि उसने एसाव के साथ छल किया है और उसे उसका सामना करना होगा। अतः उसने एसाव को प्रसन्न करने के लिए भेंटें भेज दी। उसे इसकी आवश्यकता तो नहीं थी क्योंकि परमेश्वर ने एसाव का मन बदल दिया था परन्तु मनुष्य का यह अनुभव है कि गुप्त भेंट क्रोध को शान्त करती है।

मनुष्य की धारणा प्रायः यह है कि उदार होने का प्रतिफल अच्छा होगा या किसी को दान देने से मन को शान्ति मिलती है। इस विषय में किसी ने एक अच्छी कविता लिखी है।

यदि मैं चोट खाकर क्षमा कर दूँ,
क्योंकि बदले की भावना मुझे विषाक्त कर देगी।
मुझे अच्छा लगेगा, मन को शान्ति मिलेगी।
परन्तु मसीह की इच्छा तो यह नहीं है।

नहीं मसीह की इच्छा यह नहीं है क्योंकि हमारे लिए क्षमादान का आधार है कि परमेश्वर ने प्रभु यीशु में हमारे पाप क्षमा किए हैं। यही एक कारण है कि हमें दयालु, उदार मन का और क्षमाशील होना है। क्षमा करने का हमारा उद्देश्य हमें मन की शान्ति प्रदान करना नहीं है।

नीतिवचन 21:15,16 - न्याय का काम, करना धर्मी को तो आनन्द, परन्तु अनर्थकारियों को विनाश ही का कारण जान पड़ता है। जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए, उसका ठिकाना मरे हुओं के बीच में होगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

मेरे विचार में परमेश्वर यहाँ कह रहा है कि हमें अपराधियों का पुनरूद्धार नहीं करना है। उन्हें नया जन्म पाने की आवश्यकता है। उन्हें परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है। हमें अपराध के क्षेत्रों में जाकर सुसमाचार प्रचार करना है। परमेश्वर के विचार में हम गलत दिशा से कार्य क्षेत्र में प्रवेश कर रहे है।

नीतिवचन 21:17 - जो रागरंग से प्रीति रखता है, वह कंगाल हो जाता है; और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धनी नहीं होता।

आज के समाज में राग-रंग से प्रीति रखने वालों की महिमा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जीवन के सदाचार सम्बन्धित मूल्य बदल गए है। एक समय था कि राजाओं के दरबार में जोकर या मसखरे होते थे जिन्हें मूर्ख कहा जाता था परन्तु मेरे विचार में आज भी परमेश्वर की दृष्टिकोण के अनुसार ये लोग माननीय है। हम उन्हें टी.वी पर प्रशंसा पाते देखते है। परमेश्वर कहता है, "जो राग-रंग से प्रीति रखता है वह कँगाल हो जाता है। और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धनी नहीं होता है।" मैं अनेक कलाकारों को आत्म हत्या करते देखता हूँ। किसी ऐसे ही व्यक्ति के शब्द हैं, "मैं जीवन से ऊब चुका हूँ।" एक हास्य कलाकार के अन्तिम समय उसके मित्र उसके पास खड़े थे। उसके अन्तिम वचन थे, "यह हँसी की बात नहीं है। क्योंकि वह अत्यधिक भयभीत था। आज सदाचार विकृत हो गया है। टी.वी मोआब के जंगल के समान है। उसमें देखने योग्य कुछ भी नहीं है।

नीतिवचन 21:18 - दुष्ट जन धर्मी की छुड़ौती ठहरता है, और विश्वासघाती सीधे लोगों के बदले दंण्ड भोगते हैं।

न्याय में दोषी के लिए दण्ड अनिवार्य है। क्योंकि निर्दोष का मुक्ति पाना आवश्यक है। परमेश्वर के अनुग्रह के कारण धर्मी प्रभु यीशु दुष्ट मनुष्यों के लिए छुड़ौती ठहराया गया। वह धर्मी है तथा आप और मैं अपराधी है।

नीतिवचन 21:22 - बुद्धिमान शूरवीरों के नगर पर चढ़कर, उनके बल को जिस पर वे भरोसा करते हैं, नष्ट करता है।

बुद्धि शूरवीरों के बल से अधिक शक्तिशाली है। मनुष्य अजय गढ़ बना सकता है परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसमें घुसने का मार्ग खोज लेता है। बेवीलोन का प्राचीन नगर इसका एक उŸाम उदाहरण है। बेलशस्सर अपने महल में आनन्द मना रहा था। वह सोचता था कि बैरी उस तक कभी नहीं पहुँच पाएगा। उसका राज महल भी दीवारों से घिरा हुआ था और उन दीवारों पर सैनिक चौकसी करते थे परन्तु बैरी के सेनापति ने बुद्धि काम में ली और बेवीलोन में प्रवेश करने का मार्ग खोज लिया। बेबीलोन नगर में परात नदी से एक नहर जाती थी। उसने उस नहर का पानी रोक दिया और नहर के मार्ग से नगर में प्रवेश किया और भावी-फारसी सेना ने नगर में फैल कर बेवीलोन वासियों को अवसर दिए बिना उसे जीत लिया।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नेपोलियन कहता था कि परमेश्वर बड़ी सेना का साथ देता है परन्तु वह गलत था। उसे वाटरलू का युद्ध जीत लेना था क्योंकि वह बुद्धिमान सेना नायक था परन्तु वह चूक गया। उसकी तोपें रेत में फँस गई और उसके घुड़सवार तोपों पर गिर पड़े। इस नीतिवचन के कहने का अर्थ है कि मनुष्य धन पर या शक्ति पर निर्भर करता है परन्तु दानों ही सुरक्षा के लिए व्यर्थ है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0705

सत्यवचन

नीतिवचन 21 : 23 - 22 : 28

प्रिय मित्रों,

बुद्धि शूरवीरों से अधिक शक्तिशाली होती है। बुद्धिमान मनुष्य शूरवीरों का बल नष्ट कर देता है।

नीतिवचन 21:23 - जो अपने मुँह को वश में रखता है, वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।

यहाँ फिर जीभ का विषय आया है। मित्र बनाने के लिए आपको मित्र बनना होगा और मित्र बनने के लिए आपको कुछ तो बोलना ही होगा परन्तु आप क्या कहते है उसमें बहुत सावधान रहना है। हमें मित्रों की आवश्यकता है और नीतिवचनों में मित्रों और शत्रुओं के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। किसी ने कहा है, "जिसके हज़ार मित्र हों उसका एक भी मित्र अलग न होगा परन्तु जिसका एक ही दुश्मन हो वह हर जगह उसके सामने होगा।"

अति सत्य!

नीतिवचन 21:24 - जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है, उसका नाम अभिमानी, और अंहकारी ठट्ठा करनेवाला पड़ता है।

क्या आपने ध्यान दिया है कि दो विषय बार-बार सामने आ रहे है। एक है जीभ का उपयोग और दुरूपयोग और दूसरा घमण्ड। निंरकुश जीभ, झूठ बोलने वाली जीभ, व्यर्थ की बातें करने वाली जीभ और चढ़ी हुई आँखें। परमेश्वर कहता है कि वह इन सबसे घृणा करता है।

नीतिवचन 21:25 - आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।

आलसी मनुष्य की लालसा बहुत होती है और वह परिश्रम किए बिना धन कमाने की युक्तियाँ खोजता है। ऐसे लोगों की कमी नहीं है। दूसरी ओर धर्मी जन पाने की अपेक्षा देने की बात सोचता है। परमेश्वर उसे आशीष देता है।

नीतिवचन 21:27- दुष्टों का बलिदान घृणित लगता है; विशेष करके जब वह महापाप के निमित्त चढ़ाता है।

दृष्ट जन वह है जो परमेश्वर का भय नहीं मानता और उसके मार्ग में नहीं चलता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 16:25 में लिखा है,

"ऐसा भी मार्ग है जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है....."

यह दृष्ट का मार्ग है। सच तो यह है कि वह परमेश्वर को त्याग चुका है। आप यह न सोचें के वह धर्मी नहीं है वह आराधनाओं में आता है और भजन गाता है और धार्मिकता दिखाता है। वह दान भी देता है परन्तु उसके उद्देश्य उचित नहीं। "दुष्टों का बलिदान घृणित लगता है।"

नीतिवचन 21:28,29 - झूठा साक्षी नाश होता है, परन्तु जिसने जो सुना है, वही कहता हुआ स्थिर रहेगा। दुष्ट मनुष्य कठोर मुख का होता है, और जो सीधा है, वह अपनी चाल सीधी करता है।

प्रभु यीशु मसीह के विरूद्ध झूठे गवाह खड़े किए गए थे। आप तो निश्चय ही ऐसे गवाह होने से घृणा करेंगे। मत्ती 26:59-61 में लिखा है,

प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिए उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे, परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। अन्त में दो जन आए, और कहा, 'इसने कहा है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर के ढा सकता हूँ और उसे तीन दिन में बना सकता हूँ।

दूसरों ने भी झूठी गवाही दी परन्तु वह स्वीकार नहीं की गई। इन दो की गवाही भी वास्तव में झूठी थी। यीशु की प्रतिक्रिया दूसरे अध्याय में दी गई है।

जब यीशु हाकिम के सामने खड़ा था तो हाकिम ने उससे पूछा, 'क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उससे कहा, 'तू आप ही कह रहा है।" जब प्रधान याजक और पुरनिये उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर पीलातुस ने उससे कहा, "क्या तू नहीं सुनता कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियाँ दे रहे है? परन्तु उसने उसको एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहाँ तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ। (मत्ती 27:11-14)

यूहन्ना कहता है कि पीलातुस उसे भीतर ले गया और उससे कहा कि यदि वह उसके साथ सहयोग करे तो वह उसे स्वतंत्र करने पाएगा। परन्तु जन समूह के विरूद्ध अपना निर्णय सुनाना उसकी नीति नहीं थी। अन्त में उसने जनसमूह के दबाव में आकर यीशु को दण्ड दिया परन्तु वह जानता था कि यीशु के विरूद्ध जितने भी गवाह थे सब झूठे थे।

इतिहास में एक यह ऐसा अभियोग है जो पूर्णरूपेन न्याय विरोधी था। आप क्या ऐसे झूठे गवाहों के साथ होना चाहेंगे? कभी नहीं। झूठा गवाह नष्ट हो जाएगा।

नीतिवचन 21:30 - यहोवा के विरूद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है।

यह धर्म-शास्त्र का एक असामान्य पद है। मैं इस संदर्भ में नये नियम का उद्धारण देना चाहता हूँ जो शायद आपके ध्यान में नहीं आया है।

2 कुरिन्थियों 13:8 - क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिए ही कर सकते है। मैं स्वतंत्र विचारों की सेमनरी में पढ़ कर आया हूँ इसलिए स्वतंत्र विचारों की थियोलॉजी से मैं अत्यधिक सावधान रहता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह विश्वास में प्रवेश कर रही है। अपनी

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

सेवा के आरम्भ से ही मैं यह मानता हूँ कि मुझे परमेश्वर के वचन को सुरक्षित करने के लिए प्रति रविवार खतरे की घंटी बजाना है। परन्तु शीघ्र ही मेरे सामने यह पद आया, "यहोवा के विरूद्ध न तो कुछ बुद्धि और न कुछ समझ न कोई युक्ति चलती है।" मुझे समझ मे आ गया है कि परमेश्वर अपनी और अपने वचन की रक्षा करने में सक्षम है। "हम सत्य के विरूद्ध कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिए ही कुछ कर सकते है।" यदि मुझे कुछ करना है तो सकारात्मक काम करूँ और नकारात्मक बातों को छोड़ दूँ। मुझे बाइबल की सुरक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। मुझे केवल उसके प्रसारण की आज्ञा दी गई है।

मुझे किसी ने पत्र लिखा कि बाइबल परमेश्वर का वचन नहीं है। मैं ने उसे उसके पाप का परिणाम समझ कर कूड़े में डाल दिया। मैं ने यही सीखा है कि यदि कोई मसीह को ग्रहण करेगा तो, पाप से मुक्ति पाना चाहेगा, एक उद्धारक की लालसा करेगा तब एक अति अद्भुत बात होगी कि उसकी यह समस्या, कि बाइबल परमेश्वर का वचन नहीं है, दूर हो जाएगी।

नीतिवचन 21:31 - युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।

दाऊद ने यह सीख लिया था। भजन 27:3 में उसने लिखा,

चाहे सेना भी मेरे विरूद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरूद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चिन्त रहूँगा।

2 इतिहास 14:11 में आसा ने भी यह सीख लिया था,

तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की यों दोहाई दी, हे यहोवा जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन की भी; हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारी सहायता कर क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरूद्ध आए हैं। हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है; मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाए।

परमेश्वर पर भरोसा करना कैसा महान है? इसका अर्थ यह नहीं कि हम तैयारी न करें। यीशु ने स्वयं कहा कि बलवन्त मनुष्य का घर और सामान सुरक्षित रहता है, "परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।" अपना बारूद सूखा तो रखें परन्तु प्रभु यीशु मसीह में विश्वास को सुनिश्चित करें और यह भी निश्चित करें की आप उसी पर निर्भर है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 22

संसार का सबसे अधिक धनवान मनुष्य, राजा सुलैमान, सांसारिक धन को उचित परिप्रेक्ष्य में रखता है।

नीतिवचन 22:1 - बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चान्दी से दूसरों की प्रसन्नता उत्तम है।

मूल लेख में "अच्छा" शब्द नहीं है। अनुवादकों ने इसे जोड़ा है, "बड़े धन से नाम अधिक चाहने योग्य है।" अर्थात नाम जो आप भले कामों द्वारा कमाते है न कि वह नाम जो आपके माता-पिता ने आपको दिया है।" उदाहरण के लिए हमें बनायाह के बारे में 2 शमूएल 23:20, में बताया गया है, "यहोयादा का पुत्र बनायाह था..... उसने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला। बर्फ गिरने के समय उसने एक गड्ढें में उतर के एक सिंह को मार डाला।" कुछ लोग तो थोड़ी सी बरसात में भी आराधना के लिए नहीं जाते है। इस पुरूष ने बर्फ गिरते समय भी शेर को मार डाला था। पद 22 में लिखा है कि "ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनों वीरों में नामी हो गया।" वह दाऊद के शूरवीरों के सर्वोच्च दल का सदस्य था। उसने नाम कमाया, "बड़े धन से लाभ अधिक चाहने योग्य है।"

नीतिवचन 22:2 - धनी और निर्धन दोनों एक दूसरे से मिलते हैं; यहोवा उन दोनों का कर्त्ता है।

इसका अर्थ है कि परमेश्वर की दृष्टि में सब बराबर है। जब आप मनुष्यों के वैश्विक भाई चारे की बात करें तो अपने शब्द के प्रति अत्यधिक सावधान रहें। बाइबल यह नहीं सिखाती है। बाइबल की शिक्षा के अनुसार हम सब मानव जाति के सदस्य है जिनमें भ्रष्ट स्वभाव है परमेश्वर के प्रति विरोधी स्वभाव। हमें एक दूसरे से अपनी रक्षा भी करना है क्योंकि हम भरोसे के योग्य नहीं हैं।

प्रेरितों के काम 17:26 में लिखा है,

उसने एक ही भूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिए बाँधा है.....

इस प्रकार हम सब उसके समक्ष बराबर है परन्तु हम मनुष्य होने के कारण परमेश्वर की सन्तान नहीं होते है। हम प्रभु यीशु में विश्वास करने के कारण उसकी सन्तान हो जाते है। प्रभु यीशु ने अपने युग के धर्मगुरूओं से कहा था:

यूहन्ना 8:44 - तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता शैतान की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो।

इस प्रकार हम देखते है कि संसार में दो कुटुम्ब हैः परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान। अतः परमेश्वर सम्पूर्ण मानवजाति का पिता नहीं है।

ध्यान दीजिए कि नीतिवचन कहता है, "यहोवा उन दोनों का कर्ता है। सृष्टि होने के कारण तो हम सब उसी के है। परमेश्वर सबका सृजनहार है परन्तु सबका पिता नहीं है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 22:3 - चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।

क्या आप ओजस्वी बनना चाहते है? भविष्य की तैयारी आरम्भ कर दें। आज अनेक जन भविष्य की तैयारी करने में आपकी सहायता करेंगे - बीमा कम्पनियाँ बहुत हैं। वे आपकी वृद्धावस्था, आपके बच्चों और अनेक अन्य बातों में आपका भविष्य संवारना चाहते है। परन्तु मैं इससे अगला कदम उठाना चाहता हूँ। आपका अनन्त कालीन भविष्य क्या होगा? जिसने अनन्त काल की तैयारी न की हो उसे धर्मशास्त्र मूर्ख कहता है।

अपनी युवावस्था में मैं कुछ समय परमेश्वर से बहुत दूर हो गया था। उस समय मैं एक धनवान युवा दम्पत्ति के सम्पर्क में था। एक दिन रात को नाचते समय उन्होंने अपनी सगाई की घोषणा की और बाद में विवाह किया और उनका प्रचार समाचार पत्र में भी किया गया विवाहित जीवन के लिए उन्होंने एक बहुत अच्छा मकान भी खरीदा। उस मकान में सामने की ओर सफेद पत्थर के स्तम्भ लगे हुए थे। उन्होंने प्राचीन वस्तुओं को खोजकर उनसे अपना घर सजाया। अपने विवाह पर वे पहाड़ों में घूमने गए और दुर्घटनाग्रस्त हो गए। उनकी कार में आग लग गई और दोनों मर गए। उनके माता-पिता ने उस नये घर में ताला डालकर उसे वीरान छोड़ दिया।

उद्धार पाने के बाद मैं वर्षों उस घर के निकट जाता था और देखता था कि उन्होंने उस घर की तैयारी में क्या क्या परिश्रम किया था उस पर विचार करता था परन्तु वे उस घर में एक घंटे भी नहीं रह पाए। वे बिना तैयारी के अनन्तकाल में प्रवेश कर गए। ओह, हमारे लिए अनन्तकाल की तैयारी करना कितना महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 22:6 - लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।

हमें अपनी सन्तान को उस मार्ग के लिए तैयार करना है जिसमें उसे आगे बढ़ना है। नीतिवचन लिखने वाले का कहना है कि परमेश्वर उसे जहाँ ले जाना चाहता है उसका मार्ग उसके पास तैयार है। उसके माता-पिता को यह मार्ग खोजना है। उन्हें अपनी सन्तान को अपनी इच्छा के मार्ग पर नहीं चलाना है। उसे उसी मार्ग में रखना है जो परमेश्वर चाहता है।

नीतिवचन 22:13 - आलसी कहता है, बाहर तो सिंह होगा! मैं चौक के बीच घात किया जाऊँगा।

यहाँ फिर से आलसी का उल्लेख किया गया है। इस पद में विनोद भी है। मेरा विश्वास करें आलासी के पास बहुत बहाने होते है। पहले तो वह ठंड के कारण खेत जोतने नहीं गया था। अब यह एक नया बहाना है, "बाहर तो सिंह होगा! मैं चौक के बीच में घात किया जाऊँगा।" मेरे विचार में तो वह झूठ कह रहा था कि बाहर शेर है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 22:14-15 - पराई स्त्रियों का मुँह गहरा गड्हा है; जिस से यहोवा क्रोधित होता, वही उस में गिरता है। लड़के के मन में मूढ़ता की गाँठ बन्धी रहती है, परन्तु अनुशासन की छड़ी के द्वारा वह खोलकर उस से दूर की जाती है।

बच्चों के पालन पोषण की शिक्षा को दोहराने का अर्थ है कि उस पर अधिक ध्यान दिया जाए। बच्चों को अनुशासन की आवश्यकता है। उचित अनुशासन बच्चों को रिस नहीं दिलाएगा। अनुशासन का अर्थ क्रोध करके पिटाई करना नहीं है। उचित अनुशासन के द्वारा बच्चा मूर्खता करना छोड़ देगा।

नीतिवचन 22:28 - जो सीमा तेरे पुरखाओं ने बान्धी हो, उस पुरानी सीमा को न बढ़ाना।

परमेश्वर इस्राएल के वंशजों को मिस्र से निकाल कर लाया और उन्हें अपना देश दिया। हम भूल जाते है कि उसने प्रत्येक गोत्र को अलग-अलग स्थान दिया और प्रत्येक गोत्र के हर एक को कुछ उपयुक्त भू-भाग भी दिया। उन्हें अपनी-अपनी भूमि को पत्थरों को लगाकर विभाजित करना था।

मेरी भूमि के एक सिरें पर पीतल का गोला लगा हुआ है और दूसरे सिरे पर भी एक पीतल का गोला लगा है कि उसके आरम्भ और अन्त की पहचान हो। इसका अर्थ है कि मैं अपनी सीमा में ही रहूँ।

भूमि के इन चिन्हों के सम्बन्ध में परमेश्वर ने उन्हें विशेष निर्देश दिए थे -

व्यवस्थाविवरण 19:14 - जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुम को देता है, उसका जो भाग तुझे मिलेगा, उसमें किसी की सीमा जिसे प्राचीन लोगों ने ठहराया हो न हटाना।

ये चिन्ह पीढ़ी से पीढ़ी तक चलते रहे थे और अति महत्वपूर्ण थे। जब उस भू-भाग का स्वामी बूढ़ा हो जाए और देखने में सक्षम न हो तो पड़ोसी के मन में लालच आ सकता था कि उसके पत्थरों को आगे हटाकर कुछ भू-भाग अपने भाग में कर ले। परमेश्वर ने ऐसा करने के लिए कठोरता से मना किया था। यह धोखा था।

मैं इसे आत्मिक संदर्भ देना चाहता हूँ। आप सोचेंगे कि मैं असंगत बात करता हूँ परन्तु आप मेरा विश्वास करें कि आज विश्वास के चिन्ह हटा दिए गए है। उन्हें हटाने वाले स्वतंत्र विचार या आज का चलन है। ऐसे लोग कहते है कि,

"प्रेरित पौलुस के समय की शिक्षा अब पुरानी हो गई है। अब वह व्यवहार योग्य नहीं है। हमने देखा है कि धर्म शास्त्र प्रेरित वचन नहीं है। हम इस विचार का त्याग कर सकते है। हम प्रभु यीशु के ईश्वर होने के विचार को भी अस्वीकार कर सकते है।"

मसीही विश्वास की पहचान करवाने वाली ये शिक्षाएँ अनेक कलीसियाओं में अधुनिकीकरण के कारण भुलाई जा चुकी है। अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमें आगे बढ़कर इन पहचान चिन्हों को हटाने की अपेक्षा हमें पीछे लौटना चाहिए और प्राचीन विश्वास के चिन्हों को अपनाना चाहिए।

इन्हीं प्राचीन नैतिक मूल्यों ने उस राश्ट्र को महान बनाया था। अत्मिक सत्य, बाइबल पर आधारित होना यह सब आज भुला दिया गया है। जब हम लोगों से इसके समाधान की बातें करते हैं तो हर कोई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक हल बताता है पर कोई भी वचन आधारित हल की बातें नहीं करता है। मैं कहना चाहता हूं कि हमें उस पुरानी सीमा या सिवाने की ओर लौट जाना है जो परमेश्वर ने बांधा है और उसके वचन पर आधारित है। यही एक मात्र हल है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0706

सत्यवचन

नीतिवचन 22 : 29 - 24 : 2(a)

प्रिय मित्रों,

अध्याय के अन्त में परिश्रमी मनुष्य की सराहना की गई है।

नीतिवचन 22:29 - यदि तू ऐसा पुरूष देखे जो कामकाज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।

परमेश्वर कहता है कि वह परिश्रमी मनुष्य को प्रतिफल देना चाहता है। आपको स्मरण होगा कि प्रभु यीशु ने अनन्त काल के लिए सेवक की सराहना के लिए ये शब्द कहे थे:

मत्ती 25:21- धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वास योग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी ठहराऊँगा।

यीशु की प्रशंसा पाना आपके कर्मों पर आधारित नहीं होगा या इस बात पर कि आप ने कितनों को गवाही दी, या आपके परिश्रम पर परन्तु उसके दिए गए धर्म में आप कितने विश्वासयोग्य रहे। उसने आपको माँ बनाया या घर का एक छोटा बच्चा बनाया। मूसा की माता ने माँ के उत्तरदायित्व में विश्वास योग्यता दिखाई और धर्मशास्त्र में उसका नाम अमर हो गया। विश्वासयोग्य सेवक का प्रतिफल महान है।

रोमियों 12 में पौलुस कहता है, - रोमियों 12:10,11

भाई चारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखों, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हों, अत्यधिक उन्माद में भरे रहो, प्रभु की सेवा करते रहों।

यह सब परमेश्वर का विश्वासयोग्य होना है और हमें ऐसा ही होना है।

हमारा युवक काफी समय से बुद्धि की पाठशाला में है। मेरे विचार में शीघ्र ही दीक्षांत समारोह होने वाला है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 23

नीतिवचन 23:1-3 - जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे, तब इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे सामने कौन है? और यदि तू खानेवाला हो, तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना। उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना, क्योंकि वह धोखे का भोजन है।

साधारण भाषा में हम कह सकते है कहीं दावत पर जाओ तो पेटू (भूखमरे) न बनों, विशेष करके जहाँ स्वादिष्ट भोजन हो। उचित होगा कि भूखे ही रहें। दूसरे शब्दों में, हर काम में संयम रखें। खाना खाने में भी शिष्टाचार और आत्मसंयम रखें।

आज कहा जाता है कि कुछ लोग भूख के कारण नहीं मानसिक तनाव के कारण खाना खाते है। हमें तनाव रहित होकर आवश्यकता के अनुसार ही भोजन करना चाहिए।

नीतिवचन 23:4,5 - धनी होने के लिये परिश्रम न करना; अपनी समझ का भरोसा छोड़ना। क्या तू अपनी दृष्टि उस वस्तु पर लगाएगा, जो है ही नहीं? वह उकाब पक्षी के समानं पंख लगाकर, निःसन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है।

कहने का अर्थ है कि धनवान होने में कोई बुराई नहीं है। धन कमाने के लिए परिश्रम करने में कोई बुराई नहीं है परन्तु उसे जीवन का लक्ष्य न बनाएँ। धन आपके जीवन का लक्ष्य न हो। कुछ लोगों के लिए पैसा ईश्वर है। वे उसकी लालसा करते है, उसके भूखे होते है। परमेश्वर की सन्तान के लिए यह अनुचित है।

एक धनवान मनुष्य ने मुझसे कहा, "मैं पैसे के लिए पैसा नहीं कमाता हूँ। मैं पैसे अपने उपयोग के लिए कमाता हूँ। पहले तो मैं पैसा इसलिए कमाता था कि उससे मेरे लिए कुछ हो परन्तु अब मैं पैसा इसलिए कमाता हूँ कि उससे परमेश्वर के लिए कुछ हो।" मनुष्य के धनवान होने में कोई बुराई नहीं है। पैसे के लिए मन में वशीभूत करने वाली इच्छा उत्पन्न होना बुरा हैं यह लालच है, यह प्रतिमा उपासना है।

कुछ लोग मूर्तियों की उपासना नहीं करते हैं परन्तु वे जीवन पर्यन्त पैसे की उपासना करते है। मैंने अपने जीवन में एक समय यह भी देखा कि मनुष्य श्येर बाज़ार में ऐसी नियमित्ता एवं निष्ठा से आते है जैसी निष्ठा से विश्वासी आराधना में भी नहीं आते है। मैंने वहाँ एक विश्वासी से पूछा कि वह रविवारीय आराधनाओं में दिखाई नहीं देता है तो उसने भागते-भागते कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं रहती है। बड़ी विचित्र बात है कि रविवार को परमेश्वर की आराधना के लिए उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है परन्तु सोमवार की सुबह श्येर बाज़ार जाने के लिए वह पूर्ण स्वस्थ रहता है। यही लालच है नीतिवचन इसी की चर्चा कर रहा है। यह झूठा ईश्वर है और ऊकाब की नाईं कभी भी उड़ जाएगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 23:6-8 - जो डाह से देखता है, उसकी रोटी न खाना, और न उसकी स्वादिष्ट भोजन वस्तुओं की लालसा करना; क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है। वह तुझ से कहता तो है, खा पी, परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं। जो कौर तू ने खाया हो, उसे उगलना पड़ेगा, और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा।

युवक के लिए और विशेष करके युवा प्रचारक के लिए यह एक अच्छा परामर्श है। मुझे अनेक बाइबल सभा के प्रचारकों ने यह कहकर चिताया, "आपको ऐसे-ऐसे व्यक्तियों द्वारा भोज पर बुलाया जाएगा परन्तु आपको बड़ी सावधानी से उनसे बातें करनी होंगी क्योंकि वे नाम बिगाड़नेवाले हैं वे आपसे प्रश्न पूछेंगें और बाद में आपके उत्तर आप ही के विरूद्ध काम में लेंगे।" मेरा यह स्वभाव है कि जब मैं तनाव रहित मित्रों के साथ भोजन करता हूँ तब मैं कुछ भी कह देता हूँ जिसका अर्थ गलत लगाया जा सकता हैं।

बात पुरानी नहीं है, एक दम्पत्ति ने मेरे मित्र के विषय कही गई बातों का बतंगड़ बनवा दिया। वह मेरा अति प्रिय मित्र था इसलिए मैंने हास्यभाव में कुछ कह दिया था। हम दोंनों एक साथ हॉकी खेलते थे। वह मसीह में मेरा भाई है। उसने मुझ से पूछा, "आप मेरे बारे में क्या कहते फिर रहे है?," मैंने उसे बताया तो वह हँसने लगा। उसने कहा, "उन्होंने आप की बात को लेकर घुमा दिया।" उसने मुझे यह भी बताया कि वह उनसे भेंट करने गया था और वह भी मेरे बारे में कुछ कह कर आया है जो मुझ तक दूसरे रूप में पहुँचने वाली ही होगी। यह नीतिवचन लिखते समय सुलैमान के मन में ऐसे ही लोगों कर विचार था। "जो डाह से देखता है उसकी रोटी न खाना।" अतः भोज में निमन्त्रित किए जाने पर ध्यान रखें कि किसके साथ आप भोजन कर रहे है। वे जैसे दिखाई देते है वैसे मैत्रीपूर्ण नहीं होंगे।

नीतिवचन 23:10 - पुरानी सीमाओं को न बढ़ाना, और न अनाथों के खेत में घुसना;

यहाँ फिर से पुराने चिन्हों का विवरण हैं। यदि आप विश्वास से हट गए है तो अपनी सन्तान को अपना यह अवगुण न सिखाएँ क्योंकि वे इसके लिए भुगतेंगे। आपको तो आपके विश्वासी माता-पिता की सुरक्षा प्राप्त थी परन्तु आपकी सन्तान के साथ ऐसा नहीं है। मेरी पीढ़ी के वंशज तो ईश्वरभक्त थे परन्तु हमने अपनी सन्तान को यह नहीं दिया। हमारी पीढ़ी ने युवा पीढ़ी उत्पन्न की और हम ही उन्हें दोष देते है।

नीतिवचन 23:13 - लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा।

हम पहले भी देख चुके है परन्तु पौलुस कहता है कि, "हम क्रोध में आकर ऐसा न करें।" सुधार करना अनुशासन के निमित है दण्ड देने के लिए नहीं। यदि अनुशासन से बच्चे का चरित्र निर्माण न हो तो किसी काम का नहीं।

हम बच्चों से यह न कहें कि उन्हें हम दण्ड देंगे परन्तु यह कि अनुशासन सिखाएँगे। पौलुस

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

इफिसियों 6:4 में कहता है:

हे बच्चेवालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन पोषण करो।

सदा स्मरण रखें अनुशासन का अर्थ है प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देना है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 23:19-21 - हे मेरे पुत्र, तू सुनकर बुद्धिमान हो, और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला। दाखमधु के पीनेवालों में न होना, न माँस के अधिक खानेवालों की संगति करना; क्योंकि पियक्कड़ और पेटू अपना भाग खोते हैं, और पीनकवाले को चिथड़े पहनने पड़ते हैं।

युवकों अपनी संगति से सावधान रहें! एक प्रकार की चिड़ियाएँ साथ बैठती है। बुरी संगति से दुराचार उत्पन्न होता है। युवाओं के लिए यह विशेष चेतावनी है।

नीतिवचन 23:22 - अपने जन्मानेवाले पिता की सुनना, और जब तेरी माता बूढ़ी हो जाए, तब भी उसे तुच्छ न जानना।

अब युवक बुद्धि की पाठशाला से दीक्षांत प्राप्त करने वाला है। उसके माता-पिता वुद्ध हो रहे है। उसका पिता तर्क हीन होगा कुछ असामान्य व्यवहार भी करेगा परन्तु फिर भी उसके माता-पिता में उससे अधिक समझ है।

आप यदि अबशालोम से बात करने का सौभाग्य प्राप्त करते तो आप इसका उदाहरण सुन पाते। वह निश्चय ही आपसे कहता कि उसके पिता में उससे अधिक बुद्धि थी। वह सोचता था कि वह अपने पिता दाऊद से विद्रोह कर युद्ध जीत लेगा पर दाऊद युद्ध का पुराना खिलाड़ी था। उसने रणंभूमि से बाहर जा कर भारी गलती की। उसे यरूशलेम से बाहर नहीं आना था क्योंकि दाऊद को युद्धक्षेत्र का संपूर्ण ज्ञान था। उस युवक के लिए वह प्राणधातक था।

नीतिवचन 23:23 - सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं; और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।

हमें पैसा देकर सत्य को खरीदना नहीं है। वह हमें बिना पैसों के मिल रहा है। यशायाह 55 में लिखा है,

यशायाह 55:1 - अहो सब प्यासे लोगो पानी के पास आओं, और जिनके पास रूपया न हो, तुम आकर मोल लो और खाओं! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।

परमेश्वर की सन्तान के लिए यह सब प्रभु यीशु में है। वह सत्य है, ज्ञान है और समझ है। एक ज्ञानवान फरीसी शाऊल जो पौलुस कहलाता था इसके बारे में कुरिन्थ की कलीसिया को लिखता है **1कुरिन्थियों 1:30 - परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।**

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 23:26 - हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चालचलन पर लगी रहे।

अब कोई कह सकता है, "मैं तो सोचता था कि परमेश्वर को हमारे पुराने मैंले मन नहीं चहिए।" यह सच है। वह उसके लिए किसी काम का नहीं। परन्तु जब वह कहता है, "हे मेरे पुत्र अपना मन मेरी ओर लगा।" तब किसी उद्धार से रहित मनुष्य से नहीं अपने पुत्र से कह रहा है। वह उस मनुष्य से कह रहा है जिसे उसने नया मन दिया है। जो नया जन्म पा चुका है और जिसके पास नया मन है। वह उससे कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तू मेरे पास आए। मैं चाहता हूँ कि तू मेरे अधीन हो जाए। यदि तू मुझसे प्रेम करता है तो मेरी आज्ञाओं को मान।

नीतिवचन 23:27 - वेश्या गहरा गड्ढा ठहरती है; और पराई स्त्री सकरे कुएँ के समान है।

अब यदि आप न मानें कि पराई स्त्री वैश्या है तो यहाँ दोनों को एक ही कहा गया है।

नीतिवचन 23:28 - वह डाकू की समान घात लगाती है, और बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती कर देती है।

पुराने नियम में दो पुरूषों का जीवन इसका उदाहरण है। उत्पत्ति में यहूदा की दुःखद कहानी और दूसरा है शिमशोन। यदि वह आज होता तो बताता कि एक वैश्या कैसी निर्दयी होती है। वह बिना किसी संवेदना के आपको हानि पहुँचा सकती है।

नीतिवचन 23:29,30 - कौन कहता है, हाय? कौन कहता है, हाय हाय? कौन झगड़े रगड़े में फँसता है? कौन बक-बक करता है? किसके अकारण घाव होते हैं? किसकी आँखें लाल हो जाती हैं? उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूँढ़ने को जाते हैं।

यहाँ फिर शराब के विरूद्ध चेतावनी है। हमनें मदिरा और पराई स्त्री के विरूद्ध अनेक चेतावनियाँ देखी है। यह सब शराब का परिणाम है:

नीतिवचन 23:32-35 - क्योंकि अन्त में वह सर्प की समान डसता है, और करैत के समान काटता है। तू विचित्र वस्तुएँ देखेगा, और उल्टी-सीधी बातें बकता रहेगा। तू समुद्र के बीच लेटनेवाले या मस्तूल के सिरे पर सोनेवाले के समान रहेगा। तू कहेगा कि मैंने मार तो खाई, परन्तु दुःखित न हुआ; मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी। मैं होश में कब आऊँ? मैं तो फिर मदिरा ढूँढूँगा।

शराब के कुप्रभाव का यह कैसा चित्रण है!

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 24

यह अध्याय सुलैमान के नीतिवचनों का अन्तिम अध्याय है जिन्हें उसने स्वयं क्रमबद्ध किया था। इसके बाद के नीतिवचन भी सुलैमान के ही नीतिवचन है परन्तु उन्हंे हिजकिय्याह के किसी कर्मि ने व्यवस्थित किए थे। सुलैमान ने बहुत नीतिवचन लिखे थे। हमारे पास तो उसके बहुत ही कम नीतिवचन हैं जिन्हे सुलैमान ने लिखा। ये सीमित अवश्य है परन्तु महान सत्य है और हमारे जीवन को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए है।

नीतिवचन 24:1-2 - बुरे लोगों के विषय में डाह न करना, और न उनकी संगति की चाह रखना; क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं, और उनके मुँह से दुष्टता की बात निकलती है।

यह हमसे पहले भी कहा जा चुका है। हम यहाँ देखते है कि महत्वपूर्ण शिक्षाओं को दोहराया जा रहा है। उदाहरण के लिए आप देखेंगे कि जीभ, घमण्ड और मूर्ख के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। क्योंकि ये जीवन में उपयोगी है। ये लोग हर जगह पाए जाते है, आपके और मेरे शहर में भी। यही कारण है कि मैंने कहा था कि आप इन नीतिवचनों के संदर्भ में हर जगह एक मनुष्य को देखेंगे। हमने इन नीतिवचनों को बाइबल के नायकों के सम्बन्ध में भी देखा है।

भजन 73 आसाप के भजन है जो हमारे इस पद के समान ही है। वह लिखता है,

भजन संहिता 73:3-9 - क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था, तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था। क्योंकि उनकी मृत्यु में वेदनाएँ नहीं होतीं, परन्तु उनका बल अटूट रहता है। उनको दूसरे मनुष्यों के समान कष्ट नहीं होता, और अन्य मनुष्यों के समान उन पर विपत्ति नहीं पड़ती। इस कारण अहंकार उनके गले का हार बना है; उनका ओढ़ना उपद्रव है। उनकी आँखें चर्बी से झलकती हैं, उनके मन की भावनाएँ उमण्डती हैं। वे ठट्ठा मारते हैं, और दुष्टता से अन्धेर बात बोलते हैं; वे डींग मारते हैं। वे मानो स्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं, और वे पृथ्वी में बोलते फिरते हैं।

आसाप के लिए यह परेशानी का कारण था और मेरे विचार में, आप भी परेशान हो जाते होंगे। निश्चय ही मुझे तो ऐसा ही लगता है। मुझे स्मरण आता है कि मैं एक ग़रीब बालक था और सोचता था कि मैं ग़रीब क्यों हूँ और मुझे स्कूल जाने की जगह काम करने की आवश्यकता क्यों पड़ी जब मैं मात्र 14 वर्श का ही था। मैं उन बालकों को भी देखता था जो स्कूल जा सकते थे परन्तु पढ़ाई से घृणा करने के कारण उन्होंने स्कूल छोड़ दिया। मैं इस विषय मन में एक प्रश्न लिए हुए था क्योंकि मुझ में पढ़ने की लालसा थी।

सुलैमान इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है, “बुरे लोगों के विषय में डाह न करना, और न उनकी संगति की चाह रखना।” क्योंकि लेखा देने का दिन आ रहा है। आसाप ने कहा कि वह समझ नहीं पा रहा था कि दुष्ट क्यों फूलते-फलते है ”जब तक कि मैं ने ईश्वर के पवित्र स्थान में जाकर उन लोगों के परिणाम को न सोचा।” एक दिन परमेश्वर उनका न्याय करेगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0707

सत्यवचन

नीतिवचन 24 : 2(b) - 25 : 3

प्रिय मित्रों,

हम इस संसार में अन्याय की अति देखते है जिसके लिए हम कुछ नहीं कर सकते आज की पीढ़ी हर एक बात का विरोध करती है। उन्होंने संसार में समता लाने के लिए बहुत कुछ किया है। मेरे विचार में तो विरोध करने से कुछ नहीं होगा क्योंकि समस्या का मूल मनुष्य के मन में है। मनुष्य के मन को बदलना आवश्यक है। परमेश्वर ही यह कर सकता है। हम इसके लिए उस पर भरोसा कर सकते है।

आपको और मुझे इस जीवन में अपने स्थान को समझना हैं। यदि हम यह समझ जाएँ कि परमेश्वर ने हमें इस पृथ्वी पर एक विशेष स्थान दिया है कि किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करें तो हम आनन्दित मनुष्य हो जाएँगे। मैं दुष्ट जनों को फूलते-फलते देखता हूँ परन्तु समझ नहीं पाता क्यों? मैंने तो परमेश्वर से भी कहा है कि मैं इसका कारण नहीं समझता। आप भी आसाप की नाईं परमेश्वर से कहने में संकोच न करें। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आप परमेश्वर के साथ रहें और उस पर इसके समाधान के लिए भरोसा रखें।

हमें परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना सीखना होगा। बाइबल में दुष्टों के बुरे अन्त के अनेक उदाहरण है। पहला उदाहरण उत्पत्ति की पुस्तक में कैन का है। उद्धार प्राप्त मनुष्य लूत ने भी सदोम में रहने का चुनाव किया और समृद्धि तो पाई परन्तु एक दिन ऐसा आया कि उसे सदोम के चुनाव पर पछतावा हुआ। उसके लिए वह चुनाव दुःखद चूक थी। अतः परमेश्वर का वचन अनेक उदाहरण देता है कि दुष्ट कुछ समय फूलता-फलता है और कैसे उस पर दण्ड आता है। हमें यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 24:3-4 - घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है। ज्ञान के द्वारा कोठरियां सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती हैं।

हमें क्या करना चाहिए यह उसका एक अति उत्तम चित्रण है। मनुष्य पहले घर बनाता है तदोपरान्त उसमें सामान रखता है। परदे लगाता है और साज सज्ज़ा की सामग्री रखता है। ऐसा एक सुन्दर घर देखना बड़ा अच्छा लगता है।

इसी प्रकार हमें भी एक घर बनाना है परन्तु बुद्धि और ज्ञान का घर। हमें अपना मन और मस्तिष्क हर एक अद्भुत और मनभावन वस्तुओं से भरना है। पौलुस ने तीमुथियुस से ऐसा ही करने को कहा था,

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

2 तीमुथियुस 2:15 - अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

आपको और मुझे भी अपने मन और जीवन को परमेश्वर के वचन से भरना चाहिए। तो आईए हम एक सुन्दर भवन निर्माण के प्रति प्रयासरत हों। हम एक झुग्गी मात्र से सन्तुष्ट न हों।

मैं दक्षिण भारत के एक उपदेशक के साथ वहाँ कुछ परिवारों से भेंट करने गया। उनके घर नारियल के पत्तों के बने थे और टूटे-फूटे थे। घर के भीतर बैठने को एक कुर्सी या चौकी भी नहीं थी। वे मात्र एक दरी या जूट़ की बोरी पर सोते थे। खाना पकाने के लिए वे घर के बाहर चूल्हा जलाते थे। मैं उनकी दरिद्रता पर आश्चर्य कर रहा था। और बहुत निराश हुआ। आज अनेक ऐसे मनुष्य है जो अपने आत्मिक घर अति सुन्दर बना सकते है परन्तु वे झुग्गी से ही सन्तुष्ट हैं। मैं उनके आत्मिक घरों के भीतर देखता हूँ तो वे खोखले है। वहाँ ज्ञान नाम की वस्तु है ही नहीं।

मैं अपने सेवकों की एक सभा में विचार विमर्श कर रहा था और वे सब मुझ से सहमत थे कि आज कलीसिया की सबसे बड़ी त्रासदी है। - अज्ञानता। ओह उनका यह खाली घर! "घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है। ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती है।"

नीतिवचन 24:5-6 - बुद्धिमान पुरूष बलवान् भी होता है, और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान होता है। इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मन्त्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।

आज हमारे उपयोग के लिए अनेक संसाधन है। हमारे पास अच्छी सम्मति देने के लिए मनुष्य ही नहीं परमेश्वर का वचन भी है। मैं इस रीति से सहमत नहीं कि बाइबल खोल कर एक पद देख लें और बस उसके आधार पर निर्णय ले लें। परमेश्वर का वचन ऐसा नहीं कि जूआ खेलने की चक्री धुमा दें और वह हमारे लगाए हुए अंक पर रूक जाए। हमें संपूर्ण बाइबल का ज्ञान होना आवश्यक है। हमें मूसा, यहोशू, शमूएल, दाऊद, मीका, जकर्याह, मत्ती, पौलुस और यूहन्ना आदि सब के पदों को जानना है कि उनका क्या सन्देश क्या है। हम निर्णय लेते समय उनको खोज सकते है।

नीतिवचन 24:10 - यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दें, तो तेरी शक्ति बहुत कम है।

यह बड़ी महत्वपूर्ण बात हैः पुरूषार्थ का काम करने के लिए पुरूष की आवश्यकता होती है। एक पुरानी कहावत है, "मर्द का काम करने के लिए लड़के को मत भेजो।" परमेश्वर तनाव, थकान के कामों द्वारा हमें आत्मिक चरित्र निर्माण के लिए परखता है। वह इस रीति से हमें विकास करने की क्षमता प्रदान करता है। परीक्षाओं के समय में ही हम आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन करते है।

परमेश्वर यह जानकर हमें साहस बांधता है कि परीक्षा के समय परमेश्वर के बड़े-बड़े भक्त मैदान छोड़कर भाग चुके है। एलिय्याह कर्मेल पर्वत पर बड़े साहस का प्रदर्शन कर रहा था परन्तु जब ईजेबेल

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

ने उसे जान से मार देने की शपथ खाई तो वह जान बचाकर जंगल में भाग गया और अपने सेवक तक को भी बेर्शेबा में छोड़ दिया और पेड़ के नीचे बैठकर प्रार्थना करने लगा कि परमेश्वर उसे उठा ले और आप स्वयं जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहाँ उस ने यह कह कर अपनी मृत्यु मांगी कि हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूँ। - 1राजा 19:4

इसी प्रकार दाऊद भी शाऊल से डर कर भागता रहता था। उसने कहा कि वे एक तीतर की नाईं उसे खोज रहे हैं कि उसे घात कर दें। वह अत्यधिक निराश हो गया था परन्तु एलिय्याह और दाऊद ने ऐसे कठिन समय में यही सीखा कि परमेश्वर ही उनका बल है।

नीतिवचन 24:11-12 - जो मार डाले जाने के लिये घसीटे जाते हैं उनको छुड़ा; और जो घात किए जाने को हैं उन्हें मत पकड़ा। यदि तू कहे, कि देख मैं इसको जानता न था, तो क्या मन का जाँचनेवाला इसे नहीं समझता? क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे नहीं जानता? और क्या वह हर एक मनुष्य के काम का फल उसे न देगा?

यदि आप किसी की सहायता कर सकते है और आप जानते है कि आप सक्षम है तो आप को वह करना चाहिए। आप किसी न किसी को मसीह की गवाही दे सकते है और आप जानते हैं कि वह केवल आप की ही बात मान सकता है तो आप को ऐसा करना चाहिए।

अभी कुछ समय पहले मेरी भेंट एक मनुष्य से हुई जो अपने किसी प्रिय जन की आत्महत्या का दोषी स्वयं को मानता था। उसके अनुसार यदि वह उससे बात करता तो अति सम्भव था कि वह आत्महत्या न करता। यदि ऐसा था तो उसे निश्चय ही उसे परामर्श देना चाहिए था। समय पर कुछ करने योग्य होने के बाद भी यदि मनुष्य चुप रहे तो उसका विवके उसे दोषी ठहराता है।

परमेश्वर मन को जाँचता है। ऐसी स्थिति में जब हम जानते है कि हमें कुछ करना चाहिए और करते नहीं तब हमें प्रार्थना करनी चाहिए, "हे प्रभु, मुझे क्षमा कर। मैं चूक गया हूँ। अब मैं तेरे पास आता हूँ और विनती करता हूँ कि मुझे मुक्ति दिला और मेरी सहायता कर।" परमेश्वर उसकी प्रार्थना अवश्य सुनेगा और उसे उसके दोषी विवके से और चूक जाने के दुःख से मुक्ति दिलाएगा।

हम इस नीतिवचन के महत्व को समझें और उन मनुष्य की सहायता करें जिन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है तो अच्छा होगा।

नीतिवचन 24:16 - क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठ खड़ा होता है; परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति में गिरकर पड़े ही रहते हैं।

"धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठ खड़ा होता है।" सात का अंक परिपूर्णता का अंक है इसका अर्थ है कि मनुष्य से चूक होती रहती है परन्तु धर्मी जन उठ खड़ा होता है। क्या आपने ऐसा धर्मी जन देखा है? शमौन पतरस एक ऐसा धर्मी जन था। इसके आगे देखिए वह क्या कहता है, "परन्तु दृष्ट लोग विपत्ति में गिरकर पड़े ही रहते है।" यहूदा इस्करियोति इसका बहुत अच्छा उदाहरण है। प्रभु

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यीशु के इन दो शिष्यों का इस नीतिवचन में अति उत्तम चित्रण है। पतरस तो बार-बार चूकता था। पानी पर चलने में, मेरे विचार में, वह चूका नहीं क्योंकि वह प्रभु यीशु के पास आ रहा था। परन्तु यीशु से दृष्टि हटा कर जब उसने पानी की लहरों को देखा तब वह डूबने लगा परन्तु यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ा कर उसे थाम लिया और वे दोनों पानी पर चलकर नाव तक आए। यीशु के पकड़वाएँ जाने की रात तो वास्तव में पतरस चूक गया था। उसने अपने प्रभु का तीन बार इन्कार किया परन्तु वह उठा और प्रभु के साथ आगे बढ़ा।

मुझे एक विश्वासी ने कहा, "मैं तो इतनी बार चूकता हूँ कि मुझे प्रभु के पास लौट आने में लज्जा आती है कि उससे अपनी भूल-चूक की बार-बार चर्चा करूँ और उससे कहूँ कि मैं फिर से नया आरम्भ करना चाहता हूँ।" मैंने उससे कहा, "लज्जा आपको आती है, प्रभु यीशु को नहीं। वह आपके नये आरम्भ के लिए सदा तैयार रहता है।" तब उसने पूछा, "आपके विचार में हम कितनी बार चूक कर नया आरम्भ कर सकते है?" मैंने सीधा सा उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता परन्तु मैं तो सैकड़ों बार कर चुका हूँ और अब भी उसके पास आता हूँ।" यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि हम अपने परमेश्वर पिता के पास बार-बार जाएँ और उससे कहे कि हम गिरकर गंदे हो गए है। वह हमें उठाकर अपनी सेवा में फिर से खड़ा कर देगा। ऐसा स्वर्गीय पिता पाना अति महान सौभाग्य है।

नीतिवचन 24:17 - जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू आनन्दित न हो, और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा मन मगन न हो।

जब आप किसी को पसन्द नहीं करते और उसके साथ दुर्घटना घटे तो अति सम्भव होता है कि आप कहें, "अच्छा हुआ।" आप इससे इन्कार नहीं कर सकते क्योंकि यह मनुष्य का स्वभाव है। यदि आपने कहा नही तो सोचा तो निश्चित होगा। परमेश्वर कहता है, "जब तेरा शत्रु गिर जाए तब आनन्दित न हो।" यह समस्या का समाधान नहीं है। क्यों?

नीतिवचन 24:18 - कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर अप्रसन्न हो और अपना क्रोध उस पर से हटा ले।

अपने बैरी की दुर्घटना पर आप आनन्दित होंगे तो परमेश्वर उस पर से अपना क्रोध हटाकर उसे आशीष देगा। इससे आपको बहुत कष्ट होगा। यह एक अत्यधिक तार्किक कारण है कि आप अपने बैरी के कष्टों से प्रसन्न न हों।

नीतिवचन 24:19 - कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, दुष्ट लोगों के कारण डाह न कर;

आप सोचेंगे कि हमने इसे अभी पढ़ा है। जी हाँ इस अध्याय के पद 1 में यही विचार है। इसे दोहराया क्यों गया है? इसे दोहराने का कारण है कि इसका महत्व सिद्ध हो। परमेश्वर चाहता है कि हम इसे सीखें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

क्या आपने कभी ध्यान दिया कि हमारे प्रभु के दृष्टान्त और आश्चर्यकर्म भी दोहराए गए है? उदाहरण के लिए पाँच हज़ार पुरूषों को भोजन करवाने का आश्चर्यकर्म चारों सुसमाचार वृतान्तों दिया गया है। प्रत्येक सुसमाचार लेखक अपनी आवश्यकता के अनुसार उसमें बल देता है। यह आश्चर्यकर्म ऐसा महत्वपूर्ण है कि हमारे लिए चार बार लिखा गया है। इसी प्रकार इस नीतिवचन की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए इसे दोहराया गया है।

पद 23 से अध्याय के अन्त तक का भाग एक प्रकार का परिशिष्ट है जिसके आरम्भ में संयोजक उक्ति है, "बुद्धिमानों के वचन यह भी है।"

नीतिवचन 24:23 - बुद्धिमानों के वचन यह भी हैं।। न्याय में पक्षपात करना, किसी रीति भी अच्छा नहीं।

युवक को दीक्षांत से पूर्व यह भी सीखना है, "न्याय में पक्षपात करना किसी रीति से भी अच्छा नहीं है।" यह आज दैनिक जीवन में अति आवश्यक है। नेताओं को, नियोजकों को वरन् प्रत्येक पदाधिकारी को यह समझना अति आवश्यक है। अनुग्रहीत तो हों परन्तु न्याय में सब बराबर हों।

नीतिवचन 24:24 - जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है, उसको तो हर समाज के लोग शाप देते और जाति-जाति के लोग धमकी देते हैं;

आज का यह एक आम अभ्यास है। दृष्ट की प्रशंसा होती है। दृष्ट को धर्मी कहा जाता है। यह एक अति अनर्थ बात है।

नीतिवचन 24:29 - मत कह, जैसा उस ने मेरे साथ किया वैसा ही मैं भी उसके साथ करूँगा; और उसको उसके काम के अनुसार बदला दूँगा।

यह हम नीतिवचनों में बार-बार देख रहे है। रोमियों की कलीसिया को भी पौलुस ने यही लिखा था - **रोमियों 12:19 - हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।**

नीतिवचन 24:33-34 - छोटी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के और लेटे रहना, तब तेरा कंगालपन डाकू के समान, और तेरी घटी हथियारबन्द मनुश्य के समान आ पड़ेगी।

अब युवक अपनी शिक्षा पूरी करके बाहर निकलने वाला है। वह बहुत कुछ जानता है और उसमें अनेक अच्छे गुण है परन्तु यदि वह आलसी है तो उसके जीवन में यह एक बहुत बड़ी बाधा है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 25

यह नीतिवचनों का एक नया भाग है। ये नीतिवचन भी सुलैमान के नीतिवचन है परन्तु इनका संग्रह हिजकिय्याह के किसी कर्मी ने किया है। यूनानी बाइबल में लिखा है कि हिजकिय्याह के मित्रों ने उसका संग्रह किया है।

नीतिवचन 25:1-2 - सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं; जिन्हें यहूदा के राजा हिजकिय्याह के जनों ने नकल की थी। परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है।

नीतिवचन प्रभु यीशु के वचनों को इसी रीति से प्रस्तुत करता है,

तुम पवित्र शास्त्र में ढूढ़ते हो..... (यूहन्ना 5:39)

पौलुस ने भी यही बात कही है,

2 तीमुथियुस 2:15 - अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित न होने पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

हमें वचन में खोजना है परन्तु यह भी ध्यान रखना है कि परमेश्वर ने बहुत सी बातें हम पर प्रगट नहीं की गई हैं। मुझे सन्देह है कि यदि परमेश्वर उसे हम पर प्रगट करे तौभी हम उसे समझ नहीं पाएँगे। वे हमारी ग्रहण शक्ति से परे हैं।

उसने **यशायाह 55:9** में इसे प्रगट किया है,

मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में पृथ्वी और आकाश का अन्तर है।

परन्तु परमेश्वर ने हम पर जो प्रगट किया है हमें उसका तो अध्ययन करना आवश्यक है। उसे समझना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण है कि हमें परमेश्वर के वचन की खोज और उसके अध्ययन की आवश्यकता को समझना है।

नीतिवचन 25:3 - स्वर्ग की ऊँचाई और पृथ्वी की गहराई और राजाओं का मन, इन तीनों का अन्त नहीं मिलता।

हमारे अगुवें क्या करते है, हम समझ नहीं पाते परन्तु वे जानते है कि वे क्या कर रहे है। इसी प्रकार हम परमेश्वर के मार्गों को नहीं समझते इसलिए हमें परमेश्वर की आलोचना नहीं करनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर जो भी करता है, सब सही ही करता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0708

सत्यवचन

नीतिवचन 25 : 4 - 25 : 25

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 25:4-5 - चाँदी में से मैल दूर करने पर वह सुनार के लिये काम की हो जाती है। राजा के सामने से दुष्ट को निकाल देने पर उसकी गद्दी धर्म के कारण स्थिर होगी।

एक दुष्ट सलाहकार पाना किसी का दुर्भाग्य है। वह वह आपको परेशानी में, कष्टों में वरन् पाप में डाल सकता है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि एक भले मनुष्य ने मुझे बचा लिया। मैं एक गलत सलाहकार के मार्गदर्शन में गलत मार्ग पर आ गया था। अब सोचिए कि एक उच्च पदाधिकारी का सलाहकार गलत हो तो क्या होगा? एक नियोजक जिसके पास अनेक कर्मचारी है या एक नेता जिसके कंधों पर जनता का उत्तरदायित्व है, यदि उसका सलाहकार सही न हो तब?

नीतिवचन 25:6-7 - राजा के सामने अपनी बड़ाई न करना और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना; क्योंकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन किया हो उसके सामने तेरा अपमान न हो, वरन तुझ से यह कहा जाए, आगे बढ़कर विराज।

"बड़ाई न करना" आपको स्मरण होगा कि प्रभु यीशु ने इस महान सत्य को प्रगट करने के लिए एक दृष्टान्त सुनाया था और वह इसके लिए विवश था क्योंकि उसके युग के धर्मगुरू इस नीतिवचन पर ध्यान नहीं दे रहे थे। जब कोई प्रतिष्ठित जन भोज का आयोजन करता था तब वह माननीय अतिथियों के लिए स्थान निर्धारित करता था। वहाँ खाने के लिए घन्टी बजाई जाती थी और अतिथि अच्छे स्थान पर बैठने के लिए शीघ्रता करते थे। प्रभु यीशु शायद एक ऐसे भोज में था और वह रूका रहा कि अन्य अतिथि अपने अपने स्थान पर बैठ जाएँ। इस दृश्य को देख यीशु ने अपने शिष्यों को शिक्षा दी,

लूका 14:8-10 जब कोई तुझे विवाह में बुलाएँ, तो मुख्य जगह में न बैठना, कही ऐसा न हो कि उसने तुझ से भी बड़े को नेवता दिया हो, और जिसने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है, आकर तुझ से कहे, इसको जगह दे, और तब तुझे लज्जित होकर सबसे नीची जगह में बैठना पड़े। पर जब तू बुलाया जाए तो सबसे नीची जगह जा बैठ कि जब वह, जिसने तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे, हे मित्र, आगे बढ़कर बैठ, तब तेरे साथ बैठने वालों के सामने तेरी बड़ाई होगी।

आज ऐसे धक्का-मुक्का करने वाले लोग मसीहियों में भी है। वे महत्वाकांक्षी है। वे मसीह की बातों में भी आगे बढ़ना चाहते है। यह एक त्रासदी है। आप व्यापार में किसी को आगे बढ़ने के लिए

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

धक्का-मुक्का करने के लिए दोष नहीं दे सकते परन्तु मसीही सेवा में ऐसा नहीं होना चाहिए।

नीतिवचन 25:8 - झगड़ा करने में जल्दी न करना नहीं तो अन्त में जब तेरा पड़ोसी तेरा मुँह काला करे तब तू क्या कर सकेगा?

इसके संदर्भ में भी प्रभु यीशु ने दृष्टान्त सुनाया था,

लूका 14:31-32- कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हज़ार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है। क्या मैं दस हज़ार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ या नहीं? नहीं तो दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।

पुराने नियम में योशिय्याह इसका उदाहरण है। वह एक अच्छा राजा था और वह यहूदा रज्य में एक महान जागृति लाया था। परन्तु उसने एक गंभीर चूक की। एक ही चूक किसी महापुरूष का जीवन नष्ट कर देती है। मिस्र का राजा नीको युद्ध अभियान में आगे बढ़ रहा था। योशिय्याह को युद्ध में देख उसने कहा कि वह उससे युद्ध करने नहीं निकला है परन्तु योशिय्याह ने जवानी के जोश में उसका सामना किया। मेरे विचार में वह इसे परमेश्वर की इच्छा समझ रहा था। हम प्रायः अपने गलत निर्णय के लिए परमेश्वर को दोष देते है। वह मगिद्दों के युद्ध में मारा गया। यही वह स्थान है जहाँ हरमगिदोन का अन्तिम युद्ध होगा।

2 राजा 23:28-30 योशिय्याह के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? उसके दिनों में फ़िरौन-नको नाम मिस्र का राजा अश्शूर के राजा के विरुद्ध परात महानद तक गया तो योशिय्याह राजा भी उसका सामना करने को गया, और उस ने उसको देखते ही मगिद्दो में मार डाला। तब उसके कर्मचारियों ने उसकी लोथ एक रथ पर रख मगिद्दो से ले जाकर यरूशलेम को पहुँचाई और उसकी निज कबर में रख दी। तब साधारण लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसका अभिषेक करके, उसके पिता के स्थान पर राजा नियुक्त किया।

परमेश्वर चाहता है कि हम किसी भी बात मे अनावश्यक हस्तक्षेप न करें।

नीतिवचन 25:9-10 - अपने पडोसी के साथ वादविवाद एकान्त में करना और पराये का भेद न खोलना; ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी भी निन्दा करे, और तेरी निन्दा बनी रहे।

अपने पड़ोसी से किसी को आलोचना करना अच्छा नहीं। यदि आपका पड़ोसी चूक करता है तो सीधे जाकर उससे बात करें।

नीतिवचन 25:11 - जैसे चान्दी की टोकरियों में सोने के सेब हों वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।

यह अति सुन्दर बात है! यह एक अति उत्तम उपमा है। "चांदी की टोकरियों में सोने के सेब" यहाँ सेब तो कहा गया है परन्तु वास्तव में यह संतरा है। इस्राएल में आज सर्वोत्तम संतरे उत्पन्न होते है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

सुलैमान के युग में भी वहाँ अति उत्तम संतरे उगते थे।

परमेश्वर के वचन के अध्ययन में हम देखेंगे कि कुछ लोगों ने सही समय पर सही बात बड़ी ही अच्छी रीति से कही है। कभी अच्छी बात तो कभी झिड़की की भी आवश्यकता होती है, "ठीक समय पर कहा हुआ वचन।" इसके लिए हमें प्रार्थना करनी है कि हम सही समय पर सही शब्दों का उपयोग करना सीखें। हम जानते है कि हम गलत समय पर गलत बात भी कह देते है या कभी-कभी हममें गलत समय पर भी सही बात कहने की कला होती है। ऐसा समय भी होता है कि हमें अपना मुँह बन्द रखना चाहिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि हम ऐसे विश्वासियों को जानते है जो सही समय पर सही शब्दों को उपयोग करते है, "ठीक समय पर कहा हुआ वचन।" एक धर्मी महिला रविवारीय आराधना के बाद प्रचारक से मृदुवचन कहने के लिए जानी जाती थी। लोग उसके पास आते थे कि सुने वह क्या कहती है क्योंकि कभी-कभी उनके पास उपदेशक की प्रशंसा में कहने को कुछ नहीं होता था। एक बार ऐसा हुआ कि उनके मध्य एक प्रचारक था जिसका उपदेश किसी को नहीं भाया। अतः वे सब उस महिला के निकट आए कि सुनें वह क्या कहेगी। उसने कहा, "पास्टर मैंने आपके उपदेश का पूर्ण आनन्द उठाया क्योंकि आपका आज का बाइबल पाठ बहुत अच्छा था।" यही "ठीक समय पर कहा हुआ वचन" कहलाता है। ये चांदी की टोकरी में सोने के सेब हैं।

नीतिवचन 25:12 - जैसे सोने का नत्थ और कुन्दन का जेवर अच्छा लगता है, वैसे ही माननेवाले के कान में बुद्धिमान की डाँट भी अच्छी लगती है।

आपने महिलाओं को सुन्दर कुन्दन पहने देखा होगा। आज पुरूष भी कुन्दन पहनते है परन्तु वे सुन्दर नहीं होते। ऐसे ही मानने वाले के कान में बुद्धिमान की डाँट होती है। यह आवश्यक है परन्तु आज आप यदि किसी को डाँट दें तो सुनने वाले कहते है, "आपने यह अच्छा नहीं किया। वह आप से दूर हो जाएगा। आप उसे कभी लौटाकर नहीं ला सकते।" मेरे मित्रों, यदि वह मानने वाला मनुष्य है तो अवश्य लौटकर आएगा। यदि वह विद्रोही है तो आप वैसे भी उसे जीत नहीं पाते। परन्तु झिड़की का भी एक समय होता है।

नीतिवचन 25:13 - जैसे कटनी के समय बर्फ की ठण्ड से, वैसे ही विश्वासयोग्य दूत से भी, भेजनेवालों का जी ठण्डा होता है।

उस देश में कटनी के समय गर्भ हो जाता है। वे लोग उस समय हर्मोन पर्वत पर जाकर बर्फ लाते थे। वहाँ की बर्फ बहुत अच्छी है। वह बहुत स्वादिष्ट होती है। एक विश्वासयोग्य सन्देशवाहक ऐसा ही होता है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रभु यीशु कुछ लोगों से कहेगा,

धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास। (मत्ती 25:21)

हम सबको विश्वासयोग्य मनुष्यों का साथ अच्छा लगता है। पुरूष को विश्वासयोग्य पत्नी अच्छी लगती है, विश्वासयोग्य सन्तान की वह प्रशंसा करता है। नियोजक को विश्वासयोग्य कर्मी अच्छे

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

लगते है। पास्टर को विश्वासयोग्य कलीसिया अच्छी लगती है। कलीसिया को विश्वासयोग्य पास्टर अच्छा लगता है। विश्वासयोग्यता एक महान सद्‌गुण है। एक विश्वासयोग्य साथी ऐसा ही होता है। जो गर्मी में ठंडक दे।

नीतिवचन 25:14 - जैसे बादल और पवन बिना वृष्टि निर्लाभ होते हैं, वैसे ही झूठ-मूठ दान देनेवाले का बड़ाई मारना होता है।

कुछ लोग गर्व तो करते है परन्तु उनके पास वह गुण नहीं होता है। मुझे स्मरण है कि एक व्यक्ति ने मुझे पत्र लिखा और कहा कि वह एक अति उत्तम प्रचारक, बाइबल शिक्षक, गायक और पियानों बजाने वाला है। वह हमारी कलीसिया में सभा करना चाहता था। मैं ने वह पत्र अपनी समिति में पढ़कर सुनाया। वे हँसकर बोले, "आप उसे अवसर क्यों नहीं देते।" मैंने कहा, "दो मुख्य कारणों से मैं उसे बुलाना नहीं चाहता हूँ। पहला, वह यदि उतना ही अच्छा प्रचारक है जितना वह कह रहा है तो मेरी कलीसिया उसे सुनने के बाद मेरा प्रवचन सुनना पसन्द नहीं करेगी। दूसरा, मेरे विचार में वह जिस बात पर गर्व करता है वह उसमें है नहीं।"

यह अन्तिम समय के अधर्मियों का चित्रण है। यहूदा उन्हें अति उत्तम उपमाओं द्‌वारा व्यक्त करता है। निर्जल बादल और फलहीन वृक्ष -

समुद्र के प्रचण्ड हिलकोरे है, जो अपनी लज्जा का फेन उछालते है..... (यहूदा 12-13)

नीतिवचन 25:16 - क्या तू ने मधु पाया? तो जितना तेरे लिये ठीक हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दे।

पुराने नियम में शहद मधुरता का प्रतीक था। शहद बलिदानों में नहीं था क्योंकि बलिदान प्रभु यीशु के मनुष्यत्व का प्रतीक थे।

क्या आपकी भेंट ऐसे मनुष्य से हुई है जो बहुत अधिक मीठी-मीठी बातें करे और आप ऊब जाएँ? "क्या तू ने मधु पाया? तो जितना तेरे लिए उचित हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दें।"

नीतिवचन 25:17 - अपने पड़ोसी के घर में बारम्बार जाने से अपने पांव को रोक ऐसा न हो कि वह खिन्न होकर घृणा करने लगे।

यह एक अति उत्तम नीतिवचन है। अपने पड़ोसी के घर अधिक नहीं जाना। कही ऐसा न हो कि उसकी पत्नी कहे, "इसे जल्दी भेजों।" किसी के घर अपने स्वागत को खोना अच्छा नहीं।

नीतिवचन 25:19 - विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा टूटे हुए दाँत या उखड़े पांव के समान है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यहूदा इस्करियोति टूटा हुआ दाँत और उखड़ा हुआ पांव था। शायद आपकी भेंट भी ऐसे मनुष्य से हुई होगी।

नीतिवचन 25:21-22, यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना; और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना; क्योंकि इस रीति तू उसके सिर पर अंगारे डालेगा, और यहोवा तुझे इसका फल देगा।

प्रभु यीशु ने और पौलुस ने भी इस सिद्धान्त को दोहराया था। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 25:23, जैसे उत्तरीय वायु वर्षा को लाती है, वैसे ही चुगली करने से मुख पर क्रोध छा जाता है।

आज हमें किसी को झिड़कना शिष्टाचार नहीं कहलता। हमें मीठी-मीठी बातें करनी अच्छी लगती है। मुझे लोग लिखते है कि मैं किसी समुदाय विशेष या किसी संस्था विशेष के प्रति कठोर शब्दों का उपयोग करता हूँ। क्या मैं कह सकता हूँ कि मैं इसे उचित मानता हूँ। "उत्तरी वायु वर्षा को लाती है।" कठोर मुखाकृति पीठ पीछे बुराई करने वाले की जीभ को वश में रखती है। वह आज के झूठे शिक्षकों को भी यथास्थान रखती है। मेरे विचार में उनसे ऐसा व्यवहार करना उचित है। मैं तो अवश्य कहूँगा यदि कहना महत्वपूर्ण हैं तो।

मृदुता और प्रकाश अति उत्तम है परन्तु जिस संसार में हम वास करते है उसमें जीवन पथ पर सर्प है, गढढ़े हैं, परमेश्वर के वचन की झूठी शिक्षा है। मैं तो इसके विरूद्ध आवाज़ उठाऊँगा परन्तु आशा करता हूँ कि यह प्रेम की आत्मा में हो। मेरे मन में किसी को दुःख पहुँचाने की इच्छा नहीं है परन्तु मैं परमेश्वर के सत्य को प्रगट करना चाहता हूँ। मैं परमेश्वर के वचन में इसका पर्याप्त पक्ष देखता हूँ। यहाँ इसके पक्ष में एक पद है।

नीतिवचन 25:24, लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है।

यह पहले भी अनेक बार देख चुके है। सुलैमान के पास अनेक पत्नियाँ थी। अतः उसे पत्नियों से प्राप्त कष्ट का अनुभव था। यही कारण है कि वह इसे बार-बार कहता है।

नीतिवचन 25:25, जैसा थके मान्दे के प्राणों के लिये ठंडा पानी होता है, वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार भी होता है।

क्या आपको हाल ही में अपने घर में पत्र प्राप्त हुआ है? या आपने अपनी माता को पत्र लिखा है? यह महत्वपूर्ण है। इस पद में जो दिखता है उससे कही अधिक गहरा अर्थ छिपा है।

"दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार" प्रभु यीशु ने कहा,

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यूहन्ना 16:28 - मैं पिता की ओर से जगत में आया हूँ; मैं फिर जगत को छोड़ कर पिता के पास जात हूँ।

उस थोड़े से समय में, जॉन वेसली कहते है कि परमेश्वर ने एक लम्बी दूरी को संकुचित कर दिया तथा आपका और मेरा उद्धार किया। यह शुभसन्देश दूर देश से हमारे लिए आया था। क्या आपने उसे ग्रहण किया है? क्या आपने उसे अपनाया है? वह जीवन का जल है। वह थके मांदे के प्राणों के लिए ठण्डा पानी है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0709

सत्यवचन

नीतिवचन 25 : 26 - 26 : 28

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 25:26 - जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है, वह गंदले सोते और बिगड़े हुए कुण्ड के समान है।

जब मैं अपने बाल्यकाल में शिकार पर जाता था तब हम पानी साथ नहीं ले जाते थे। कभी-कभी हम तालाब या झील के पास आते तो पानी में काई देखते थे, उस समय प्रदूषण की समस्या नहीं थी। यह हमारे लिए कैसी निराशा की बात होती थी।

यहाँ वह सत्यवादी धर्मी जन की तुलना दुष्ट से कर रहा है कि धर्मी जन को दृष्ट के आगे झुकना पड़ता है। व्यापार में, राजनीति आदि में। पद पाने के लिए सत्यनिष्ठ मनुष्य को दुष्ट के आगे झुकना पड़ता है। कलीसिया में भी ऐसा होता है। उचित शिक्षा और सच्चाई के लिए खड़े होने वाले को समझौता करना पड़ता है। यह दुःख की बात है। पानी खोजते हुए जलाशय के पास पहुँच कर देखना कि पानी गंदा है अत्याधि निराशाजनक है, यह अति उत्तर पद है।

नीतिवचन 25:27 - बहुत मधु खाना अच्छा नहीं, परन्तु कठिन बातों की पूछताछ महिमा का कारण होता है।

थोड़ा सा शहद तो अच्छा होता है परन्तु बहुत अधिक शहद खाने से आप परेशान हो जाते है। मनुष्य आत्मसम्मान का भूखा है, विशेष करके मसीही सेवा में तो वह आपको परेशान कर देता हैं हम कलीसिया में देखते है कि मसीही जनों में अनावश्यक महत्वकाक्षाएँ है। यह देखकर आप बहुत परेशान हो जाते है।

नीतिवचन 25:28 - जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई हो।

यह नीतिवचन उन मनुष्यों के बारे में है जो अपनी भावनाओं को नियन्त्रण में नहीं रख सकते। जो संयमी नहीं है। आप जानते है कि संयम आत्मा का फल है। ऐसा समय आता है जब मनुष्य भावना से अभिभूत होकर संयम खो देता है परन्तु हमें अपनी भावना पर भी नियन्त्रण रखना है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अध्याय 26

इस अध्याय का पहला भाग मूर्ख के विषय चर्चा करता है। बाइबल में, विशेष करके नीतिवचन में मूर्ख के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। यह मन्दबुद्धि मनुश्य के बारे में नहीं है। न ही परमेश्वर भोलों और मानसिक रूप से अविकसित मनुष्यों के बारे में कुछ कह रहा है। यहाँ वचन मूर्ख उसे कह रहा है जो कुशाग्र बुद्धि का है जिसने पी. एच. डी की उपाधि ली हुई। भजन 14:1 में दाऊद कहता है कि मूर्ख ने मन में कहा कि परमेश्वर है ही नहीं। मूर्ख वह है जो सोचता है कि वह अति बुद्धिमान है, वह नास्तिक है। इब्रानी भाषा में मूर्ख का अर्थ है जिसका मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं है। अतः जो यह कहे कि परमेश्वर नहीं है, वह एक प्रकार से पागल है।

परिवार के सदस्यों में आपस में विवाह करने से कभी-कभी तो बहुत ही बुद्धिमान सन्तान उत्पन्न होती है परन्तु मानसिक दुर्बलता भी उत्पन्न होती है। अपनी सेवा के मेरे युवा समय में एक पास्टर ने ऐसे ही अपने परिवार में विवाह किया। उसकी दो अति प्रतिभाशाली पुत्रियाँ थी। मैं उस स्थान में सभा लेने गया तो उन्होंने मुझे घर बुलवाया। जो पास्टर मुझे वहाँ ले गया था उसने मुझे पहले ही सावधान कर दिया था कि मुझे वहाँ अनेक विचित्र बातें देखने को मिलेंगी। वे दोनों बहनें अब वृद्ध हो गई थी। मैंने अपने जीवन में ऐसी कुशाग्र बुद्धि की महिलाएँ नहीं देखी थी। वे मेरे बारे में सब कुछ ही जानती थी, मेरी कलीसिया के बारे में, बाइबल, साहित्य संगीत और वर्तमान घटनाओं सबका उन्हंे ज्ञान था। वहाँ पहुँच कर हमें बैठने के लिए कुर्सियों पर से मुर्गियाँ भगानी पड़ी। मैं उनसे बात कर ही रहा था कि रसोई के द्वार से गाय ने अपना सिर निकाला। उनके शयन कक्ष में घोड़ा था और मेरे विचार में चारों ओर बकरियाँ थी। इन बहनों का मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं था।

परमेश्वर जब किसी को मूर्ख कहता है तो उसका अभिप्राय ऐसे मनुष्यों से नहीं है। उसके कहने का अर्थ है कि जिसने परमेश्वर का त्याग किया हो। परमेश्वर ऐसे मनुष्य को पागल कहता है।

नीतिवचन 26:1 - जैसा धूपकाल में हिम का, और कटनी के समय जल का पड़ना, वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती।

मूर्ख की एक पहचान यह है कि वह अपना सम्मान खोने की चिन्ता नहीं करता है। सच तो यह है कि ऐसे मनुष्य का सम्मान होता ही नहीं है।

नीतिवचन 26:2 - जैसे गौरिया घूमते-घूमते और सूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता।

भावी घटनाओं का अनुमान लगाने से उनका पूरा हो जाना हमेशा आवश्यक नहीं है। प्रसंगवश, आज हमारे मध्य ऐसे अनेक भविष्यद्वक्ता है। उनकी कुछ भविष्यद्वाणियाँ सच भी होती है। परन्तु परमेश्वर की ओर से उन्हें यह वचन प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि कभी-कभी वे गलत भी होते है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता कभी गलत नहीं होता है।

व्यवस्थाविवरण 18:20-22 - परन्तु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे जिसकी आज्ञा मैं ने उसे न दी हो, वा पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे, वह नबी मार डाला जाए। और यदि तू अपने मन में कहे, कि जो वचन यहोवा ने नहीं कहा उसको हम किस रीति से पहिचानें? तो पहिचान यह है कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे; तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नबी ने वह बात अभियान करके कही है, तू उस से भय न खाना।

नीतिवचन 26:3 - घोड़े के लिये कोड़ा, गदहे के लिये लगाम, और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी है।

यह एक अति उत्तर वचन है। घोड़े और गधे को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। मूर्ख केवल एक ही बात पर प्रतिक्रिया दिखाएगा डंडा खाने पर।

नीतिवचन 26:4-5 - मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरें। मूर्ख को उसकी मूढ़ता के अनुसार उत्तर न देना, ऐसा न हो कि वह अपने लेखे में बुद्धिमान ठहरंे।

जब मैं छोटा था तब हमारे नगर में नास्तिक लोगों को बाइबल की विषमताएँ उभारने में बड़ा आनन्द आता था। वह इस पद का भी संदर्भ देता था परन्तु मेरे मित्रों, यहाँ तो कोई भी विषमता नहीं है ये दोनों नीतिवचन हमारे सामने मूर्ख की प्रतिक्रियाओं को ही व्यक्त करते है।

मैं जो पत्र पात्र करता हूँ उनमें से कुछ के उत्तर देता हूँ और कुछ के नहीं क्योंकि मेरे विचार में वे पत्र मूर्खों के है और उनका उत्तर देकर मैं स्वयं ही मूर्ख बनना नहीं चाहता। यदि आप मूर्ख की मूर्खता में आ जाएँ तो आप भी मूर्ख ही है।

मुझे हाल ही में एक अनुभव हुआ। मुझे एक बुद्धिमान व्यक्ति ने पत्र लिखा और मैं ने पद 5 के संदर्भ में उसे उत्तर दिया। उसने प्रति उत्तर में मुझे एक और पत्र लिखा। मैंने ऐसा मूर्खता भरा पत्र कभी नहीं पाया था। मैं सोचने लगा कि उसे उत्तर लिखकर मैं ही मूर्ख बना। मैंने उसके पत्र का उत्तर देना स्वीकार नहीं किया। मैं पद 4 का पालन कर रहा हूँ। अतः आप देखते है कि हमारे सामने मूर्ख से व्यवहार करने के दो मार्ग है। हमें निर्णय लेना है कि हम उसे उत्तर दें या न दें।

नीतिवचन 26:6 - जो मूर्ख के हाथ से संदेश भेजता है, वह मानो अपने पांव में कुल्हाड़ा मारता और विष पीता है।

यदि आपने किसी गलत मनुष्य के हाथ सन्देश भेजा है तो आप ने बड़ी भूल की है।

नीतिवचन 26:7 - जैसे लंगड़े के पांव लड़खड़ाते हैं, वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन होता है।

मैं इसे प्रभु यीशु के दृष्टान्तों के सम्बन्ध में उन शिक्षकों का स्मरण करता हूँ जो दृष्टान्तों

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

का गलत अर्थ निकालते है। "मूर्खो के मुँह में नीतिवचन होता है।"

नीतिवचन 26:8 - जैसे पत्थरों के ढेर में मणियों की थैली, वैसे ही मूर्ख को महिमा देनी होती है।

मूर्ख को दिया गया सम्मान ऐसा है जैसे उसे हथियार दिए गए हों।

नीतिवचन 26:9 - जैसे मतवाले के हाथ में कांटा गड़ता है, वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदाई होता है।

शराबी के हाथ में कांटा रहेगा तो वह स्वयं को तो कांटा चुभाएगा परन्तु अन्यों को भी चुभाएगा। ऐसा ही मूर्ख है यदि वह शिक्षक बन जाए। वह स्वयं तो दुःख उठाएगा श्रोताओं को भी हानि पहुँचाएगा।

नीतिवचन 26:10 - जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को मारता हो, वैसा ही मूर्खों या राहगीरों का मजदूरी में लगानेवाला भी होता है।

अन्तिम परिणाम तो निश्चित है। परमेश्वर सब कुछ संभाल लेगा। यह एक भयानक बात है।

नीतिवचन 26:11 - जैसे कुत्ता अपनी छाँट को चाटता है, वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को दुहराता है।

इससे अधिक कठोर वचन मैंने नहीं सुना है। यह सोचने में ही अति घृणित है। ढोंगियों के सम्बन्ध में पतरस इसी नीतिवचन का संदर्भ देता है -

2 पतरस 2:22- उन पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि कुत्ता अपनी छाँट की ओर और नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लौटने के लिए फिर चली जाती है।

स्मरण करें कि उड़ाऊ पुत्र जब सूअरों के साथ था तब उस जगह से वह घर लौट आया। अब यदि वह अपने साथ एक सूअर ले आता तो क्या उस सूअर को उसका घर अच्छा लगता? नहीं वह तो अपने ही बाड़े में जाना चाहता। कलीसिया के ढोंगियों का एक दिन पर्दा फाश हो जाएगा। इसमें दो राय नहीं कि अनेक जन अपने को परमेश्वर की सन्तान कहते है।

"मुझे किसी ने कहा कि वह कलीसिया की सदस्यता नहीं चाहता है क्योंकि वहाँ ढोंगियों की भरमार है।" मैंने उससे कहा, "मुझसे अधिक इस विषय में कौन जानता है परन्तु कलीसिया की सदस्यता न लेने का यह उचित कारण नहीं है। आप ढोंगी की आड़ नहीं ले सकतें आपको वहाँ आकर सच्चाई प्रगट करनी चाहिए।"

मैं ढोंग के विषय पहले भी चर्चा कर चुका हूँ और मुझे पत्रों में इसके लिए मना किया जाता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

बाइबल विश्वासी के लिए सुरक्षा और ढोंगियों के लिए असुरक्षा का उल्लेख करती है। यह नीतिवचन ठोंगियों के बारे में है।

नीतिवचन 26:12 - यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो, तो उस से अधिक आशा मूर्ख ही से है।

यहाँ मूर्ख से भी बढ़कर कोई है। वह मनुष्य जो अपने आप को बुद्धिमान समझता है।

नीतिवचन 26:20 जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जहाँ कानाफूसी करनेवाला नहीं वहाँ झगड़ा मिट जाता है।

कुछ समूहों में कड़वाहट लगातार उठती रहती है क्योंकि वहाँ आग लगाने वाले होते है। यदि आग लगाने वाले न हों तो आग बुझ जाएगी, झगड़े समाप्त हो जाएँगे।

नीतिवचन 26:21 जैसा अंगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है, वैसा ही झगड़े के बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है।

कुछ लोग कलीसिया में आते ही झगड़े आरम्भ कर देते है। वे आज मसीही सेवा में भी है। वे सदा ही झगड़े की बातें करते है। वे परमेश्वर के वचन में रूचि नहीं रखते। जबकि ऐसा दिखावा अवश्य करते है।

नीतिवचन 26:22 कानाफूसी करनेवाले के वचन, स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं।

मनुष्यों को मीठी-मीठी कानाफूसी बड़ी अच्छी लगती है। उन्हें सुनना तो अच्छा लगता है परन्तु उन बातों को सहन करना कठिन है और अन्त में वे परेशानी का कारण बन जाती है। परमेश्वर की सन्तान को बुरी बातें नहीं सुनना चाहिए।

अब ढोंग के विरूद्ध यह सबसे बड़ा एवं कठोर वचन है - परमेश्वर के लोगों में झूठा दिखावा।

नीतिवचन 26:23-28 जैसा कोई चान्दी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्तन हो, वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे वचन होते हैं। जो बैरी बात से तो अपने को भोला बनाता है, परन्तु अपने भीतर छल रखता है, उसकी मीठी-मीठी बात की प्रतीति न करना, क्योंकि उसके मन में सात घिनौनी वस्तुएँ रहती हैं; चाहे उसका बैर छल के कारण छिप भी जाए, तौभी उसकी बुराई सभा के बीच प्रगट हो जाएगी। जो गड्ढा खोदे, वही उसी में गिरेगा, और जो पत्थर लुढ़काए, वह उलटकर उसी पर लुढ़क आएगा। जिस ने किसी को झूठी बातों से घायल किया हो वह उस से बैर रखता है, और चिकनी चुपड़ी बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है।

कुछ लोग प्रभु यीशु में विश्वास का अंगीकार तो करते है परन्तु वे परमेश्वर की सन्तान नहीं

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है। हम उन्हें ढोंगी कहते है क्योंकि वे जो नहीं है उसका दिखावा करते है। वे झूठे है। उन्हें कलीसिया के भीतर और बाहर किसी को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि नकल का सामना सच एवं मूल्यवान से होना चाहिए। एक रूपये की नकल नहीं की जाती है। बड़ी मुद्रा की ही नकल बनाई जाती है। ये नीतिवचन एक झूठे का वर्णन करते है और उसके प्रति सचेत करते है। अतः हम झूठे विश्वासियों को देख आश्चर्य में न पड़ें। वह दो मुंह वाला है। उसके मुँह में चिकनी-चुपड़ी बातें है परन्तु उसका मन आपसे घृणा करता है।

किसी भक्त ने कहा, "मनुष्य के लिए हानि पहुँचाने वाले से घृणा करना स्वभाविक है। डॉ. आयरनासाइड कहते है, "किसी को नुकसान पहुँचाने का बोध होना परन्तु उसे स्वीकार नहीं करने के द्वारा ढोंगी मनुष्य जिसको हानि पहुँचाता है उसके प्रति मन में घृणा रखता है। वह अपनी इस दुर्भावना को छिपाने के लिए मीठी-मीठी बात करता है जब कि वह अपने शिकार के विनाश का सदैव षड़यन्त्र रचता रहता है।"

बाइबल में चाटुकारी और ढोंग का एक अति उत्तम उदाहरण है हामान। उसने एक सम्पूर्ण जाति वरन् रानी को भी नष्ट करने का षड़यन्त्र रचा। वह राजा की चाटुकारी करता था परन्तु स्पष्ट दिखाई देता था कि वह राजा को हटा देना चाहता है।

मसीही क्षेत्र में भी बहुत झूठा दिखावा है। हमें इसे पहचानना आवश्यक है। संसार में कलीसिया से अधिक झूठ को ढाकना कहीं और नहीं देखा जाता है। हम ऐसा दिखाते है कि हमारे बीच कोई बुराई नहीं है। और सोचते हैं कि ऐसा करने से शायद बुराई अपने आप दूर हो जाएगी। यदि कोई हमसे कहे कि कलीसिया में झूठा दिखावा है तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम हार गए। यदि हम अपने मन में उपस्थित घृणा को पहचान लें तो हमें ऐसा लगता है कि हम हार गए। विश्वासियों का ऐसे पाप से सामना होगा। नीतिवचन हमें सामना करने में अच्छी सहायता करता है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0710

सत्यवचन

नीतिवचन 27 : 1 - 28 : 9

प्रिय मित्रों,

प्रिय मित्रों, आज हम अपने अध्ययन को नीतिवचन अध्याय 27 से आरम्भ करेंगे।
इस अध्याय में मित्रता का विषय आता है।

नीतिवचन 27:1 - कल के दिन के विषय में डींग मत मार, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा।

आज एक चिरपरिचित विचार है कि आज का काम कल पर छोड़ दिया जाएँ। इसमें नहीं करने की इच्छा नहीं है। यह टालने की इच्छा है। एक कहावत है, "नरक का मार्ग अच्छी मनोकमना से बनाया जाता है।" अग्रेंजी की एक कहावत है, "टालना समय की चोरी है।" परमेश्वर का वचन कहता है।

इब्रानियों 4:7 - यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।
और 2 कुरिन्थियों 6:2 में लिखा है,
...देखों अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखा अभी वह उद्धार का दिन है।
यशायाह 1 में वह कहता है,
आओं हम आपस में वाद-विवाद करें..... (यशायाह 1:18)

मनुष्य की मानसिकता है कि वह आने वाले समय की प्रतीक्षा करें। आपको स्मरण होगा कि फेलिक्स पौलुस से सुसमाचार सुनकर अपने उद्धार के लिए परेशान तो था परन्तु उसने बन्दी पौलुस से कहा –

प्रेरितों के काम 24:25 अभी तो जा, अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा।

परमेश्वर के वचन में हम देखते है कि वह अवसर फेलिक्स को फिर नहीं मिला। मिस्र का फिरौन इस्राएल की युक्ति को सदैव कल पर टाल रहा था जिसके कारण उसके पहलौठे की मृत्यु हो गई साथ ही संपूर्ण देश के सब पहलौठे मारे गए।

आज ही उद्धार का दिन है। कल क्या हो कोई नहीं जानता।

नीतिवचन 27:2 - तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें, परन्तु तू आप न करना; दूसरा तूझे सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपनी सराहना न करना।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

काश गोलियत इस नीतिवचन को सुनता। वह इस्राएल की सेना के आगे सीना चौड़ा करके आता था और उन्हे ललकार था। परन्तु वह एक युवक दाऊद के हाथों मारा गया।

नीतिवचन 27:3 - पत्थर तो भारी है और बालू में बोझ है, परन्तु मूढ़ का क्रोध उन दोनों से भी भारी है।

यदि कोई मूर्ख आपसे क्रोधित है तो आप संकट में है क्योंकि उसमें विवके नहीं है वह कुछ भी कह सकता है और कर सकता है।

नीतिवचन 27:4 - क्रोध तो क्रूर, और प्रकोप धारा के समान होता है, परन्तु जब कोई जल उठता है, तब कौन ठहर सकता है?

जल उठना अर्थात ईष्या से भर जाना।

श्रेष्ठगीत 8:6 - ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है। उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है।

याकूब के परिवार में ईष्या के कारण क्या हुआ था? उन्होंने अपने छोटे भाई यूसुफ को दासत्व में बेच दिया।

नीतिवचन 27:5-6 - खुली हुई डाँट गुप्त प्रेम से उत्तम है। जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वासयोग्य है परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।

बाइबल में इस आत्मविरोधी व्यवहार के अनेक उदाहरण है। अन्य जातियों के साथ खाना खाते-खाते अकस्मात ही अलग हो जाने पर पौलुस ने पतरस को झिड़का था। पौलुस को इसकी आवश्यकता भी थी। उसने पौलुस की बात पर ध्यान दिया। उनमें मनभुटाव नहीं हुआ।

सहायता के लिए आपके दोष प्रगट करने वाला मित्र हो तो बहुत ही बड़ा सौभाग्य है। यही कारण है कि प्रचारक के पास एक अच्छी पत्नी होनी चाहिए। वह उसे दीनता के मार्ग पर लेकर चलेगी और उसकी त्रुटियाँ उस पर प्रगट करेगी। मैं आराधना से बाहर आकर फूला हुआ होता हूँ परन्तु मेरी पत्नी कार में मुझ में पिन चुभा देती है और तब मुझे यह समझ में आता है कि वह सही है और जो मुझ से मीठी-मीठी बात कर रहा था वह गलत था। यहाँ विषय यहूदा को प्रगट करता है जिसने प्रभु यीशु को चुम्बन देकर पकड़वाया था।

नीतिवचन 27:7 - सन्तुष्ट होने पर मधु का छत्ता भी फीका लगता है, परन्तु भूखे को सब कड़वी वस्तुएँ भी मीठी जान पड़ती हैं।

फ्रांस, ईटली, स्पेन और जर्मनी में ऊँच वर्ग के पास खाना इतना अधिक होता था कि वे साधारण भोजन से ऊब गए थे चाहे वह कितना भी अच्छा था। अतः उनके खाना पकाने वालों को उनके लिए नया-नया भोजन पकाना पड़ता था कि उनकी भूख बढ़ें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

इसकी तुलना एक भूखे मनुष्य से करें। उसके लिए कैसा भी खाना स्वादिष्ट होता है।

परमेश्वर के वचन के साथ भी ऐसा ही है। हमें उसे खाना है, चबाना है, उसे बार-बार ध्यान में लाकर उस पर मनन करना है। परमेश्वर हम में भूख जगाए। उसके वचन की सच्ची भूख।

नीतिवचन 27:8 - स्थान छोड़कर घूमनेवाला मनुष्य उस चिड़िया के समान है, जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है।

कलीसियाओं और मसीही संस्थाओं में अनेक विश्वासी गोल सुराख में चौकोर खूँटा या चौकोर सुराख में गोल खूँटा के समान है। इसका कारण है कि परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी को वरदान दिया है।

1 कुरिन्थियों 12:7 में लिखा है, सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जात है।

परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी को वरदान का सदुपयोग करने के लिए निश्चित स्थान दिया है।

1 कुरिन्थियों 12:18 - सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।

हमें उसी स्थान पर अपने वरदान का उपयोग करना है। नये नियम में हमारे पास उन विश्वासियों का उदाहरण है जिन्होंने अपना वरदान कभी काम में नहीं लिया। पौलुस देमास नामक एक युवक के विषय कहता है,

2 तीमुथियुस 4:10 - देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है।

वह संसार में चला गया। जहाँ तक हम जानते है, वह उस स्थान में कभी नहीं समा पाया जो परमेश्वर ने उसके लिए रखा था।

नीतिवचन 27:9 -10 जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है। जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न छोड़ना; और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जाना। प्रेम करनेवाला पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है।

एक बार मैं एक धर्मी स्त्री का दफ़न कार्य कर रहा था। वहाँ केवल पन्द्रह लोग ही थे। उसके कुछ सम्बन्धी उनके गाँव ही में थे जो दूर पूर्वी क्षेत्र में था। वह यहाँ अपने पति के स्वास्थ्य के कारण आई थी परन्तु कलीसियाई कार्यों में वह सक्रिय थी। "प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने वाले भाई से उत्तम है।" हम सब को मित्रों की आवश्यकता पड़ती है। अपने पड़ोसी में मित्र बनाना अच्छा है, अपेक्षा इसके कि दूर रहने वाले सम्बन्धियों से आशा रखें।

नीतिवचन 27:12 - बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़े चले जाते और हानि उठाते हैं।

भविष्यद्वाणी के अध्ययन का यह एक बड़ा लाभ है। हमें भविष्य की बातों का ज्ञान होगा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

सच कहूँ तो मैं आज समस्याओं के समाधान के लिए मनुष्य पर निर्भर करने के विषय बड़ा निराश एवं निराशावादी हूँ। मेरे विचार में मनुष्य के पास समाधान नहीं है। हम संकट और विपदा की ओर बढ़ रहे है। इसमें दो राय नहीं। मनुष्य का यह सोचना कि वह संसार की समस्याओं का समाधान कर सकता है, उसकी मूर्खता हैं। परमेश्वर का वचन स्पष्ट कहता है कि संकट काल आ रहा है। और परमेश्वर संसार को दण्ड देने वाला है।

इन नीतिवचन से सम्बन्धित एक और विचार है। मैं संक्षेप में सीधा-सीधा कहता हूँ जीवन बीमा खरीद लें अर्थात परमेश्वर चाहता है कि आप भविष्य की योजना बनाँए। "बुद्धिमान मनुष्य विपत्ती को आता देखकर छिप जाता है, परन्तु भोले लोग आगे बढ़े चले जाते और हानि उठाते है।" बुद्धिमान मनुष्य आनेवाले कठिन समय की तैयारी करता है। कुछ लोगों के विचार में मनुष्य को सेवा निवृत्त के लिए तैयारी नहीं करनी चाहिए। जीवन बीमा नहीं करवाना चाहिए। लोगों के लिए यह एक मूर्खता का विचार है कि हमें प्रभु पर भरोसा रखना है। मैं तो कहूँगा कि परमेश्वर ने हमें भविष्य की तैयारी का साधन दिया है तो हमें उसका लाभ उठाना चाहिए।

नीतिवचन 27:14 - जो भोर को उठकर अपने पड़ोसी को ऊँचे शब्द से आशीर्वाद देता है, उसके लिये यह शाप गिना जाता है।

इस बात में उपहास छिपा है। कुछ लोग प्रेम और लगाव का ऐसा नाटक करते हैं कि आपको ऐसा लगेगा कि उनके मन में आपके लिए बड़ा स्थान है। ऐसे मनुष्य से सावधान रहें जो आवश्यकता से अधिक आपकी प्रशंसा करता हो।

इसका एक अच्छा उदाहरण बाइबल में अबशोलाम का है।

2 शमूएल 15:1-6 इसके बाद अबशालोम ने रथ और घोड़े, और अपने आगे आगे दौड़नेवाले पचास मनुष्य रख लिए। और अबशालोम सवेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था; और जब जब कोई मुद्दई राजा के पास न्याय के लिये आता, तब तब अबशालोम उसको पुकारके पूछता था, तू किस नगर से आता है? और वह कहता था, कि तेरा दास इस्राएल के अमुक गोत्र का है। तब अबशालोम उस से कहता था, कि सुन, तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है; परन्तु राजा की ओर से तेरी सुननेवाला कोई नहीं है। फिर अबशालोम यह भी कहा करता था, कि भला होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता! कि जितने मुकद्दमावाले होते वे सब मेरे ही पास आते, और मैं उनका न्याय चुकाता। फिर जब कोई उसे दंडवत् करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़के चूम लेता था। और जितने इस्राएली राजा के पास अपना मुकद्दमा तैय करने को आते उन सभों से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार किया करता था; इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया।

वह प्रातः काल उठकर नगर फाटक पर बैठ जाता था और राजा के पास आनेवाले प्रजा के लोगों के साथ मीठी-मीठी बातें करके उनका मन जीत लेता था। वह उनसे अपार प्रेम करने का नाटक करता था। वह उनकी प्रशंसा करता था परन्तु उसके मन में राजा का सिंहासन छीनने की अभिलाषा थी।

मैं सेमिनरियों में उपदेश देते समय युवा प्रचारक से कहता हूँ, "युवकों आप किसी भी कलीसिया

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

में जाएं वहाँ हमेशा एक प्रिय भक्त होगा जो कहेगा कि आप कैसे उत्तम प्रचारक है। कभी एक मधुर वृद्ध महिला होगी या कोई पुरूष होगा। परमेश्वर उन्हें युवा प्रचारकों के प्रोत्साहन के लिए वहाँ रखता है। वे आपकी ऐसी प्रशंसा करेंगे कि जैसे आप प्रेरित पौलुस, मार्टिन लूथर जॉन केलविन, बिलि सन्डे, बिली ग्राहम सब जोड़कर एक है। यह बड़ी अच्छी बात है कि आपके प्रोत्साहन के लिए वे वहाँ है परन्तु आप उनकी बात पर निर्भर न हों। वह सच नहीं है। "चाटुकारी इत्र के समान है। उसे सूंधना चाहिए पीना नहीं।"

नीतिवचन 27:17 - जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

आपके मस्तिक को कुशाग्रता प्रदान करने वाला मित्र पाना बहुत ही अच्छी बात है। आप उसके साथ लाभ की बातें कर सकते है। मेरे पास भी ऐसा एक मित्र था हम साथ बैठकर आत्मिक विषयों पर चर्चा करते थे। उससे मुझे ताज़गी और सामर्थ्य प्राप्त होती थी। मैं उससे कुछ न कुछ अवश्य सीखता था। ऐसा मित्र पाना एक महान सौभाग्य है।

नीतिवचन 27:19- जैसे जल में मुख की परछाई मुख को प्रगट करती है, वैसे ही मनुष्य का मन मनुष्य को प्रगट करता है।

ऐसा मित्र पाना महान बात है जो धोखा नहीं देगा। आप उससे अपने मन की बात कर सकते है। मित्र वह है जो आपको समझता है और आपसे प्रेम रखता है।

नीतिवचन 27:20 - जैसे अधोलोक और विनाशलोक, वैसे ही मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।

हम अधिक और अधिक देखना चाहते है। हमें संतोष नहीं होता है। यही कारण है कि हमें विश्व भ्रमाण अच्छा लगता है।

नीतिवचन 27:21 - जैसे चान्दी के लिये कुठाई और सोने के लिये भट्ठी हैं, वैसे ही मनुष्य के लिये उसकी प्रशंसा है।

प्रशंसा से सावधान रहें! सुनिश्चित करें कि उसका प्रभाव आप पर उचित हो। डॉ. आयरनसाइड ने कहा, "मनुष्य को परखने के लिए प्रशंसा और चाटुकारी की आग से बढ़कर अन्य कोई कुठाली नहीं। बुराई में प्रभु से लिपटना और बदनामी से बचने के लिए उस पर निर्भर करना तो आसान है यद्यपि ऐसी स्थिति में अनेक जन चूक जाते है, परन्तु अपने मार्ग में अपने अभिप्राय के निमित्त दीनता पूर्वक यत्न करते हुए प्रशंसा और चापलूसी अविचलित रहना परमेश्वर की निकटता में रहने की मनुष्य की सच्ची पहचान है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 27:24 - क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती; और क्या राजमुकुट पीढ़ी-पीढ़ी तक बना रहता है?

"सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती" आज के भौतिक संसार में यह समझना अति आवश्यक है। आप अपना धन साथ नहीं ले जाएँगे। कफ़न में जेब नहीं होती।"

"क्या राज मुकुट पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहता है?" इस बदलते संसार में राजवंशों का उदय और पतन होता रहता है। केवल परमेश्वर ही है जिस पर हम आश्रित रह सकते है। वही एकमात्र अपरिवर्तनीय मित्र है।

मित्रता पर यह एक महान अध्याय है।

अध्याय 28

नीतिवचन 28:1 - दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं, परन्तु धर्मी लोग जवान सिहों के समान निडर रहते हैं।

यह चाहे कुछ भी कहे, पाप मनुष्य में भय और अत्मग्लानी उत्पन्न करता है। एक समय मैं युवाओं के समूह में पाप के ऊपर चर्चा कर रहा था। उस समूह में एक युवक और युवती एक साथ रह रहे थे। मैंने उसे पाप नहीं कहा था परन्तु बड़ी रोचक बात थी कि वह युवक अपने बचाव में विवाद करने लगा। यदि यह बात उसें लिए ऐसी गंभीर नहीं होती तो वह उसकी चर्चा नहीं करता। बड़े आश्चर्य की बात थी कि पाप के विषय चर्चा सुनकर उसका विवके उसे दोषी ठहराने लगा और वह अपने बचाव में विवाद करने लगा। "दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते है।" उस पर किसी ने दोष नहीं लगाया था। यदि वह चुप रहता तो मैं उसका पाप कभी नहीं जान पाता। हमारे चर्चा का विषय पाप था, उसका पाप नहीं।

मनोविज्ञान के एक शब्दावली है, अपराध-बोध। हम सब में यह मनोवृति होती है। मुझे एक मसीही मनोवैज्ञनिक ने कहा, "हम सब में अपराध बोध होता है। यह हम सब का वैसा ही अंग है जैसे हमारा दाहिना हाथ। हम में से कोई भी इससे चाहकर छुटकारा नहीं पा सकता।" मनुष्य प्रायः ऐसा करना चाहता है। उस प्रोफेसर ने आगे और भी रोचक बात कही, "हम मनोवैज्ञानिक इसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर कर सकते है, परन्तु इसका निवारण नहीं कर सकते।" धर्मी लोग जवान सिंहो के समान निडर रहते है। यदि मनुष्य में अपराध का बोध न हो तो वह खड़ा होकर बोल सकता है। यदि उसका विवेक शुद्ध है तो वह अन्य मनुष्यों के विचारों और मानसिकताओं से नहीं डरेगा।

नीतिवचन 28:9 - जो अपना कान व्यवस्था सुनने से मोड़ लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है।

"व्यवस्था" अर्थात परमेश्वर का वचन। इस में वह सब कुछ था जो सुलैमान के समय तक लिखा गया था अर्थात पंचग्रन्थ, यहोशू, न्यायियों और बहुम से भजन।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

परमेश्वर हमसे यहाँ जो कहना चाहता है वह यह है। यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपकी वाणी सुने तो पहले आपको उसकी वाणी सुननी होगी। उसने स्पष्ट कहा है कि वह अभक्तों की वाणी नहीं सुनता है। एक छोटी लड़की बीमार थी। उसका पिता भावनात्मक होकर परमेश्वर से उसकी चँगाई की प्रार्थना कर रहा था। पर मैं कहूँगा कि उसे एक धर्मी जन को बुलाकर प्रार्थना करवानी थी क्योंकि परमेश्वर अधर्मी की प्रार्थना नहीं सुनाता है।

1 पतरस 3:12 में लिखा हैः क्योंकि परमेश्वर की आँखें धर्मी जन पर लगी रहती है, और उसके कान उनकी विनती की ओर लगे रहते है परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।

लिखा है कि अधर्मी की प्रार्थना परमेश्वर के निकट घृणित है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0711

सत्यवचन

नीतिवचन 28 : 10 - 29 : 18

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 28:10 - जो सीधे लोगों को भटकाकर कुमार्ग पर ले जाता है वह अपने खोदे हुए गड्ढे में आप ही गिरता है; परन्तु खरे लोग कल्याण के भागी होते हैं।

धन, घमण्ड और छल उत्पन्न करता है। ये साथ-साथ चलते है। आप धनवानों की गवाहियाँ सुनते होंगे। क्या एक ग़रीब विश्वासी से गवाही देने को कहा जाता है? नहीं! परमेश्वर का वचन कहता है, "धनी पुरूष अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होता है। परन्तु एक धर्मी जो कंगाल है पर विश्वास में धनी है वह धनवानों की गवाही सुनकर समझ लेता है कि वे खोखले शब्द है। उनमें सच्चाई नहीं है। यदि वह सच हों तो भी उनमें आत्मिक बातों की समझ नहीं होती है। मैं ऐसे एक स्थान पर गया था और मैं ने देखा कि सच्ची आत्मिक बुद्धि रखने वाले गवाहियाँ सुनकर सिर झुकाए हुए थे। यह एक व्यावहारिह नीतिवचन है जिसे प्रायः अनदेखा किया जाता है।

नीतिवचन 28:13 - जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।

यह एक अति उत्तम नीतिवचन है। आज विश्वासियों में यह एक आम अभ्यास है कि अपने पापों को छिपाएँ। कलीसियाओं में पाप के कैंसर पर लगा बैंडएड् आज बहुतायत से देखने को मिलता है। मनुष्य को पाप की चर्चा करना अच्छा ही नहीं लगता है। सच तो यह है कि वे इसके अस्तिव को स्वीकार ही नहीं करते हैं। वे मन को समझाते है कि वे बहुत अच्छे है परन्तु यह वचन हमसे कहता है, "जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता। परन्तु जो उनको मान लेता, और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाती है।" यही बात यूहन्ना कहता है,

1 यूहन्ना 1:9 - यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वाासयोग्य और धर्मी है।

यह पाप के सार्वजनिक अंगीकार के बारे में नहीं कहा गया है। पाप स्वीकार आपके और परमेश्वर के मध्य है और पाप का निवारण आवश्यक है। अपने मित्रों में निष्पाप दिखना आपकी बड़ी भूल है। यदि आप अपने पापों को स्वीकार करके उनका त्याग कर दें तो आप पर दया की जाएगी। यह कैसी महान बात है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 28:14 - जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है।

परमेश्वर का भय मानना यही है। आपको नीतिवचन 9:10 स्मरण होगा, **"यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है..... "** इसका अर्थ है कि परमेश्वर के सामने हमारे मन सदैव खुले रहें। यह मन कठोर करने के विपरीत है। परमेश्वर का भय मानने वाला मनुष्य वह है जो परमेश्वर की वाणी सुनता है। वह परमेश्वर को ग्रहण योग्य जीवन रखता है। वह परमेश्वर के समक्ष दीन बना रहता हैं वह अपनी दुर्बलता के बोध द्वारा परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरता के साथ जीवन निर्वाह करता है। परमेश्वर का भय मानना बुद्धि का मूल है, इसका अर्थ यही है।

मुझे पत्रों में लिखा जाता है।, "आप कलीसिया के सदस्यों में दोष निकालते है। आप कलीसिया के सदस्यों की आलोचना करते है। क्या आपके पास उन्हें प्रोत्साहित करने को कुछ नहीं है?"

क्या मैं कह सकता हूँ कि मैं परमेश्वर के वचन का प्रचार करता हूँ। हम अभक्ति के युग में वास करते हैं। हमारे देश में पास्टर और अन्य सेवारत पास्टर भी इससे सहमत है कि हम कलीसिया में अभक्ति देखते हैं। मैं विश्वासियों के प्रोत्साहन के पक्ष में हूँ और परमेश्वर का वचन सच्चे विश्वासी के प्रोत्साहन के लिए बहुत कुछ कहता है। मैं स्थानीय कलीसिया की ओर ध्यान आकर्षित करता हूँ। परमेश्वर का वचन स्पष्ट कहता है कि उसका अभिप्राय उनसे है जो केवल मसीही होने का दिखावा करते हैं। मेरा मानना है कि पूर्व चेतावनी पूर्व सावधानी है। कलीसिया के भीतर या बाहर मसीही जनों के आचरण से अनेक विश्वासी निराश है। इसके परिणाम स्वरूप वे स्वधर्मत्याग करते है। एक विद्रोही युवक ने मुझ से कहा, "मैंने धर्म का त्याग कर दिया है।" उस युवक की पृष्ठ भमि जानते हुए मैं उससे कहना चाहता था, "मैं आपको दोष नहीं देता।" परन्तु मैं उससे यह तो नहीं कह पाया परन्तु मैं ने यह अवश्य कहा, "कलीसिया में अनेक पवित्र जन हैं जो दिखाई नहीं देते इसलिए आपकी दृष्टि उन पर नहीं पड़ी।" वे ऐसे मनुष्य है जिनके साथ आप मन भावन संगति रख सकते है।

सच तो यह है कि इस नीतिवचन का लिखने वाला हम में से एक को भी नहीं छोड़ता है। अधिकाँश नीतिवचन हम पर ऐसे प्रासंगिक है जैसे हम वस्त्र धारण करते है।

नीतिवचन 28:17 - जो किसी प्राणी की हत्या का अपराधी हो, वह भागकर गड्ढे में गिरेगा; कोई उसको न रोकेगा।

जो मनुष्य एक भयानक अपराध का दोषी हो उसे अपने विवेक का बोझ उठाना ही होगा। अन्त में वह आत्मा हत्या करने पर बाध्य होगा। आज ऐसे अनेक उदाहरण है। बाइबल में यहूदा इस्करियोति इसका एक मुख्य उदाहरण है। उसने एक जधन्य अपराध किया था।

मुझे एक अपराध अन्वेक्षण पुलिस कर्मी ने बताया कि कभी-कभी अपराध वर्षों तक अज्ञात रहता है। अपराधी तक पहुँचने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता है। तब अकस्मात ही कोई स्त्री या पुरूष आकर अपना अपराध स्वीकार करता है या करती है। कभी-कभी तो वें किसी और अपराध में कारावास में ही होते है। वह ऐसा क्यों करता है? क्योंकि उसके मन-मस्तिष्क पर अपराध का साया बना रहता

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

है। वह बच नहीं पाता है। परमेश्वर ने हमें ऐसा ही बनाया है कि हम लौटकर उसके पास ही आएँ।

नीतिवचन 28:24 - जो अपने माँ-बाप को लूटकर कहता है कि कुछ अपराध नहीं, वह नाश करनेवाले का संगी ठहरता है।

यदि कोई युवक यह सोचे कि उसके पिता की सम्पत्ति तो उसी की है और उसमें से कुछ ले लेना कोई अपराध नहीं तो वह गलत है। परमेश्वर कहता है कि यह अपराध है। मत्ती 15:5, 6 में प्रभु यीशु ने "कुर्बान प्रथा" अर्थात परमेश्वर को अर्पित करने वाली प्रथा का खण्डन करते हुए कहा कि यह परमेश्वर की आज्ञा तोड़ना है, "अपने माता और पिता का आदर कर।" आप परमेश्वर को देकर माता पिता को वंचित नहीं कर सकते। अतः आप समझ सकते है कि इस सम्बन्ध के कारण अनाधिकृत रूप से कुछ ले लेना या अनदेखा करना कैसा आसान होता है परन्तु वह वास्तव में हमारा नहीं है। प्रभु ने इसे दोषी ठहराया था।

माता-पिता होने के कारण आपको घर में चोरी को अनदेखा नहीं करना है।

अध्याय 29

नीतिवचन 29:1 - जो बार-बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाष्ट हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।

परमेश्वर अनेक प्रकार से मनुष्य को चेतावनी देता है। परन्तु मनुष्य फिर भी पाप करता है। मैंने अनेक मनुष्यों को देखा है कि उन्होंने दण्ड की पूर्व चेतावनी को अनदेखा किया और अन्त में दण्ड पाया।

मैंने एक बार एक दुर्घटनाग्रस्त कार देखी। वह दुर्घटना बहुत ही बुरी थी। जब मैं सेमनरी में पहुँचा तो मुझे पता चला कि उस कार में स्कूल का एक लड़का और एक लड़की थे। उन्होंने एक और लड़की को अपने साथ बुलाया परन्तु उसने उनके साथ जाने से मना कर दिया। उसने कहा कि वह बाइबल अध्ययन कक्षा में जा रही है। उन्होंने उसे बाइबल अध्ययन में पहुँचा दिया परन्तु उसके साथ भीतर नहीं गए। मार्ग में उस लड़की ने उन्हें यीशु के बारे में बताया। उसने कहा कि उसने प्रभु यीशु को अपना लिया है और उन्हें भी उसकी आवश्यकता हैं वे हँस कर चले गए। पाँच मिनट बाद ही वे कार दुर्घटना में मारे गए।

बाइबल में भी इसके अनेक उदाहरण है। कोरह, दातान, अभीराम, बेलशस्सर, ईजेबेल तथा अन्य अनेक, "जो बार-बार डाँटे पर भी हठ करता है। वह अचानक नष्ट हो जाएगा। कोई भी उपाय काम में न आएगा।"

नीतिवचन 29:2 - जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं, तब प्रजा आनन्दित होती है; परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाय-हाय करती है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यह तो हम देख ही चुके है कि दुष्टों के राज में समस्याओं का समाधान नहीं होता है परन्तु एक ही धर्मी जन सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए आशीष का कारण होता है। आज समस्याओं का समाधान करने का दावा मनुष्य नहीं कर सकता है। हमें ऐसे धर्मी जनों की आवश्यकता है जो किसी भी कीमत पर सच्चाई के लिए खड़े रहें। एक ही धर्मी जन एक दल के बराबर है। "जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाय-हाय करती है।"

नीतिवचन 29:4 - राजा न्याय से देश को स्थिर करता है, परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको उलट देता है।

दाऊद एक अच्छा राजा था। वह अपनी प्रजा का एक धर्मी शिरोमणि था। वह परमेश्वर का भय मानकर शासन करता था परन्तु दाऊद ने स्वीकार किया कि उसका परिवार सुदृढ़ नहीं था। केवल प्रभु यीशु ही है जो न्याय के द्वारा देश को स्थिर करता है। पृथ्वी पर प्रभु यीशु का दूसरा आगमन ही संसार की आशा है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि जब वह पृथ्वी का न्याय करने आएगा तब कलीसिया यहाँ से जा चुकी होगी। यह उसकी प्रतिज्ञा है।

आज के शासक घूस लेते है परन्तु प्रभु यीशु धार्मिकता से राज करेगा।

नीतिवचन 29:5 - जो पुरूष किसी से चिकनी चुपड़ी बातें करता है, वह उसके पैरों के लिये जाल लगाता है।

अच्छा काम करने वाले की प्रशंसा करना उचित है। किसी की योग्यता को पहचानना आवश्यक है। किसी की सराहना करना यथा समय उचित होता है। चापलूसी करना तो शहद की अधिकता के समान है। कुछ लोगों को केवल चापलूसी ही पसन्द आती है। वे अपने मन की बात प्रगट नहीं करते है।

मेरी कलीसियाई सेवा में एक समय ऐसा एक मनुष्य था जो सदैव निवेदन करता था और कुछ न कुछ सहायता माँगता रहता था। जब भी उसका फोन आता था वह सबसे पहले कहता था, "मैं आपका टी.वी.सन्देश सुनता हूँ। आप उसको छपवाते क्यों नहीं? ऐसे सन्देश मैंने कभी नहीं सुने।" वह जितनी अधिक प्रशंसा करता था उतनी बड़ी सहायता माँगता था। चापलूसी बड़ी खतरनाक होती है। कभी-कभी आप उस पर विश्वास कर लेते है। चापलूसी पर विश्वास करना एक त्रासदी है।

नीतिवचन 29:10 - हत्यारे लोग खरे पुरूष से बैर रखते हैं, और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं।

खून के प्यासे मनुष्य के मन में हत्या और घृणा वास करती है। प्रभु यीशु ने कहा कि यदि कोई अपने भाई से घृणा करता है तो वह हत्या का दोषी है।

कैन ने हत्या की। हत्या उसके मन में उपजी थी। इससे प्रगट होता है कि मनुष्य कितनी

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

जल्दी और कितनी गहराई में गिर जाता है। स्मरण रखें परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सिद्धान्त में बनाया था। पतन के कारण वे संसार में एक पापी को ही जन्म दे पाए थे। उन्होंने अपने ही स्वरूप में पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न किए थे। उनमें से एक कैन था। वह मन में हत्या लिए हुए जन्मा था। वह अपने भाई से घृणा करता था।

नीतिवचन 29:11 - मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल देता है, परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर देता है।

आप किसी मूर्ख से बात करेंगे तो वह आपको सब कुछ बता देगा। बुद्धिमान मनुष्य भेद छिपा लेता है। वह अपने शब्दों को सोच समझ कर कहता है।

नीतिवचन 29:12 - जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते हैं।

माता-पिता को सन्तान के अनुशासन में अपना उदाहरण रखना चाहिए क्योंकि वे उनकी नकल करते है। इसी प्रकार यथा राजा तथा प्रजा। शासक का आचरण प्रजा द्वारा प्रगट होता है। यहाँ यही दर्शाया गया है।

नीतिवचन 29:17 - अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उस से तुझे चैन मिलेगा; और तेरा मन सुखी हो जाएगा।

यहाँ फिर अनुशासन की बात की गई है।

नीतिवचन 29:18 - जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है।

"दर्शन" अर्थात आत्मिक समझ। विश्वाासी के मन में पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन की समझ उत्पन्न करता है।

1 शमूएल 3:1 में लिखा है,

उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था।

दर्शन की कमी के कारण और वचन की समझ की कमी के कारण परमेश्वर का वचन दुर्लभ था। अतः परमेश्वर ने शमूएल नबी को उभारा कि यह कमी पूरी हो।

कुछ लोगों की भविष्यद्वाणी के कारण यहोशू परेशान था परन्तु मूसा ने कहा,

गिनती 11:29 - मूसा ने उससे कहा, "क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभो में समवा देता! "

आत्मिक बुद्धि कलीसिया के लिए परमेश्वर का वरदान है अर्थात परमेश्वर से प्राप्त वचन की समझ।

हिजकिय्याह के सेवकों द्वारा संकलित नीतिवचनों अर्थात सुलैमान के वचनों का अब समापन होता है परन्तु मैं तो यह मानता हूँ कि नीतिवचनों का अन्तिम अध्याय भी सुलैमान के नीतिवचन ही है अर्थात वह राजा शमूएल है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0712

सत्यवचन

नीतिवचन 30 : 1 - 30 : 26

प्रिय मित्रों,

अध्याय 30

इस अध्याय में किसी अज्ञात ऋषिमुनि के नीतिवचन है जिसका नाम आगूर था। पहला पद उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को प्रगट करता हैं।

नीतिवचन 30:1 - याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन। उस पुरूष ने ईतीएल और उक्काल से यह कहा,

हम इन मनुष्यों को नहीं जानते है। आगूर एक अनजान मुनि और लेखक था। इब्रानी नामों का अपना विशेष अर्थ होता है। आगूर का अर्थ है संकलनकर्ता और याके का अर्थ है धर्मीजन। कुछ लोग इसका अनुवाद इस प्रकार भी करते है, "धर्मी के युग संकलनकर्ता के प्रभावशाली वचन।"

नीतिवचन 30:4 - कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया? किस ने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रखा है? किस ने महासागर को अपने वस्त्र में बान्ध लिया है? किस ने पृथ्वी के सिवानों को ठहराया है? उसका नाम क्या है? और उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता!

यह बड़ी रोचक बात है कि ऐसे ही कुछ प्रश्न परमेश्वर ने अय्यूब से पूछे थे। इनका उत्तर देने योग्य कौन है? यूहन्ना 3 में प्रभु यीशु ने कहा था,

यूहन्ना 3:13 कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।

यही कारण है कि मैं बार-बार कहता हूँ कि सृजन कार्य और गगन की उत्पत्ति का एक मात्र विशेषज्ञ प्रभु यीशु है। स्पष्ट कहूँ तो हम में से किसी के पास जगत की उत्पत्ति की व्याख्या नहीं है। वैज्ञानिक विकासवाद प्रस्ताविक करते है जिससे सिद्ध होता है कि उनके पास जगत की उत्पत्ति का उत्तर नहीं है। चाँद पर जाने का उद्देश्य यही था कि वहाँ से पत्थर लाकर जगत की उत्पत्ति के बारे में समझा जाएँ।

उत्पत्ति का प्रथम पद कहता है कि आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। यह आम्रभ था और अगला पद कहता है, "पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था।" कुछ लोग इसे सृजन कार्य की व्याख्या मानते है परन्तु मेरे मित्रों, मैं नहीं मानना कि परमेश्वर ने हमें बताना उचित समझा कि उसने जगत की रचना कैसे की। मेरे विचार में पद दो प्रगट करता है कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की और उसके बाद समय का अन्तराल था। उस समय कुछ गड़बड़ हुई कि पृथ्वी बैडोल और सुनसान हो गई थी। इस विचार को त्याग दिया गया है परन्तु मैं विद्वानों के विचारों के उपरान्त भी इसे स्वीकार करता हूँ मेरा प्रतिवाद है कि परमेश्वर ने हमें आरंभिक रचना के बारे में कुछ नहीं बताया है। कोई कुछ नहीं जानता तो वैज्ञानिक भी नहीं और थियोलॉजी के विद्वान भी नहीं। **अय्यूब 38:4** में परमेश्वर ने अय्यूब से पूछा था कि **जब वह पृथ्वी की नींव डाल रहा था तब वह कहाँ था।** परमेश्वर सबसे यही प्रश्न पूछता है। किसी के पास उत्तर नहीं है।

आगूर का प्रश्न भी बहुत ही अच्छा है, "किसने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रखा है?" कैसा अद्भुत चित्रण! परमेश्वर हवा को वैसे ही पकड़े रहता है जैसे हमने हाथ में कुछ पकड़ रखा है। मनुष्य का ज्ञान तो नहीं के बराबर है। प्रभु यीशु ने कहा कि वह स्वर्ग से उतरा है और यह भी कहा,

यूहन्ना 3:8 - हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती है और किधर को जाती हैं...

यह एक अति महान विचार है।

नीतिवचन 30:5 - परमेश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।

परमेश्वर के वचन जैसा शोधन अन्य किसी वस्तु से नहीं हो सकता! परमेश्वर का वचन परिशुद्ध है। यह एक चमत्कारी साबुन है।

नीतिवचन 30:6 - उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डाँटे और तू झूठा ठहरे।

इस कारण हमें परमेश्वर के वचन को बड़ी सावधानी से उपयोग करना है। परमेश्वर झूठे को झूठ कहने से नहीं चूकता है।

नीतिवचन 30:7-9 - मैंने तुझ से दो वर माँगे हैं, इसलिये मेरे मरने से पहले उन्हें मुझे देने से मुँह न मोड़: अर्थात व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख; मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर। ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूँ कि यहोवा कौन है? या अपना भाग खोकर चोरी करूँ, और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूँ।

"व्यर्थ और झूठी बात मुझसे दूर रख" अर्थात मैं उन मनुष्यों के साथ सम्बन्ध नहीं रखना चाहता जो व्यर्थ की बात करते है। जो चापलूसी करते है, झूठ बोलते है। ऐसों के साथ रहना साँप की

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

संगति करने जैसा है आगे वह कहता है, "मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना।" मुझे मध्य मार्ग अपनाना है। मैं न तो अति कँगाल बनना चाहता हूँ, न ही अति धनवान बनना चाहता हूँ।

नीतिवचन 30:12 - ऐसे लोग हैं जो अपनी दृष्टि में शुद्ध हैं, तौभी उनका मैल धोया नहीं गया।

कलीसिया में ऐसे अनेक जन है जो अपनी दृष्टि में पवित्र है। उनके विचार में उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता नहीं है। वे अधर्मी जन है।

इसी प्रकार व्यापार और राजनीति में भी कुछ लोग अपने आप को निर्दोष मानते है। उनकी दृष्टि में उनके सब कार्य शुद्ध है। कोई भी घुला हुआ नहीं है। हमारे शुद्ध होने की एक ही विधि है प्रभु यीशु के लहू का शोधन।

नीतिवचन 30:15 - जैसे जोंक की दो बेटियां होती हैं, जो कहती हैं दे, दे, वैसे ही तीन वस्तुएँ हैं, जो तृप्त नहीं होती; वरन चार हैं, जो कभी नहीं कहतीं, बस।

अब वह चार ऐसी वस्तुओं का उल्लेख करता है जिन्हे सन्तोष नहीं होता।

नीतिवचन 30:16 - अधोलोक और बाँझ की कोख, भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती, और आग जो कभी नहीं कहती, बस।

"अधोलोक" से यहाँ अभिप्राय है कब्र। हम सब शवयात्रा में है। यह अदन की वाटिका के बाहर हाबिल की मृत्यु से आम्रभ हुआ था और चलाता चला आ रहा है। हमारा यह संसार एक बहुत बड़ा कब्रिस्तान है। कब्र को कभी सन्तोष नहीं होता हैं।

"बाँझ की कोख" बाँझ स्त्रियों को सन्तोष नहीं होता वे चाहती है कि उनके पास एक नन्हा सा प्यारा सा बच्चा हो जिससे वे दुलार निभा पाएँ। मेरे विचार में वे यदि किसी बच्चे को गोदले लें तो वे बहुत अच्छी माता बनेंगी। पिताओं के साथ भी ऐसा ही है।

"भूमि जो जल पीकर तृप्त नहीं होती" कुछ ऐसे स्थान होते है जहाँ अत्यधिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

"आग जो कभी नहीं कहती सबसे।" मैं तो सोचता था कि जंगलों की आग समाप्त हो चुकी है परन्तु जंगलों में अब भी आग लगती रहती है।

नीतिवचन 30:17 - जिस आँख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आँख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे खा डालेंगे।

जो अपने माता-पिता का सम्मान न करें उनके विरूद्ध भयानक दण्ड की घोषण की गई है। परमेश्वर उन युवाओं पर दया करें जो विश्वासी होकर भी अपने माता-पिता का आदर नहीं करते है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 30:18-19 - तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन है, वरन चार हैं, जो मेरी समझ से परे हैंः आकाश में उकाब पक्षी का मार्ग, चट्टान पर सर्प की चाल, समुद्र में जहाज की चाल, और कन्या के संग पुरूष की चाल।

आगूर इन बातों को नहीं समझ पाया। मैं भी नहीं समझता हूँ। क्या आपने उड़ते हुए बाज़ को देखकर कभी सोचा है? क्या अपने कभी चट्टान पर साँप को चलते देख आश्चर्य किया है?

मैं एक बार जहाज़ से समुद्री यात्रा कर रहा था। मुझे आज भी अचम्भा होता है कि वह महान लौहे का जहाज़ कैसे तैरता है। "कन्या के संग पुरूष की चाल" आज यौन सम्बन्धों की वृहŸा चर्चा है परन्तु क्या आपने कभी सोचा है कि जब एक युवक किसी युववी से भेंट करता है तो वह कितना बैचने होता है? दोनों ही लज्जा से भरे होते है।

आगूर कहता है कि इन बातों को समझ नहीं पाता था। मैं भी इन बातों को समझ नहीं पाता हूँ।

नीतिवचन 30:20 - व्यभिचारिणी की चाल भी वैसी ही है; वह भोजन करके मुँह पोंछती, और कहती है, मैंने कोई अनर्थ काम नहीं किया।

आज ऐसा ही हो रहा है। मनुष्य पाप में लीन है परन्तु बहस करता है कि वह पापी नहीं है। व्यभिचार से उत्पन्न एक बालिका का नाम पवित्रता रखा गया था। सबसे पहले तो वह पवित्र नहीं थी क्योंकि सब बच्चे पापी स्वभाव लेकर जन्म लेते है। दूसरी बात, उसका नाम उसकी माता के व्यभिचार को नहीं बदल सकता। परमेश्वर कहता है कि व्यभिचार पाप है। परमेश्वर ने अपना विचार बदला नहीं है। उसने इस पीढ़ी से कोई नई बात नहीं सीखी है। वह जानता था कि हमारी पीढ़ी क्या पाप करेगी। अतः उसने नीतिवचन में लिख दिया है।

नीतिवचन 30:21-22 - तीन बातों के कारण पृथ्वी कांपती है; वरन चार हैं, जो उस से सही नहीं जातींः दास का राजा हो जाना, मूढ़ का पेट भरना।

"दास का राजा हो जाना" यारोबाम एक दास था और इस्राएल के उत्तरी राज्य का राजा बना।

"मूढ़ का पेट भरना" यह उस मूढ़ के सदृश्य है जिसके विषय में प्रभु यीशु ने कहा था कि उसने नए खत्ते बनवाकर अनाज भरा रखा था। समृद्धि की बहुतायत के कारण वह उत्तम भोजन खाता था परन्तु वह मूर्ख था यह तीसरी बात है।

नीतिवचन 30:23 - घिनौनी स्त्री का ब्याहा जाना, और दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना।

"घिनौनी स्त्री का व्याहा जाना" इसमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है हम सब जानते है।

"दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना।" जब कोई दासी अकस्मात ही बहुत घनवान हो जाए तो उसके जैसा घमण्डी दूसरा नहीं होता।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

अब हम चिड़िया घर में कुछ जानवर देखेंगे। क्या आप जानते हैं कि जानवरों के पास हमारे लिए सन्देश है? परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों के निमित उनकी रचना की है। एक उद्देश्य है कि हमें उनसे शिक्षा मिले।

नीतिवचन 30:24 - पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं, जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं:

परमेश्वर कहता है कि हम प्राणी जगत से बहुत कुछ सीख सकते है। उनका पहला वर्ग छोटे-छोटे जीवों का है - चींटी।

नीतिवचन 30:25 - चींटियाँ निर्बल जाति तो हैं, परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं;

यहाँ जीवों के दो वर्ग है। पहला वर्ग परमेश्वर की और पापी के मार्ग का उदाहरण है। दूसरा वर्ग परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र जन के जीवन का मार्ग है।

चींटियाँ बुद्धिमान जीव है। हम उनसे शिक्षा ग्रहण कर सकते है।

हम **नीतिवचन 6:6-8 में देख चुके है, "हे आलसी चींटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे और बुद्धिमान हो। उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करने वाला, तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती है। और कटनी के समय अपनी भोजन वस्तु बटोरती है।"** वे अपने से भी बड़ा अन्न का दाना उठाकर ले जाती है। वे हमारे लिए भविष्य की तैयारी का एक अति उत्तम उदाहरण है।

कुछ विश्वासियों का मानना है कि हमें भविष्य की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हमें प्रभु यीशु पर भरोसा रखना चाहिए। मेरे मित्रों, यदि परमेश्वर ने हमें भविष्य की तैयारी के लिए साधन उपलब्ध करवाए है तो हमें उसे प्राप्त करना है चाहे वह बैंक खाता हो या मकान हो या अन्य। यदी संभव हो तो हमें अपने प्रिय जनों के लिए भी व्यवस्था करना चाहिए। चींटी हमें यही सिखाती है। वह कटनी के समय अन्न संग्रह करके अपना जीवन बीमा करती है।

यहाँ सन्देश और भी गहरा है। मनुष्य कब्रिस्तान की तैयारी तो करता है परन्तु उससे आगे की तैयारी से चूक जाता है। इस क्षणिक जीवन के बाद अनन्त जीवन होगा। क्या यह मूर्खता नहीं कि हम शरीर की चिन्ता करें और आत्मा को अनदेखा कर दें। क्या अनन्त जीवन की तैयारी नहीं करना, मूर्खता नहीं?

रोम के दुष्ट राजा हैद्रियन ने मरते समय कहा था, "इस सिर के लिए मुकुट नहींः इन आँखों के लिए सुन्दरता नहींः इन कानों के लिए संगीत नहीं और इस पेट के लिए भोजन नहीं परन्तु मेरी आत्मा, हे मेरी आत्मा तेरा क्या होगा?" हमारी मृत्यु तो निश्चित है।

इब्रानियों 9:27 में लिखा है कि मनुष्य के लिए मरना तो निश्चित है परन्तु उसके बाद न्याय है। खाओं, पियो, आनन्द करो क्योंकि कल मर जाना है। खत्तों को तुड़वा कर बड़े बनाना आदि सब है परन्तु परमेश्वर कहता है कि हम अपने प्रभु से भेंट करने के लिए तैयार रहें।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 30:26 - बिज्जू/शापान बली जाति नहीं, तौभी उनकी मान्दें पहाड़ों पर होती हैं;

"बिज्जू" एक ऐसा छोटा जानवर है जिसके बड़े बाल, छोटी पूँछ और गोल कान होते है। वे अत्यधिक दुर्बल होते है। वे भूमि में खोद भी नहीं सकतें अतः वे सुरक्षा के लिए चट्टानों में रहते है। वे लैव्यव्यवस्था में अशुद्ध जीव माने गए है। बिज्जू की नाईं मनुष्य भी अशुद्ध, असहाय और बेबस है। हम पापी है। हमें अपनी दयनीय दशा को समझना है। दाऊद की प्रार्थना थी,

भजन 61:2 - जो चट्टान मेरे लिए ऊँची है, उस पर मुझको ले चल।

हमारी यह चट्टान प्रभु यीशु की अपेक्षा अन्य कोई नहीं है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

HIN 0713

सत्यवचन

नीतिवचन 30 : 27 - 31 : 31

प्रिय मित्रों,

नीतिवचन 30:27 - टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तौभी वे सब की सब दल बान्ध बान्धकर चलती हैं;

टिड्डियाँ एक विनाशकारी जीव है। योएल ने टिड्डियों के द्वारा ढाए गए विनाश के बारे में बहुत कुछ कहा है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी टिड्डियों का उल्लेख है। वे सब वनस्पति खा जाती है। एक बार मैं ने इस्राएल में उन्हे देखा था। वे गलील सागर के क्षेत्र में वनस्पति को बड़ी अच्छी तरह खा रही थीं।

"टिड्डियों के राजा तो नहीं होता" परन्तु वे व्यवस्थित सेना के समान चलती है - सम्पूर्ण अनुशासन में जैसे कोई उन्हे निर्देश दे रहा हो।

वे हमें एक दूसरे के अधीन रहना और अपने स्वर्गीय प्रधान के अधीन रहना सिखती है। विश्व में विश्वासियों की देह अव्यवस्थित, विभाजित, असम्बन्धित मानव समूह सी प्रतीत होती है जिन का कोई अगुवा नहीं कोई पारस्परिक बन्धन नहीं परन्तु मेरे मित्रों मसीह यीशु हमारा अदृश्य प्रधान है, वह हमारा अगुवा है।

1 कुरिन्थियों 3:3 में पौलुस लिखता है,

क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिए कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?

मसीह के लहू से मुक्ति पाए विश्वासियों का प्रधान प्रभु यीशु है और पवित्र आत्मा हम में अन्तवास द्वारा हमें आपस में बान्धता है। रोमियों 12 में पौलुस लिखता है,

रोमियों 12:5 वैसे ही हम जो बहुत है, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग है।

टिड्डियाँ हमें यही सिखाती हैं।

हमने चींटियों से, बिज्जू से, टिड्डियों से शिक्षा ली है अब हम छिपकली से शिक्षा लेंगे।

नीतिवचन 30:28 - और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है, तौभी राजभवनों में रहती है।

छिपकली किसी न किसी प्रकार घर में आ ही जाती है। उसका रिश्ता बड़े-बड़े भवनों और साज-सज्जा से है। उसके पंजो में कुछ ऐसी पकड़ होती है कि वह संगरमरमर और चिकने से चिकने कपड़े पर भी चल लेती है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

छिपकली हमें विश्वास के बारे में शिक्षा देती है। ऐसा विश्वास जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को दृढ़ता से थाम ले। विश्वास ही है जो स्वर्गीय स्थानों में प्रवेश कर पाता है। विश्वास उस सत्य को थाम लेता है जिसके अनुसार परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्मा को गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान है। विश्वास ही है जो मुझे आश्वासन दिलाता है, "मैं उसे जिस पर मैं ने विश्वास किया है, जानता हूँ, और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।"

फिलिप्पियों 1:6 - मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।

अब हम दूसरे वर्ग के जन्तुओं को देखेंगे।

नीतिवचन 30:29-30 - तीन सुन्दर चलनेवाले प्राणी हैं; वरन चार हैं, जिन की चाल सुन्दर हैः सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी हैं, और किसी के डर से नहीं हटता;

सिंह सीधा चलता है, मार्ग से हटता नहीं। वह बिल्लियों से डरता नहीं है। वे उसे डरा नहीं सकतीं। सिंह अपने अविचलित चाल के लिए जाना जाता है। यह एक विश्वासी का गुण होना है जब वह विश्वास के लिए यत्न से प्रयास करता है। मुझे इससे प्रेरित पौलुस का ध्यान आता है जिसने कष्ट और पीड़ाओं में भी कहा -

प्रेरितों का काम 20:24 - परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानँू, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है।

मेरे विचार में आज कलीसिया के शाप का कारण है दबे पांव, चोरी छुपे काम करने वाले प्रचारक और चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले कलीसियाई सेवक हैं।

इंग्लैंड के राजा क्रोमवेल को निर्भीक राजा कहा जाता था। उससे कारण पूछा तो उसने कहा, "मैं ने सीखा है कि जब आप परमेश्वर का भय मानते है तो मनुष्य का भय कभी नहीं मानेंगे।" विश्वासी का जीवन ऐसा ही होना चाहिए।

अब आता है एक कुत्ता ।

नीतिवचन 30:31 - शिकारी कुत्ता और बकरा, और अपनी सेना समेत राजा।

विश्वासी को एक शिकारी कुत्तों के समान होना चाहिए अर्थात उसे कमर कस कर उसके सामने जो दौड़ है उसे धीरज से दौड़ना चाहिए।

इब्रानियों 12:1-2 में लिखा है, इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओं, हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसे हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहनी ओर जा बैठा।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

यह "बकरा" वह पहाड़ी बकरा है जो पहाड़ की ऊँचाइयों में अपनी सुरक्षा का बोध करता है।

शिक्षा अति सुबोध है। विश्वासी यदि हबक्कुक के समान ऊँचे स्थानों में विचरण करेंगे तो कठिन समय में आनन्द करेंगे।

हबक्कुक 3:17-19 में वह कहता है, चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियाँ न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूँगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूँगा। यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है, वह मेरे पाँव हरिणों के समान बना देता है, वह मुझ को मेरे ऊँचे स्थानों पर चलाता है।

अध्याय 31

इस अन्तिम अध्याय को राज लमूएल का भजन कहा गया है परन्तु इसका शीर्षक यदि **"पत्नी चुनने का परामर्श"** हो तो अधिक अच्छा होगा।

नीतिवचन 31:1 - लमूएल राजा के प्रभावशाली वचन, जो उसकी माता ने उसे सिखाए।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह अध्याय राजा सुलैमान के नीतिवचन है क्योंकि लमूएल नाम का कोई राजा नहीं था। सुलैमान को **2 शमूएल 12:25 में परमेश्वर ने 'यदिद्याह' नाम दिया था।** अर्थात "यहोवा का प्रिय" लमूएल का अर्थ परमेश्वर का भक्त। मेरे विचार में बतशेबा उसे प्यार से लमूएल बुलाती थी।

यह पुत्र के लिए माता की शिक्षा है। प्रसंगवश यह मातृत्व दिवस का एक अच्छा उपदेश है।

नीतिवचन 31:2 - हे मेरे पुत्र, हे मेरे निज पुत्र! हे मेरी मन्नतों के पुत्र!

वह सुलैमान से कुछ कहना चाहती थी क्योंकि उसने उसमें उसके पिता दाऊद के गुण देखे थे। उसे दाऊद का पाप स्मरण था। मेरे विचार में वह बतशेबा का पाप नहीं था। मत्ती अध्याय एक में लिखा है - **मत्ती 1:6**

दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहले उरियाह की पत्नी थी।

बतशेबा का नाम नहीं लिया गया है। मेरे विचार में, परमेश्वर यह दिखाना चाहता है वह पाप दाऊद का था। वह देख सकती थी, सुलैमान के सामने भी वही परीक्षा है। अतः वह उसे समझा रही है। वह उसे मन्नतों का पुत्र कहती है अर्थात वह उसे परमेश्वर को अर्पित कर चुकी थी।

नीतिवचन 31:3 - अपना बल स्त्रियों को न देना, न अपना जीवन उनके वश कर देना जो राजाओं का पौरूष खो देती हैं।

वह दाऊद को जानती थी।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 31:4-5 - हे लमूएल, राजाओं का दाखमधु पीना उनको शोभा नहीं देता, और मदिरा चाहना, रईसों को नहीं फबता; ऐसा न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूल जाएँ और किसी दुःखी के हक को मारें।

अधिकारी गण प्रायः मधपान करते है परन्तु यह उचित नहीं है।

नीतिवचन 31:6-7 - मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है, और दाखमधु उदास मनवालों को ही देना; जिस से वे पीकर अपनी दरिद्रता को भूल जाएँ और अपने कठिन श्रम फिर स्मरण न करें।

वह सुलैमान को समझाती है कि मदिरा केवल औपधि रूप में ही अच्छी होती है।

नीतिवचन 31:8-9 - गूंगे के लिये अपना मुँह खोल, और सब अनाथों का न्याय उचित रीति से किया कर। अपना मुँह खोल और धर्म से न्याय कर, और दीन दरिद्रों का न्याय कर।

सुलैमान को ईमानदार, न्यायसंगत और निश्पक्ष रहना सिखाती है।
अब वह उसे पत्नी चुनना सिखाती है। यह वास्तव में परमेश्वर का सुझाव है।

नीतिवचन 31:10 - भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है। उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास है।

"भली पत्नी" अर्थात चरित्रवान, अडिगस्वभाव की स्त्री, योग्यता से पूर्ण पत्नी। उसे आराम कुर्सी पर बैठने वाली नहीं होना चाहिए। स्त्रियाँ अधिकतर घर कार्य में व्यस्त रहती है।
यह एक व्यस्त स्त्री का चित्रण हैः

नीतिवचन 31:11- और उसे लाभ की घटी नहीं होती।

वह विश्वासयोग्य होगी। "उसे लाभ की घटी नहीं होगी।" वह अपने पति का पैसा नहीं उड़ाएगी। वह उसकी सहायक होगी। परमेश्वर ने स्त्री को पुरूष का दास नहीं बनाया है। उसे अपने पति का साझेदार बनाया है। परमेश्वर ने हव्वा को आदम का अर्धांग या आधा अंग बनाया था। जब तक परमेश्वर ने आदम को हव्वा न दी तब तक वह अधूरा था।

नीतिवचन 31:12 - वह अपने जीवन के सारे दिनों में उस से बुरा नहीं, वरन भला ही व्यवहार करती है।

वह सच्ची सहायक है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 31:13 - वह ऊन और सन ढूँढ़-ढूँढ़कर, अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है।

वह परिश्रम करने से पीछे नहीं हटती है।

नीतिवचन 31:14 - वह व्यापार के जहाजों की नाई अपनी भोजन वस्तुएँ दूर से मंगवाती हैं। वह मोलभाव करके ही पैसा खर्च करती है।

नीतिवचन 31:15 - वह रात ही को उठ बैठती है, और अपने घराने को भोजन खिलाती है और अपनी दासियों को अलग अलग काम देती है।

वह घर सम्भालना जानती है। वह रात में भी काम करती है। और एक अच्छी माता है।

मुझे अपने बचपन का ऐसा कोई समय ध्यान नहीं आता कि मैं ने सुबह जागते समय अपनी माता को बिस्तर में देखा हो। बुढ़ापे में वह ऐसी नहीं थी परन्तु जवानी में जब मैं सोकर उठता तब वह नाश्ता तैयार कर चुकी होती थी।

नीतिवचन 31:16-17 - वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है; और अपने परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है। वह अपनी कटि को बल के फेंटे से कसती है, और अपनी बाहों को दृढ़ बनाती है।

वह निपुण स्त्री है। और घर की अच्छी देख-भाल करती है।

नीतिवचन 31:18 - वह परख लेती है कि मेरा व्यापार लाभदायक है। रात को उसका दिया नहीं बुझता।

वह इस कहावत को सच सिद्ध करती है, "पुरूष का काम सूरज से सूरज तक होता है परन्तु स्त्री के काम का अंत नहीं है।"

नीतिवचन 31:19-20 - वह अटेरन में हाथ लगाती है, और चरखा पकड़ती है। वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती है, और दरिद्र के संभालने के लिए हाथ बढ़ाती है।

वह एक उदार मनुष्य है।

नीतिवचन 31:21 - वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती, क्योंकि उसके घर के सब लोग लाल कपड़े पहिनते हैं।

मुझे अब भी स्मरण है कि मेरी माता मेरी पतलूनों में पैबन्द लगा कर उन्हें सुधार देती थी।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com

नीतिवचन 31:26 - वह बुद्धि की बात बोलती है, और उसके वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं।

वह अपने परामर्श और प्रबोधनों में बुद्धि की बातें करती थी।

नीतिवचन 31:30 - शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।

युवकों, पहले तो आपको एक विश्वासी युवती खोजनी होगी। तब मैं आशा करता हूँ कि वह सुन्दर हो। दोनों बातें होना अच्छा ही है।" जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।" यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 31:31 - उसके हाथों के परिश्रम का फल उसे दो, और उसके कार्यों से सभा में उसकी प्रशंसा होगी।

मेरे विचार में इसी कारण हम मातृत्व दिवस मनाते है। माताओं को सम्मानित करना उचित है तथापि कुछ माताएँ इसके योग्य नहीं है।

नीतिवचन युवकों के लिए एक अति उत्तम पुस्तक है परन्तु युवतियों के लिए भी इसमें अनमोल रत्न है। सच तो यह है कि हम सब इस अद्भुत पुस्तक से शिक्षाएँ ग्रहण कर सकते है।

WORD RESOUNDS TODAY

www.Radio882.com